CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बृहज्जातक

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र

डॉ० उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर'

श्री रामानुजाचार्य

स्वामी विवेकानन्द

आदि शंकराचार्य

रणधीर प्रकाशन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र

(वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम् की हिन्दी व्याख्या सहित)

भविष्य की पहचान कुण्डली के विश्लेषण से होती है। कुण्डली का विश्लेषण ज्योतिष के फलित सिद्धान्तों के आधार पर होता है। फलित के बिना कुण्डली व्यर्थ है। यदि आप कुण्डली का फल कहने में समर्थ होना चाहते हैं तो **वराहमिहिर** कृत **'बृहज्जातकम्'** के फलित सिद्धान्तों की विस्तृत व्याख्या **'प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र'** नामक पुस्तक के अन्तर्गत पढ़ें। इसे आपके लिये सरल बनाया है आपके प्रिय लेखक **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** ने। पुस्तक पढ़कर फलितज्ञ बनें और अपनी तथा प्रियजनों की कुण्डलियां देखकर यशस्वी बनना न भूलें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर्पण

उन भाग्य जिज्ञासुओं को
जो भविष्य को जानकर
स्वयं उन्नत-पथ पर
बढ़ना चाहते
हैं।

— उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यावहारिक ज्योतिष पुस्तक माला — सोलह

॥ श्री ॥

वराहमिहिर कृत बृहज्जातकम् पर आधारित

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र

(कुण्डली का फल बतलाने वाला अनमोल ग्रन्थ)

लेखक

डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'

बी० एस०-सी०, एम० ए०, पी०-एच० डी०,

ज्योतिष बृहस्पति, ज्योतिष भास्कर

मूल्य — १२५.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार - 249401

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

प्रकाशक : रणधीर प्रकाशन,

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार - 249 401
फोन-(0133) 426297, 426195

वितरक : रणधीर बुक सेल्स
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन-(0133) 428510

मुख्य विक्रेता : 1. पुस्तक संसार, बड़ा बाजार हरिद्वार
2. पुस्तक संसार, नुमाईश का मैदान, जम्मूतवी
3. गगनदीप पुस्तक भंडारए एस० एन० नगर, हरिद्वार

लेखक : डॉ० उमेश पुरी ज्ञानेश्वर

संस्करण : प्रथम, 1996 द्वितीय - २०००

मूल्य : १२५.००

मुद्रक : राजा आफसेट प्रिंटर्स, ललिता पार्क, दिल्ली

चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश का पुनर्मुद्रण या फोटोकॉपी करने के लिये लेखक एवं प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

PRACHEEN BHARTIYA PHALIT SHASTRA

(Kundli Ka Phal Batlaney Wala Anmol Granth)

WRITTEN BY :

DR. UMESH PURI 'GYANESHWAR'

PUBLISHED BY :

RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुक्रम

विषय	पृष्ठ सं०
● समर्पण	2
● अनुक्रम	5-18
● स्नेहवार्त्ता आपके साथ	19-22
● प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र पढ़ने से पूर्व इसे अवश्य पढ़ें	23
अध्याय एक—राशि प्रभेदाध्याय	**25-48**
— मंगलाचरण	25
— ग्रन्थ का प्रयोजन	25
— होरा शब्द का अर्थ	26
— कालपुरुष के अंग	26
— राशि और शरीरांग च्रकम्	26
— राशि नक्षत्र चक्रम्	27
— द्वादश राशियों के स्वरूप	29
— राशि स्थान चक्रम्	29
— राशि का स्वभाव चित्रों में	30
— मेषादि राशियों, नवांशों एवं द्वादशांशों के स्वामी	31
— राशि स्वामी चक्रम्	31
— नवांश चक्रम्	31
— द्वादश राशियों के त्रिशाँश स्वामी	32
— त्रिशांश स्वामी चक्रम्	32
— द्वादशांश चक्रम्	33
— मेषादि राशियों के नाम	34
— राशि नाम चक्रम्	34
— ग्रहों की षडवर्ग की संज्ञा	34
— राशियों की रात्रिबली- दिन बली और पृष्ठोदयादि संज्ञा	35
— उदय और दिन-रात्रि राशि बली चक्रम्	35
— क्रूरादि, पुरूषादि, चरादि, दिशादि होरा एवं द्रेष्काण ज्ञान	35
— क्रूरादि, पुरुषादि, चरादि एवं दिशादि चक्रम्	36
— होरा चक्रम्	37
— द्रेष्काण चक्रम्	38
— मतान्तर से होरा-द्रेष्काण के स्वामी	38

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
— मतान्तर से होरा चक्रम् 39
— मतान्तर से द्रेष्काण चक्रम् 40
— ग्रहों के उच्च एवं नीच स्थान 40
— ग्रह उच्च-नीच चक्रम् 41
— सूर्यादि ग्रहों के वर्गोत्तम नवांश एवं त्रिकोण 41
— वर्गोत्तम नवांश चक्रम् 41
— सूर्यादि ग्रहों की मूल त्रिकोण राशि चक्रम् 42
— लग्नादि द्वादश भावों की संज्ञा 42
— उपचयापचया संज्ञा चक्रम् 42
— द्वादश संज्ञा भाव चक्रम् 43
— द्वादश भवों की प्रकृति 43
— भाव नामान्तर चक्रम् 43
— चतुरस्त्रादि संज्ञा चक्रम् 44
— कण्टकादि संज्ञा 44
— पणफरादि संज्ञा 44
— कण्टकादि व पणफरादि संज्ञा चक्रम् 44
— राशि बल बोधक चक्रम् 45
— लग्नादि राशियों के बल 45
— केन्द्रादि भाव बल चक्रम् 46
— लग्नादि बल चक्रम् 47
— मेषादि राशियों के रंग 47
— राशि प्लव चक्रम् 48
— राशि वर्ण चक्रम् 48
अध्याय दो—ग्रहभेदाध्याय 49-67
— काल पुरूष में ग्रह की भाव संज्ञा 49
— सूर्यादि भाव व पद चक्रम् 49
— सूर्यादि ग्रहों के प्रर्यायवाची 50
— ग्रह संज्ञा चक्रम् 50
— सूर्यादि ग्रहों का वर्ण 51
— ग्रह वर्ण चक्रम् 51
— सूर्यादि ग्रहों के वर्ण एवं देवतादि 51
— ग्रहों के लिंग व तत्त्वादि 52
— ग्रहों की जाति व गुण 52
— सूर्यादि ग्रहों का स्वरूप व धातुदि 53
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

— ग्रहों के स्थान, वस्त्र व ऋतु ज्ञानादि 54
— ऋतु ज्ञान चक्रम् 55
— सूर्यादि संज्ञा चक्रम् 56
— ग्रहों के दृष्टि स्थान 56
— ग्रह दृष्टि चक्रम् (प्रतिशत में) 57
— सूर्यादि ग्रहों का काल व स्वाद 57
— ग्रह काल व स्वाद चक्रम् 58
— सूर्यादि ग्रहों के नैसर्गिक मित्र शत्रु 58
— ग्रह मित्र शत्रु चक्रम् 59
— वराहमिहिर के अनुसार ग्रह मैत्री 60
— सूर्यादि ग्रहों का मित्र, शत्रु व सम चक्रम् 61
— तात्कालिक शत्रुता 61
— तात्कालिक मित्रता-शत्रुता चक्रम् 62
— तात्कालिक मैत्री चक्रम् 62
— पंचधा मैत्री चक्रम् 63
— ग्रहों के स्थान बल एवं दिग्बल 63
— दिग्बल बोधक चक्रम् 64
— मतान्तर से दिग्बल बोधक चक्रम 64
— ग्रहों के चेष्टाबल 64
— ग्रहों के लक्षण 65
— स्थान बल से युत ग्रह फल 65
— दिग्बल से युत ग्रह फल 65
— अयन बल से युत ग्रह फल 66
— चेष्टा बल से युत ग्रह फल 66
— शुभ पाप, वक्री ग्रह फल 66
— निष्कंटक राज्यपद ग्रह फल 66
— दिन रात्रि बल से युत ग्रह फल 66
— वर्षेशादि ग्रह फल 66
— पक्षबल से युत ग्रह का फल 67
— समस्त बल से युत ग्रह का फल 67
— बलवान शुभ ग्रहों का फल 67
— बलवान पाप ग्रहों का फल 67
अध्याय तीन—वियोनिजन्माध्याय **68-72**
— वियोनि जन्म ज्ञान कैसे करें ? 68
— वियोनि का अंग विमान कैसे करें ? 69

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
— वियोनि वर्ण ज्ञान कैसे करें ? 69
— पक्षी जन्म ज्ञान कैसे करें ? 70
— वृक्ष जन्म ज्ञान कैसे करें ? 70
— वृक्ष विशेष के जन्म का ज्ञान कैसे करें ? 71
— वृक्ष संख्या ज्ञान कैसे करें ? 71
अध्याय चार—निषेकाध्याय 73-85
— गर्भाधारण का समय ज्ञान 73
— गर्भाधान लग्न से मैथुन की प्रकृति 74
— गर्भाधान सफल या निष्फल संबंधी ज्ञान 74
— गर्भधान काल से काल तक का शुभाशुभ विचार 74
— पिता, चाचा, माता और मौसी के लिए शुभाशुभ ज्ञान 75
— गर्भिणी मृत्यु योग 76
— गर्भिणी की शास्त्र से मृत्यु और गर्भस्त्राव योग 77
— स्वस्थ गर्भ ज्ञान 77
— गर्भ में पुत्र -पुत्री व जुडवां सन्तान का ज्ञान 78
— नपुंसक योग 79
— एक समय में एकाधिक सन्तान योग 79
— गर्भ मास स्वामी और उसमें निर्मित अंग का विचार 81
— अधिक अंग, मूक और विलम्ब से बोलने का योग 81
— सन्तान सम्बन्धी अन्य योग 82
— वामन और अंगहीन सन्तान योग 82
— अन्धी और कानी सन्तान के योग 83
— प्रसव काल का ज्ञान 84
अध्याय पाँच—सूतिकाध्याय 86-99
— पिता की अनुपस्थिति में जन्म 86
— सर्परूप या सर्प वेष्टित जातक का जन्म 86
— जरायु वेष्टित जुड़वां जातक का जन्म ज्ञान 87
— नाल वेष्टित जातक का जन्म ज्ञान 87
— जार उत्पन्न जातक का जन्म ज्ञान 87
— जातक का पिता जेल में 88
— नाव में जन्म ज्ञान 88
— जेल व खाई में जन्म ज्ञान 88
— क्रीडास्थल; देवालय या मिट्टी में जन्म ज्ञान 89
— अन्य स्थानों में जन्म ज्ञान 89
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

— माता से परित्यक्त संतान का ज्ञान 90
— परित्यक्त संतान की मृत्यु 90
— प्रसव के ग्रह का ज्ञान 90
— जन्म-समय, अंधकार या प्रकाश का ज्ञान 91
— सूतिका गृह का स्वरूप 93
— सूतिका गृह की दिशा 93
— सूतिका का शय्या ज्ञान 94
— सूतिका शय्या दिशा ज्ञान चक्रम् 94
— शय्या अंग ज्ञान चक्रम् 95
— उपसूतिका की संख्या ज्ञान 95
— बालक के स्वरूप का ज्ञान 96
— द्रेष्काण के अनुसार अंग विभाग 97
— द्रेष्काण अंग विभाग चक्रम् 97
— जातक के अंग में चिन्ह ज्ञान 98
— व्रर्ण का ज्ञान 98

अध्याय छह—अरिष्टाध्याय **100-104**

— नवजात शिशु की शीघ्र मृत्यु का योग 100
— बच्चे व माता की एक साथ मृत्यु का योग 103
— शिशु की मृत्यु का योग 103

अध्याय सात—आयुर्दायाध्याय **105-121**

— ग्रहों की परमायु 105
— परमोच्च अंश पर परमायु वर्ष चक्रम् 105
— परमनीच ग्रहों की आयु 106
— परमनीच अंश पर परमायु वर्ष चक्रम् 106
— ग्रहों के उच्च-नीच वर्ष ज्ञान चक्रम् 107
— जन्म कुंडली 108
— ग्रह स्पष्ट चक्रम् 108
— लग्नायु ज्ञात करने की रीति 110
— सूर्यादि ग्रहायु स्पष्ट चक्रम् 111
— ग्रहायु में ह्रास 112
— आयु में ह्रास के विशेष संस्कार 112
— जीवों की परमायु -114
— परमायु योग 115
— मतान्तर से आयुर्दाय में दोष 116

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri
— जीवशर्मा और सत्याचार्य के मतानुसार आयु 118
— अमितायु योग 121
अध्याय आठ—दशान्तर्दशाधाय 122-138
— ग्रहों का दशाक्रम 122
— ग्रहों के दशावर्ष 122
— ग्रह स्पष्ट 123
— जन्म कुंडली 123
— नवांश कुंडली 123
— सूर्य अंश से अंग्रेजी तारीख व मास ज्ञात करने का चक्र 125
— अन्तर्दशा 126
— अन्तर्दशा वर्ष लाने की रीति 127
— लग्न अन्तर्दशा चक्रम् 128
— स्थानादि बल क्रम से दशा की संज्ञा व फल 130
— अवरोहिणी एवं आरोहिणी दशा 130
— दशाओं के नामान्तर और फल 130
— लग्न दशा का शुभाशुभ फल 131
— नैसर्गिक दशा काल 132
— दशा का अन्य प्रकार से फल 132
— दशाकाल में चन्द्रमा का शुभाशुभ फल 133
— सूर्य दशा का शुभाशुभ फल 133
— चन्द्र दशा का शुभाशुभ फल 134
— मंगल दशा का शुभाशुभ फल 134
— बुध दशा का शुभाशुभ फल 135
— गुरू दशा का शुभाशुभ फल 135
— शुक्र दशा का शुभाशुभ फल 135
— शनि दशा का शुभाशुभ फल 136
— शुभाशुभ दशा फल 136
— सामान्य रूप से दशा फल 136
— अज्ञात जन्म समय होने पर ग्रह दशा ज्ञान की रीति 137
— दशा ज्ञान की विशेष रीति 137
अध्याय नौ—अष्टकवर्गाध्याय 139-148
— सूर्याष्टक वर्ग 139
— सूर्याष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 140
— चन्द्राष्टक वर्ग 140
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

— चन्द्राष्टव वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 141
— मंगलाष्टक वर्ग 141
— मंगलाष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 142
— बुधाष्टक वर्ग 142
— बुधाष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 143
— गुर्वाष्टक वर्ग 143
— गुर्वाष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 144
— शुक्राष्टक वर्ग 144
— शुक्राष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 145
— शन्याष्टक वर्ग 145
— शन्याष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम् 146
— अष्टक वर्ग संबंधी विशेष निर्देश 146
— जन्म कुंडली 147
— सूर्याष्टक वर्ग 147

अध्याय दस—कर्माजीवाध्याय **149-152**

— धन किससे प्राप्त होगा ? 149
— धन कैसे प्राप्त होगा ? 149
— धन कब प्राप्त होगा ? 150
— धन किससे, कैसे, और कब प्राप्त होगा ? 151

अध्याय ग्यारह—राजयोगाध्याय **153-170**

—यवनाचार्य और जीवशर्मा के मतानुसार राज योग 153
— बत्तीस प्रकार के राज योग 153
— चौवालिस राज योग 159
— पांच प्रकार के राज योग 161
— तीन प्रकार के राज योग 162
— दो प्रकार के राज योग 163
— तीन प्रकार के राज योग 164
— अन्य तीन प्रकार के राज योग 165
— पराक्रमी राजा का योग 166
— यशस्वी राजा का योग 166
— राज योग 166
— राज योगों में विशेष विचार 167
— राज योग व धनवान योग 167
— राज्य प्राप्ति का समय 169

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
— भोगी योग 170
अध्याय बारह—नाभसयोगाध्याय 171-182
— योगों की संख्या 171
— तीन आश्रय योग और दो दल योग 171
— योगों की समता एवं फल विचार 173
— आकृति योग 173
— वज्रादि योग 174
— विशेष विचार 175
— यूप, इषु शक्ति व दण्ड योग 176
— नौका, कूट, छत्र, चाप और अर्ध चन्द्र योग 176
— समुद्र और चक्र योग 178
— संख्या योग 178
— आश्रय और दल योग का फल 179
— विशेष फल विचार 179
— गदा, शंकट, विहग व श्रृंगाष्टक योग का फल 179
— वज्र, यव, पद्म व वाणी योग का फल 180
— यूप, शर, शक्ति व दण्ड योग का फल 180
— नौका, कूट, छत्र व चाप योग का फल 181
— अर्धचन्द्र, समुद्र व चक्र व वीणा योग का फल 181
— दामिनी, पाश, केदार और शूल योग का फल 181
— युग व गोल योग का फल 182
अध्याय तेरह—चन्द्र योगाध्याय 183-194
— चन्द्र योग 183
— अधियोग 183
— सुनफा, अनका, दुरुधरा और केमद्रुम योग 184
— सुनफादि यागों के प्रकार 185
— सुनफा और अनफा योगों का फल 192
— दुरुधरा और केमद्रुम योगों का फल 193
— सुनफादि योग में भौमादि ग्रहों का फल 193
— योगकारक शनि और चन्द्र ग्रह का फल 193
— लग्न और चन्द्रमा से उपचय स्थान में स्थित शुभ ग्रहों का फल 194
अध्याय चौदह—द्विग्रहयोगाध्याय 195-197
— सूर्य का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल 195
— चन्द्र का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल 195
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

— मंगल का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल 196
— बुध, शुक्र व शनि का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल 196
— शुक्र-शनि का युतिफल एवं त्रिग्रह युति का फल 197

अध्याय पन्द्रह—प्रव्रज्यायोगाध्याय 198-202

— प्रव्रज्या योग 198
— दीक्षा के लिए प्रव्रज्या योग में प्रार्थना 198
— शनि संबंधी प्रव्रज्या योग 199
— सन्यासी योग 199

अध्याय सोलह—नक्षत्रफलाध्याय 203-206

— अश्विनी और भरणी नक्षत्र का फल 203
— कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र का फल 203
— मृगाशिरा और आर्द्रा नक्षत्र का फल 203
— पुनर्वसु नक्षत्र का फल 203
— पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र का फल 204
— मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का फ़ल 204
— उत्तराफाल्गुनी और हस्त्र नक्षत्र का फल 204
— चित्रा और स्वाति नक्षत्र का फल 204
— विशाखा और अनुराधा नक्षत्र का फल 205
— ज्येष्ठा और मूला नक्षत्र का फल 205
— पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का फल 205
— श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र का फल 205
— शतभिषा और पुर्वाभाद्रपद नक्षत्र का फल 206
— ठत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र का फल 206

अध्याय सत्तरह—चन्द्र राशिशीलाध्याय 207-212

— मेष राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 207
— वृष राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 207
— मिथुन राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 208
— कर्क राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 208
— सिंह राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 208
— कन्या राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 209
— तुला राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 209
— वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 210
— धनु राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 210
— मकर राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 210

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

— कुंभ राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 211
— मीन राशि में स्थित चन्द्रमा का फल 211
— राशि फल करते समन्वय की विशेष आवश्यकता 211

अध्याय अठारह—राशिशीलाध्याय 213-221

— सूर्य का द्वादश राशि स्थित फल 213
— मंगल का द्वादश राशि स्थित फल 215
— बुध का द्वादश राशि स्थित फल 216
— गुरु का द्वादश राशि स्थित फल 217
— शुक्र का द्वादश राशि स्थित फल 218
— शनि का द्वादश राशि स्थित फल 219
— लग्न फल का निर्णय 220

अध्याय उन्नीस—दृष्टि फलाध्याय 222-228

— मेषादि चार राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टिफल 222
— सिंहादि चार राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टिफल 222
— धनु आदि चार राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टिफल 223
— चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का फल 224
— होरा, द्रेष्काण और द्वादशांश में स्थित चन्द्र पर ग्रह द्रष्टि फल 225
— मंगल व शुक्र के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल 225
— बुध व चन्द्र के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल 226
— सूर्य व गुरूके नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल 226
— शनि के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल 226
— उपर्युक्त फलों पर विशेष विचार 227

अध्याय बीस—भावाफलाध्याय 229-234

— द्वादश भाव में सूर्य का फल 229
— द्वादश भाव में चन्द्र का फल 230
— मंगल व बुध का द्वादश भाव स्थित फल 231
— द्वादश भाव स्थित गुरु का फल 232
— द्वादश भाव स्थित शुक्र का फल 232
— द्वादश भाव स्थित शनि का फल 233
— ग्रहों का भावों में विशेष फल 233

अध्याय इक्कीस—आश्रय योगाध्याय 235-240

— स्वगृही और मित्रगृही ग्रहों का फल 235
— उच्चस्थ ग्रह या नीचस्था ग्रह मित्र या शत्रु ग्रह से दृष्ट या

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

युत होने का फल 235
— कुंभ लग्न का फल 236
— होरा का फल 237
— द्रेष्काण स्थित चन्द्रमा का फल 237
— नवांश का फल 238
— मंगल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र का त्रिशांश फल 239
अध्याय बाईस—प्रकीर्णाध्याय 241-243
— ग्रहों की परस्पर कारक संज्ञा 241
— कारक संज्ञक ग्रह का उदाहरण 241
— कारकान्तर योग 242
— कारक संज्ञक ग्रह का प्रयोजन 242
— युवावस्था का सुख योग 242
— ग्रह फल का काल ज्ञान 243
अध्याय तेईस—अनिष्टाध्याय 244 - 251
— पुत्र व स्त्री सम्बन्धी योग 244
— स्त्री की मृत्यु सम्बन्धी योग 245
— स्त्री-पुरूष अंगहीन योग 245
— वन्ध्या योग 245
— परस्त्रीगमन योग 246
— विभिन्न योग 246
— रोग एवं अंगहीन योग 247
— श्वास व क्षय रोग योग 247
— कुष्ठ रोग योग 247
— नेत्रहीन योग 248
— बधिर योग 248
— पिशाच और अन्ध योग 248
— वात व उन्माद रोग योग 249
— दास योग 249
— विकृत दांत या गंजा योग 249
— बन्धन योग 250
— सेवक योग 250
अध्याय चौबीस—स्त्री जातकाध्याय 252-258
— स्त्री जातक का फल कथन कैसे हो ? 252
— स्त्रियों के स्वभाव व आकार का विचार 252

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
— मंगल राशि गत लग्न और चन्द्रमा का त्रिशांश फल 253
— शुक्र राशि गत लग्न और चन्द्रमा का त्रिशांश फल 253
— कर्क, सिंह, धनु, मीन, मकर व कुंभ में स्थित लग्न और चन्द्रमा का त्रिशांश फल 253
— त्रिशांश फल पर विशेष विचार 254
— कापुरूष पति का योग 255
— वैधव्य योग 255
— माता सहित व्याभिचारिणी होने का योग 256
— पति सम्बन्धी योग 256
— लग्न स्थित ग्रहों का फल 257
— वैधव्य योग 257
— शुभाशुभ योग 257
— प्रव्रज्या योग 258

अध्याय पच्चीस—नैर्याणिकाध्याय 259 - 265
— अष्टम भाव सम्बन्धी मृत्यु विचार 259
— अन्य मृत्यु योग 259
— पूर्वोक्त मृत्यु योग न हों तो मृत्यु कैसे कहें ? 262
— मृत्यु किस स्थान पर होगी ? 263
— मृतक के शरीर की स्थिति का ज्ञान 264
— पूर्व जन्म का ज्ञान 264
— अगले जन्म के लोक का ज्ञान 265

अध्याय छब्बीस—नष्टजातकाध्याय 266-275
— अयन ज्ञान कैसे करें ? 266
— वर्ष एवं ऋतु का ज्ञान 266
— अयन व ऋतु में अन्तर होने पर ऋतु व मास ज्ञान 268
— चन्द्रतिथि, दिन-रात और जन्म काल का ज्ञान 268
— अन्य मतानुसार जन्म मास और राशि का ज्ञान 269
— जन्म राशि ज्ञान का उत्तम प्रकार 269
— जन्म लग्न का ज्ञान 270
— जन्म लग्न ज्ञान का अन्य प्रकार 270
— नष्ट जातक का ज्ञान 271
— राशि गुणक चक्रम्- 271
— ग्रह गुणक चक्रम् 271
— नक्षत्र का ज्ञान 272
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

— अन्य प्रकार के वर्षादि का ज्ञान 273
— वर्षादि का ज्ञान 273
— दिन-रात व नक्षत्र का ज्ञान 273
— इष्टकाल जानने का प्रकार 274
— जन्म नक्षत्र का ज्ञान 274
— नष्टजातकाध्याय का उपसंहार 274

अध्याय—सत्ताईस 276-284

— मेष के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 276
— मेष के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 276
— मेष के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 276
— वृष के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 276
— वृष के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 277
— वृष के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 277
— मिथुन के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 277
— मिथुन के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 277
— मिथुन के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 278
— कर्क के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 278
— कर्क के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 278
— कर्क के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 278
— सिंह के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 279
— सिंह के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 279
— सिंह के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 279
— कन्या के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 279
— कन्या के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 280
— कन्या के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 280
— तुला के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 280
— तुला के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 280
— तुला के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 281
— वृश्चिक के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 281
— वृश्चिक के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 281
— वृश्चिक के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 281
— धनु के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 282
— धनु के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 282
— धनु के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 282
— मकर के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 282

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

— मकर के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 282
— मकर के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 283
— कुंभ के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 283
— कुंभ के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 283
— कुंभ के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 283
— मीन के पहले द्रेष्काण का स्वरूप 284
— मीन के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप 284
— मीन के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप 284

अध्याय अट्ठाईस—उपसंहार स्वरूप **285-287**
— ग्रन्थकर्त्ता की क्षमा याचना 286
— ग्रन्थकर्त्ता का परिचय 287
— ग्रन्थ की समाप्ति 287

चलते-चलते **288**

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नेह वार्त्ता आपके साथ

प्रिय पाठकों,

ज्योतिष का अनुपम ज्ञान हमारे मनीषियों के अथक परिश्रम की देन है । उन्होंने शोध और सतत् साधना के द्वारा अनेक सूत्र निर्धारित किए जिनको व्यवहार में लाने से चराचर जगत् पर पड़ने वाले प्रभाव का पूर्वाभास किया जा सकता है । इस ज्ञान के लिए ज्योतिष का अध्ययन करना सर्वोत्तम है ।

ज्योतिष शास्त्र को षड् वेदांग में गिना गया है और यह वेद की आंख है । ज्योतिष सबसे प्राचीन विज्ञान है और इसका प्रचलन वैदिक काल से ही है । ज्योतिष शास्त्र देश और विदेशों के कोने-कोने में प्रचलित है । इसके अनेक भेद हैं । गणित, फलित और सिद्धान्त ये तीन इसके प्रधान स्कन्ध हैं । इन तीनों स्कन्धों में फलित स्कन्ध लोगों का अतिशय उपकारी होने के कारण लोकप्रिय है । यह गणित व फलित दो रूपों में प्रचलित है । अच्छा गणितज्ञ अच्छा फलितज्ञ नहीं हो सकता और अच्छा फलितज्ञ भी अच्छा गणितज्ञ नहीं हो सकता । फलित गणित से जटिल है । गणित से कुण्डली तो बन सकती है, परंतु उसका फल जानने के लिये फलित सिद्धान्तों का ही सहारा लेना पड़ता है ।

प्रत्येक व्यक्ति शुभाशुभ का पूर्वाभास चाहता है । यह तभी हो सकता है, जब आप समय की गति को पहचान लेंगे । समय की गति को पहचानने के लिये ज्योतिष का ज्ञान होना चाहिए ।

ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान के लिए फलित ग्रन्थकर्त्ताओं में स्कन्धत्रय ज्ञाता वराहमिहिराचार्य प्रधान गिने जाते हैं । इनका जन्म समय सन् 497 ई० के लगभग माना जाता है । वराहमिहिर ने अपने को अवन्ती का निवासी बताया है । उनका देहान्त लगभग सन् 587 ई० में हुआ । वराहमिहिर अवन्ती निवासी आदित्यदास के पुत्र थे । उन्होंने अपने पिता से समस्त शास्त्र को पढ़कर कपित्थ नगर में जाकर सूर्य भगवान् की तपस्या की और वर पाया ।

वराहमिहिर की गणित ज्योतिष की अपेक्षा फलित ज्योतिष में अधिक रुचि थी । उनकी बृहत्संहिता नामक पुस्तक वस्तुत: एक बड़ा ग्रन्थ है जो फलित ज्योतिष पर आधारित है । उनके रचित 'बृहज्जातक' और 'योगयात्रा' नामक ग्रन्थ भी फलित ज्योतिष पर हैं । उनकी रचित पुस्तक पंचसिद्धान्तिका गणित ज्योतिष पर है और वह तत्कालीन ज्योतिष के ज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी है । इस पुस्तक के बिना ज्योतिष इतिहास का हमारा ज्ञान अधूरा ही रह जाता है । अलबरूनी ने अपनी पुस्तक 'भारतवर्ष'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में वराहमिहिर के विषय में लिखते हुए उन्हें अत्यन्त आदर प्रदान किया है। उनके विषय में उसने कहा है—**'वराह के कथन सत्य पर आश्रित हैं, परमेश्वर करे कि सभी बड़े लोग उसके आदर्श का पालन करें।'**

हिन्दी शब्द सागर में वराहमिहिर के सम्बन्ध में कहा है—वराहमिहिर के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के प्रवाद कुछ वचनों के आधार पर प्रचलित हैं। जैसे, ज्योतिर्विदाभरण के एक श्लोक में कालिदास, धन्वन्तरि आदि के साथ वराहमिहिर भी विक्रम की सभा के नौ रत्नों में गिनाये गए हैं। पर इन नौ नामों में से कई एक भिन्न-भिन्न काल के सिद्ध हो चुके हैं। अतः यह श्लोक प्रमाण के योग्य नहीं। अपने 'बृहज्ज़ातक' के उपसंहाराध्याय में वराहमिहिर ने अपना कुछ परिचय दिया है। उसके अनुसार ये अवन्ती (उज्जयिनी) के रहने वाले थे। कपित्थ स्थान में सूर्य देव को प्रसन्न करके इन्होंने वर प्राप्त किया था। इनके पिता का नाम आदित्यदास था।

वराहमिहिर रचित निम्नलिखित ग्रन्थ वर्तमान में मिल जाते हैं— बृहज्जातक, लघुजातक, बृहत्संहिता, समाससंहिता, योगयात्रा, पञ्चसिंद्धान्तिका, विवाहपटल। इन सात ग्रन्थों में फलादेश के लिए "बृहज्जातक" एक अनमोल ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में गर्भाधान से लेकर मरण पर्यन्त समस्त फलों का वर्णन किया गया है। अतः इस ग्रन्थ का पढ़ने से फलादेश करने में कहीं भी त्रुटि नहीं होती है और फलित करने वाला अचूक फल के कारण जनप्रिय हो जाता है।

इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद फलित के लिये किसी अन्य ग्रन्थ को पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

बृहज्जातक की अनेक हिन्दी टीकाएं बाजार में उपलब्ध हैं, लेकिन वह अपनी भाषागत जटिलता और उदाहरणों की अल्पता के कारण सामान्य पाठकं के लिए उपयोगी नहीं हैं। इस कमी को दूर करने के लिए एक बार पुनः नए कलेवर में 'बृहज्जातकम्' की व्याख्या नए नाम 'प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र' नामक पुस्तक के रूप में दे रहे हैं।

वराहमिहिर के प्रसिद्ध टीकाकार भटोत्पल जिन्होंने दर्पण की भांति वराहमिहिर के भावों को हम लोगों के सामने रखा है। जिसको देखकर हम लोग ग्रन्थकार बनते हैं। यदि उनकी टीकाऐं न होतीं तो वराहमिहिर को समझ पाना आसान नहीं था।

बृहज्जातक ग्रन्थ में अट्ठाईस अध्याय हैं जिनके नाम निम्न प्रकार हैं— राशिप्रभेदाध्याय, ग्रहभेदाध्याय, वियोनिजन्माध्याय, निषेकाध्याय, सूतिकाध्याय, अरिष्टाध्याय, आयुर्दायाध्याय, दशान्तर्दशाध्याय, अष्टकवर्गाध्याय, कर्माजीवाध्याय, राजयोगाध्याय, नाभसयोगाध्याय, चन्द्रयोगाध्याय, द्विग्रहयोगाध्याय,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रव्रज्यायोगाध्याय, नक्षत्राफलाध्याय, चन्द्रराशिशीलाध्याय, राशिशीलाध्याय, दृष्टिफलाध्याय, भावाऽध्याय, आश्रययोगाध्याय, प्रकीर्णाध्याय, अनिष्टाध्याय, स्त्रीजातकाध्याय, नैर्याणिकाऽध्याय, नष्टजातकाध्याय, द्रेष्काणस्वरूपाऽध्याय, और उपसंहाराध्याय । इन सभी अठ्ठाईस अध्यायों में फलित के सभी सिद्धान्त आ जाते हैं जिनके आधार पर किसी भी कुण्डली का फल किया जा सकता है ।

लेकिन इस पुस्तक को नये कलेवर में पूर्णत: उपयोगी बनाने के लिए इसमें टिप्पणी और उदाहरण देकर इसके विषय को स्पष्ट करने का पूर्ण प्रयास किया गया है । आशा है कि विद्यार्थी और ज्योतिष सीखने के इच्छुक इससे लाभ उठायेंगे । ज्योतिर्विदों एवं ज्योतिष-प्रेमियों के लिये यह पुस्तक उपयोगी साबित होगी ऐसा विश्वास है । आप इस पुस्तक के अमूल्य ज्ञान को उपयोग में लाकर इसकी व्यावहरिकता को सिद्ध करेंगे ।

इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी कोई अशुद्धि रह गई हो तो उससे अवगत कराकर अगले संस्करण में परिमार्जन के लिए सहयोग देंगे, ऐसी विद्वजनों से आशा है । वैसे भी वराहमिहिर अपनी पुस्तक बृहत्संहिता के उपसंहार के श्लोक 5 में कहते हैं—

ग्रन्थस्य यत् प्रचरतोऽस्य विनाशमेति लेख्याद् बहुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण ।
यद्वा मया कुकृतमल्पमिहाकृतं वा कार्यं तदत्र विदुषा परिहृत्यरागम् ।।

अर्थात् इस प्रचारोन्मुख ग्रन्थ में लिखने के दोष से जो अंग रह जाए सो पढ़े हुए के मुख से भली-भांति जानकर शुद्ध कर लें अथवा इस ग्रन्थ में मैंने जो सामान्य भी कुकृत (प्रमाद में किया हुआ भ्रम) किया है, हे विद्ववर्ग ! उस पर कुछ ध्यान न देकर इस ग्रन्थ में अनुराग प्रकट कीजिए ।

ज्योतिष प्रेमियों के लिये प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों का सरल हिन्दी रूपान्तरण प्रकाशित करने के श्रम और अर्थसाध्य कार्य को करने में प्रकाशक श्री रणधीर सिंह जी ने जो रुचि और उत्साह दिखाया है उसके लिए उनका आभार प्रकट करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूं ।

कुण्डली का फल बतलाने वाली इस अनमोल पुस्तक **'प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र'** आपके लिये कितनी उपयोगी बन पड़ेगी इसका निर्णय तो आप ही करेंगे । इसे पढ़कर स्नेह पत्रों के रूप में अपनें सुझाव और शुभ वचन प्रेषित करना न भूलें, आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी । कुण्डली का फल जानकर अपनी भावी योजनाओं का प्रारूप निर्धारित करके कर्मपथ पर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें ।

अन्तत: उन मनीषियों और विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिनके ज्ञान का उपयोग इस अनुपम कार्य को करने में कर सका । स्नेहिल बन्धु परमिंदर सिंह और

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनोज मित्रा का भी आभारी हूं जिन्होंने इस कार्य को शीघ्रता से समाप्त करने के लिये भरपूर सहयोग दिया। बन्धु-बान्धवों और मित्रजनों का भी ऋणी हूं जिन्होंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार समयासमय सहयोग और अमूल्य सुझाव दिये।

स्नेह पत्रों की सतत् प्रतीक्षा में . . .

18 फरवरी, 1995 आपका अपना

सम्पर्क सूत्र—
ज्योतिष निकेतन
1065/2, शास्त्री नगर,
स्कीम न०-7, गढ़ रोड,
मेरठ - 250 005 (उ० प्र०)
दूरभाष — (0121) 565639

(डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर')

आप भी ज्योतिषी बनें !

ज्योतिषी आप भी बन सकते हैं। पत्राचार द्वारा ज्योतिष सीखकर एक वर्ष में ज्योतिषी बनें और 'ज्योतिष रत्न' की उपाधि ग्रहण करें। विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र के लिए 20/– का मनीआर्डर भेजें। मनीआर्डर फार्म पर संदेश वाले स्थान पर पूरा पता लिखना न भूलें।

डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'
—संचालक
ज्योतिष निकेतन
1065/ 2, शास्त्री नगर,
स्कीम न. 7, गढ़ रोड,
मेरठ- 250005 (उ.प्र.)
फोन- (0121)565639

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र पढ़ने से पूर्व इसे अवश्य पढ़ें !

ज्योतिष शास्त्र मात्र संभावना की ओर संकेत करता है, उस संभावना पर विचार करके विवेक सम्मत बुद्धि से यह निश्चय करना पड़ता है कि फल क्या होगा ? जैसे धुएं को देखकर अग्नि का अनुमान हो जाता है, बिल्कुल वैसे ही कुण्डली की ग्रहस्थिति और उनके पारस्परिक सम्बन्धों अर्थात् ज्योतिष योगों एवं दशान्तर्दशा के आधार पर सम्भावना रूपी भावी फल कुण्डली से जाना जाता है। फल में सत्यता तभी सम्भव है जब हर कोण से एकाग्रचित्त होकर बहुत मनोयोग से कुण्डली का विश्लेषण किया जाए। इसके लिए इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के प्रत्येक सिद्धान्त को महत्वपूर्ण समझते हुए कुण्डली में व्यवहार में लाकर ही फल का पूर्वानुमान करें। किसी एक अध्याय और एक ही सिद्धान्त के आधार पर किया गया फल अचूक नहीं होगा। यह जान लें कि सिद्धान्तों को जान लेना अलग बात है और इनको समझकर सम्यक ढंग से प्रयोग करना अलग। फलित सिद्धान्त कुण्डली का फल कहने में अचूक और अकाट्य तब सिद्ध होंगे जब आप उनको विभिन्न कुण्डलियों में प्रयोग करके अभ्यास कर लेंगे। मात्र जिज्ञासा और परीक्षा के लिए जल्दबाजी में अधूरी और अशुद्ध कुण्डलियों पर इन सिद्धान्तों का प्रयोग कदापि न करें। सर्वप्रथम गणित पक्ष से यह निश्चय कर लें कि कुण्डली शुद्ध और पूर्ण हैं। यदि आपने ऐसा किया तो आप अज्ञात को जानकर विपत्तियों का निज पुरुषार्थ से प्रतिकार करते हुए जीवन लक्ष्य की प्राप्ति कर सकेंगे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य डॉ उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर' की ज्योतिष सिखाने वाली अनमोल पुस्तकें

- ☐ आपकी राशि क्या कहती है ?
- ☐ अंक बोलते हैं।
- ☐ ग्रह परिचय
- ☐ नक्षत्र ज्ञान
- ☐ गोचर ज्योतिष
- ☐ ज्योतिष गुप्त प्रश्नोत्तरी
- ☐ शेयर बाजार और आपका भाग्य
- ☐ मुहूर्त निकालिए
- ☐ लघुपाराशरी
- ☐ भारतीय ज्योतिष संग्रह
- ☐ भृगुसूत्रम्
- ☐ शीघ्रबोध:
- ☐ वृहदवकहड़ाचक्रम्
- ☐ वर्षफल विचार
- ☐ नवग्रह उपासना और ग्रह पीड़ा के उपाय
- ☐ प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र
- ☐ ज्योतिष स्वयं शिक्षक (दोनों खण्ड प्रेस में)
  1. कुण्डली निर्माण खण्ड
  2. फलित खण्ड

मूल्य एवं अन्य जानकारी के लिये लिखें—

प्रकाशक

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

1 राशिप्रभेदाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर राशि सम्बन्धी ज्ञान की विस्तार से चर्चा करेंगे। इस राशि सम्बन्धी ज्ञान को भली-भांति समझकर पढ़ लेना चाहिए क्योंकि कुंडली का फलित करते समय इसकी पग-पग पर आवश्यकता पड़ेगी।

मंगलाचरण

मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मनामात्मेत्यात्मविदां
क्रतुश्च यजतां भर्तामरज्योतिषाम् ॥
लोकानां प्रलयद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौ
वाचं नः ददात्वनेक किरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥ 1 ॥

सर्वप्रथम ग्रन्थकर्त्ता वराहमिहिर ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए अपने इष्टदेव श्री सूर्यनारायण से निज़वाणी की सिद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

अनेक रश्मियों से युक्त, चन्द्र देव को प्रकाशित करने वाले, अपुनर्जन्माओं के जाने का मार्ग, आत्मज्ञानियों की आत्मा स्वरूप, यज्ञ कर्त्ताओं के यज्ञ स्वरूप, देव और ग्रह नक्षत्रादि के स्वामी हैं, क्योंकि सब सूर्य को नमस्कार करते हैं और नक्षत्रादि का उदयास्त उन्हीं के आधीन है। त्रिलोक की उत्पत्ति, पालन और संहार में समर्थ और वेदों में विभिन्न रूपों में वर्णित सूर्य देव मुझे वाणी प्रदान करें।

टिप्पणी— यहां ग्रन्थकर्त्ता वराहमिहिर ग्रन्थ का श्री गणेश करने से पूर्व सूर्य देव का आशीर्वाद मांगते हैं। प्राचीनकाल से ज्योतिष को वेदांगों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है अर्थात् ज्योतिष वेद की आंख है। ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मंगलाचरण लिखने की परम्परा प्राचीन काल से ही है।

ग्रन्थ का प्रयोजन

भूयोभिः पटुबुद्धिभिः पटुधियां होराफलज्ञप्तये
शब्दन्यायसमन्वितेषु बहुशः शास्त्रेषु दृष्टेष्वपि ॥
होरातंत्रमहार्णवप्रतरणे भग्नोद्यमानामहं स्वल्पं
वृत्तविचित्रमर्थबहुलं शास्त्रप्लवं प्रारभे ॥ 2 ॥

अनेक चतुर चिन्तकों द्वारा प्रतिपादित, व्याकरण और न्याय से युक्त अनेक शास्त्रों के सहयोग से भी होराशास्त्र (फलित ज्योतिष) रूपी महासागर को पार करने में असमर्थ रह गए हैं, उनके लिए इस होराशास्त्र रुपी महासागर को पार करने के लिए और जातकों की जन्मपत्री का फल कहने के लिए होरा शास्त्र रूपी नौका (बृहज्जातक) बनाना प्रारम्भ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

करता हूँ।

होरा शब्द का अर्थ

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वांछंति पूर्वापरवर्णलोपात्।
कर्माजितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पक्तिं समभिव्यनक्ति ॥ 3 ॥

अनेक विद्वान **'अहोरात्र'** का विकल्प **'होरा'** को कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि 'अहोरात्र' शब्द के पूर्वाक्षर **'अ'** और अन्ताक्षर **'त्र'** का लोप हो जाने से मध्य में शेष शब्द होरा रह जाता है। यह दिन और रात्रि में रहने के कारण होरा (लग्न) का नाम है। यह लग्न (द्वादशराशि) पूर्व जन्म में अर्जित शुभाशुभ कर्मों के फल को प्रकाशित करता है।

कालपुरुष के अंग

कालांगानि वरांगमाननमुरो
हृत्क्रोडवासोभृतोबस्तिर्व्यंजनमूरुजानुयुगुले जंघे ततोऽघ्रिद्वयम् ॥
मेषाश्विप्रथमा नवर्क्षचरणाश्चक्रस्थिता
राशयोराशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं चैकार्थसंप्रत्यया: ॥ 4 ॥

कालपुरुष (Time Person) के अंगों को भचक्र की बारह राशि में विभाजित किया गया है अर्थात् जन्मकाल को पुरुषाकार रूप में मानकर उसके मस्तक में मेष, मुख पर वृष, छाती पर मिथुन, हृदय पर कर्क, पेट पर सिंह, कमर पर कन्या, नाभि के नीचे (Pelris) तुला, जननांगों पर वृश्चिक, जाघों पर धनु, घुटनों पर मकर, टांगों पर कुंभ और पैरों पर मीन का प्रभाव समझना चाहिए।

राशि और शरीरांग चक्रम्

क्रम	राशि	शरीर का अंग	क्रम	राशि	शरीर का अंग
1.	मेष	मस्तक (Head)	7	तुला	नाभि के नीचे (Pelvis)
2.	वृष	चेहरा (Face)	8	वृश्चिक	जननांग (Reproductive Organs)
3.	मिथुन	सीना (Chest)	9	धनु	जांघें (Thighs)
4.	कर्क	हृदय (Heart)	10	मकर	घुटने (Knees)
5.	सिंह	पेट (Belly)	11.	कुंभ	टांगे (Legs)
6.	कन्या	कमर (Waist)	12.	मीन	पैर (Feet)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यहां प्रयोजन यह है कि जन्म समय में जिन राशियों पर शुभग्रह होते हैं वे अंग पुष्ट और जिन अंगों पर अशुभ ग्रह होते हैं वे अंग निर्बल होते हैं।
मेषादि राशियाँ अश्विनी आदि नक्षत्रों के नौ-नौ चरण की होती हैं। राशि, क्षेत्र, गृह, ऋक्ष, भ, भवन—ये सब राशि के पर्यायवाची हैं।

विषय की स्पष्टता और सरलता के लिए यहां 'राशि और शरीरांग चक्रम्' एवं 'राशि नक्षत्र चक्रम्' बनाकर दे रहे हैं जो राशि सम्बन्धी तुरन्त ज्ञान (Ready Reference) के लिए उपयोगी हैं।

राशि नक्षत्र चक्रम्

क्रम	राशि	नक्षत्र क्रम सं०	नक्षत्र	चरण	नक्षत्र चरणाक्षर
1.	मेष	1	अश्विनी	4	चू चे चो ला
		2	भरणी	4	ली लू ले लो
		3	कृत्तिका	1	आ
2.	वृष	3	कृत्तिका	3	इ उ ए
		4	रोहिणी	4	ओ वा वी वू
		5	मृगशिरा	2	वे वो
3.	मिथुन	5	मृगशिरा	2	का की
		6	आर्द्रा	4	कू घ ङ छ
		7	पुनर्वसु	3	के को हा
4.	कर्क	7	पुनर्वसु	1	ही
		8	पुष्य	4	हू हे हो डा
		9	आश्लेषा	4	डी डू डे डो
5.	सिंह	10	मघा	4	मा मी मू मे
		11	पूर्वाफाल्गुनी	4	मो टा टी टू

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

		12	उत्तराफाल्गुनी	1	टे
6.	कन्या	12	उत्तराफाल्गुनी	3	टो पा पी
		13	हस्त	4	पू ष ण ठ
		14	चित्रा	2	पे पो
7.	तुला	14	चित्रा	2	रा री
		15	स्वाति	4	रू रे रो ता
		16	विशाखा	3	ती तू ते
8.	वृश्चिक	16	विशाखा	1	तो
		17	अनुराधा	4	ना नी नू ने
		18	ज्येष्ठा	4	नो या यी यू
9.	धनु	19	मूला	4	ये यो भा भी
		20	पूर्वाषाढ़ा	4	भू धा फा ढा
		21	उत्तराषाढ़ा	1	भे
10.	मकर	21	उत्तराषाढ़ा	3	भो जा जी
		22	श्रवण	4	खी खू खे खो
		23.	धनिष्ठा	2	गा गी
11.	कुंभ	23	धनिष्ठा	2	गू गे
		24	शतभिषा	4	गो सा सी सू
		25	पूर्वा भाद्रपद	3	से सो दा
12.	मीन	25	पूर्वा भाद्रपद	1	दी
		26	उत्तरा भाद्रपद	4	दू थ झ ञ
		27	रेवती	4	दे दो चा ची

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वादश राशियों के स्वरूप

मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं
सवीणं चापी नरोऽश्वजघनो मकरो पृगास्यः ।
तौली ससस्यदहना प्लवगा च कन्या
शेषाः स्वनामसदृशाः स्वचराश्च सर्वे ॥ 5 ॥

अब राशियों का स्वरूप कहते हैं—दो जुड़वाँ मछलियां, एक के मुख में दूसरे की पूँछ होने पर जो स्वरूप बनता है वही **मीन राशि** का स्वरूप है । एक ऐसा पुरुष जिसके कन्धे पर घड़ा रखा हुआ है, यह स्वरूप **कुंभ राशि** का है । **मिथुन राशि** का स्वरूप स्त्री-पुरुष का जोड़ा है, पुरुष के हाथ में गदा और स्त्री के हाथ में वीणा है । **धनु राशि** का स्वरूप एक पुरुष जो कमर से ऊपर धनुष धारण किए हुए है और कमर से नीचे का हिस्सा उसका घोड़े की तरह है । **मकर राशि** का स्वरूप हिरन के सदृश मुख वाला पुरुष जिसका धड़मगरमच्छ की तरह है । **तुला राशि** का स्वरूप हाथ में तराजू लिए हुए पुरुष के समान है । **कन्या राशि** का स्वरूप एक हाथ में गेहूँ की बाली और दूसरे हाथ में अग्नि लिए हुए कुंवारी कन्या नाव में बैठी हुई है । शेष राशियों का नामानुरूप स्वरूप होता है, जैसे—**मेष राशि** का मेढ़ा के समान, **वृष राशि** का स्वरूप बैल के समान; **कर्क राशि** का स्वरूप केकड़े के समान, **सिंह राशि** का स्वरूप शेर के समान और **वृश्चिक राशि** का स्वरूप बिच्छु के समान होता है ।

टिप्पणी— यहां यह बता दें कि जिस प्रकार राशियों का स्वरूप होता है उसी प्रकार इनका (राशियों का) स्थान विशेष भी होता है, देखें—**'राशि स्थान चक्रम्'** । इन सबका उपयोग प्रश्न विचार या खोयी या चोरी गई वस्तु का विचार करते समय होता है ।

राशि स्थान चक्रम्

क्रम	राशि	स्थान	क्रम	राशि	स्थान
1.	मेष	उपवन, जंगल	7.	तुला	बाजार, व्यापारिक स्थल, सडक़
2.	वृष	खेत पर्वत और ग्राम	8.	वृश्चिक	गड्ढा और बिल
3.	मिथुन	शयनकक्ष	9.	धनु	ग्राम, छावनी
4.	कर्क	जलाशय	10.	मकर	जंगल, जलाशय
5.	सिंह	जंगल	11.	कुंभ	ग्राम, भूमि
6.	कन्या	नौका	12.	मीन	जलाशय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि का स्वभाव चित्रों में

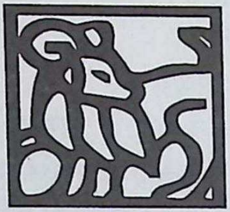
1. मेष

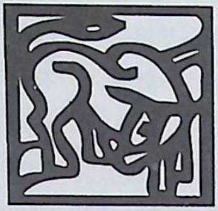
2. वृष

3. मिथुन

4. कर्क

5. सिंह

6. कन्या

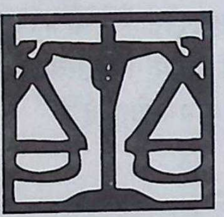
7. तुला

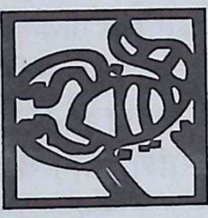
8. वृश्चिक

9. धनु

10. मकर

11. कुंभ

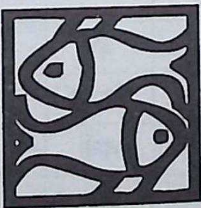
12. मीन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेषादि राशियों, नवांशों एवं द्वादशांशों के स्वामी

क्षितिजसितज्ञचन्द्र विसौम्यसितावनिजाः
सुरगुरुमन्दसौरिगुरवक्ष्च गृहांशकपाः
अजमृगतौलिचन्द्रभवनादिनवांशविधिर्भवनसमांशकाधिपतयः
स्वगृहात् क्रमशः ॥ 6 ॥

मंगल (मेष), शुक्र (वृष), बुध (मिथुन), चन्द्र (कर्क), सूर्य (सिंह), बुध (कन्या), शुक्र (तुला), मंगल (वृश्चिक), गुरु (धनु), शनि (मकर) , शनि (कुंभ) , और गुरु (मीन) मेषादि राशियों के स्वामी हैं । देखें—'राशि स्वामी चक्रम्'

राशि स्वामी चक्रम्

राशि	मेष वृश्चिक	वृष तुला	मिथुन कन्या	कर्क	सिंह	धनु मीन	मकर कुंभ
स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	गुरु	शनि

मेष, मकर, तुला और कर्क इन चार राशियों से आरम्भ करके नौ-नौ राशियों के नवांश होते हैं अर्थात् **मेष राशि में पहला नवांश मेष का**, दूसरा वृष का, तीसरा मिथुन का, चौथा कर्क का, पाँचवां सिंह का, छठा कन्या का, सातवां तुला का, आठवां वृश्चिक का और नौवाँ धनु का नवांश होता है । **वृष राशि में पहला नवांश मकर का**, दूसरा नवांश कुंभ का, तीसरा मीन का, चौथा मेष का, पांचवां वृष का, छठा मिथुन का, सातवां

नवांश चक्रम्

नवांश	भुक्त		मेष 1	सिहं 5	धनु 9	वृष 2	क. 6	मक. 10	मिथु. 3	तुला 7	कुंभ 11	कर्क 4	वृशि. 8	मीन 12
	अंश	कला												
पहला	3	20	मेष (मंगल)			मकर (शनि)			तुला (शुक्र)			कर्क (चन्द्र)		
दूसरा	6	40	वृष (शुक्र)			कुंभ (शनि)			वृश्चिक (मंगल)			सिंह (सूर्य)		
तीसरा	10	00	मिथुन (बुध)			मीन (गुरु)			धनु (गुरु)			कन्या (बुध)		
चौथा	13	20	कर्क (चन्द्र)			मेष (मंगल)			मकर (शनि)			तुला (बुध)		
पांचवां	16	40	सिंह (सूर्य)			वृष (शुक्र)			कुंभ (शनि)			वृश्चिक(मंगल)		
छठा	20	00	कन्या (बुध)			मिथुन (बुध)			मीन (गुरु)			धनु (गुरु)		
सातवां	23	20	तुला (शुक्र)			कर्क (चन्द्र)			मेष (मंगल)			मकर (शनि)		
आठवां	26	40	वृश्चिक (मंगल)			सिंह (सूर्य)			वृष (शुक्र)			कुंभ (शनि)		
नौवाँ	30	00	धनु (गुरु)			कन्या (बुध)			मिथुन (बुध)			मीन (गुरु)		

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्क का, आठवां सिंह का और नौवाँ कन्या का नवांश होता है । **मिथुन राशि में पहला नवांश तुला का** और क्रम से नौवाँ मिथुन का नवांश होता है, इसी प्रकार **कर्क राशि में पहला नवांश कर्क का** और नौवाँ मीन राशि का नवांश होता है । इसी प्रकार सिंह में मेषादि, कन्या में मकरादि, तुला में तुलादि, वृश्चिक में कर्कादि, धनु में मेषादि, मकर में मकरादि, कुंभ में तुलादि और मीन में कर्कादि का नवांश होता है । स्पष्टता के लिये देखें —'**नवांश चक्रम्**' ।

एक राशि में 30 अंश होते हैं उसमें नौ का भाग देने से नवांश का एक भाग (30 ÷ 9 = 3 अंश 20 कला अर्थात् 200 कला या 3.3333333 अंश) 3 अंश 20 कला का होता है ।

मेषादि द्वादश राशियों में अपने से ही आरम्भ करके द्वादशांश होते हैं । जैसे मेष राशि में प्रथम द्वादशांश मेष का, दूसरा वृष का इत्यादि, वृष में पहला वृष का, दूसरा मिथुन का इत्यादि, इसी प्रकार सभी राशियों में सबके द्वादशांश समझने चाहिएं । एक राशि में 30 अंश होते हैं इसमें 12 का भाग देने पर (30 ÷ 12 = 2 अंश 30 कला अर्थात् 2.5 अंश या 150 कला) एक द्वादशांश 2 अंश 30 कला का होता है ।

स्पष्टता और सरलता के लियें देखें—'**द्वादशांश चक्रम्**' पृष्ठ 33 पर ।

द्वादश राशियों के त्रिशांश स्वामी

कुजरविजगुरुज्ञशुक्रभागाः पवनसमीरणकौर्पिजूकलेयाः
अयुजि युजि तु भे विपर्ययस्थाः शशिभवनालिझषांतमृक्षसंधिः ॥ 7 ॥

विषम राशियों (मेष, मिथुन सिंह, तुला, धनु और कुंभ) में 5,5,8,7 और 5 इन अंशों में क्रम से मंगल, शनि, गुरु बुध और शुक्र त्रिशांश के स्वामी होते हैं । किन्तु सम राशियों (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन) में विपरीत क्रम से त्रिशांश के स्वामी होते हैं अर्थात् 5,7,8,5 और 5 इन अंशों के क्रम से शुक्र, बुध, गुरु, शनि और मंगल त्रिशांश के स्वामी होते हैं । स्पष्ट है कि विषम राशि में 0 से 5 अंश तक मंगल, 6से 10

त्रिशांश स्वामी चक्रम्

अंश	0 – 5	6 – 10	11 – 18	19 – 25	26 – 30
त्रिशांश स्वामी सम राशि में	मंगल	शनि	गुरु	बुध	शुक्र
अंश	0 – 5	6 – 12	13 – 20	21 – 25	26 – 30
त्रिशांश स्वामी विषम राशि में	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	मंगल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वादशांश चक्रम्

द्वादशांश	भुक्त		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
	अंश	कला												
पहला	2	30	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू
दूसरा	5	00	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल
तीसरा	7	30	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	२ शुक्र
चौथा	10	00	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध
पांचवां	12	30	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 गुरू
छठा	15	00	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 शुक्र	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य
सातवां	17	30	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	२ शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध
आठवां	20	00	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र
नौवां	22	30	9 गुरु	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल
दसवां	25	00	10 शनि	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू
ग्यारहवां	27	30	11 शनि	12 गुरू	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि
बारहवां	30	00	12 गुरु	1 मंगल	2 शुक्र	3 बुध	4 चन्द्र	5 सूर्य	6 बुध	7 शुक्र	8 मंगल	9 गुरू	10 शनि	11 शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंश तक शनि, 11 से 18 अंश तक गुरु, 19 से 25 अंश तक बुध और 26 से 30 अंश तक शुक्र त्रिशांश पति होता है तथा सम राशि में 0 से 5 अंश तक शुक्र, 6 से 12 अंश तक बुध, 13 से 20 अंश तक गुरु, 21 से 25 अंश तक शनि और 26 से 30 अंश तक मंगल त्रिशांश पति होता है। देखें—**'त्रिशांश स्वामी चक्रम्'** पृष्ठ 32 पर।

कर्क, वृश्चिक और मीन राशि के अन्तिम नवांश (नौवें) में जहां पर नक्षत्र राशियों का एक काल में अन्त हो जाता है उसी का नाम ऋक्ष सन्धि है। इसको गडान्त भी कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों के अन्तिम भाग गडान्त नाम से लोक प्रचलित हैं। आश्लेषा के अन्त में कर्क का अन्त, ज्येष्ठा के अन्त में वृश्चिक का अन्त और रेवती नक्षत्र के अन्त में मीन का अन्त होता है।

टिप्पणी— लेखक ने त्रिशांश पति का उपयोग चौबीसवें अध्याय में स्त्री जातक के लिये बतलाया है।

मेषादि राशियों के नाम

क्रियतावुरिजितुमकुलीरलेयपाथोनजूककौर्प्याख्याः।
तौक्षिक आकोकेरो रोहृद्रोगश्चांत्यभं चेत्थम्॥ 8॥

क्रिय (Kriya), तावुरि (Tavuri), जितुम (Jituma), कुलीर (Kulira), लेय (Leya) पाथोन (Pathona), जूक (Juka), कौर्प्य (Kaurpya), तौक्षिक (Taukisika), आकोकेर (Akokero), हृदोग (Hridroga) और अन्त्यभ (Antyabham)—ये मेषादि बारह राशियों के क्रम से नाम हैं। देखें—**'राशि नाम चक्रम्'**।

टिप्पणी—उपर्युक्त सभी द्वादश राशियों के ग्रीक नाम हैं। स्पष्ट है ग्रीक नाम भी हिन्दु शब्दों से समानता रखते हैं।

राशि नाम चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
नाम	क्रिय	तावुरि	जितुम	कुलीर	लेय	पाथोन
राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
नाम	जूक	कौर्प्य	तौक्षिक	आकोकेर	हृदोग	अन्त्यभ

ग्रहों की षडवर्ग की संज्ञा

द्रेष्काणहोरानवभागसंज्ञास्त्रिंशांशकद्वादश संज्ञिताश्चं।
क्षेत्रं च यद्यस्य स तस्य वर्गो होरेति लग्नं भवनस्य चार्द्धम्॥ 9॥

द्रेष्काण, होरा, नवमांश, द्वादशांश त्रिशांश और लग्न ये षडवर्ग संज्ञक हैं। यदि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह अपने वर्ग अर्थात् अपने द्रेष्काण, नवांश, त्रिशांश, द्वादशांश और स्वक्षेत्र में होता है तो शुभ स्थिति में माना जाता है। होरा का प्रयोग लग्नऔर राशि के आधे भाग के लिए प्रयुक्त होता है।

टिप्पणी—प्रत्येक राशि को षड्वर्ग में विभाजित कर सकते हैं—पहला लग्न (स्वक्षेत्र), राशि के दो समान भाग (होरा), तीसरा राशि का तीसरा भाग (द्रेष्काण), चौथा राशि का नौवां भाग (नवांश), पांचवां राशि का बारहवां भाग (द्वादशांश) और छठे राशि का तीसवां भाग (त्रिशांश) होता है। ग्रह के राशि में छह विभाग षडवर्ग (Six Division) कहलाते हैं।

राशियों की रात्रिबली-दिनबली और पृष्ठोदयादि संज्ञा

गोऽजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः
पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव।
शीर्षोदया दिनबलाश्च भवंति शेषा लग्नं
समेत्युभयतः पृथुरोमयुग्मम् ॥ 10 ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर—ये छह राशियां रात्रि बली तथा इसमें मिथुन को छोड़कर शेष पांच राशियां (मेष, वृष, कर्क, धनु और मकर) पृष्ठोदय राशि हैं। शेष राशियां (सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ) दिनबली हैं और शीर्षोदय राशि भी हैं। मिथुन भी शीर्षोदय राशि है। केवल मीन राशि उभयोदय राशि है और दिन-रात्रि दोनों में बली है।

उदय और दिन-रात्रि राशि बली चक्रम्

उदय	बली	राशियां				
पृष्ठोदय	रात्रि	मेष	वृष	कर्क	धनु	मकर
शीर्षोदय	दिन	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	कुम्भ
शीर्षोदय	रात्रि	×	×	मिथुन	×	×
उभयोदय	दिन-रात बली	×	×	मीन	×	×

क्रूरादि, पुरुषादि, चरादि, दिशादि, होरा एवं द्रेष्काण ज्ञान

क्रूरः सौम्यः पुरुषवनिते ते चरागद्विदेहाः
प्रागादीशाः क्रियवृषनृयुक्कर्कटाः सत्रिकोणाः ॥
मार्तंडेंद्वोरयुजि समभे चंद्रभान्वोश्च होरे द्रेष्काणाः
स्युः स्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिपानाम् ॥ 11 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेषादि राशियों की क्रम से क्रूर व सौम्य, पुरुष व स्त्री, चर, स्थिर व द्विस्वभाव सञ्ज्ञा होती है । जैसे मेष क्रूर, वृष सौम्य, मिथुन क्रूर, कर्क सौम्य, सिंह क्रूर, कन्या सौम्य, तुला क्रूर, वृश्चिक सौम्य, धनु क्रूर, मकर सौम्य, कुम्भ क्रूर, मीन राशि सौम्य है ।

इसी प्रकार मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पुरुष, कर्क स्त्री, सिंह पुरुष, कन्या स्त्री, तुला पुरुष, वृश्चिक स्त्री, धनु पुरुष, मकर स्त्री, कुंभ पुरुष एवं मीन राशि स्त्री है ।

इसी प्रकार मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन द्विस्भाव, कर्क चर, सिंह स्थिर, कन्या द्विस्वभाव, तुला चर, वृश्चिक स्थिर, धनु द्विस्वभाव, मकर चर, कुंभ स्थिर एवं मीन द्विस्वभावं राशि है ।

मेष, वृष, मिथुन एवं कर्क राशियां अपने से पंचम और नवम से युत पूर्वादि (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर) दिशाओं के स्वामी होते हैं अर्थात् मेष, सिंह व धनु की पूर्व दिशा, मिथुन, तुला व कुंभ की दक्षिण दिशा एवं कर्क, वृश्चिक व मीन की उत्तर दिशा होती है ।

समराशि में पन्द्रह अंश तक पहले चन्द्रमा की और सोलह से तीस अंश तक सूर्य की होरा रहती है, इसी प्रकार विषम राशि में पहले 15 अंश तक सूर्य की होरा और 16 से 30 अंश तक चन्द्रमा की होरा रहती है ।

क्रूरादि , पुरुषादि , चरादि एवं दिशादि चक्रम्

राशि	संज्ञा	संज्ञा	संज्ञा	दिशा
मेष	क्रूर	पुरुष	चर	पूर्व
वृष	सौम्य	स्त्री	स्थिर	दक्षिण
मिथुन	क्रूर	पुरुष	द्विस्वभाव	पश्चिम
कर्क	सौम्य	स्त्री	चर	उत्तर
सिंह	क्रूर	पुरुष	स्थिर	पूर्व
कन्या	सौम्य	स्त्री	द्विस्वभाव	दक्षिण
तुला	क्रूर	पुरुष	चर	पश्चिम
वृश्चिक	सौम्य	स्त्री	स्थिर	उत्तर
धनु	क्रूर	पुरुष	द्विस्वभाव	पूर्व
मकर	सौम्य	स्त्री	चर	दक्षिण
कुंभ	क्रूर	पुरुष	स्थिर	पश्चिम
मीन	सौम्य	स्त्री	द्विस्वभाव	उत्तर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि (30 अंश) का तृतीय भाग (10 अंश) द्रेष्काण का मान होता है । अत: एक राशि में दस-दस अंशों के तीन भाग होते हैं । इस प्रकार प्रत्येक राशि में तीन-तीन द्रेष्काण होते हैं । उनमें दस अंश तक पहला, 10 से 20 अंश तक दूसरा और 20 से 30 अंश तक तीसरा द्रेष्काण होता है । पहले द्रेष्काण में उसी राशि का स्वामी, दूसरे द्रेष्काण में उससे पांचवी राशि का स्वामी, तीसरे द्रेष्काण में उससे नवम राशि का स्वामी द्रेष्काण पति होता है । जैसे मेष राशि में 10 अंश तक पहला द्रेष्काण मेष के स्वामी मंगल का, 10 से 20 अंश तक दूसरा द्रेष्काण मेष से पंचम राशि सिंह के स्वामी सूर्य का और 20 से 30 अंश तक तीसरा द्रेष्काण मेष से नवम राशि धनु के स्वामी गुरु का होता है । इसी प्रकार शेष राशियों के लिए समझना चाहिए ।

स्पष्टत: के लिये देखें—' क्रूर-सौम्य, पुरुष-स्त्री, चर-स्थिर-द्विस्वभाव एवं दिशादि चक्रम्, 'होरा चक्रम्' एवं द्रेष्काण चक्रम्' ।

होरा चक्रम्

राशि	15 अंश तक पहली होरा	30 अंश तक दूसरी होरा
मेष	सूर्य	चन्द्र
वृष	चन्द्र	सूर्य
मिथुन	सूर्य	चन्द्र
कर्क	चन्द्र	सूर्य
सिंह	सूर्य	चन्द्र
कन्या	चन्द्र	सूर्य
तुला	सूर्य	चन्द्र
वृश्चिक	चन्द्र	सूर्य
धनु	सूर्य	चन्द्र
मकर	चन्द्र	सूर्य
कुंभ	सूर्य	चन्द्र
मीन	चन्द्र	सूर्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रेष्काण चक्रम्

राशि	पहला द्रेष्काण 10 अंश तक	दूसरा द्रेष्काण 20 अंश तक	तीसरा द्रेष्काण 30 अंश तक
मेष	मंगल	सूर्य	गुरु
वृष	शुक्र	बुध	शनि
मिथुन	बुध	शुक्र	शनि
कर्क	चन्द्र	मंगल	गुरु
सिंह	सूर्य	गुरु	मंगल
कन्या	बुध	शनि	शुक्र
तुला	शुक्र	शनि	बुध
वृश्चिक	मंगल	गुरु	चन्द्र
धनु	गुरु	मंगल	सूर्य
मकर	शनि	शुक्र	बुध
कुंभ	शनि	बुध	शुक्र
मीन	गुरु	चन्द्र	मंगल

मतान्तर से होरा-द्रेष्काण के स्वामी

केचित्तु होरां प्रथमां भपस्य वांछंति लाभाधिपतेर्द्धितीयाम्।
द्रेष्काणसंज्ञामपि वर्णयंति स्वद्वादशैकादशराशिपानाम्॥ 12॥

अन्य ज्योतिर्विदों (आचार्यों) के मतानुसार प्रथम होरेश (होरा का स्वामी) उस राशि का स्वामी और दूसरा होरेश उस राशि से ग्यारहवीं राशि का स्वामी होता है। जैसे मेष में पहला होरेश मंगल और दूसरा होरेश ग्यारहवी राशि कुम्भ का स्वामी शनि होगा। इसी प्रकार शेष राशियों के लिए समझना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतान्तर से होरा चक्रम्

राशि	पहली होरा 15 अंश तक	दूसरी होरा 30 अंश तक
मेष	मंगल (1)	शनि (11)
वृष	शुक्र (2)	गुरु (12)
मिथुन	बुध (3)	मंगल (1)
कर्क	चन्द्र (4)	शुक्र (2)
सिंह	सूर्य (5)	बुध (3)
कन्या	बुध (6)	चन्द्र (4)
तुला	शुक्र (7)	सूर्य (5)
वृश्चिक	मंगल (8)	बुध (6)
धनु	गुरु (9)	शुक्र (7)
मकर	शनि (10)	मंगल (8)
कुम्भ	शनि (11)	गुरु (9)
मीन	गुरु (12)	शनि (10)

पहले द्रेष्काण का स्वामी उसी राशि का स्वामी, दूसरे द्रेष्काण का स्वामी उससे बारहवीं राशि का स्वामी और तीसरे द्रेष्काण का स्वामी उससे ग्यारहवीं राशि का स्वामी होता है। जैसे मेष राशि का पहला द्रेष्काण मेष का स्वामी मंगल, दूसरा द्रेष्काण मेष से बारहवीं राशि मीन का स्वामी गुरु और तीसरा द्रेष्काण मेष से ग्यारहवीं राशि कुंभ का स्वामी शनि होता है। इसी प्रकार शेष वृषादि राशियों के विषय में समझना चाहिए।

स्पष्टतः के लिए देखें 'मतान्तर से होरा चक्रम्' एवं 'मतान्तर से द्रेष्काण चक्रम्'

यह मत गर्ग और उसके अनुयायियों का है। लेखक का मत 11वें श्लोक में अंकित है जो कि सत्याचार्य के मत से मिलता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतान्तर से द्रेष्काण चक्रम

राशि	पहला द्रेष्काण 10 अंश तक	दूसरा द्रेष्काण 20 अंश तक	तीसरा द्रेष्काण 30 अंश तक
मेष	मंगल (1)	गुरु (12)	शनि (11)
वृष	शुक्र (2)	मंगल (1)	गुरु (12)
मिथुन	बुध (3)	शुक्र (2)	मंगल (1)
कर्क	चन्द्र (4)	बुध (3)	शुक्र (2)
सिंह	सूर्य (5)	चन्द्र (4)	बुध (3)
कन्या	बुध (6)	सूर्य (5)	चन्द्र (4)
तुला	शुक्र (7)	बुध (6)	सूर्य (5)
वृश्चिक	मंगल (8)	शुक्र (7)	बुध (6)
धनु	गुरु (9)	मंगल (8)	शुक्र (7)
मकर	शनि (10)	गुरु (9)	बुध (8)
कुंभ	शनि (11)	शनि (10)	गुरु (9)
मीन	गुरु (12)	शनि (11)	शनि (10)

ग्रहों के उच्च एवं नीच स्थान

अजवृषभमृगांगनाकुलीरा झषवणिजा च दिवाकरादितुंगाः।
दशशिखिमनुयुक्तिथीद्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्च ' तेऽस्तनीचाः ॥ 13 ॥

मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन, तुला—इन राशियों के स्वामी क्रम से 10, 3, 28, 15, 5, 27,20, अंश पर्यन्त सूर्यादि ग्रहों के उच्च स्थान हैं तथा इन राशियों की सप्तम राशियों में उक्त अंश पर्यन्त सूर्यादि ग्रहों के नीच स्थान हैं। जैसे सूर्य मेष में 10 अंश पर्यन्त उच्च तथा मेष से सप्तम राशि तुला में 10 अंश पर्यन्त नीच का होता है। चन्द्रमा वृष के 3 अंश पर्यन्त उच्च और वृष से सप्तम राशि वृश्चिक में 3 अंश पर्यन्त नीच का होता है। मंगल मकर में 28 अंश पर्यन्त उच्च और मकर से सप्तम राशि कर्क में 28 अंश पर्यन्त नीच का होता है। बुध कन्या में 15 अंश पर्यन्त उच्च और कन्या से सप्तम राशि मीन में 15 अंश पर्यन्त नीच का होता है। गुरु कर्क में 5 अंश पर्यन्त उच्च का और कर्क से सप्तम राशि मकर में 5 अंश पर्यन्त नीच का होता है। शुक्र मीन राशि में 27 अंश पर्यन्त उच्च का और मीन से सप्तम राशि कन्या में 27 अंश पर्यन्त नीच का होता है। शनि तुला राशि में 20 अंश पर्यन्त उच्च का और तुला से सप्तम राशि मेष में 20 अंश पर्यन्त नीच का होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्टतः के लिए देखें—'ग्रह उच्च नीच चक्रम्'

ग्रह उच्च नीच चक्रम्

ग्रह		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च	राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
	अंश	10	3	28	15	5	27	20
नीच	राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
	अंश	10	3	28	15	5	27	20

सूर्यादि ग्रहों के वर्गोत्तम नवांश एवं त्रिकोण

वर्गोत्तमश्चरगृहादिषु पूर्वमध्यपर्यन्ततः शुभफलानवभागसंज्ञाः ।
सिंहो वृषप्रथमषष्ठहयाङ्गतौलिकुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्यात् ॥ 14 ॥

चरादि राशि में पूर्व, मध्य और अन्त्य के नवांश की वर्गोत्तम संज्ञा होती है। कहने का तात्पर्य यही है कि मेष, कर्क तुला व मकर रूपी चर राशि का पहला नवांश, वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ रूपी स्थिर राशि का पांचवां नवांश और मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशि का नौवां नवांश की वर्गोत्तम संज्ञा होती है।

सूर्यादि ग्रहों की क्रम से सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला और कुम्भ मूल त्रिकोण हैं अर्थात् सूर्य की सिंह, चन्द्रमा की वृष, मंगल की मेष, बुध की कन्या, गुरु की धनु, शुक्र की तुला और शनि की कुंभ राशि मूल त्रिकोण है। इसमें वर्गोत्तम ग्रह स्थित हों तो अधिक शुभ और लाभदायी होते हैं।

वर्गोत्तम नवांश चक्रम्

राशि	मेष	कर्क	तुला	मकर
वर्गोत्तम नवांश	पहला मंगल (1)	पहला चन्द्र (4)	पहला शुक्र (7)	पहला शनि (१०)
राशि	वृष	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ
वर्गोत्तम नवांश	पांचवां शुक्र (2)	पांचवां सूर्य (५)	पांचवां मंगल (8)	पांचवां शनि (11)
राशि	मिथुन	कन्या	धनु	मीन
वर्गोत्तम नवांश	नौवां बुध (3)	नौवां बुध (६)	नौवां गुरु (2)	नौवां गुरु (12)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यादि ग्रहों की मूलत्रिकोण राशि चक्रम्

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मूल त्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ

लग्नादि द्वादश भावों की संज्ञा

होरादयस्तनु कुटुम्बसहो-
त्थबन्धुपुत्रारिपत्निमरणानि शुभास्पदायाः ।
रिः फारख्यमित्युपचयान्यरिकर्मला-
भदुश्चिक्यसंज्ञित गृहाणि न नित्यमेके ॥ 15 ॥

लग्नादि द्वादश भावों के क्रम से तनु (Body) , कुटुम्ब (Relatives), सहोत्थ (Brothers), बन्धु या मित्र (Friends) पुत्र (Sons), अरि (Enemies), पत्नि (Wives), मरण (Death), शुभ (Auspicious), आस्पद (Profession, Honours, Dignity), आय (Income), और रिष्फ (Expenditure) संज्ञा है अर्थात् द्वादश भाव से लग्न से शरीर, द्वितीय भाव से कुटुम्ब, तृतीय भाव से भाई, चतुर्थ भाव से बन्धु, पंचम भाव से सन्तान, षष्ठ भाव से शत्रु, सप्तम भाव से पत्नी, अष्टम भाव से मृत्यु, नवम भाव से शुभता, दशम भाव से आजीविका, एकादश भाव से आय और द्वादश भाव से खर्च का विचार करते हैं ।

षष्ठ, दशम, एकादश और तृतीय भाव की उपचय (Improving) संज्ञा होती है । यह उपचय संज्ञा नित्य नहीं हैं अर्थात् अनित्य है, कहने का तात्पर्य यही है कि यदि इन भाव में पापग्रह या निंज स्वामी के शत्रु से युत या दृष्ट हो तो उनकी उपचय संज्ञा नहीं रहती है । उपचय के अतिरिक्त भाव (1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 12) की अपचय (House of Loss) संज्ञा है ।

उपचयापचया संज्ञा चक्रम्

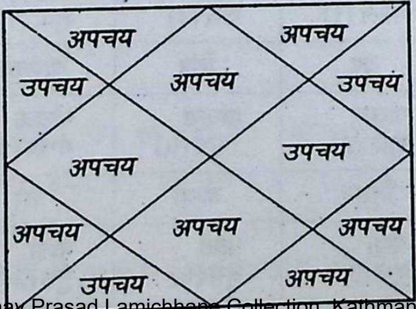

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वादश भाव संज्ञा चक्रम्

भाव	संज्ञा	विचार
पहला	तनु	शरीर व स्वास्थ्य
दूसरा	कुटुम्ब	रिश्तेदार, धन, आंखें, वाणी
तीसरा	सहोत्थ	भाई, पराक्रम व भोजन
चौथा	बन्धु	मित्र, विद्या, माता, सुख
पांचवां	पुत्र	सन्तान, ज्ञान वृद्धि, पूर्वजन्म के कर्म
छठा	शत्रु	शत्रु व रोग
सातवां	पत्नी	पत्नी, उत्पादकता, मान
आठवां	मृत्यु	मृत्यु व अरिष्ट
नौवां	शुभता	धर्म व पिता, भाग्य
दसवां	आस्पद	आजीविका, कर्म, राज्य
ग्यारहवां	आय	लाभ, आय
बारहवां	रिष्फ	खर्च, हानि, कुकर्म व यात्रा

द्वादश भावों की प्रकृति

कल्पस्वविक्रमगृह प्रतिभाक्षतानि
चित्तोत्थरंध्रगुरुमानभवव्ययानि ।
लग्नाच्चतुर्थनिधने चतुरस्त्रसंज्ञे द्यूनं
च सप्तमगृहं दशमर्क्षमाज्ञा ॥ 16 ॥

लग्नादि द्वादश भावों की क्रम से कल्प, स्व, विक्रम, ग्रह, प्रतिभा, क्षत, चितोत्थ, रन्ध्र, गुरु, मान, भव और व्यय संज्ञाएं होती हैं ।

लग्न से चतुर्थ और अष्टम भाव की चतुरस्त्र संज्ञाएं होती हैं । सप्तम भाव की द्यून तथा दशम् भाव की ख एवं आज्ञा संज्ञा होती है ।

भाव नामान्तर चक्रम्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुरस्त्रादि संज्ञा चक्रम्

भाव	4 व 8	7	दसम
संज्ञा	चतुरस्त्र	द्यून	ख व आज्ञा

कण्टकादि संज्ञा

कंटककेंद्रचतुष्टयसंज्ञाः सप्लमलग्नचतुर्थखभानाम् ।
तेषु यथाभिहितेषु बलाढ्याः कीटनरांबुचराः पाशवश्च ॥ 17 ॥

सप्तम, लग्न, चतुर्थ और दशम भावों की कण्टक, केन्द्र और चतुष्टय संज्ञा होती है। इन में क्रम से कीट, मनुष्य, जलचर और पशुराशि बलवान होती है। जैसे कीट राशि (वृश्चिक, मीन और कर्क) सप्तम भाव में, मनुष्य राशि (मिथुन, कन्या, तुला और धनु का पूर्वार्द्ध) लग्न में बली होती है, जलचर राशि (कर्क, मीन और मकरका उत्तरार्द्ध चतुर्थ भाव में बली होती है और चतुष्पद राशि (मेष, सिंह, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध और मकर का पूर्वार्द्ध) दशम भाव में बली होती है।

पणफरादि संज्ञा

केन्द्रात्परंपणफरं परतस्तु सर्वमापोक्लिमं हिबुकमम्बु सुखं च वेश्म ।
जामित्रमस्तभवनं सुतभं त्रिकोणं मेषूरणं दशममत्र च कर्म विद्यात् ॥ 18 ॥

केन्द्र स्थान (1, 4, 7, 10) से ऊपर 2, 5, 8 और 11वें भावों की पणफर संज्ञा होती है। पणफर से ऊपर 3, 6, 9, 12वें भाव की आपोक्लिम संज्ञा होती है।

कण्टकादि व पणफरादि संज्ञा चक्रम्

भाव				संज्ञा			
1	4	7	10	कण्टक	केन्द्र	चतुष्टय	×
2	5	8	11	पणफर	×	×	×
3	6	9	12	आपोक्लिम	×	×	×
4	×	×	×	हिबुक	अम्बु	सुख	वेश्म
7	×	×	×	जामित्र	×	×	×
5	×	×	×	त्रिकोण	×	×	×
10	×	×	×	मेषूरण	कर्म	×	×

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि बल बोधक चक्रम्

राशि					बली स्थान
वृश्चिक	×	×	×	×	सप्तम
मिथुन	तुला	कन्या	कुम्भ	धनु का पूर्वार्द्ध	लग्न
कर्क	मीन	मकर का उत्तरार्द्ध	×	×	चतुर्थ
मेष	वृष	सिंह	धनु का उत्तरार्द्ध	×	दशम

चौथे भाव की हिबुक, अम्बु, सुख और वेश्य संज्ञा होती है। जामित्र व अस्त सप्तम भाव की संज्ञा है। पांचवें भाव की त्रिकोण संज्ञा है। मेषुरण और कर्म दसवें भाव की संज्ञा है।

लग्नादि राशियों के बल

होरा स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता नान्यैश्च वीर्योत्कटा।
केन्द्रस्था द्विपदादयोऽह्निनिशि च प्राप्ते च संन्ध्याद्वये॥
पूर्वार्द्धे विषयादयः कृतगुणा मानं प्रतीपं च तद्दुश्चिक्यं
सहजं तपश्च नवमं त्र्याद्यं त्रिकोणं च तत्॥ 19॥

यदि लग्न लग्नेश, गुरु या बुध से दृष्ट व युत हों तथा अन्य ग्रहों से दृष्ट व युत न हों तो हीन बली होता है तथा दोनों स्थितियों से दृष्ट या युत हो तो मध्यबली होता है।

केन्द्र (1, 4, 7, 10वें भाव) में स्थित सभी राशियां बली होती हैं। मानव राशियां (3, 6, 7, 11 धनु का पूर्वार्द्ध) दिन में बली होती हैं, चतुष्पाद राशियाँ (1, 2, 5, 9 का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध) रात्रि बली होती हैं। कीट राशियां (वृश्चिक, मीन, कर्क और मकर का उत्तरार्द्ध) दोनों सन्ध्याओं (प्रातः सन्ध्या व सायं सन्ध्या) में बली होती हैं।

केन्द्र स्थान (1, 4, 7, 10) पूर्णबली, पणफर भाव (2, 5, 8, 11) मध्यबली और आपोक्लिम भाव (3, 6, 9, 12) निर्बल होते हैं।

5, 6, 7, 8, 9, 10, को 4 से गुणा करने पर 20, 24, 28, 32, 36, 40 क्रम से पहली छह राशियों (1, 2, 3, 4, 5, 6) के मान होते हैं और इस के विपरीत अन्तिम छह राशियों (7, 8, 9, 10, 11, 12) के क्रम से 40, 36, 32, 28, 24, 20 लग्न मान होते हैं। जैसे—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain Digitization by eGangotri

	राशि	मिनट	अंश	मिनट	राशि	
प्रथम छह राशियाँ	मेष	80	20	80	मीन	अन्तिम छह राशियाँ
	वृष	96	24	96	कुंभ	
	मिथुन	112	28	112	मकर	
	कर्क	128	32	128	धनु	
	सिंह	144	36	144	वृश्चिक	
	कन्या	160	40	160	तुला	
	योग	720	180	720	योग	

टिप्पणी— यहां लग्न राशि (उदय) का मान अंशों में दिया गया है, लेकिन क्यों ? यह तो सभी जानते हैं कि स्थान विशेष के कारण लग्न मान अलग-अलग होते हैं। लग्न मान ज्योर्तिगणित के अन्य नियमों के अनुसार ही निकालने चाहिएं। सूक्ष्मलग्न ज्ञात करने के लिए लेखक की 'ज्योतिष स्वयं शिक्षक' पुस्तक पढ़ें। लेकिन यहां पर इन मानों के देने का कोई तो औचित्य होगा ही. . . ?

राशियों के ये अंशात्मक मान मानव शरीर के अंगों के आकार को समझने में काम आ सकते हैं कि अंग विशेष छोटा, बड़ा या सम है। अध्याय 5 का श्लोक 23 इस सम्बन्ध में पठनीय है, वहां देखें। नष्टजातकाध्याय 26 के श्लोक 4 में भी लग्न मान उपयोगी हैं और खोई हुई वस्तु के आकार को जानने में भी प्रश्न कुंडली विचार में उपयोगी है।

तीसरे स्थान को दुश्चिक्य कहते हैं, नवें भाव को तप, त्रित्रिकोण और त्रिकोण भी कहते हैं।

केन्द्रादि भाव बल चक्रम्

भाव				बल	संज्ञा
1	4	7	10	पूर्णबली	केन्द्र
2	5	8	11	मध्यबली	पणफर
3	6	9	12	निर्बली	आपोक्लिम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नादि बल चक्रम्

मिथुन	कन्या	तुला	कुंभ	धनु का पूर्वार्द्ध	दिन बली
मेष	वृष	सिंह	धनु का उत्तरार्द्ध	मकर का पूर्वार्द्ध	रात्रि बली
वृश्चिक	मीन	कर्क	मकर का उत्तरार्द्ध	×	सन्ध्या बली

मेषादि राशियों के रंग

रक्तः श्वेतः शुकतनुतिभः पाटलो धूम्रपांडुश्चित्रः
कृष्णः कनकसदृशः पिंगलः कर्बुरश्च ।
बभ्रुः स्वच्छः प्रथमभवनाद्येषु वर्णाः प्लवत्वं स्वाम्याशाख्यं
दिनकरयुताद्भाद्द्वितीयं च वेशिः ॥ 20 ॥

मेषादि राशियों के क्रम से रक्तवर्ण (मेष), सफेद (वृष), पीला (मिथुन), गुलाबी (कर्क), धूएं जैसा (सिंह), मिश्रित रंग (कन्या), काला (तुला), स्वर्ण सदृश (धनु), सलेटी (मकर), नकुल सदृश (कुंभ) व मीन सदृश (मीन) होता है ।

जिस राशि के स्वामी की जो दिशा है वह उस राशि की प्लव होती है, जैसे मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है और उसकी दिशा दक्षिण है, अतः मेष और वृश्चिक राशि का दक्षिण प्लव हुआ । वृष और तुला का स्वामी शुक्र है और उसकी दिशा अग्निकोण (दक्षिण-पूर्व) है, अतः वृष और तुला का अग्निकोण प्लव हुआ । मिथुन और कन्यां का स्वामी बुध है और उसकी दिशा उत्तर है, अतः मिथुन और कन्या का उत्तर प्लव हुआ । कर्क का स्वामी चन्द्रमा है और उसकी दिशा वायव्य (उत्तर-पश्चिम) है, अतः कर्क का प्लव वायव्य हुआ । धनु और मीन राशि का स्वामी गुरु है और उसकी दिशा ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) है, अतः धनु और मीन का प्लव ईशान कोण हुआ । मकर और कुम्भ का स्वामी शनि है और उसकी दिशा पश्चिम है, अतः मकर व कुम्भ का प्लव पश्चिम हुआ । सिंह का स्वामी सूर्य है और उसकी दिशा पूर्व है, अतः सिंह राशि का प्लव पूर्व हुआ ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि प्लव चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	धनु	मकर	सिंह
राशि	वृश्चिक	तुला	कन्या	×	मीन	कुम्भ	×
राशीश	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्रमा	बृहस्पति	शनि	सूर्य
प्लवादि	दक्षिण	अग्निकोण	उत्तर	वायव्य	ईशान	पश्चिम	पूर्व

राशि वर्ण चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
वर्ण	लाल	श्वेत	हरा	थोड़ा लाल	थोड़ा श्वेत	अनेक वर्ण
राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
वर्ण	काला	सुवर्ण सदृश	पीला	चितकबरा	नकुल के सदृश	मछली के सदृश

टिप्पणी— प्लव का उपयोग खोई वस्तु विचार या चोरी गई वस्तु की दिशा जानने या यात्रा की दिशा ज्ञात करने में कर सकते हैं।

इति श्रीवराहमिहराचार्यप्रणीते बृहज्जातके राशिप्रभेदोऽध्यायः प्रथमः ॥ 1 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहभेदाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर ग्रह सम्बन्धी ज्ञान की विस्तार से चर्चा करेंगे जिससे आप जन्मकुंडली का फलित करने में सक्षम हो सकें।

काल पुरुष में ग्रह की भाव संज्ञा

कालात्मा दिनकृन्मनस्तुहिनगुः सत्वं कुजो ज्ञो बचो
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः।
राजानौ रविशीतगू क्षितसुतो नेता कुमारो बुधः
सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवौ प्रेष्यः सहस्रांशुजः ॥ 1 ॥

काल पुरुष में सूर्य आत्मा (Soul) चन्द्रमा मन (Mind), मंगल बल (Vigour), बुध वाणी (Speech), गुरु ज्ञान (Knowledge) व सुख (Happiness), शुक्र प्रेम, काम व इच्छा (Love, Sex & Desires) और शनि दुःख (Sorrow) हैं।

सूर्य और चन्द्रमा राजा-रानी, मंगल सेनापति, बुध राजकुमार और शनि सेवक है।

सूर्यादि भाव व पद चक्रम्

ग्रह	भाव	पद
सूर्य	आत्मा	राजा
चन्द्र	मन	रानी
मंगल	बल	सेनापति
बुध	वाणी	युवराज (राजकुमार)
गुरु	ज्ञान व सुख	मन्त्री
शुक्र	प्रेम, काम व इच्छा	मन्त्री
शनि	दुःख	सेवक

टिप्पणी—प्रथम अध्याय में काल पुरुष के बाह्य अंगों में बारह राशियों को अलग-अलग प्रभावी बताया है। किन्तु यहां पर ग्रहों को अन्तः रूप में प्रभावी व भाव का परिचायक बताया है। ग्रह राशि के स्वामी है और इन्हीं से राशियां प्रभावित होती हैं। इस प्रकार जन्म कुण्डली अन्तः और बाह्य प्रभावों का विचार करते समय इस ज्ञान की आवश्यकता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पड़ती है । यदि किसी का कोई ग्रह शुभाशुभ प्रभाव से ग्रस्त होगा तो उसका उसी ग्रह के अनुरूप अन्त: भाव भी प्रभावित होगा । ग्रह बली है तो अन्त: भाव भी बली होगा । इसी प्रकार ग्रह अपने पदानुसार ही अपने कर्त्तव्यों को निभाता है । राजा ग्रह की राजानुरूप्र प्रवृत्ति होगी और सेवक ग्रह की सेवक सदृश प्रवृत्ति होगी । **फलित करते समय सभी फलित सूत्रों व संकेतों को स्मरण रखना पड़ता है, क्योंकि फलित सूत्र समयानुरूप फलित को अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रभावित करते हैं । फलित सभी फलित सिद्धान्तों व सूत्रों के पारस्परिक समन्वय और विश्लेषण के बल पर ही सटीक बैठता है । सूत्रों के आधार पर विश्लेषण करने की क्षमता जितनी प्रबल होगी फलित भी उसी अनुपात में सही होगा । विश्लेषण की क्षमता अधिक से अधिक कुण्डलियों के विश्लेशण करने पर अभ्यास वश बढ़ती है ।**

सूर्यादि ग्रहों के पर्यायवाची

हेलि: सूर्यश्चंद्रमा: शीतरश्मिर्हेम्नो विज्ञो बोधनश्चेंदुपुत्र: ।
आरो वक्र: क्रूरदृक् चावनेय: कोणोमंद: सूर्यपुत्रोऽसितश्च ॥ 2 ॥
जीवोऽङ्गिरा: सुरगुरुर्वचसां पतीज्य:
शुक्रो भृगुर्भृगुसुत: सित आस्फुजिच्च ।
राहुस्तमोऽगुरसुश्च शिखीति केतु:
पर्यायमन्यमुपलभ्य वदेच्च लोकात् ॥ 3 ॥

ग्रहों के अन्य नाम अर्थात् प्रर्यायवाची निम्न प्रकार हैं, देखें—**'ग्रह संज्ञा चक्रम्'**

ग्रह संज्ञा चक्रम्

ग्रह	पर्यायवाची (संज्ञाएं)
सूर्य	हेली
चन्द्र	शीतरश्मि
मंगल	आर, वक्र, क्रूर दृक व आवनेय
बुध	हेम्ना, वित, ज्ञ, बोधन व चन्द्रपुत्र
गुरू	जीव, अंगिरा, सुरगुरु, वाचस्पति और इज्य
शुक्र	भृगु, भृगुसुत, सित व आस्फुजित्
शनि	मन्द, कोण, असित, सूर्यपुत्र
राहु	तम, अगु व असुर
केतु	शिखी

इसके अतिरिक्त अन्य संज्ञाऐं व पर्याय अन्य ज्योतिष शास्त्रों से जानने चाहिएं जोकि विद्वानों द्वारा ग्राह्य हों ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यादि ग्रहों का वर्ण

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चांगो रक्तगौरश्च वक्रः ।
दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुर्गौरगात्रः श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः ॥ 4 ॥

सूर्य का रंग लाल व गहरा भूरा (Red & Dark Brown), चन्द्र का रंग श्वेत (White), मंगल का छोटा शरीर व रक्तवर्ण (Blood Red) , बुध का रंग दूर्वा घास के समान हरा (Green) , गुरु का गौर वर्ण हल्का पीत अर्थात् स्वर्ण सदृश (White, Light Yellow & Golden) , शुक्र का रंग गहरा नीला (Dark Bluc), और शनि का काला (Black) वर्ण होता है । देखें—'ग्रह वर्ण चक्रम्' ।

ग्रह वर्ण चक्रम्

ग्रह	वर्ण
सूर्य	लाल, गहरा भूरा (Red & Dark Brown)
चन्द्र	श्वेत (White)
मंगल	रक्तवर्ण (Blood Red)
बुध	हल्का हरा (दूर्वाघास सदृश) (Light Green)
गुरु	हल्का पीत, स्वर्ण सदृश (Light Yellow, Gloden)
शुक्र	गहरा नीला (Dark Blue)
शनि	काला (Black)

सूर्यादि ग्रहों के वर्ण एवं देवतादि

वर्णास्ताम्रसितातिरक्तहरितव्यापीत चित्रासिता ।
बह्न्यम्ब्वग्निजकेशवेन्द्रशचिकाः सूर्यादिनाथः क्रमात् ॥
प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमः सौरेन्दुवित्सूरयः ।
क्षीणेंद्वर्कमहीसुतार्कतनयाः पापा बुधस्तैर्युतः ॥ 5 ॥

कहने का तात्पर्य यही है कि पूर्वोक्त कथनानुसार सूयादि ग्रहों के क्रमशः ताम्रवर्ण, सफेद, रक्तवर्ण, हरा, पीला, मिश्रित रंग व काला रंग है । अतः स्पष्ट है कि पूर्वोक्त रंग क्रम से सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि ग्रह के हैं ।

सूर्य का स्वामी अग्नि, चन्द्रमा का जल (वरूण), मंगल का कार्तिकेय, बुध का विष्णु, गुरु का इन्द्र, शुक्र का इन्द्राणी और शनि का स्वामी ब्रह्मा है ।

पूर्वादि दिशाओं के क्रम से सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शनि, चन्द्र, बुध और गुरु स्वामी हैं । अतः स्पष्ट है कि सूर्य पूर्व का, शुक्र आग्नेय, मंगल दक्षिण का, राहु नैऋत्य का, शनि पश्चिम का, चन्द्रमा वायव्य का, बुध उत्तर का और गुरु ईशान का स्वामी होता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

है ।

क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, शनि और इनसे युत बुध पाप ग्रह (Malefic Plannets) हैं ।

टिप्पणी—ग्रह के वर्ण, दिशा, देवता, शुभाशुभ का प्रयोग फलित करते समय होता है । प्रश्न विचार में खोई या चोरी गई वस्तु का रंग ग्रह के वर्णानुसार ही होता है । किस देवता की उपासना की जाए, देवता के अनुरूप कौन से रंग के फूल पूजा के लिए चुने जाएं और वस्तु किस दिशा में खोई है या किस दिशा की यात्रा की जाए यह सब जानकारी ग्रहों के रंग, दिशा व देवतानुरूप ही बतायी जाती है ।

अशुभ चन्द्रमा या क्षीण चन्द्रमा कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक निर्बल होता है । इनके अतिरिक्त या पूर्णिमा का चन्द्रमा शुभ व बली होता है ।

चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र ग्रह शुभ होते हैं, पर इनकी शुभता में अन्य ग्रहों की संगति के अनुसार कमी आती है ।

जन्म कुंडली में जो ग्रह बली होता है, जातक का स्वभाव आदि भी उसी के अनुरूप होता है ।

ग्रहों के लिंग व तत्त्वादि

बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नरश्च शेषाः ।
शिखिभूखपयोमरुद्गणानां वशिनो भूमिसुतादयः क्रमेण ॥ 6 ॥

बुध व शनि नपुंसक (Hermaphrodite) ग्रह हैं, चन्द्रमा व शुक्र ग्रह स्त्री (Female) ग्रह हैं और शेष ग्रह सूर्य, मंगल व गुरु पुरुष (Male) ग्रह हैं ।

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ग्रहों के तत्त्व क्रमशः अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल और वायु हैं ।

टिप्पणी—1. बुध ग्रह स्त्री नपुंसक एवं शनि ग्रह पुरुष नपुसंक है । 2. सूर्य अग्नि व चन्द्रमा जल है ।

ग्रहों की जाति व गुण

विप्रादितः शुक्रगुरूकुजार्कों शशी बुधश्चेत्यसितोऽत्यजानाम् ।
चंद्रार्कजीवा ज्ञसितौ कुजार्की यथाक्रमं सत्वरजस्तमांसि ॥ 7 ॥

शुक्र और गुरु ग्रह ब्राह्मण, मंगल व सूर्य ग्रह क्षत्रिय, चन्द्र और बुध वैश्य एवं शनि शूद्र व नीच जाति का स्वामी होता है ।

सूर्य, चन्द्र व गुरु सत्त्वगुणी, बुध और शुक्र रजोगुणी, मंगल और शनि तमोगुणी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— जो कोई वस्तु चोरी या खो जाए तो उसको ले जाने वाले की जाति का विचार बली ग्रहानुसार करते हैं । जन्म समय जिस ग्रह के त्रिशांश में सूर्य हो उसी के अनुरूप जातक का गुण होता है । यवनेश्वर के मतानुसार मंगल सात्विक ग्रह है । तीनों गुणों के लक्षण निम्न प्रकार हैं—

1. **सात्त्विक—** स्थिर, सत्यवादी, ईमानदार, भक्ति भाव, दयालु और न्याय संगत बात कहने व गुण पर चलने के कारण देवता व प्रभु पर विश्वास करता है ।
2. **राजसिक—**नायक सदृश व नेतृत्व प्रधान, त्यागी और स्वयं की अलग पहचान बनाने वाला होता है । सभी सुख-साधनों एवं विलासिता से परिपूर्ण होता है ।
3. **तामसिक—**अशिक्षित, सुस्त, झूठा, अधिक सोने वाला, चतुर एवं पाप स्वभाव का, कठोर व दूजों को निज स्वार्थ के लिये कष्ट पहुंचाने वाला होता है ।

सूर्यादि ग्रहों का स्वरूप व धातुादि

मधुपिङ्गलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सवितात्पकचः ।
तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक् ॥ 8 ॥
क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः ।
श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥ 9 ॥
बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिःकफात्मकः ।
भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः कफानिलात्मासितवक्रमूर्द्धजः ॥ 10 ॥
मंदोऽलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः
स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा ।
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसे च
मज्जा मन्दार्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥11 ॥

सूर्य का स्वरूप शहद सदृश पीले नेत्र, कद दोनों हाथों को लम्बा करके जितना हो उतना ही सिर से पैर तक के बराबर, पित्त प्रकृति और थोड़े बालों वाला है ।

चन्द्र का स्वरूप दुर्बल और गोल शरीर, प्रकृति कभी वात और कभी कफ, बुद्धिमान, सुन्दर आंखें, मधुर आवाज और दयालु है ।

मंगल का स्वरूप क्रूर व टेढ़ी दृष्टि, युवा, पित्त प्रकृति, अस्थिर, पतली कमर वाला एवं उदार होता है ।

बुध का स्वरूप गद्गद् वाणी से युक्त, सदैव हास्य में रुचि, कफ, वात व पित्त प्रकृति वाला है ।

गुरु का स्वरूप बड़ा शरीर, पीले बाल, पीली आंखें, आत्मज्ञानी एवं कफ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकृति होती है ।

शुक्र का स्वरूप सुखी, सुन्दर शरीर, आकर्षक आंखें, कफ, वात प्रकृति, घुंघराले व काले बालों वाला है ।

शनि का स्वरूप सुस्त, पीली आंखें, पतला और लम्बा शरीर, लम्बे दांत, रूखे बाल व वात प्रकृति होती है ।

शनि का प्रभाव स्नायु (Muscles), सूर्य का हड्डी (Bone) , चन्द्र का रक्त (Blood), बुध का त्वचा (Skin), शुक्र का वीर्य (Semen), गुरु का चर्बी (Flesh) और मंगल का मज्जा सार (Bone Marrow) पर होता है ।

टिप्पणी—जातक के शरीर व आकार का विचार लग्न के नवांश स्वामी के अनुसार करते हैं । प्रश्न विचार में व्यक्ति विशेष की पहचान के लिए भी ग्रहों के स्वरूप की आवश्यकता पड़ती है । रोग या कष्ट के समय लग्न नवांश स्वामी के समान धातु से उत्पन्न पीड़ा समझनी चाहिए ।

ग्रहों के स्थान, वस्त्र व ऋतु ज्ञानादि

देवाम्ब्वग्निविहारकोशशयनक्षित्युत्करेशाः क्रमात् ।
वस्त्रं स्थूलमभुक्तमग्निकहतं मध्यं दृढं स्फाटितम् ॥
ताम्रं स्यान्मणिहेमयुक्तिरजतान्यर्काच्च मुक्तायसी ।
द्रेष्काणैः शिशिरादयः शशुरुचज्ञग्वादिषूद्यत्सु वा ॥ 12 ॥

सूर्यादि ग्रहों के क्रम से देव स्थान, जल स्थान, अग्नि स्थान, क्रीडा स्थान, कोश स्थान, शयन स्थान और ऊसर स्थान होते हैं । कहने का तात्पर्य यही है कि सूर्य का देवस्थान (Temples & Sacred Places), चन्द्र का जलस्थान (Wells, Ponds & Water) , मंगल का अग्नि स्थान आदि (Cooking Houses etc.), बुध का क्रीडा स्थान (Ammusement Court or Play grounds), गुरु का कोश स्थान (खजाना, स्टोर या भण्डार ग्रह आदि), शुक्र का शयन कक्ष एवं शनि का ऊसर या सूअरों के एकत्र होने के स्थान पर रहता है ।

सूर्यादि ग्रहों के वस्त्र क्रम से निम्न प्रकार समझें—सूर्य का मोटा कपड़ा (Coarse Cloth), चन्द्रमा का नया कपड़ा (New Cloth), मंगल का जला हुआ कपड़ा, बुध का भीगा हुआ या जल से निचोड़ा हुआ कपड़ा, गुरु का न नया न पुराना कपड़ा, शुक्र का मजबूत कपड़ा, शनि का फटा हुआ पुराना कपड़ा होता है ।

सूर्यादि ग्रहों की क्रम से धातुएं निम्न प्रकार समझें—सूर्य की तांबा (Copper)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रमा की मणि (Gems) , मंगल की स्वर्ण (Gold) , बुध का कसकुट (White Copper) , गुरु की चांदी (Silver) , शुक्र की मोती (Pearls) , शनि की लोहा (Iron) धातु समझनी चाहिए।

लग्नगत ग्रह से ऋतु का ज्ञान करना चाहिए। अनेक ग्रह लग्न में हों तो उनमें जो ग्रह बलवान हो उससे ऋतु का ज्ञान करना चाहिए। लग्न में कोई ग्रह न हो तो लग्न में जिस ग्रह का नवांश हो उससे ऋतु का ज्ञान करना चाहिए। लग्न में शनि, शुक्र, मंगल, चन्द्रमा, बुध और गुरु हो तो क्रम से शिशिरादि छह ऋतु जाननी चाहिएं अर्थात् लग्न में शनि हो तो शिशिर, शुक्र हो तों बसन्त, मंगल हो तो ग्रीष्म, चन्द्रमा हो तो वर्षा, बुध हो तो शरद और गुरु हो तो हेमन्त ऋतु जानना चाहिए।

इसी प्रकार लग्न में शनि का द्रेष्काण हो तो शिशिर, शुक्र का द्रेष्काण हो तो बसन्त, मंगल का द्रेष्काण हो तो ग्रीष्म, चन्द्रमा का द्रेष्काण हो तो वर्षा, बुध का द्रेष्काण हो तो शरद एवं गुरु का द्रेष्काण हो तो हेमन्त ऋतु होती है।

टिप्पणी— जन्मकाल में जो ग्रह बलवान हो उसके स्थान पर प्रसव कहना चाहिए, वस्तुओं के चोरी या नष्ट होने पर प्रश्नकाल में बली ग्रह के स्थान में चोर व द्रव्य का स्थान कहना चाहिए।

जन्मकाल में बलवान ग्रह के अनुसार सूतिका का वस्त्र कहना चाहिए या चोर का वस्त्र, प्रश्नकाल के बली ग्रह के अनुसार समझना चाहिए। इसी प्रकार पदार्थ के विषय में समझना चाहिए।

ऋतु ज्ञान चक्रम्

ऋतु	काल (लगभग)	सायन सूर्य की राशि
शिशिर (Winter)	15 जनवरी से 15 मार्च	मकर-कुंभ
बसन्त (Spring)	15 मार्च से 15 मई	मीन-मेष
ग्रीष्म (Summer)	15 मई से 15 जुलाई	वृष-मिथुन
वर्षा (Rainy)	15 जुलाई से 15 सितम्बर	कर्क-सिंह
शरद (Autumn)	15 सितम्बर से 15 नवम्बर	कन्या-तुला
हेमन्त (Cold)	15 नवम्बर से 15 जनवरी	वृश्चिक-धनु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यादि संज्ञा चक्रम्

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वर्ण (रंग)	ताम्र वर्ण	सफेद	रक्तवर्ण	हरा	पीला	मिश्रित	काला	×
देवता	अग्नि	जल	कार्तिकेय	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	×
दिशा	पूर्व	बायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य
लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री नपुंसक	पुरुष	स्त्री	पुरुष नपुंसक	×
जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र नीच जाति	×
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तमोगुणी	रजोगुणी	सत्त्व	रजोगुणी	तमोगुणी	×
धातु (शरीर)	हड्डी	रक्त	मज्जा	त्वचा	चर्बी	वीर्य या रज(स्त्री)	स्नायु	×
स्थान	देव स्थान	जल स्थान	अग्नि स्थान	क्रीडा स्थान	कोश स्थान	शयन कक्ष	ऊसर भूमि	×
वस्त्र	मोटा कपड़ा	नया कपड़ा	जला हुआ कपड़ा	भीगा कपड़ा	नया पुराना	मजबूत कपड़ा	फटा पुराना	×
धातु	तांबा	मणि	स्वर्ण	कसकुट	चांदी	मोती	लोहा	×
ऋतु	×	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	बसन्त	शिशिर	×
दृष्टि	7	7	7,4,8	7	7,5,9	7	3,7,10	×
तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाश	जल	वायु	×

ग्रहों के दृष्टि स्थान

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्त्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितिः ।
रवि जामरेज्यरुधिराः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल विक्षणेऽधिकाः ॥ 13 ॥

ग्रह जिस स्थान में स्थित होता है वहां से तीसरे व दसवें को एक चरण से, नौवें और पांचवें को दो चरणों से, चौथे और आठवें को तीन चरणों से और सातवें को चार चरणों से देखता है। उपर्युक्त स्थानों में क्रम से शनि, गुरु, मंगल और शेष ग्रह (सूर्य, चन्द्र, बुध व शुक्र) पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। जैसे दसवें और तीसरे स्थान को शनि, नौवें और पांचवें को गुरु, चौथे और आठवें को मंगल एवं सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शुक्र ग्रह मात्र सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

टिप्पणी— 1. राहु 5,7,9 और 12 वें भाव में पूर्ण दृष्टि से देखता है, 2रे व 10वें भाव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

को तीन चरण दृष्टि से, 3रे, 4थे, 6ठे व 8वें भाव को दो चरण दृष्टि से, पहले व 11वें भाव पर कोई दृष्टि नहीं होती है। राहु की दृष्टि दाहिने हाथ की तरफ गिनते हैं। 2. केतु की कोई दृष्टि नहीं होती है। राहु की दृष्टि के विषय में यह मत वराहमिहिर का न होकर सारावली व गर्ग का है। केतु की कोई दृष्टि नहीं होती है। देखें—**'ग्रह दृष्टि चक्रम्'**।

ग्रह दृष्टि चक्रम् (प्रतिशत में)

ग्रह	भाव से										
	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	0	25	75	50	0	100	75	50	25	0	0
चन्द्र	0	25	75	50	0	100	75	50	25	0	0
मंगल	0	25	100	50	0	100	100	50	25	0	0
बुध	0	25	75	50	0	100	75	50	25	0	0
गुरु	0	25	75	100	0	100	75	100	25	0	0
शुक्र	0	25	75	50	0	100	75	50	25	0	0
शनि	0	100	75	50	0	100	75	50	100	0	0
राहु	75	50	50	100	50	100	50	100	75	0	100
केतु	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्यादि ग्रहों का काल व स्वाद

अयनक्षणवासरर्तवो मासोऽर्द्धं च समाश्च भास्करात्।
कटुकलवणतिक्तमिश्रिता मधुराम्लौ च कषाय इत्यपि ॥ 14 ॥

सूर्य ग्रह से अयन (उत्तरायन व दक्षिणायन) अर्थात् छह मास, चन्द्रमा से मुहूर्त (2 घटी या 48 मिनट), मंगल से दिन, बुध से ऋतु (2 माह), गुरु से मास, शुक्र से पक्ष (15 दिन) और शनि से एक वर्ष का बोध होता है।

सूर्य ग्रह का स्वाद कडुवा (Sharp & Pungent), चन्द्र का नमकीन (Salty), मंगल का तीता (Bitter), बुध का मिश्रित (Mixture) अर्थात् स्वाद का मिश्रण, गुरु का मीठा (Sweet), शुक्र का खट्टा (Sour) और शनि से कषाय (Astringent) होता है।

टिप्पणी— प्रश्नकाल के लग्न में जिस ग्रह का नवांश हो और नवांश जितनी संख्या का हो तो उस स्वामी और संख्यानुसार कार्य की सिद्धि-असिद्धि ग्रह कालानुसार समझनी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिए।

गर्भाधान समय में जो ग्रह सार्वाधिक बली हो उस का जो स्वाद हो उसी की स्त्री की खाने की विशेष इच्छा होती है अथवा किसी भी प्रश्न काल के समय जो ग्रह बली हो या जो नवाश हो उसके स्वामी के अनुसार भोजन के स्वाद के विषय में समझना चाहिए। देखें—'**ग्रह काल व स्वाद चक्रम्**'।

ग्रह काल व स्वाद चक्रम्

ग्रह	काल	स्वाद
सूर्य	अयन (छह मास)	कड़वा (Sharp & Pungent)
चन्द्र	मुहूर्त (48 दिन)	नमकीन (Salty)
मंगल	दिन	तीता (Bitter)
बुध	ऋतु (2 माह)	मिश्रित (Mixture)
गुरु	मास (एक)	मीठा (Sweet)
शुक्र	पक्ष (15 दिन)	खट्टा (Sour)
शनि	वर्ष (एक)	कषाय (Astringent)

सूर्यादि ग्रहों के नैसर्गिक मित्र-शत्रु

जीवो जीवबुधौ सितेंदुतनयौ व्यर्काविभौमाः
क्रमाद्वींद्वर्का विकुजेंद्विनाश्च सुहृदः केषांचिदेवं मतम्।
सत्योक्ते सुहृदस्त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वांत्यधीधर्मपाः
स्वोच्चायुः सुखपाः स्वलक्षणविधेर्नान्यैर्विरोधादिति ॥ 15 ॥

सूर्य का गुरु मित्र है। **चन्द्रमा** के गुरु और बुध दोनों मित्र हैं। **मंगल** के शुक्र और बुध मित्र हैं। **बुध** के सूर्य को छोड़कर शेष सभी चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र व शनि मित्र हैं। **गुरु** के मंगल को छोड़कर शेष सभी बुध, शुक्र, शनि, सूर्य व चन्द्रमा मित्र हैं। **शुक्र** के चन्द्रमा और सूर्य को छोड़कर शेष सभी बुध, गुरु, शुक्र ग्रह मित्र हैं। **शनि** के मंगल, चन्द्र व सूर्य को छोड़कर शेष सभी ग्रह बुध, गुरु व शुक्र मित्र हैं। यह किसी अन्य विद्वान का मत है।

सूर्यादि सभी ग्रहों के मित्र से अतिरिक्त ग्रह शत्रु हैं, कहने का तात्पर्य यही है कि **सूर्य** के चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र व शनि शत्रु हैं। मंगल के सूर्य, चन्द्र, गुरु व शनि शत्रु हैं। **बुध** का सूर्य शत्रु है। **गुरु** का मंगल शत्रु है। **शुक्र** का सूर्य व चन्द्रमा शत्रु हैं। **शनि** का सूर्य, चन्द्र व मंगल शत्रु है। यह यवनाचार्य का मत है। देखें— **'ग्रह मित्र**

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शत्रु चक्रम्'।

ग्रह मित्र शत्रु चक्रम्
(अन्य विद्वान के मतानुसार)

ग्रह	मित्र	शत्रु
सूर्य	गुरु	चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि
चन्द्र	गुरु, बुध	सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि
मंगल	शुक्र, बुध	सूर्य, चन्द्र, गुरु शनि
बुध	चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि	सूर्य
गुरु	सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि	मंगल
शुक्र	मंगल, बुध, गुरु, शनि	सूर्य, चन्द्र
शनि	बुध, गुरु, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल

सत्याचार्य के मतानुसार सूर्यादि समस्त ग्रह अपने-अपने मूल त्रिकोण से 2,12, 5, 9, 8 व 4 स्थान के स्वामी और अपने उच्च स्थान के स्वामी के मित्र होते हैं अन्य स्थानों के स्वामी शत्रु होते हैं।

मान लीजिए मंगल का मूल त्रिकोण मेष राशि है। मेष से चौथी राशि कर्क का स्वामी चन्द्र, पांचवीं राशि सिंह का सूर्य, नौवीं राशि धनु और बारहवीं राशि मीन का गुरु, दूसरी राशि वृष का शुक्र व आठवीं राशि वृश्चिक का मंगल व उच्च राशि मकर का स्वामी शनि मित्र है। यहां शेष तीसरी राशि मिथुन का बुध, छठी राशि कन्या का बुध, सातवीं राशि तुला का शुक्र, नवीं राशि कुम्भ का स्वामी शनि शत्रु है। इस प्रकार मित्रता-शत्रुता में परस्पर विरोधाभास है। इस प्रकार यहां स्पष्ट नहीं है। जबकि शुक्र व शनि नियमानुसार मित्र व शत्रु दोनों सिद्ध होते हैं। नियमानुसार 3रे स्थान को मित्र कहा है किन्तु सातवें को नहीं कहा है। इस स्थिति में जहां एक ग्रह दो राशियों का स्वामी है,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसकी दोनों राशियां नियमानुसार मित्र होने से मित्र, एक नियमानुसार मित्र व दूसरी मित्र न हो तो वह ग्रह सम होगा और दोनों ही नियमानुसार मित्र न हो तो शत्रु ही होगा। जैसे मंगल की मित्रता में शुक्र दूसरी राशि वृष का स्वामी है इसलिए मित्र है जबकि सातवीं राशि तुला का स्वामी शुक्र है इसलिए शत्रु है, अतः शुक्र सम हुआ। इसी प्रकार शनि दसवीं राशि मकर का उच्च है इसलिए शनि मंगल का मित्र हुआ, किन्तु 11वीं राशि कुम्भ का स्वामी शनि नियमानुसार शत्रु है इसलिए शनि भी सम है।

वराहमिहिर के अनुसार ग्रह मैत्री

शत्रू मंदसितौ समश्च शशिजो मित्राणि
शेषा रवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः।
जीवेंदूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ 16 ॥
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुत्द्धौ समौ कुजगुरु शुक्रस्य शेषावरी।
शुक्रज्ञौ सुहृदो समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयो ये
प्रोक्ता स्वत्रिकोणभादिषु पुनस्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥ 17 ॥

सूर्य के शुक्र व शनि शत्रु, बुध सम एवं शेष ग्रह चन्द्र, मंगल व गुरु मित्र हैं।

चन्द्र के सूर्य व बुध मित्र हैं, शत्रु कोई नहीं है, शेष सभी ग्रह मंगल, गुरु, शुक्र व शनि सम हैं।

मंगल के गुरु, चन्द्र व सूर्य मित्र हैं, बुध शत्रु एवं शुक्र व शनि सम हैं।

बुध के सूर्य व शुक्र मित्र हैं, चन्द्रमा शत्रु हैं एवं शेष ग्रह मंगल, गुरु व शनि सम हैं।

गुरु के बुध व शुक्र शत्रु हैं, शनि सम है और शेष ग्रह सूर्य, चन्द्र व मंगल मित्र हैं।

शुक्र के बुध व शनि मित्र हैं, मंगल व गुरु सम हैं एवं शेष ग्रह सूर्य व चन्द्र शत्रु हैं।

शनि के शुक्र व बुध मित्र हैं, गुरु सम हैं, शेष ग्रह सूर्य, चन्द्र व मंगल शत्रु हैं।

ये सब स्वाभाविक मित्रादि हैं। वराहमिहिर ने पूर्व में ग्रहों की मित्रादि की चर्चा करके पुनः क्यों करी इस संदेह की निवृत्ति के लिए ही वराहमिहिर कहते हैं—**'जीवो जीवबुधो सितेन्दुतनयौ'** नामक श्लोक 15 में मैं अपने मूल त्रिकोण स्थान से जो मित्रादि कहे हैं उसी के उदाहरण स्वरूप श्लोक 16, 17 कहे हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यादि ग्रहों का मित्र, शत्रु व सम चक्रम्

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शनि, शुक्र	बुध
चन्द्र	सूर्य, बुध	×	शनि. मंगल, गुरु, शुक्र
मंगल	चन्द्र, सूर्य, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुक्र, बुध	शनि
शुक्र	बुध, शुक्र	चन्द्र, सूर्य,	मंगल, गुरु
शनि	बुध, शुक्र	चन्द्र, सूर्य, मंगल	गुरु

तात्कालिक शत्रुता

अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थितास्तत्काले
सुहृदः स्वतुंगभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा।
द्वेयकानुक्तभपान्सुत्द्दत्समरिपून्सञ्चिन्त्य नैसर्गिकांस्ततले
च पुनस्तु तानधिसुव्द्दन्मित्रादिभिः कल्पयेत्॥ 18॥

जिस भाव में ग्रह हों उससे 2, 12, 11, 3, 10 और चौथे भाव के ग्रह तात्कालिक मित्र (Temporary Friend) होते हैं जबकि शेष भाव 1, 5, 6, 7, 8, 9वें भाव के ग्रह तात्कालिक शत्रु (Temporary Enemy) होते हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि ग्रह उच्च राशि में स्थित हों तो भी तात्कालिक मित्र होते हैं।

नैसर्गिक मित्र, सम, शत्रु जो भी पूर्वोक्त में कहे हैं वो तात्कालिक मित्र हों तो क्रम से अधिमित्र, मित्र और सम जानने चाहिएं। कहने का तात्पर्य यह है कि—

स्वाभाविक		तात्कालिक	फल
मित्र	+	मित्र	अधिमित्र
शत्रु	+	शत्रु	अधिशत्रु
सम	+	मित्र	मित्र
सम	+	शत्रु	शत्रु
मित्र	+	शत्रु	सम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तात्कालिक मित्रता-शत्रुता चक्रम्

मित्र	2	3	4	10	11	12	उच्च
शत्रु	5	6	7	8	9	1	×

अब एक जन्म कुंडली का उदाहरण देकर समझाते हैं—

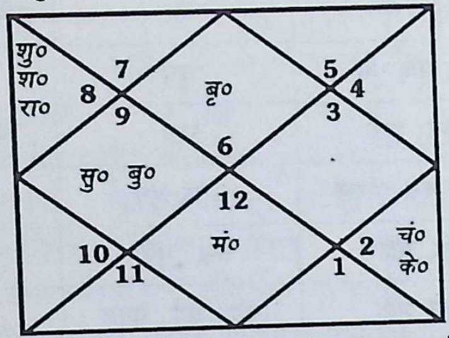

उपर्युक्त जन्म कुण्डली में सूर्य का चन्द्रमा नैसर्गिक मित्र है और जन्म कुण्डली में सूर्य से छठे स्थान में चन्द्रमा स्थित है जोकि नियमानुसार सूर्य का तात्कालिक शत्रु है अत: नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक शत्रु होने के कारण सूर्य का चन्द्रमा सम हुआ। इसी प्रकार सभी ग्रहों के लिए देखकर अधिमित्र, मित्र, सम, शत्रु, अधिशत्रु रूपी पंचधा मैत्री जाननी चाहिए।

तात्कालिक मैत्री चक्रम्

ग्रह	मित्र (तात्कालिक)	शत्रु (तात्कालिक)
सूर्य	मंगल (4), गुरु (10), शुक्र (12), शनि (4),	बुध (1), चन्द्र (6)
चन्द्र	मंगल (11)	गुरु (5), शुक्र व शनि (7), सूर्य व बुध (8)
मंगल	चन्द्र (3), सूर्य व बुध (10)	गुरु (7), शुक्र व शनि (9)
बुध	मंगल (4), गुरु (10), शुक्र (12) शनि (12)	सूर्य (1) चन्द्र (6)
गुरु	शुक्र व शनि (3), सूर्य व बुध (4)	मंगल (7), चन्द्र (9)
शुक्र	सूर्य व बुध (2), गुरु (11)	शनि (1), मंगल (5), चन्द्र (7)
शनि	सूर्य व बुध (2) गुरु (11)	शुक्र (1), मंगल (5), चन्द्र (7)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचधा मैत्री चक्रम्

ग्रह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
सूर्य	मंगल, गुरु	×	शुक्र, शनि चन्द्र	बुध	×
चन्द्र	सूर्य, बुध	मंगल, गुरु	×	शुक्र, शनि	×
मंगल	सूर्य, चन्द्र	×	बुध, गुरु	शुक्र, शनि	×
बुध	शुक्र	मंगल, गुरु शनि	सूर्य	×	चन्द्र
गुरु	सूर्य	शनि	बुध, चन्द्र मंगल, शुक्र	×	×
शुक्र	बुध	गुरु	शनि, सूर्य	मंगल	चन्द्र
शनि	सूर्य, बुध	गुरु	सूर्य	×	चन्द्र, मंगल

उदाहरण कुण्डली के **'तात्कालिक मैत्री चक्रम्'** व **' पंचधा मैत्री चक्रम्'** बनाकर ऊपर दे रहे हैं जिससे आप देखकर समझ सकें। तात्कालिक मैत्री चक्रम् में ग्रह के कोष्ठक में भाव संख्या अंकित है जो कि ग्रह से गिनने पर आती है।

ग्रहों के स्थान बल एवं दिग्बल

स्वोच्चसुहृत्स्वत्रिकोणनवांशैः स्थानबलं स्वगृहोपगतैश्च।
दिक्षु बुधांगिरसौ रविभौमौ सूर्यसुतः सितशीतकरौ च॥ 19॥

जो ग्रह अपने उच्च में, मित्र के घर में, स्व मूल त्रिकोण में, स्वनवांश में और स्वराशि में स्थित होता है वह स्थान बली होता है।

पूर्व आदि चारों दिशाओं एवं लग्नादि केन्द्र स्थानों में क्रम से बुध, गुरु, सूर्य मंगल, शनि, शुक्र और चन्द्रमा दिग्बलो होते हैं।

टिप्पणी—1. स्थान बली में सूर्य का सिंह मूल त्रिकोण है और स्वगृही भी है। चन्द्रमा का वृष उच्च है और मूल त्रिकोण भी है। बुध का कन्या उच्च है तथा मूल त्रिकोण और स्वगृही भी है। गुरु का धनु मूल त्रिकोण और स्वगृही भी है। शनि का कुम्भ स्वगृही और मूलत्रिकोण भी है। यहां इन ग्रहों का स्थान बल जानने के लिये ये विशेष श्लोक में नहीं कहा है।

इसी प्रकार लग्न में स्थित बुध और गुरु पूर्व में, दशम भाव में सूर्य और मंगल दक्षिण में, शनि सप्तम स्थान में पश्चिम में, चतुर्थ स्थान में चन्द्र और शुक्र उत्तर में दिग्बली होते हैं। इन स्थानों में सप्तम में स्थित ग्रह निर्बल होते हैं और मध्य में अनुपात से बल लाना चाहिए।

Prof.lMadhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिग्बल बोधक चक्रम्

मतान्तर से दिग्बल बोधक चक्रम् में ग्रह के नीचे राशि संख्या लिखी है। अतः गुरु व बुध पूर्व में लग्न में मेष, सिंह और धनु में दिग्बली होते हैं। शनि सप्तम में, पश्चिम में मिथुन, तुला व कुम्भ में दिग्बली होते हैं। चन्द्र व शुक्र उत्तर में कर्क, वृश्चिक व मीन राशि में दिग्बली होते हैं। सूर्य-मंगल दक्षिण में दशम भाव में वृष, कन्या व मकर राशि में दिग्बली होते हैं।

मतान्तर से दिग्बल बोधक चक्रम्

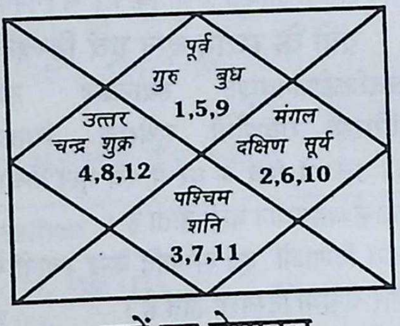

ग्रहों का चेष्टाबल

उदयगने रविशीतमयूखौ वक्रसमागमागाः परिशेषाः।
विपुलकरा युधि चोत्तरसंसथाश्चेष्टितवीर्ययुता परिकल्प्याः ॥ 20 ॥

सूर्य व चन्द्रमा उत्तरायण (मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष, मिथुन) में चेष्टाबली होते हैं और शेष ग्रह (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि) वक्री या चन्द्रमा से युत हों तो चेष्टाबली होते हैं।

ग्रहों का सूर्य से संयोग हो तो अस्त और चन्द्रमा से संयोग हो तो समागम कहलाता है। अधिक किरण वाला और युद्ध में उत्तर की ओर स्थित ग्रह बली होते हैं। यहां उत्तर की ओर स्थित कहना उपलक्षण मात्र है जो ग्रह हो वह बली होता है। यह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्षण शुक्र में प्राय: घटित होता है जब वह दक्षिण में जाता है।

ग्रहों के लक्षण

निशी शशिकुजसौरा: सर्वदा ज्ञोऽह्नि चान्ये।
बहुलसितगता: स्यु: क्रूरसौम्या: क्रमेण॥
द्व्ययनदिवसहोरा मासपै: कालवीर्य।
शरुबुगुशुचसाद्या वृद्धितो वीर्यवन्त: ॥ 21 ॥

चन्द्रमा, मंगल और शनि रात्रि में काल बली होते हैं। बुध रात्रि-दिन दोनों में बली होता है। सूर्य, गुरु व शुक्र दिन में बली होते हैं।

पापग्रह (सूर्य, मंगल व शनि) कृष्ण पक्ष में बली होते हैं। क्षीण चन्द्र व मंगल के अनुरूप पापी बुध भी कृष्ण पक्ष में बली होता है। सौम्य ग्रह (पूर्ण चन्द्र, गुरु, शुक्र, शुभ बुध) शुक्ल पक्ष में बली होते हैं। जिस वर्ष, मास, दिन व होरा का जो अधिपति होता है वह अपने वर्ष, मास, दिन और होरा में क्रमश: बली होता हैं।

अब नैसर्गिक बल कहते हैं—शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व चन्द्र और सूर्य क्रम से उत्तरोत्तर बली होते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र और चन्द्र से सूर्य बली होता है।

यहां ग्रहों के चारों प्रकार के बल स्थान बल, चेष्टा बल, काल बल और नैसर्गिक बल कहे हैं किन्तु इनका फल नहीं कहा है।

यदि नैसर्गिक बल कला में कहें तो निम्न प्रकार होगा— सूर्य 60 कला, चन्द्र 51.43 कला, शुक्र 42.8 कला, गुरु 34.2 कला, बुध 25.7 कला, मंगल का 17.14 कला और शनि का 8.57 कला होता है।

अब कल्याण वर्मा कृत सारावली से यहां चारों प्रकार के बलों का फल दे रहे हैं—

स्थानबल से युत ग्रह फल

स्थानबलेन समेत: स्थितिसौख्यसुहृच्च भागाढ्य:।
धीरो निश्चलचित्त: स्वतन्त्रकर्मा भवेन्मनुज: ॥

स्थानबल से युत ग्रह जातक को स्थिर व मित्रसुखी, भाग्यवान्, धैर्यवान, स्थिरचित्त एवं स्वतन्त्र कार्यकर्त्ता बनाता है।

दिग्बल से युत ग्रह फल

आशाबलसमुपेतो नयति स्वदिशं नभश्चर: पुरुषम्।
नीत्वा वस्त्रविभूषणवाहनसौख्यान्वितं कुरुते॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिग्बल से युत ग्रह पुरुष को अपनी दिशा में ले जाता है और वहां ले जाकर वस्त्र, भूषण और वाहन सुख से युक्त करता है।

अयनबल से युत ग्रह फल

आयनबलसमुपेतो दद्याद्विविधार्थसमङ्गमं स्वदिशि।

अयन बल से युत ग्रह अपनी दिशा में अनेक प्रकार से धन लाभ कराता है।

चेष्टाबल से युत ग्रह फल

क्वचिद्राज्यं क्वचित्पूजां क्वचिद्द्रव्यं क्वचिद्यशः
ददाति विहगश्चित्रं चेष्टावीर्यसमन्वितः।

चेष्टाबल से युत ग्रह जातक को कभी राज्य, कभी पूजा, कहीं द्रव्य (धन), कहीं यश, ऐसा विचित्र फल देता है।

शुभ, पाप व वक्री ग्रह का फल

वक्रिणस्तु महावीर्याः शुभा राज्यप्रदा ग्रहाः।
पाप व्यसनिनां पुंसां कुर्वन्ति च वृथाटनम्॥

शुभ ग्रह वक्री होकर अति बलवान होने से राज्य सुख को देते हैं। पाप ग्रह वक्री होने पर व्यसनी (दुःखदायी) और वृथा (व्यर्थ) घूमने वाला बना देते हैं।

निष्कंटक राज्यप्रद ग्रह फल

स्वस्थशरीरसमागमसुकरोद्धवजयबलेन विदधाति।
शुभमखिलं विहगेन्द्रो राज्यं च विनिर्जिनारातिम्॥

यदि ग्रह का निर्मल बिम्ब, या चन्द्र का सान्निध्य हो एवं युद्ध में विजयी हो तो वह ग्रह सम्पूर्ण शुभ फल और शत्रुओं से न जीतने वाले राज्य को देता है।

दिन रात्रि बल से युत ग्रह फल

रात्रिदिवाबलपूर्णेभूगजलाभेन शौर्य परविृद्ध्या।
मलिनयति शत्रुपक्षं भजति च लक्ष्मीं नभश्चरैः पुरुषः॥

रात्रि दिन बल से युत ग्रह भूमि व हाथी के लाभ से एवं पराक्रम की अधिकता से शत्रुपक्ष को मलिन कर अर्थात् जीतकर लक्ष्मी प्राप्त कराता है।

वर्षेशादि ग्रह फल

द्विगुणं द्विगुणं दद्युर्वर्षाधिपमासदिवसहोरेशः।
क्रमपरिवृद्ध्या सौख्यं स्वदशासु धनं च कीर्तिं च॥

वर्षेश, मासेश, दिवसेश और होरेश अपनी-अपनी दशा में क्रम वृद्धि से दुगुना सुख कीर्ति व धन को देते हैं अर्थात् वर्षेश से द्विगुण दिवसेश से द्विगुण होरा स्वामी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वोक्त सुखादि फल देता है ।

पक्षबल से युत ग्रह का फल

पक्षबलाद्रिपुनाशं रत्नाम्बरहस्तिसंपदं दद्युः ।
स्त्रीकनकभूमिलाभान्कीर्तिं च शशाङ्ककरधवलाम् ॥

पक्षबल से युत ग्रह शत्रु नाश, रत्न, वस्त्र, हाथी (वाहन) आदि सम्पत्ति और स्त्री, सुवर्ण, भूमि का लाभ एवं चन्द्र की किरणों के समान स्वच्छ कीर्ति को देता है ।

समस्त बल से युत ग्रह का फल

सकलकर भारभारितनिर्मलकरजालभासुराः सततम् ।
राज्यं ग्रहाः प्रदद्युः सौख्यं च मनारथातीतम् ॥

जो ग्रह पूर्वोक्त बलों से युक्त तथा स्वच्छ किरणों के समूह से शोभायमान हो तो जातक की इच्छा से भी अधिक राज्य और सुख को देता है ।

बलवान् शुभ ग्रहों का फल

आचारसत्यशुभशौचयुताः सुरूपास्तेजस्विनः कृतिविदो द्विजदेवभक्ताः
स्रग्वस्त्रगन्धजलभूषणसंप्रियाश्च सौम्यग्रहैर्बल्युतैः पुरुषा भवन्ति ॥

यदि जन्मकाल में समस्त शुभ ग्रह बलवान हों तो जातक शुभाचार, सत्य, शुभ पवित्रता से युत, सुन्दर स्वरूपवान् , तेजस्वी, कार्यकुशल, ब्राह्मण और देवता का भक्त, माला, वस्त्र, सुगन्धित जल, अलंकार में प्रीति करने वाला होता है ।

बलवान् पाप ग्रहों का फल

लुब्धाः कुकर्मनिरता निजकार्यनिष्ठाः साधुद्विषः सकलहाश्च तमोऽभिभूताः ।
क्रूराः सदा बधरता मलिनाः कृतघ्नाः पापग्रहैर्बलयुतैः पिशुनाः कुरूपाः ॥

जन्मकाल में यदि समग्र पाप ग्रह बलवान् हों तो जातक लोभी, दुष्कर्म में प्रीति, स्वार्थ परायण, सज्जन द्वेषी, कलहकर्त्ता , तामसी, क्रूर, हिंसक, मलिन, कृतघ्न, चुगलखोर और कुरूप होता है ।

इत्यवन्तिकाचार्यवराहमिहिर विरचिते बृहज्जातके ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ 2 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

3 वियोनिजन्माध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर उन योगों की चर्चा करेंगे जो वियोनि (पशु, पक्षी, जलचर, वृक्ष आदि) जन्म के सम्बन्ध में संकेत देते हैं।

वियोनि जन्म ज्ञान कैसे करें ?

क्रूरग्रहैः सुबलिभिर्विबलैश्च सौम्यैः क्लीबे चतुष्टयगते तदवेक्षणाद्वा।
चंद्रोपगगाद्विरसभागसमानरूपं सत्वं वदेद्यदि भवेत्स वियोनिसंज्ञः ॥ 1 ॥

जन्मकालिक या प्रश्नकालिक कुण्डली में समस्त पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, निर्बल चन्द्र, पाप ग्रहों से युत बुध) बली हों, समस्त शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बली चन्द्र, पाप ग्रहों से वियुक्त बुध) निर्बल हों तथा नपुंसक ग्रह (शनि व बुध) केन्द्र (1,4,7,10) में हो तो वियोनि का जन्म कहना चाहिए।

अथवा चन्द्रमा पापग्रह के द्वादशांश में हो, शुभ ग्रह बल रहित हों, लग्न बुध या शनि द्वारा दृष्ट हो तथा पापग्रह बली हों और शुभ ग्रह निर्बल हों तो वियोनि का ज़न्म कहना चाहिए।

टिप्पणी— उपर्युक्त योगों में से कोई एक हो और चन्द्रमा जिस राशि के द्वादशांश में हो उसके अनुरूप वियोनि का जन्म कहना चाहिए।

चन्द्र किस द्वादशांश में	किस वियोनि का जन्म हो
मेष के द्वादशांश में हो तो	बकरी व भेड़
वृष के द्वादशांश में हो तो	गौ, बैल, भैंस
कर्क के द्वादशांश में हो तो	कछुआ
सिंह के द्वादशांश में हो तो	शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली
वृश्चिक के द्वादशांश में हो तो	सर्प, बिच्छुादि
धनु के उत्तरार्ध में हो तो	घोड़ा, गधा आदि
मकर के पूर्वार्ध में हो तो	मृग, हाथी आदि
मकर के उत्तरार्ध में हो तो	मेंढक व जलीय जन्तु
मीन के द्वादशांश में हो तो	मछली आदि का जन्म

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि चन्द्रमा मानव राशि में हो तो मानव जाति का जन्म कहना चाहिए।

यदि चन्द्रमा सम द्वादशांश में हो तो नर (Male) संतान होती है और विषम नवांश में हो तो मादा (Female) संतान उत्पन्न होती है। यदि अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो सन्तान की जल्दी ही मृत्यु हो जाती है।

पापा बलिनः स्वभागगाः पारक्ये विबलाश्च शोभनाः।
लग्नं च वियोनिसंज्ञकं दृष्ट्वात्रापि वियोनिमादिशेत् ॥ 2 ॥

बली पाप ग्रह स्वनवांश में हों, निर्बल शुभ ग्रह शत्रु नवांश में हों और वियोनि संज्ञक लग्न (मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु का उत्तरार्ध, मकर, मीन) में से कोई लग्न हो तो चन्द्रमा जिस वियोनि संज्ञक द्वादशांश में स्थित हो उसके सदृश वियोनि का जन्म कहना चाहिए।

वियोनि (चतुष्पदों) का अंग विभाग कैसे करें?

क्रियः शिरो वक्त्रगले वृषोऽन्ये पादांशकं पृष्ठमुरोऽथ पार्श्वे।
कुक्षिस्त्वपानांघ्र्याथ मेंढ्रमुष्कौ स्फिक्पुच्छमित्याह चतुष्पदाङ्गे ॥ 3 ॥

वियोनि में श्रेष्ठ चतुष्पद का राशि के वश में अंग विभाग कहते हैं—चतुष्पदाकार कालचक्र मानकर मेष को सिर, वृष को चेहरा एवं गर्दन, मिथुन को अगले पांव (Fore Legs) व कन्धे (Shoulders), कर्क को पीठ, सिंह को छाती, कन्या को पार्श्वद्वय (Two Sides), तुला को दोनों कोखियां (Belly), वृश्चिक को गुदा (Anus), धनु को पिछले पांव, मकर को जनन अंग और वृषण, कुंभ को चूतर और मीन को पूंछ पर मानना चाहिए।

टिप्पणी— पक्षियों में भी उपयुक्त तरह ही समझना चाहिए, मिथुन को अगले पांव की जगह पंखों (Wings) पर समझना चाहिए।

वियोनि वर्ण ज्ञान कैसे करें?

लग्नांशकाद् ग्रहयोगेक्षणाद्वा वर्णान्वेदेछलयुक्ताद्वियोनौ।
दृष्ट्या समानान्प्रवेदत्स्वसंख्यया रेखां वदेत्स्मरसंस्थैश्च पृष्ठे ॥ 4 ॥

कुण्डली के लग्न में जो ग्रह स्थित हों उनके अनुरूप ही उस जन्तु (वियोनि) का रंग (Colour) समझना चाहिए। लग्न में कोई ग्रह न हो तो जो ग्रह सर्वाधिक दृष्टि रखता हो उसके अनुसार वियोनि का रंग बताना चाहिए। यदि एक से अधिक ग्रह लग्न में हों या उसे देखते हों तो वियोनि के विभिन्न रंग होते हैं। जो ग्रह अधिक बली हो उसका रंग वियोनि में अधिक कहना चाहिए। सप्तम स्थान स्थित ग्रहों में जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उस रंग की रेखा वियोनि (जन्तु) की पीठ पर बतानी चाहिए।

टिप्पणी— 1. ग्रहों के रंग के लिए अध्याय दो के श्लोक 5 की व्याख्या देखें। 2. लग्न

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जो नवांश है उसके अनुसार वियोनि का रंग हो सकता है ।3. सारावली के अनुसार गुरु का रंग पीला, चन्द्रमा का सफेद, शुक्र का रंग-बिरंगा (Variegated), सूर्य और मंगल का लाल, शनि का काला और बुध का धब्बेदार (Spotted) होता है ।

पक्षी जन्म ज्ञान कैसे करें ?

खगे दृकाणे बलसंयुतेन वा ग्रहेण युक्ते चरभांशकोदये ।
बुधांशके वा विहगाः स्थलांबुजाः शनैश्चरेंद्वीक्षणयोगसंभवाः ॥ 5 ॥

पक्षी के द्रेष्काण (मिथुन का दूसरा द्रेष्काण, सिंह का पहला द्रेष्काण, तुला का दूसरा द्रेषकाण और कुम्भ का पहला द्रेष्काण) लग्न में हो और शनि या चन्द्र से युत या दृष्ट हो तो पक्षी का जन्म होता है । यह पहला योग है ।

या लग्र में चर राशि का नवांश हो और शनि या चन्द्र से युत या दृष्ट हो तो पक्षी का जन्म होता है । यह दूसरा योग है ।

उपर्युक्त योगों में जहां शनि से युत या दृष्ट हो वहां पर स्थलचर पक्षी समझना चाहिए और जहां पर चन्द्र से युत या दृष्ट हो वहां पर जलचर पक्षी समझना चाहिए ।

टिप्पणी— 1. मिथुन और तुला का दूसरा द्रेष्काण व सिंह और कुंभ का प्रथम द्रेष्काण पक्षी द्रेष्काण (Bird Decanates) है ।2. चर राशि का चर नवांश हो जैसे मेष, कर्क, तुला व मकर ।

वृक्ष जन्म ज्ञान कैसे करें ?

होरेन्दुसूरिरविभिर्विबलैस्तरूणां तोये
स्थले तरूभवोंशकृतः प्रभेदः ।
लग्नाद् ग्रहः स्थलजलर्क्षपतिस्तु
यावांस्तावन्त एव तरवः स्थलजोयजाताः ॥ 6 ॥

प्रश्नकाल में लग्न, चन्द्रमा, गुरु और रवि निर्बल हों तो वृक्ष का जन्म कहना चाहिए । वृक्ष जलज (Watery) या स्थलज (Earthy) है, इसके लिए लग्न में जिस राशि का नवांश हो उस प्रकार के वृक्ष के जन्मज्ञान को कहना चाहिए । अतः जलीय नवांश हो तो वृक्ष का जन्म जल में और भूराशि का नवांश हो तो स्थलज (भूमि पर) वृक्ष का जन्म कहना चाहिए ।

लग्न नवांश का स्वामी जिस भाव में हो वृक्ष के जन्म की उतनी संख्या कहनी चाहिए । यदि नवांश स्थायी उच्चादि स्थान में हो तो भाव संख्या को दूना करके वृक्ष की संख्या बतानी चाहिए ।

टिप्पणी— 1. कर्क मकर के द्वितीय आधे भाग का नवांश और मीन राशि के नवांश

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जलज वृक्ष और शेष राशि के नवांश में स्थलज वृक्ष का ज्ञान समझना चाहिए। 2. मान लो कर्क लग्न 20 अंश पर था तो छठे नवांश धनु और स्वामी गुरु हुआ। धनु नवांश स्थलज है अत: वृक्ष का जन्म भूमि पर एवं नवांश स्वामी गुरु मान लो कुम्भ राशि में स्थित है तो कर्क से कुंभ तक आठ की संख्या होती है अर्थात् 8 वृक्ष का जन्म हुआ। यदि नवांश स्वामी गुरु कर्क राशि में होता तो वृक्ष की संख्या 1 होती, गुरु उच्चराशि में होने के कारण दुगनी संख्या ($1 \times 2 = 2$) वृक्ष ज्ञान की बतानी होगी।

वृक्ष विशेष के जन्म का ज्ञान कैसे करें ?

अंत: साराञ्जनयति रविर्दुर्भगान्सूर्यसूनु:
क्षीरोपेतांस्तुहिनकिरण: कंटकाढ्यांश्च भौम:।
वागीशज्ञौ सफलविफलान्पुष्प वृक्षांश्च शुक्र:
स्निग्धानिंदु: कटुकविटपान्भूमिपुत्रश्च भूय: ॥ 7 ॥

प्रश्नकालिक एवं जन्म कालिक कुण्डली में लग्न में सूर्य, शनि, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, चन्द्र का नवांश हो तो निम्न प्रकार के वृक्ष का जन्म होता है—

यदि नवांश	किस वृक्ष का जन्म हो
सूर्य हो तो	ठोस वृक्ष जैसे शीशम, साखू आदि।
शनि हो तो	भद्दे और बेकार वृक्ष जैसे कुश काश, शरपत आदि।
चन्द्र हो तो	मीठे रस युक्त वृक्ष जैसे आम एवं गोंद युक्त वृक्ष जैसे चीड़।
मंगल हो तो	कांटेदार वृक्ष बेर, बबूलादि और कड़वे वृक्ष जैसे नीम।
गुरु हो तो	फलदार वृक्ष जैसे आम जामुन आदि।
बुध हो तो	फलहीन वृक्ष होते हैं, किन्तु फल रहते हैं जैसे करीर आदि।
शुक्र हो तो	फूलों से युक्त वृक्ष जैसे चमेली, जूही आदि।

वृक्ष संख्या ज्ञान कैसे करें ?

शुभो शुभर्क्षे रुचिरं कुभूमिजं करोति वृक्षं विपरीतमन्यथा।
परांशके यावति विच्युत: स्वकाद्भवंति तुल्यास्तरवस्ताथाविद्या: ॥ 8 ॥

श्लोक सात में कहे गए वृक्ष जन्म के योगों में पूर्वोक्त नवांश का स्वामी शुभ ग्रह हो और शत्रु या पाप ग्रह के भाव में स्थित हो तो खराब भूमि में भी उत्तम वृक्ष उगते हैं।

यदि उक्त नवांश का स्वामी पाप ग्रह हो और शुभ व मित्र ग्रह के भाव में स्थित हो तो अच्छी भूमि में भी खराब वृक्ष उगते हैं।

अर्थात स्पष्ट है कि नवांश स्वामी शुभ होकर शुभ और मित्र भाव में स्थित हो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो उत्तम भूमि में उत्तम वृक्ष उगते हैं और नवांश स्वामी पापी होकर शत्रु और पाप ग्रह के भाव में स्थित हो तो खराब भूमि में खराब वृक्ष उगते हैं ।

वृक्ष की संख्या ज्ञान के लिए देखें कि नवांश का स्वामी स्व नवांश को छोड़कर उससे जितनी संख्या वाले दूसरे नवांश में स्थित हो उतनी संख्या वृक्षों की कहनी चाहिए ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके वियोनिजन्माध्यायस्तृतीयः ॥ 3 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

4 निषेकाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर गर्भाधान और मनचाही संतान प्राप्ति के शुभाशुभ ज्ञान की चर्चा करेंगे ।

गर्भधारण का समय ज्ञान

कुजेन्दुहेतुः प्रतिमासमार्तवं गते तु पीडर्क्षमनुष्णदीधितौ ।
अतोन्यथास्थे शुभपुंग्रहेक्षिते नरेण संयोगमुपैतिकामिनी ॥ 1 ॥

मंगल और चन्द्रमा ये दोनों स्त्रियों के मासिक रजोदर्शन (Monthly Menses) के कारण हैं क्योंकि चन्द्रमा जलीय अर्थात् रक्त स्वरूप और मंगल अग्नि अर्थात पित्त स्वरूप है । जब पित्त से रक्त क्षुभित होता है तब स्त्री को रजोदर्शन होता है ।

स्त्री की जन्म राशि से जब चन्द्रमा 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, व 12वें भाव में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो तो उस समय का रजोदर्शन गर्भधारण के लिए उचित होता है ।

यदि चन्द्रमा पति की जन्मराशि से 3, 6, 10, व 11वें भाव में हो और शुभ ग्रह (गुरु) से दृष्ट हो तो स्त्री पति के साथ में संभोगरत् होती है ।

टिप्पणी— जब चन्द्रमा मंगल से दृष्ट होता है और मंगल से 4, 7 या 8वें भाव में रहता है तो स्त्री में मासिक रजोदर्शन होता है । इस सम्बन्ध में सारावली के रचयिता कल्याण वर्मा का आठवें अध्याय के श्लोक 2,3,4,5,6,7 में कहना है —

1. स्त्री की जन्म राशि से चन्द्रमा जब अनुपचय राशि में अर्थात् राशि से 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 12 इन स्थानों में हो और गोचर में स्थित मंगल की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टि रहने पर प्रति मास स्त्री को मासिक धर्म होता है । ऐसा अनेक आचार्यों का कथन है ।
2. स्त्रियों को प्रत्येक मास में योनि से तीन दिन तक रुधिर बहता है । उसी को रजोदर्शन कहते हैं । उस रजोदर्शन का कारण चन्द्रमा और मंगल हैं क्योंकि जलमय चन्द्रमा और अग्निमय मंगल है । इसलिए जल से रूधिर और अग्नि से पित्त उत्पन्न होता है । जब पित्त के द्वारा रुधिर (खून) में हलचल होती है तो स्त्रियों को मासिक धर्म होता है ।
3. इस प्रकार जो प्रत्येक मास स्त्रियों को मासिक धर्म होता है वही गर्भ का कारण है । यदि स्त्री की राशि से 3, 6, 10, 11वें चन्द्रमा हो तो वह मासिक धर्म निष्फल होता है अर्थात् गर्भाधारण की क्षमता उस रजोदर्शन में नहीं होती है ।
4. पुरुष की राशि से उपचय 3, 6, 10, 11वीं राशि में चन्द्रमा हो और उस पर गुरु की या अपने मित्र ग्रह की विशेष कर शुक्र की दृष्टि रहने पर यदि स्त्री पुरुष में

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयोग होता है तो गर्भ अवश्य होगा ।

5. यदि उपचयस्थ चन्द्रमा रजोदर्शन के समय मंगल से दृष्ट हो तो धूर्त पुरुष से, सूर्य से दृष्ट हो तो राजपुरुष से, शनि से दृष्ट हो तो नौकर से स्त्री का संयोग होता है । इस प्रकार एक-एक पाप ग्रह से दृष्ट हो और अन्य (शुभ ग्रह) से अदृष्ट होने पर पूर्वोक्त फल समझना चाहिए । यदि भौमादि सब पापग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो वह स्त्री घर का परित्याग करके वैश्या हो जाती है ।

गर्भाधान लग्न से मैथुन की प्रकृति

यथास्तराशिर्मिथुनं समेति तथैव वाच्यो मिथुन प्रयोगः ।
असद्ग्रहालोकितसंयुतेऽस्ते सरोष इष्टैः सविलासहासः ॥ 2 ॥

स्त्री पुरुष के संभोग के विषय में गर्भाधान लग्न की सप्तम राशि से जानना चाहिए । यदि सप्तम स्थान पापग्रह से युत या दृष्ट हो तो क्रोध, कलह या बलपूर्वक संभोग होता है । यदि सप्तम भाव शुभ ग्रह से दृष्ट या युत हो तो हास-विलास व प्रसन्नता सहित स्त्री-पुरुष में संभोग होता है ।

टिप्पणी— सप्तम भाव की राशि द्विपद या चतुष्पद जैसी भी हो उसी प्रकार से संभोग की रीति होती है अर्थात् चौपाए की तरह या द्विपद की तरह ।

गर्भाधान सफल या निष्फल संबंधी ज्ञान

रवींदु शुक्रावनिजैः स्वभागगैर्गुरौ त्रिकोणोदयसंस्थितेऽपिवा ।
भवत्यपत्यं हिं विबीजिनामिमे करा हिमांशोर्विदृशामिवाफलाः ॥ 3 ॥

गर्भाधान काल में सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र और मंगल अपने-अपने नवांश (स्व नवांश) में हो तो गर्भाधान सफल कहना चाहिए ।

यदि गुरु नौवें, पांचवें या लग्न में स्थित हो तो गर्भाधान सफल कहना चाहिए ।

इन योगों के होने पर भी यदि कोई नपुंसक है तो गर्भाधान उसी तरह निष्फल है जिस प्रकार चन्द्रमा की अमृतमयी रश्मियां अन्धों के लिए व्यर्थ है ।

टिप्पणी— यदि पूर्वोक्त चारों ग्रह स्वनवांश में न हों तो पुरुष की जन्मराशि से उपचय (3, 6, 10, 11वें) भाव में स्थित सूर्य व शुक्र स्वनवांश में हो तथा स्त्री जन्म राशि से 3, 6, 10, और 11वें भाव में चन्द्र मंगल स्वनवांश में हों तो अवश्य गर्भाधान सफल कहना चाहिए ।

गर्भाधान काल से प्रसूति काल तक का शुभाशुभ विचार

द्विवाकरेन्द्वोः स्मरगौ कुजार्कजौ गदप्रदा पुङ्गलयोषितोस्तदा ।
व्ययस्वगौ मृत्युकरौ युतौ तथा तदेकदृष्ट्या मरणाय कल्पितौ ॥ 4 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्भाधान लग्न या प्रश्नकाल में सूर्य से सातवें भाव में मंगल और शनि हों तो पुरुष को रोग से कष्ट देते हैं और यदि चन्द्र से सातवें भाव में मंगल या शनि हो तो स्त्री को रोग से कष्ट देते हैं। स्त्री-पुरुष को यह कष्ट मंगल व शनि अपने-अपने मास में ही देते हैं। मंगल का मास गर्भाधान से दूसरा और शनि का मास गर्भाधान से छठा होता है। इसकी चर्चा इसी अध्याय के 10वें श्लोक में की गई है।

सूर्य से द्वितीय या द्वादश इन दोनों भावों में किसी एक में मंगल और दूसरे में शनि स्थित हो तो अपने-अपने मास में पुरुष को मरण देते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा से द्वितीय या द्वादश भाव में शनि या मंगल हो तो स्त्री को मरण देते हैं।

पुरुष रोग योग

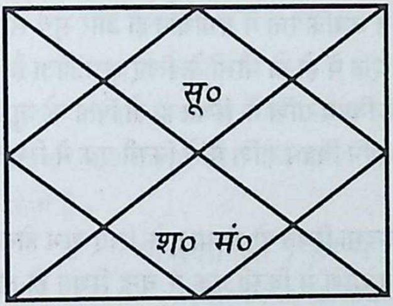

स्त्री रोग योग

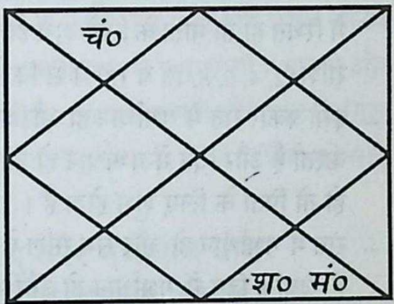

पुरुष मृत्यु योग

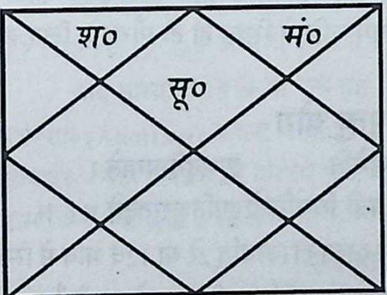

स्त्री मृत्यु योग

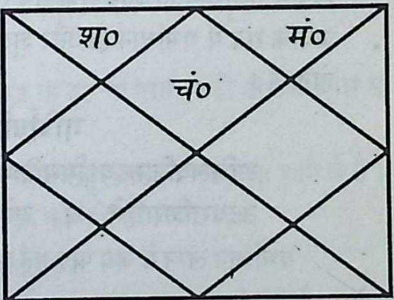

पिता, चाचा, माता और मौसी के लिए शुभाशुभ ज्ञान

दिवार्कशुक्रौ पितृतातृसंज्ञितौ शनैश्चरेन्दू निशितद्विपर्यायत्।
पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ च तावथैजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥ 5 ॥

दिन में गर्भाधान हो तो सूर्य पिता का और शुक्र माता का परिचायक है।

रात में गर्भाधान हो तो शनि पिता का और चन्द्रमा माता का परिचायक है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिन में गर्भाधान हो तो शनि चाचा का और चन्द्रमा मौसी का परिचायक है।

रात में गर्भाधान हो तो सूर्य चाचा का और शुक्र मौसी का परिचायक है।

जो ग्रह पिता व चाचा के परिचायक हैं, यदि वे विषम राशि में स्थित होते हैं और जो ग्रह माता व मौसी के परिचायक हैं यदि वे सम राशि में स्थित होते हैं तो पिता, चाचा, मौसी व माता के लिये शुभ होते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि—

- दिन में गर्भाधान हो और सूर्य विषम राशि (1, 3, 5, 7, 9, और 11) में से किसी एक राशि में स्थित है तो पिता के लिए शुभ होता है जबकि रात में गर्भाधान हो और सूर्य विषम राशि में स्थित हो तो चाचा के लिए शुभ होता है।
- दिन में गर्भाधान हो और सूर्य सम राशि (2, 4, 6, 8, 10 व 12) में से किसी एक राशि में स्थित हो तो माता के लिये शुभ होता है जबकि रात में गर्भाधान हो और सूर्य सम राशि (2, 4, 6, 8, 10 व 12) में से किसी एक में हो तो मौसी के लिए शुभ होता है।
- इसी प्रकार रात में गर्भाधान हो और शनि विषम राशि में स्थित हो तो पिता को शुभ करता है और दिन में गर्भाधान हो और शनि विषम राशि में से किसी एक में स्थित हो तो पिता के लिए शुभ होता है।
- रात में गर्भाधान हो और सम राशि में चन्द्रमा स्थित हो तो माता के लिए शुभ होता है, जबकि दिन में गर्भाधान हो और सम राशि में किसी एक में चन्द्र स्थित हो तो मौसी के लिए शुभ होता है।
- दिन में गर्भाधान हो और शुक्र सम राशि में स्थित हो तो माता के लिए शुभ होता है, जबकि रात में गर्भाधान हो और शुक्र सम राशि में स्थित हो तो मौसी के लिए शुभ होता है।

गर्भिणी मृत्यु योग

अभिलषद्भिरुदयर्क्षमसद्भिर्मरणमेति शुभदृष्टिमयाते।
उदयराशिसहिते च यमे स्त्री विगलितोडुपतिभूसुतदृष्टे ॥ 6 ॥

गर्भाधान लग्न् में जब पाप ग्रह आने वाला हो (अर्थात् 2रे या 12वें भाव में स्थित हो) और कोई शुभ ग्रह लग्न को न देखता हो तो गर्भिणी की मृत्यु हो जाती है।

शनि गर्भाधान लग्न में हो और उसको क्षीण चन्द्र व मंगल देखते हों तो गर्भिणी की मृत्यु हो जाती है।

टिप्पणी— जन्म स्थान, गर्भाधान लग्न और प्रश्न लग्न से भी विचार करना चाहिए।

पापद्वयमध्यसंस्थितौ लग्नेन्दू न च सौम्यवीक्षितौ।
युगपत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विपद्यते ॥ 7 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि लग्न और चन्द्र दो पाप ग्रहों के बीच में स्थित हो और उनको कोई शुभ ग्रह न देखता हो तो गर्भिणी की मृत्यु होती है । यह योग बलशाली पापग्रह के भाव में घटित हो सकता है ।

टिप्पणी— इस योग में पापग्रह मात्र तीन हैं अर्थात् सूर्य, मंगल और शनि । लग्न और चन्द्रमा या लग्न अथवा चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो अर्थात् लग्न में चन्द्र हो और द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हों और लग्न को कोई शुभ ग्रह न देखता हो । इस प्रकार लग्न और चन्द्रमा से अनेक योग बन सकते हैं ।

क्रूरे शशिनश्चतुर्थगेलग्नाद्वा निधनाश्रिते कुजे ।
बंध्वंत्यगयोः कुजार्कयोः क्षीणेंदौ निधनाय पूर्ववत् ॥ 8 ॥

यदि गर्भाधान लग्न में पाप ग्रह चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में हो और मंगल आठवें भाव में स्थित हो तो गर्भिणी की मृत्यु होती है अथवा लग्न से पापग्रह चौथे भाव में और अष्टम में मंगल हो तो भी गर्भिणी की मृत्यु होती है । अथवा लग्न में चौथे भाव में मंगल, बारहवें भाव में सूर्य और चौथे या बारहवें भाव में क्षीण चन्द्र हो तो गर्भिणी की मृत्यु होती है ।

गर्भिणी की शस्त्र से मृत्यु और गर्भस्त्राव योग

उदयास्तगयोः कुजार्कयोर्निधनं शस्त्रकृतं वदेत्तथा ।
मासाधिपतौ निपीडिते तत्काले स्त्रवणं समादिशेत् ॥ 9 ॥

गर्भाधान लग्न में यदि लग्न में मंगल हो और सातवें भाव में सूर्य हो तो गर्भिणी की शस्त्र (Weapon) से मृत्यु होती है ।

यदि मासाधिपति किसी पाप ग्रह से युत या दृष्ट या पराजित हो तो उसी मास में गर्भस्त्राव (Abortion) बताना चाहिए ।

टिप्पणी— यहां पापग्रहों से तात्पर्य सूर्य, क्षीण चन्द्र, राहु, केतु या मंगल या शनि से है । मासाधिपति के लिए इसी अध्याय के श्लोक 16 को पढ़ें ।

स्वस्थ गर्भज्ञान

शशांकलग्नोपतगतैः शुभग्रहै स्त्रिकोणाजायाऽर्थसुखास्पदा स्थितैः ।
तृतीयलाभर्क्षगतैश्च पापकैः सुखी तु गर्भो रविणा निरीक्षितः ॥ 10 ॥

चन्द्र जहां स्थित हो उसमें या लग्न में या लग्न व चन्द्र स्थान (दोनो) में शुभ ग्रह हों , चन्द्र या लग्न या दोनों (चन्द्र व लग्न) से 5, 9, 7, 2, 10, व 12वें भाव में शुभ ग्रह हों, चन्द्र या लग्न या दोनों से 3रे व 11वें भाव में पापग्रह हों, चन्द्रमा लग्न या दोनों पर सूर्य की दृष्टि हो तो गर्भ पुष्ट, स्वस्थ विकसित और सुरक्षित जन्म होगा ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी—कुछ लोगों का मत है कि इस श्लोक में **'रविणा'** के स्थान पर **'गुरुणा'** होना चाहिए, किन्तु सारावली ने रविणा को ही मान्य करते हुए इसका विरोध किया है।

गर्भ में पुत्र-पुत्री व जुड़वां सन्तान का ज्ञान

ओजक्षे पुरुषांशकेषु बलिभिर्लग्नार्कगुर्विंदुभिः
पुंजन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु तैर्योषितः।
गुर्वर्कौ विषमे नरं शशिसितौ वक्रश्च युग्मे स्त्रियं।
द्व्यंगस्था बुधवीक्षणाच्च यमलौ कुर्वंति पक्षे स्वके ॥ 11 ॥

गर्भाधान या प्रश्न लग्न में लग्न, सूर्य, गुरु और चन्द्रमा विषम राशि या विषम राशि के नवांश (1, 3, 5, 7, 9, 11) में स्थित हों तो गर्भिणी के गर्भ में पुत्र कहना चाहिए।

यदि गर्भाधान या प्रश्नलग्न में लग्न, सूर्य गुरु और चन्द्रमा सम राशि या सम राशि के नवांश में स्थित हों तो गर्भिणी के गर्भ में कन्या है, कहनी चाहिए।

यदि लग्न, सूर्य , गुरु और चन्द्रमा विषम राशि या विषम नवांश में स्थित हों तो गर्भिणी के गर्भ में पुत्र कहना चाहिए।

यदि बली चन्द्र, शुक्र और मंगल सम राशि में स्थित हों तो गर्भिणी के गर्भ में कन्या है, ये समझना चाहिए।

पुनः ये ग्रह (सूर्य, गुरु, चन्द्रमा, शुक्र और मंगल) द्विस्वभाव राशि (3, 6, 9, 12) में हो या सम या विषम नवांश में हों और बुध से दृष्ट हों तो जुड़वां (Twin) सन्तान होती है।

यदि सूर्य और गुरु विषम या द्विस्वभाव राशि (3 व 9) के नवांश में हो और बुध से दृष्ट हों तो दो पुत्रों का जन्म कहना चाहिए।

यदि मंगल, चन्द्र व शुक्र सम या द्विस्वभाव राशि (6 व 12) के नवांश में हो और बुध से दृष्ट हों तो दो कन्याओं का जन्म कहना चाहिए।

यदि आंशिक रूप से दोनों योगों के ग्रह द्विस्वभाव राशि में हों और बुध से दृष्ट हों तो एक पुत्र और एक कन्या का जन्म कहना चाहिए।

टिप्पणी— यदि कुछ ग्रह पुरुष राशि के नवांश में और कुछ ग्रह स्त्री राशि के नवांश में हों तो पुत्र-पुत्री का कथन प्रभावित हो सकता है, ऐसे में विवेक सम्मत बुद्धि से विचार करना चाहिए अथवा जिस प्रकार (स्त्री या पुरुष) के नवांश का प्रभाव अधिक हो उसी प्रकार की सन्तान का जन्म कहना चाहिए। इसी प्रकार जुड़वां पुत्र-पुत्री में भी विचारना चाहिए।

विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः सौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात्।
प्रोक्तग्रहाणामवलोक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोऽङ्गना वा ॥ 12 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्भाधान या प्रश्न लग्न में लग्न से विषम राशि (3, 5, 7, 9, 11) में शनि हो तो पुत्र का जन्म कहना चाहिए, यदि सम राशि हो तो पुत्री का जन्म कहें। पुत्र-पुत्री का विचार करते समय उपर्युक्त योगों में यह ध्यान रखें कि बलादि के अनुसार विवेक सम्मत बुद्धि से पुत्र या पुत्री का जन्म बताना चाहिए। जिस प्रकार के योग अधिक हों उसी प्रकार की सन्तान जन्म कहना चाहिए।

नपुंसक योग

अन्योन्यं यदि पश्यतः शशिरवी यद्यर्किसौम्यावपि
वक्रो वा समगं दिनेशमसमे चन्द्रोदयौ चेत् स्थितौ।
युग्मौजर्क्षगावपींदुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ पुम्भावे
सितलग्नशीतकिरणाः षट्क्लीबयोगाः स्मृताः ॥ 13 ॥

अब छह प्रकार के नपुंसक योग बताते हैं—

1. यदि विषम राशि में सूर्य और सम राशि में चन्द्र स्थित हों और दानों परस्पर एक दूसरे को पूर्ण दष्टि से देखतें हों तो नपुंसक योग होता है।
2. शनि सम राशि में और बुध विषम राशि में स्थित होकर परस्पर एक दूसरे को देखते हों तो नपुंसक योग होता है।
3. यदि विषम राशि में मंगल और सम राशि में सूर्य स्थित होकर परस्पर एक दूसरे को देखते हों तो नपुंसक योग होता है।
4. यदि चन्द्र और लग्न विषम राशि में हो और इनको सम राशि में स्थित मंगल देखता हो तो नपुंसक योग होता है।
5. यदि चन्द्र सम राशि में हो और बुध विषम राशि में हो एवं इनको (चन्द्र-बुध) मंगल देखता हो तो नपुंसक योग होता है।
6. यदि शुक्र, लग्न और चन्द्र विषम राशि और विषम नवांश में स्थित हों तो नपुंसक योग होता है।

टिप्पणी—ये नपुंसक योग फलीभूत होते हैं जबकि गर्भाधान या प्रश्न लग्न में पुत्र-पुत्री संबंधी योग न हों।

एक समय में एकाधिक संतान योग

युग्मे चंद्रसितौ तथौजभवने स्युर्ज्ञारजीवोदया लग्नेंदू
नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः।
कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान्द्व्यंगांशकान्पश्यति स्वांशे
ज्ञे त्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं त्वमिश्रैः समम् ॥ 14 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि चन्द्र व शुक्र सम राशि में हों, विषम राशि में बुध, मंगल, गुरु व लग्न हो तो एक पुत्र और एक पुत्री (युगल) का जन्म कहना चाहिए।

यदि लग्न व चन्द्र सम राशि में हों और किसी पुरुष ग्रह से दृष्ट हों तो भी एक पुत्र और एक पुत्री (युगल) का जन्म कहना चाहिए।

यदि मंगल, बुध, गुरु लग्न में बली होकर समराशि में स्थित हों तो भी एक पुत्र व एक पुत्री का जन्म कहना चाहिए।

यदि लग्न, बुध, मंगल व गुरु द्विस्वभाव राशियों के नवांश में हों और स्व नवांश में स्थित बुध इनको देखता हो तो गर्भ में तीन सन्तान हैं ऐसा कहना चाहिए। लेकिन यहां पर यह ध्यान रखना चाहिए—यदि मिथुन नवांश में स्थित होकर बुध पूर्वाक्त कहे योगकारक ग्रहों को देखता हो तो गर्भिणी में दो बालक और उनसे भिन्न एक कन्या कहनी चाहिए।

यदि तीनों पुत्र या तीनों कन्या ही का योग इस प्रकार बनें तो —1. यदि समराशि के नवांश में स्थित बुध पुर्वोक्त योग के सम नवांश में स्थित समस्त ग्रहों को देखता हो तो गर्भिणी के गर्भ में तीन कन्या होंगी। 2. यदि विषम राशि के नवांश में स्थित बुध पूर्वोक्त योग के विषम राशि के नवांश में स्थित समस्त ग्रहों को देखता हो तो गर्भिणी के गर्भ में तीनों सन्तान पुत्र होंगी। कहने का तात्पर्य यही है कि—जैसे कन्या के नवांश में स्थित बुध कन्या और मीन नवांश में स्थित पूर्वोक्त लग्न सहित समस्त ग्रहों को देखता हो तो गर्भ में तीनों कन्यायें होंगी। इसी प्रकार मिथुन नवांश में स्थित बुध, मिथुन और धनु नवांश में स्थित पूर्वोक्त लग्न सहित सब ग्रहों को देखता हो तो गर्भ में तीनों लड़के हैं, ऐसा समझना चाहिए।

स्पष्टतः के लिए इस प्रकार समझें—

यदि लग्न, मंगल, गुरु द्विस्वभाव राशियों में हों और मिथुन नवांश में स्थित बुध इनको देखता हो तो दो सन्तान पुत्र और एक पुत्री गर्भ में हैं, ऐसा समझना चाहिए।

यदि लग्न, मंगल, गुरु द्विस्वभाव राशि में हो और कन्या नवांश में स्थित बुध इनको देखता हो तो गर्भ में दो पुत्री और एक पुत्र है ऐसा समझना चाहिए।

यदि लग्न, मंगल, गुरु मिथुन या धनु नवांश में स्थित हो और बुध मिथुन या धनु नवांश में स्थित होकर इन्हें देखता हो तो तीन पुत्र गर्भ में हैं, ऐसा समझना चाहिए।

धनुर्धरस्यांत्यगते विलग्ने ग्रहैस्तदंशोपगतैर्बलिष्ठैः।
ज्ञेनार्किणा वीर्ययुतेन दृष्टैः संति प्रभूता अपि कोशसंस्था ॥ 15 ॥

गर्भाधान लग्न में धनु राशि या धनु राशि का नवांश हो और सभी ग्रह बुध, मंगल, गुरु धनु राशि के नवांश में लग्न सहित बलवान हों तथा बली बुध और शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न को देखते हों तो गर्भ में तीन से अधिक सन्तान (5, 7 या 10) का योग कहना चाहिए।

गर्भ मास स्वामी और उसमें निर्मित अंग का विचार

कललघनाङ्कुरुस्थिचर्मांगज चेतनताः
सितकुजजीवसूर्यचन्द्रार्किबुधाः परतः।
उदयपचन्द्रसूर्यनाथाः क्रमशो गदिता भवंति
शुभाशुभं च मासाधिपतेः सदृशम्॥ 16॥

गर्भाधान से प्रथम मास का स्वामी शुक्र है, इस मास में रज और वीर्य के संयोग से भ्रूण (Embryo) बनता है।

दूसरे मास का स्वामी मंगल होता है। इस मास में भ्रूण ठोस रूप अर्थात् मास का पिण्ड हो जाता है।

तीसरे मास का स्वामी गुरु है, इस मास में हाथ-पैर आदि का निर्माण होता है।

चौथे मास का स्वामी सूर्य है, इस मास में हड्डी का निर्माण होता है।

पांचवें मास का स्वामी चन्द्र है, इस मास में त्वचा का निर्माण होता है।

छठे मास का स्वामी शनि है, इस मास में बाल व रोमावली बनती है।

सातवें मास का स्वामी बुध है, इस मास में बच्चे में चैतन्य होता है।

आठवें मास का स्वामी गर्भाधान लग्न का स्वामी होता है, इस मास में बच्चा नाभिनाल द्वारा भोजन प्राप्त करता है।

नौवें मास का स्वामी चन्द्रमा है, इस मास में गर्भ के बच्चे में गति आ जाती है और जन्म के लिए तत्पर रहता है।

दसवें मास का स्वामी सूर्य होता है, इस मास में प्रसव (Delivery) होता है।

गर्भाधान काल में जिस मास का स्वामी ग्रह निर्बल, अस्त व पापी होता है उस मास में गर्भ में पीड़ा कहनी चाहिए या गर्भपात भी होने की संभावना रहती है। जिस मास का स्वामी बली हो उस मास में गर्भ स्वस्थ व पुष्ट होता है।

टिप्पणी—1. यवनाचार्य पहले मास का स्वामी मंगल और दूसरे मास का स्वामी शुक्र को कहते हैं। लेकिन वराहमिहिर का मत ठीक है। 2. यदि सूर्य बली हो तो बालक पिता की तरह होता है और यदि चन्द्रमा बली हो तो बालक माता की तरह होता है। 3. समस्त विचार गर्भाधान कालानुसार ही लग्न खींचकर करना चाहिए।

अधिक अंग, मूक और विलम्ब से बोलने के योग

त्रिकोणगेज्ञेविबलैस्तथा परैर्मुखांघ्रिहस्तैर्द्विगुणस्तदा भवेत्।
अवाग्गीवींदवशुभैर्भसंधिगैः शुभेक्षितश्चेत्कुरुते गिरं चिरात्॥ 17॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि गर्भाधान लग्न में बुध नवम और पंचम भाव में बैठा हो, शेष ग्रह बलहीन हों तो गर्भ में दो सिर चार हाथ व चार पैर वाली संतान कहनी चाहिए।

यदि चन्द्रमा वृष राशि में स्थित हो, समस्त पापग्रह कर्क, वृश्चिक या मीन राशि के अन्तिम नवांश में हो तो जातक जन्म से गूंगा होता है।

यदि चन्द्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो बालक बहुत दिन के बाद बोलेगा।

टिप्पणी—यदि पाप ग्रह से चन्द्र दृष्ट हो तो बालक कभी नहीं बोलेगा। यदि चन्द्र शुभाशुभ दोनों ग्रहों से दृष्ट हो तो भी बालक बहुत दिनों बाद बोलेगा। किन्तु पाप या शुभ जैसे भी ग्रह बली हों उसी के अनुरूप समझना चाहिए।

संतान संबंधी अन्य योग

सौम्यर्क्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदंतोऽत्र
जातः कुब्जः स्वर्क्षे शशिनि तनुगे मंदमाहेयदृष्टे।
पंगुर्मीने यमशशिकुजैर्वीक्षते लग्नसंस्थे संधौ
पापे शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टः ॥ 18 ॥

यदि शनि और मंगल बुध के नवांश में या बुध की राशि मिथुन व कन्या में हो तो बालक गर्भ से बाहर दांत सहित पैदा होता है।

यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा स्थित हो और शनि व मंगल दोनों से दृष्ट हो तो गर्भ से कुबड़ी (Hump Backed) संतान उत्पन्न होती है।

यदि मीन लग्न में चन्द्रमा स्थित हो या मीन लग्न हो और शनि, चन्द्र व मंगल से दृष्ट हो तो गर्भ से पंगु (लंगड़ी) संतान उत्पन्न होती है।

यदि चन्द्रमा कर्क, वृश्चिक व मीन के अन्तिम नवाश में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो गर्भ से मूर्ख सन्तान उत्पन्न होती है।

वामन और अंगहीन संतान योग

सौरशशांकदिवाकरदृष्टे वामनको मकरांत्यविलग्ने।
धीनवमोदयगैश्च दृकाणैः पापयुतैरभुजांघ्रिशिराः स्यात् ॥ 19 ॥

यदि मकर का अन्तिम नवांश लग्न में हो और शनि चन्द्र और सूर्य से दृष्ट हो तो गर्भ से वामन संतान उत्पन्न होती है।

यदि गर्भाधान व प्रश्न लग्न में पंचम या नवम राशि या लग्न राशि का द्रेष्काण हो और लग्न में मंगल स्थित होकर शनि, चन्द्र और सूर्य से दृष्ट हो तो हाथ रहित संतान उत्पन्न होती है।

यदि लग्न राशि का द्रेष्काण हो या लग्न में मंगल स्थित होकर शनि, चन्द्र व

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य से दृष्ट हो तो सिर रहित संतान उत्पन्न होती है ।

यदि लग्न राशि का द्रेष्काण लग्न से नौवीं राशि का हो तथा लग्न में मंगल स्थित होकर शनि चन्द्र और सूर्य से दृष्ट हो तो पांव रहित संतान उत्पन्न होती है । यही व्याख्या ठीक है क्योंकि यह गर्ग सम्मत है ।

टिप्पणी—श्लोक 19 का दूसरा अर्थ कुछ विद्वान इस प्रकार करते हैं—1. यदि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो और दूसरा व तीसरा द्रेष्काण पाप ग्रह से युत हो तो संतान के हाथ नहीं होते, 2. यदि लग्न में द्वितीय द्रेष्काण हो और पहला व तीसरा द्रेष्काण पापग्रह से युत हो संतान पैर रहित होती है, 3. यदि लग्न में तीसरा द्रेष्काण हो और पहला व दूसरा द्रेष्काण पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो तो सन्तान सिर रहित होती है ।

श्लोक 19 का तीसरा अर्थ भी कुछ विद्वान करते हैं—1. यदि दूसरा द्रेष्काण क्षितिज में हो और शनि, चन्द्र व सूर्य से दृष्ट हो तो सन्तान हाथ रहित उत्पन्न होती है, 2. यदि तीसरा द्रेष्काण हो और शनि, चन्द्र व सूर्य से दृष्ट हो तो संतान पांव रहित होती है, 3. यदि प्रथम द्रेष्काण हो और शनि, चन्द्र व सूर्य से दृष्ट हो तो सन्तान सिर रहित होती है ।

उपर दिया गया दूसरा व तीसरा अर्थ श्लोक के अन्तिम अर्ध भाग का है ।

कभी-कभी इसका चौथा अर्थ इस प्रकार करते हैं—मंगल लग्न के दूसरे या तीसरे या पहले द्रेष्काण में स्थित हो तो हाथ रहित, पैर रहित व सिर रहित संतान उत्पन्न होती है । किन्तु यह अर्थ गर्ग सम्मत अर्थ का विरोधी है ।

अन्धी और कानी संतान के योग

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते
नयनरहितः सौम्यासौम्यैः सबुद्बुदलोचनः ।
व्ययगृहत्थ्श्चंद्रो वामं हिनस्त्यपरं रविर्न शुभगदिता
योगा याप्या भवंति शुभेक्षिताः ॥ 20 ॥

यदि सिंह लग्न में सूर्य व चन्द्र स्थित हों तथा शनि व मंगल इनको देखते हों तो गर्भ से नेत्रहीन सन्तान उत्पन्न होती है । यदि मात्र सूर्य लग्न में हो और मंगल शनि से दृष्ट हो तो दायीं आंख नहीं होती अर्थात् काना होता है ।

यदि मात्र चन्द्रमा लग्न में हो और मंगल शनि से दृष्ट हों तो बायीं आंख नहीं होती है ।

यदि सूर्य व चन्द्र दोनों लग्न में स्थित हों और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो सन्तान फूली आंख (Swollen Eyes) वाली होती है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि सूर्य सिंह लग्न में हो तथा चन्द्रमा द्वादश स्थान में स्थित होकर पाप ग्रह मंगल-शनि से दृष्ट हो तो बायीं आंख का नाश करता है, जबकि इसी योग में द्वादश स्थान में सूर्य और लग्न में चन्द्र स्थित हो तो दायीं आंख का नाश करता है।

यदि श्लोक 17 से 20 तक कहे सभी योगों में योग कारक ग्रहों पर एक भी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वर्णित अशुभ फल पूर्ण न होकर आंशिक या थोड़ा होता है

प्रसवकाल का ज्ञान

तत्कालमिंदुसहितो द्विरसांशको
यस्तत्तुल्यराशिसहिते पुरतः शशांके।
यावानुदेति दिनरात्रिसमानभागस्तावद्गते
दिननिशोः प्रवदंति जन्म ॥ 21 ॥

गर्भाधान लग्न या प्रश्न लग्न में जिस राशि में चंद्र स्थित हो उसमें जिस राशि संख्या का द्वादशांश हो, तब द्वादशांश राशि से उतनी संख्या आगे जो राशि मिले, दसवें माह में इसी राशि में चन्द्रमा आने पर प्रसव या सन्तान का जन्म कहना चाहिए। यह वचन गर्ग द्वारा सम्मत है।

पुनः बताते हैं कि जन्म रात में होगा या दिन में इसका निर्णय लग्न राशि की (दिन या रात्रि) जो संज्ञा हो उसके अनुसार करना चाहिए। दिन संज्ञक राशि हो तो दिनमान से व रात्रि संज्ञक राशि हो तो रात्रिमान से जितना काल भुक्त हुआ हो उसी के अनुरूप जन्म का समय कहना चाहिए।

1. मान लो चन्द्रमा कुंभ के आठवें द्वादशांश में स्थित है। अतः इस प्रकार कुंभ से आठवीं राशि कन्या है, जब चन्द्रमा कन्या राशि से गोचर वश गुजरेगा तभी बच्चे का जन्म होगा।

2. सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक या कुंभ राशि दिन बली होती है, यदि गर्भाधान लग्न हो तो बच्चे का जन्म दिन में होगा। लग्न के जितने अंश भुक्त होते हैं, उतने ही अंश दसवें माह में इस लग्न के जिस समय भुक्त होते हैं, तभी बच्चे का जन्म कहना चाहिए।

   इसी प्रकार मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु या मकर राशि रात्रि बली होती है, यदि गर्भाधान लग्न यह हो तो बच्चे का जन्म रात में कहना चाहिए।

   यदि मीन राशि दिन में बली हो या रात्रि में जब बली हो उसी समय बच्चे का जन्म कहना चाहिए।

3. गर्भाधान लग्न के समय जो नक्षत्र जितने अंश पर था अर्थात् चन्द्रमा जितने अंश

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर था, जब चन्द्रमा गोचर वश दसवें मास में उसी राशि व उसी अंश पर प्रवेश करेगा, तभी बच्चे का जन्म कहना चाहिए।

उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थे च मंदे
यदि भवति निषेकः सूतिरब्दत्रयेण।
शशिनि तु विधिरेष द्वादशेऽब्दे प्रफुर्यान्निगदितमिह
चिंत्यं सूतिकालेऽपि युक्तया ॥ 22 ॥

गर्भाधान लग्न में शनि का नवांश (मकर या कुंभ) हो और लग्न से सातवें भाव में शनि स्थित हो तो तीसरे वर्ष में प्रसव होता है। यदि लग्न में कर्क का नवांश हो और लग्न से सातवें चन्द्र स्थित हो तो बारहवें वर्ष में प्रसव होता है।

इस अध्याय में कहे हुए योग जन्मलग्न से भी विवेक सम्मत बुद्धि से जो समझ आए उसके अनुसार विचार करना चाहिए।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके निषेकाऽध्यायश्चतुर्थः ॥ 4 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

5 सूतिकाध्याय

इस अध्याय में नवजात शिशु के जन्म संबंधी अन्य बातों की चर्चा वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर करेंगें। इनको पढ़कर व्यवहार में लायें।

पिता की अनुपस्थिति में जन्म

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिंदावपश्यति।
विदेशस्थ चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे ॥ 1 ॥

जन्म समय में चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो सन्तान के उत्पन्न होने के समय पिता अनुपस्थित रहा होगा।

यदि चन्द्र लग्न को न देखता हो और सूर्य ग्यारहवें या बारहवें भाव में चर राशि में स्थित हो अथवा नौवें या आठवें भाव में चर राशि में स्थित हो तो पिता विदेश गया हुआ होता है।

टिप्पणी— 1. यदि चन्द्र लग्न को न देखता हो और सूर्य आठवें, नौवें, ग्यारहवें या बारहवें में से किसी एक में स्थिर राशि में स्थित हो तो पिता स्वदेश (Native Town) में रहता है, परन्तु जन्म समय उपस्थित नहीं रहता है। 2. चन्द्र लग्न को न देखता हो और सूर्य आठवें, नौवें, ग्यारहवें या बारहवें भाव में द्विस्वभाव राशि में हो तो पिता न स्वदेश में है और न विदेश में, वह तो मार्ग में है।

उदयस्थेऽपि वा मंदे कुजे वास्तं समागते।
स्थिते वांतः क्षपानाथे शशांकसुतशुक्रयोः ॥ 2 ॥

यदि शनि लग्न में स्थित हो और चन्द्र से दृष्ट न हो तो पिता विदेश में होता है अर्थात् जन्म के समय उपस्थित नहीं रहता है।

मंगल सप्तम भाव में हो और चन्द्र से दृष्ट न हो अथवा चन्द्रमा बुध व शुक्र के मध्य में हो और चन्द्र की लग्न पर दृष्टि न हो तो जन्म के समय पिता विदेश में हो।

सर्परूप या सर्प वेष्टित जातक का जन्म

शशांके पापलग्ने वा वृश्चिकेशत्रिभागगे।
शुभैः स्वायस्थितैर्जातः सर्पस्तद्वेष्टितोऽपि वा ॥ 3 ॥

चन्द्रमा मंगल के द्रेष्काण में हो और शुभ ग्रह दूसरे व ग्याहरवें भाव में हो तो सर्परूप (Serpent) जातक का जन्म कहना चाहिए।

यदि पापग्रह की राशि लग्न में मंगल के द्रेष्काण में और शुभ ग्रह दूसरे या 11वें भाव में हो तो सर्परूप या सर्पवेंष्टित (Serpent or Snake Coiled) जातक का जन्म होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— 1. यहां मंगल का द्रेष्काण इस प्रकार है—पहला द्रेष्काण मेष का, दूसरा द्रेष्काण कर्क का, तीसरा द्रेष्काण सिंह का, पहला द्रेष्काण वृश्चिक का, दूसरा द्रेष्काण धनु का और तीसरा द्रेष्काण मीन का। 2. पापग्रह लग्न राशि इस प्रकार हैं—मेष, कर्क (यदि चन्द्र क्षीण बली हो), सिंह, वृश्चिक, मकर व कुंभ, कन्या व मिथुन (यदि बुध पाप ग्रह से युत हो)।

जरायु वेष्टित जुड़वां ज़ातक का जन्म ज्ञान

चतुष्पादगते भानौ शेषैर्वीर्यसमन्वितैः।
द्वितनुस्थैश्च यमलौ भवतः कोशवेष्टितौ ॥ 4 ॥

यदि चतुष्पाद राशियों (मेष, वृष, सिंह, धनु का परार्ध व मकर का पूर्वार्द्ध) में से किसी एक राशि में सूर्य हो और अन्य बली ग्रह द्विस्वभाव राशियों में स्थित हों तो जरायु वेष्टित जुड़वां जातक पैदा होता है।

नाल वेष्टित जातक का जन्म ज्ञान

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे सौरेऽथवा कुजे।
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ 5 ॥

लग्न में मेष, वृष या सिंह राशि हो और उसमें शनि या मंगल स्थित हो तो नाल वेष्टित जातक का जन्म होता है।

टिप्पणी—जातक के शरीर का कौन सा अंग नाल वेष्टित है, यह जानने के लिए देखें कि लग्न में किस राशि का नवांश है, जिस राशि का नवांश हो वह राशि काल शरीर में जिस अंग को प्रभावित करती हो उसी में नाल वेष्टित होगी। जैसे—मेष राशि नवांश में हो तो सिर में नाल लिपटी होगी। अन्य राशि के अंगों के लिए प्रथम अध्याय का श्लोक चार देखें।

जार से उत्पन्न जातक का जन्म ज्ञान

न लग्नमिंदु च गुरुर्निरीक्षते न वा शशांकं रविणा समागतम्।
सपापकोऽर्केण युतोऽथ वा शशी परेण जातं प्रवदंति निश्चायात् ॥ 6 ॥

यदि लग्न और चन्द्र को यदि गुरु न देखता हो तो जार (पर पुरुष) से उत्पन्न जातक समझना चाहिए।

यदि सूर्य व चन्द्र एक साथ स्थित हों और गुरु से दृष्ट न हो तो भी जार से उत्पन्न जातक समझना चाहिए।

यदि सूर्य व चन्द्र एक साथ किसी राशि में स्थित हों और पाप ग्रह शनि या मंगल भी साथ में हो तो जार से उत्पन्न जातक समझना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी—1. यदि चन्द्रमा गुरु के भाव में उसके द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश या त्रिशांश में स्थित हो तो जातक को जार से उत्पन्न नहीं समझना चाहिए। 2. यदि चन्द्र गुरु की राशि में हो या गुरु के साथ किसी भी राशि में स्थित हो या गुरु के द्रेष्काण या नवांश में हो तो जातक को जार से उत्पन्न नहीं समझना चाहिए। 3. योगकारक ग्रहों में से किसी एक को भी गुरु देखता हो तो जातक को जार से उत्पन्न नहीं समझना चाहिए।

जातक का पिता जेल में

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूनंनवात्मजस्थितौ।
बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वे वा राशिवशादथो पथि ॥ 7 ॥

यदि शनि और मंगल पापग्रहों की राशि (1, 5, 8, 10 या 11) में स्थित हों और सूर्य से ये दोनों ग्रह सातवें, नौवें या पांचवें स्थित हों तो बालक (जातक) का पिता बन्धन (जेल मे) होगा।

टिप्पणी—यह कैसे ज्ञात करें कि कहां पर बन्धन मुक्त होगा? इसके लिए देखें कि यदि सूर्य चर राशि में है तो जातक का पिता विदेश में, सूर्य स्थिर राशि में हो तो स्वदेश में और द्विस्वभाव राशि में हो तो रास्ते में बन्धन मुक्त होगा।

नाव में जन्म ज्ञान

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते शुभे सुखे।
लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा चंद्रे पोतगता प्रसूयते ॥ 8 ॥

पूर्ण बली चन्द्र कर्क राशि में स्थित हो, बुध लग्न में हो और गुरु चौथे भाव में हो तो बालक का जन्म नौका में होता है।

अथवा यदि जलचर राशि लग्न में हो और पूर्णबली चन्द्र से दृष्ट हो तो जल के समीप नाव में जन्म कहना चाहिए।

आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णः समवेक्षतेऽथ वा।
मेषूरणबन्धु लग्नगाः स्यात्सूतिः सलिले न संशयः ॥ 9 ॥

यदि जलचर राशि लग्न में हो और चन्द्रमा भी उसमें स्थित हो तो जल के समीप नदी किनारे जन्म होता है, ऐसा कहना चाहिए। इसी प्रकार जलचर राशि पर चन्द्र की पूर्ण दृष्टि हो व चन्द्र सूर्य बली हो या चन्द्रमा 4थे या 10वें भाव में स्थित हो तो भी जल के समीप जन्म कहना चाहिए।

जेल व खाई में जन्म ज्ञान

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्तयां पापनिरीक्षते यमे।
अलिकर्क्षियुते विलग्नगे सौरे शीतकरोक्षिते वटे ॥ 10 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि चन्द्र लग्न में हो, शनि बारहवें भाव में हो और पापग्रहों से दृष्ट हो तो जेल में बालक का जन्म होता है।

यदि जन्म लग्न वृश्चिक या कर्क राशि हो और शनि उसमें स्थित हो तथा चन्द्र से दृष्ट हो तो बालक का जन्म खाई (Ditch) में कहना चाहिए।

क्रीडा स्थल, देवालय या मिट्टी में जन्म ज्ञान

मंदेऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येंदुनिरीक्षिते क्रमात्।
क्रीडाभवने सुरालये सोखरभूमिषु च प्रसूयते ॥ 11 ॥

यदि शनि जलचर राशि का हो और बुध से दृष्ट हो तो क्रीडा स्थल में, यदि सूर्य से दृष्ट हो तो देवालय में और यदि चन्द्र से दृष्ट हो तो ऊसर भूमि में जन्म बताना चाहिए।

अन्य स्थानों में जन्म ज्ञान

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेंदू गुरुरग्निहोत्रे।
रविर्नि रेंद्रामरागोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥ 12 ॥

यदि लग्न में मानव राशि हो, उसमें शनि स्थित हो तथा मंगल से दृष्ट हो तो श्मशान में बालक का जन्म होता है।

यदि लग्न में मानव राशि में स्थित शनि को शुक्र और चन्द्र देखते हों तो रम्य स्थान (Beautiful Spots) में बालक का जन्म होता है।

यदि लग्न में मानव राशि में स्थित शनि को गुरु देखता हो तो बालक का जन्म अग्निशाला में होता है।

यदि लग्न में मानव राशि में स्थित शनि को सूर्य देखता हो तो देवालय या गौशाला में बालक का जन्म होता है।

यदि लग्न में मानव राशि में स्थित शनि को बुध देखता हो तो कार्यशाला (Work Shop) में बालक का जन्म होता है।

राश्यंशसमानगोचरे मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे।
स्वर्क्षांशगते स्वमंदिरे बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ 13 ॥

जन्म लग्न की राशि और नवांश राशि तुल्य भूमि में बालक का जन्म कहना चाहिए।

यदि जन्म लग्न व नवांश राशि चर संज्ञक हो तो सड़क या रास्ते में जन्म कहना चाहिए, यदि जन्म लग्न व नवांश राशि स्थिर हो तो घर में जन्म कहना चाहिए और यदि लग्न व नवांश राशि एक हो अर्थात् वर्गोत्तम में हो तो भी घर में बालक का जन्म कहना चाहिए। यदि लग्न राशि व नवांश राशि भिन्न-भिन्न हों तो उनमें से जो राशि बली हो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके अनुसार फल कहना चाहिए ।

किस राशि का कौन सा स्थान है इस संबंध में प्रथम अध्याय के श्लोक पांच का अवलोकन करना चाहिए ।

माता से परित्यक्त सन्तान का ज्ञान

आरार्कजयोस्त्रिकोणगे चंद्रेऽस्ते च विसृज्यतेंऽबया।
दृष्टेऽमरराजमंत्रिणा दीर्घायुः सुखभाक्च स स्मृतः ॥ 14 ॥

यदि मंगल और शनि किसी एक राशि में स्थित हो उससे पांचवें, नौवें व सातवें भाव में से किसी एक में चन्द्र स्थित हो तो इस योग में उत्पन्न जातक को उसकी माता परित्यक्त कर देती है ।

यदि इस योग में गुरु की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो माता से परित्यक्त जातक दीर्घायु और सुखी होता है ।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार यदि चन्द्रमा या सूर्य पाचवें या नौवें हों तो भी उक्त फल होता है ।

परित्यक्त सन्तान की मृत्यु

पापेक्षिते तुहिनगावुदये
कुजेऽस्ते त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाये ।
सौम्येऽपि पश्यति
तथाविधहस्तमेति सौम्येतरेषुपरहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ 15 ॥

यदि चन्द्रमा लग्न में स्थित हो और सूर्य या शनि से दृष्ट हो तथा मंगल सप्तम भाव में हो तो परित्यक्त सन्तान मर जाती है ।

अथवा यदि चन्द्रमा लग्न में स्थित होकर पाप ग्रह सूर्य से दृष्ट हो और मंगल व शनि ग्याहरवें भाव में स्थित हो तो भी परित्यक्त सन्तान मर जाती है ।

यदि उपर्युक्त दोनों योगों में चन्द्रमा बली व शुभ ग्रह गुरु से दृष्ट हो तो वह संतान जिस जाति की हो उस जाति के हाथों में पड़कर बच जाती है । किन्तु यदि गुरु की दृष्टि न हो तो दूजे हाथों में जाने के बाद भी बच्चा नहीं बचता है ।

प्रसव के ग्रह का ज्ञान

पितृमातृगृहेषु तछलात्तरुशालादिषु नीचगैः शुभः ।
यदि नकगतैस्तु वीक्षितौ लग्नेदू विजने प्रसूयते ॥ 16 ॥

जन्म समय मित्रादि संज्ञक ग्रहों में से जो ग्रह बली हो उसके घर में सन्तान का जन्म कहना चाहिए ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे पितृ संज्ञक ग्रह (सूर्य) बली हो तो पिता के घर में, मातृ संज्ञक ग्रह (चन्द्र) बली हो तो माता के घर में, पितृव्य संज्ञक ग्रह (शनि) बली हो तो चाचा के घर में मातृव्य संज्ञक ग्रह (शुक्र) बली हो तो मौसी के घर में जन्म कहना चाहिए।

यदि सभी शुभ ग्रह अपने नीच स्थान में बैठे हों तो वृक्ष के नीचे, लकड़ी के घर में जन्म कहना चाहिए। यदि लग्न व चन्द्रमा एक राशि में स्थित होकर, तीन शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो निर्जन स्थान में जन्म होगा जहां कोई न होगा—ऐसा कहना चाहिए। किन्तु यदि अनेक शुभ ग्रहों से दृष्ट है तो ऐसी जगह जन्म होता है जहां बहुत से लोग होते हैं।

जन्म समय अन्धकार या प्रकाश का ज्ञान

मन्दर्क्षांशे शशिने हिबुके मन्ददृष्टेऽब्जगे वा।
तद्युक्ते वा तमसि शयने नीचसंस्थैश्च भूमौ॥
यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु
तद्वत्पापैश्चन्द्रात् क्लेशमाहुर्जनन्याः॥ 17॥

यदि निम्न योग हों तो बालक का जन्म ऐसी जगह होता है, जहां अन्धकार होता है— (1) यदि चन्द्रमा शनि के नवांश में हो। (2) चन्द्रमा चतुर्थ भाव में स्थित हो। (3) चन्द्रमा शनि से दृष्ट हो। (4) चन्द्रमा जलीय राशि के नवांश में हो। (5) चन्द्रमा की शनि के साथ युति हो।

यदि तीन या तीन से अधिक ग्रह अपने-अपने नीच स्थान में स्थित हों तो पत्तियों से ढकी भूमि पर प्रसव होता है। बालक लग्न राशि की प्रकृति के अनुसार ही गर्भ से बाहर आता है। कहने का तात्पर्य यही है कि लग्न में जिस राशि का उदय होता है उसी तरह बालक का जन्म कहना चाहिए। यदि लग्न में शीर्षोदय राशि हो तो पहले सिर गर्भ से बाहर आता है, यदि पृष्ठोदय राशि लग्न में हो तो बालक के पहले पांव बाहर आते हैं और यदि लग्न में उभयोदय राशि हो तो सर्वप्रथम हाथ बाहर आते हैं।

मतैक्य से लग्न नवांश का स्वामी वक्री न हो तो प्रसव सुख से नियमित और वक्री हो तो प्रसव अनियमित होता है।

यदि चन्द्रमा से चौथे या सातवें पापग्रह स्थित हों या शनि व चन्द्र एक ही राशि में स्थित हों तो प्रसव के समय माता को कष्ट होता है।

टिप्पणी—1. यदि सूर्य बली हो तथा मंगल से दृष्ट हो तो जन्म के समय अन्धकार नहीं होता है। 2. चन्द्रमा सूर्य से दृष्ट हो तो भी प्रसव के समय अन्धकार नहीं होता है। ये दोनों सारावली व यवनेश्वर के मत हैं। 3. जलीय नवांश कर्क और मीन है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नेह शशांकादुदयाच्च वर्तिर्दीपोऽर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यः ।
दारं च तद्वास्तुनि केंद्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रवहैवीर्यसमन्वितैर्वा ॥ 18 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा जिस राशि में स्थित हो वह राशि के प्रारम्भ अंश में हो तो दीपक में पूर्ण तेल कहना चाहिए । यदि राशि के मध्य अंशों में हो तो दीपक में आधा तेल कहना चाहिए और यदि राशि के अन्तिम अंशों में हो तो दीपक में तेल नहीं है ऐसा कहना चाहिए ।

अब दीपक की बत्ती का ज्ञान करते हैं । बत्ती का ज्ञान लग्न राशि से करना चाहिए । यदि लग्न के प्रारम्भ में जन्म हो तो बत्ती पूरी है, यदि लग्न के मध्य में जन्म है तो बत्ती आधी जली है और यदि लग्न राशि के अन्तिम अंशों में जन्म हुआ है तो बत्ती समाप्त होने वाली है ।

यदि सूर्य स्थिर राशि में हो तो दीपक एक स्थान पर स्थिर रहा, यदि चर राशि में हो तो दीपक का स्थान बदलता रहा और यदि द्विस्वभाव राशि में स्थित हो तो दीपक का स्थान बदला भी और नहीं भी बदला । कुछ का मत है कि सूर्य जिस राशि में हो उसी की दिशानुसार ही दीपक की स्थिति समझनी चाहिए ।

कुछ का मत है कि दिन-रात में आठ प्रहर होते हैं, इनमें भ्रमण वश जिस प्रहर में जिस दिशा में सूर्य हो उसी के अनुसार दीपक की दिशा समझनी चाहिए । जिस प्रहर में जन्म हो उसके अनुसार दीपक की दिशा निम्न प्रकार समझनी चाहिए—

प्रहर	**दीपक की दिशा**
पहला प्रहर	पूर्व
दूसरा प्रहर	अग्नि कोण
तीसरा प्रहर	दक्षिण
चौथा प्रहर	नैऋत्य
पांचवां प्रहर	पश्चिम
छठा प्रहर	वायव्य
सातवां प्रहर	उत्तर
आठवां प्रहर	ईशान कोण

केन्द्र में स्थित ग्रह के अनुसार सूतिका के घर का दरवाजा कहना चाहिए—

केन्द्र में ग्रह	**दिशा**
सूर्य केन्द्र में हो तो	पूर्व
शुक्र केन्द्र में हो तो	आग्नेय कोण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल केन्द्र में हो तो	दक्षिण
राहु केन्द्र में हो तो	नैऋत्य
शनि केन्द्र में हो तो	पश्चिम
चन्द्र केन्द्र में हो तो	वायव्य
बुध केन्द्र में हो तो	उत्तर
गुरू केन्द्र में हो तो	ईशान

यदि केन्द्र में बहुत ग्रह हों तो जो ग्रह बली हो उसके अनुसार समझना चाहिए। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न राशि या उसके द्वादशांश राशि में जो हो उसकी दिशा के अनुसार दरवाजे की दिशा समझनी चाहिए।

सूतिका गृह का स्वरूप

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दुग्धं नवं शीतगौ
काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्प्युद्भवम्।
रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मंदिरं चक्रस्थैश्च
यथोपदेशरचनां सामंतपूर्वां वदेत्॥ 19॥

यदि जन्म समय शनि ग्रह सर्वाधिक बली हो तो सूतिका गृह मरम्मत किया हुआ पुराना होगा, मंगल सर्वाधिक बली होगा तो सूतिका गृह जला हुआ, चन्द्र सर्वाधिक बली हो तो सूतिका गृह नया होगा, यदि चन्द्र बली और शुक्ल पक्ष का हो तो सूतिका गृह नया और लिपापुता होगा, सूर्य ग्रह सर्वाधिक बली है तो कच्चा और लकड़ी का बना सूतिका गृह होगा, सर्वाधिक बली बुध गृह हो तो विभिन्न प्रकार के शिल्प से बना खूबसूरत सूतिका गृह होगा, शुक्र ग्रह बली हो तो सूतिका गृह सुन्दर, चित्र युत एवं आकर्षक होता है और गुरु ग्रह सर्वाधिक बली हो तो मजबूत व आरामदायक सूतिका गृह होगा।

जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उसके आगे-पीछे और साथ में जिस प्रकार के ग्रह हों उसी के अनुसार सूतिका गृह के आसपास के कमरों का स्वरूप समझना चाहिए।

सूतिका गृह की दिशा

मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्य गृहेषु।
पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिणभगकरौ मृगसिंहौ॥ 20॥

लग्न में मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक और कुंभ में से कोई एक राशि हो या इनमें से किसी एक का नवांश हो तो सूतिका का कमरा पूर्व दिशा में कहना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि लग्न में धनु , मीन, मिथुन और कन्या में से कोई एक राशि लग्न में हो या इनमें से किसी एक का नवांश हो तो सूतिका का कमरा उत्तर दिशा में कहना चाहिए।

यदि लग्न में वृष राशि या इसका नवांश हो तो सूतिका का कमरा पश्चिम दिशा में कहना चाहिए।

यदि लग्न में मकर और सिंह राशि या इनमें से किसी एक का नवांश हो तो सूतिका का कमरा दक्षिण दिशा में कहना चाहिए।

सूतिका का शय्या ज्ञान

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तय।
शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ॥ 21 ॥

सूतिका गृह में सूतिका के कमरे में मेषादि दो-दो राशियों के क्रम से पूर्वादि दिशाओं में और एक-एक दिस्वभाव राशि के क्रम से आग्नेयादि कोणों में सूतिका की शय्या स्थित है, ऐसा समझना चाहिए।

कहने का तात्पर्य यही है कि—

—लग्न में मेष या वृष राशि हो तो **पूर्व दिशा** में शय्या होगी।

—लग्न में मिथुन राशि हो तो **आग्नेय कोण** में शय्या होगी।

—लग्न में कर्क या सिंह राशि हो तो **दक्षिण दिशा** में शय्या होगी।

—लग्न में कन्या राशि हो तो **नैऋत्य कोण** में शय्या होगी।

—लग्न में तुला या वृश्चिक राशि हो तो **पश्चिम दिशा** में शय्या होगी।

—लग्न में धनु राशि हो तो **वायव्य कोण** में शय्या होगी।

—लग्न में मीन राशि हो तो **ईशान कोण** में शय्या होगी।

स्पष्टतः के लिए देखें —'सूतिका शय्या दिशा ज्ञान चक्रम्'

सूतिका शय्या दिशा ज्ञान चक्रम्

ईशान		पूर्व		आग्नेय
	मीन 12	मेष 1 वृष 2	मिथुन 3	
उत्तर	मकर 10 कुंभ 11		कर्क 4 सिंह 5	दक्षिण
	धनु 9	तुला 7 वृश्चिक 8	कन्या 6	
वायव्य		पश्चिम		नैर्ऋत्य

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी—शय्या के अंग निम्न प्रकार से समझने चाहिएं—

भाव	चारपाई के अंग
3 – 6	दाहिने भाग के दो पाये
9 – 12	बायें भाग के दो पाये
1 – 2	चारपाई का सिरहाना
4 – 5	चारपाई का दक्षिण भाग
7 – 8	चारपाई का पैतान
10 – 11	चारपाई का वाम भाग

जिस भाग में द्विस्वभाव राशि हो चारपाई का वह स्थान झुका हुआ और जिस स्थान में पाप ग्रह हों चारपाई का वह भाग इसी अध्याय के श्लोक 19 के अनुसार जीर्णादि समझना चाहिए।

कहने का तात्पर्य यही है कि शनि हो तो पुराना, मंगल हो तो जला हुआ, सूर्य हो तो कमजोर आदि।

शय्या अंग ज्ञान चक्रम्

पाया — सिरहाना — पाया

	12	लग्न	2	3	
	11	×	×	4	
वाम भाग	10	×	×	5	दक्षिण भाग
	9	8	7	6	

पाया — पैतान — पाया

उपसूतिका की संख्या ज्ञान

चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः।
बहिरन्तरचक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथा पैरः ॥ 22 ॥

लग्न और चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह स्थित हो उतनी उपसूतिका (Midwives) जन्म समय सूतिका के पास प्रसव के समय उपस्थित थीं। उनका स्वरूप, आभूषणादि उन ग्रहों के अनुरूप कहने चाहिएं।

सूतिका के कमरे से बाहर कितनी स्त्रियां हैं, यह जानने के लिए दृश्य राशि चक्रार्ध (Visible Half of the Zodiac) में जितने ग्रह स्थित हों उनकी संख्या गिन लेनी चाहिए और कितनी स्त्रियां सूतिका के कमरे में हैं यह जानने के लिए अदृश्य राशि चक्रार्द्ध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Invisible Half of the Zodiac) में स्थित ग्रहों को गिन लेना चाहिए। कुछ विद्वान (जीव शर्मा आदि) इसके विपरीत कहते हैं।

टिप्पणी—1. लग्न भोग्यांश से सप्तम भाव के भुक्तांश तक अदृश्य राशि चक्रार्ध होता है और सप्तम भाव के भोग्यांश से लग्न के भुक्तांश तक दृश्य राशि चक्रार्ध होता है। 2. स्त्रियों की आयु जाति व रंग के लिए चक्रार्ध विशेष में पड़ने वाले बली ग्रह के अनुसार समझना चाहिए। यदि लग्न से चन्द्र तक शुभ ग्रह अधिक हों तो उपसूतिकाएं सुन्दर, सुवस्त्रों से सुसज्जित और श्रृंगार किए हुए होती हैं और यदि पाप ग्रह अधिक हो तो उपसूतिकाएं गंदी, बदसूरत और श्रृंगारहीन होती हैं। 3. कमरे से बाहर की स्त्रियों के विषय में दृश्य राशि चक्रार्ध में पड़ने वाले ग्रहों और कमरे के अन्दर की स्त्रियों के विषय में अदृश्य चक्रार्ध में पड़ने वाले ग्रहों के द्वारा विचारना चाहिए। 4. वराहमिहिर का यह अभिप्रेत नहीं हैं। 5. उच्च राशिगत और वक्री जो ग्रह हों उनकी तिगुनी संख्या के समान उपसूतिका समझनी चाहिए। ग्रह स्वनवांश, स्वराशि या स्वद्रेष्काण में हों तो भी उपसूतिकाओं की संख्या द्विगुणित कहनी चाहिए।

बालक के स्वरूप का ज्ञान

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यवपुर्वा।
चंद्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ 23 ॥

जन्म लग्न में जिस राशि का नवांश हो यदि वह राशि बली हो तो उसका जो स्वामी हो उसके अनुरूप बालक के शरीर का स्वरूप कहना चाहिए। ग्रह के स्वरूप के लिए अध्याय दो का आठवां श्लोक पढ़ें। यदि नवांश राशि बली न हो तो सब ग्रहों में जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उसके अनुरूप बालक का स्वरूप कहना चाहिए।

बालक के शरीर का रंग चन्द्रमा जिस नवांश राशि में हो उसका जो स्वामी हो उसके अनुरूप कहना चाहिए। ग्रहों के रंग के लिए अध्याय दो का चौथा श्लोक पढ़ें।

बालक के अंगों के विषय में अध्याय एक के श्लोक चार के अनुसार अंग विभाग करके अंगों के विषय में शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार समझना चाहिए। बाद में प्रथम अध्याय के उन्नीसवें श्लोक में राशि मानानुसार जिस अंग में जो राशि हो उसी के अनुसार अंगों का आकार कहना चाहिए। अधिक मान वाली राशि का स्वामी स्थित हो तो दीर्घ अंग और कम मान वाली राशि का स्वामी स्थित हो तो ह्रस्व अंग समझना चाहिए।

टिप्पणी—रंग पर विचार करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जातक किस क्षेत्र व किस वातावरण का रहने वाला है और उसके पिता व माता का रंग क्या है? सभी परिस्थितियों पर विचार करते हुए ही जातक के रंग को कहना चाहिए।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रेष्काण के अनुसार अंग विभाग

कं दृक्श्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादयस्ते
कंठांसकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडानि नाभिस्ततः ।
बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जंघांघ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥ 24 ॥

किसी भी राशि का जो द्रेष्काण लग्न में उदय हो उसी के अनुसार शरीर के अंगों के विषय में समझना चाहिए ।

जब पहला द्रेष्काण लग्न में उदय हो तो लग्र सिर, द्वितीय भाव दायीं आंख और द्वादश भाव बायीं आंख, 3 व 11वां भाव दक्षिण व वाम कान, 4 व 10वां भाव दक्षिण व वाम नाभि का, 5 व 9वां भाव दक्षिण व वाम गाल, 6 व 8वां भाव दक्षिण व वाम जबड़ा, 7वां भाव चेहरे का परिचायक है ।

जब द्वितीय द्रेष्काण लग्न में उदय हो तो लग्न से गर्दन, 2 व 12 से दक्षिण व वाम कन्धे, 3 व 11से दक्षिण व वाम भुजाएं, 4 व 10 से दक्षिण व वाम पार्श्व, 5 व 9 से हृदय का दक्षिण व वाम भाग और सातवें भाव से नाभि का परिचायक समझें ।

द्रेष्काण अंग विभाग चक्रम्

राशि	लग्न	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम
प्रथम द्रेष्काण	सिर दायां	दायां नेत्र	दायां कान	दायीं नासिका	दायां गाल	दायां जबड़ा	दायां चेहरा
द्वितीय द्रेष्काण	गर्दन दायीं	दायां कन्धा	दायीं भुजा	दायां पार्श्व	दायां भाग हृदय का	दाया भाग पेट का	दायां भाग नाभि का
तृतीय द्रेष्काण	मध्य भाग बस्ति का	दक्षिणभाग बस्ति का	दायां अण्डकोष	दक्षिण जांघें	दायां घुटना	दायीं टांग	दायां पैर
राशि	लग्न राशि	द्वादश	एकादश	दशम	नवम	अष्टम	सप्तम
प्रथम द्रेष्काण	सिर बायां	बायां नेत्र	बायां कान	बायीं नाभिका	बायां गाल	बायां जबड़ा	बायां चेहरा
द्वितीय द्रेष्काण	बायीं गर्दन	बायां कन्धा	बायीं भुजा	बायां पार्श्व	बायां भाग हृदय का	बायां भाग पेट का	बायां भाग नाभि का
तृतीय द्रेष्काण	मध्य भाव बस्ति का	बायां भाव बस्ति का	बायां अण्डकोष	बायीं जांघें	बायां घुटना	बायीं टांग	बायां पैर

जब तृतीय द्रेंष्काण लग्न में उदय हो तो लग्न में बस्ति (नाभि और लिंग का मध्य भाग) का मध्य भाग, द्वितीय में बस्ति का दक्षिण भाग व द्वादश में बस्ति का वाम भाग.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

3 व 11 से अण्डकोष का दक्षिण व वाम भाग, 4 व 10 में दक्षिण व वाम जाघें, 5 व 9 में दक्षिण व वाम घुटने, 6 व 8 से दक्षिण व वाम टांग एवं 7 से दोनों पैर समझने चाहिएं।

टिप्पणी—1. तीनों द्रेष्काणों में लग्न से सातवें भाव तक शरीर का दायां भाव एवं 7 से 12 वें भाव तक शरीर का बायां भाग समझना चाहिए। 2. द्रेष्काण के अंगों के अनुरूप ही बालक के अंग पर तिल मस्सा या चिह्न का विचार ग्रहानुरूप करना चाहिए।

जातक के अंग मे चिह्न ज्ञान

तस्मिन् पापयुतं व्रणे शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्
स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्यथागंतुकः।
मंदेश्मानिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभवः
सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ श्रृंग्यब्जजोऽन्यैः शुभम् ॥ 25 ॥

यदि उदित द्रेष्काण पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो उससे संबंधित अंगों में घाव का चिह्न कहना चाहिए।

जिस राशि के द्रेष्काण शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो उस राशि के अंग में तिल व मस्सा का चिह्न बताना चाहिए।

यदि ग्रह स्वराशि या स्वनवांश या स्थिर राशि नवांश में हो तो जन्मते ही घाव या मस्सा आदि का चिह्न सम्बन्धित अंग में होगा। यदि ग्रह इस प्रकार न स्थित होकर अन्य भाव में हो तो चिह्न जन्म के बाद होंगे, ऐसा कहना चाहिए।

यदि शनि व्रर्ण कर्त्ता हो तो पत्थर या वात व्याधि से, मंगल व्रणकर्त्ता हो तो अग्नि, शस्त्र या विष से घाव या चिह्न कहना चाहिए।

यदि अशुभ बुध वर्ण कर्त्ता हो तो भूमि पर गिरने से शरीर पर चिह्न या घाव बने। वर्ण कर्त्ता सूर्य हो तो लकड़ी या चौपाये पशु से घाव आदि बने। व्रर्णकर्त्ता क्षीण चन्द्र हो तो सींग वाले पशुओं या जलचर प्राणियों से घाव मिलता है, शुभ ग्रह जिस अंग में स्थित हो उस अंग में कोई घाव या चिह्न नहीं होता है।

टिप्पणी—व्रर्णकर्त्ता ग्रह चिह्न आदि अपनी-अपनी दशाकाल में देते हैं।

व्रर्ण का ज्ञान

समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा
ग्रहा भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभेषु वा।
व्रणकृदशुभः षष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रिते तिलकमशकदृष्टः
सौम्ययुतश्च स लक्ष्मवान् ॥ 26 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध से युत तीन शुभ ग्रह या पाप ग्रह जिस राशि में स्थित हों उस राशि के अंग में अवश्य चिह्न या व्रर्ण कहना चाहिए। इन चारों ग्रहों में से जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उसी की दशा में व्रर्ण या चिह्न लायेगा।

यदि पापग्रह छठे भाव में स्थित हो तथा उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो तिल व मस्सा आदि का चिह्न होता है।

यदि शुभ ग्रह से युत पाप ग्रह छठे भाव में स्थित हो तो सफेद मस्सा होता है। यदि छठे भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो उस अंग में रोमावली का समूह मात्र दिखाई देता है।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके जन्मविधिर्नामाध्यायः पञ्चमः ॥ 5 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

6 अरिष्टाध्याय

इस अध्याय में नवजात शिशु के उत्पन्न होने के बाद आने वाले अरिष्टों की चर्चा वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर करेंगे। इनको ध्यान से पढ़कर, समझ लें और फिर फलित करते समय उपयोग में लायें।

नवजात शिशु की शीघ्र मृत्यु का योग

संध्यायां हिमदीधितिहोरापापैर्भांतगतैर्निधनाय।
प्रत्येकं शशिपापसमेतैः केंद्रैर्वा स विनाशमुपैति ॥ 1 ॥

जन्म प्रातः या सायं सन्ध्या काल (Twilight) में हुआ हो और लग्न में चन्द्रमा की होरा हो एवं पापग्रह राशि के अन्तिम नवांश में स्थित हो तो नवजात शिशु की जल्दी मृत्यु हो जाती है।

प्रत्येक केन्द्र में चन्द्र और तीन पापग्रह हों अर्थात् चारों केन्द्र स्थानों में से किसी एक स्थान में चन्द्रमा, दूसरे तीसरे व चौथे केन्द्र में क्रम से तीन पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) हों तो नवजात शिशु की जल्दी मृत्यु हो जाती है।

टिप्पणी—1. विषम राशि में दूसरी होरा और सम राशि में प्रथम होरा चन्द्रमा की होती है। 2. अर्ध उदित सूर्योदय और सूर्यास्त से 1.5 घटी (36 मिनट) पूर्व का काल क्रमशः प्रातः व सायं सन्ध्या काल कहलाता है।

चक्रस्य पूर्वापरभागगेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः पापैर्विलग्नास्तमयाभितश्च ॥ 2 ॥

यदि राशि चक्र के पूर्वार्ध में पाप ग्रह और पश्चिमार्ध में शुभ ग्रह स्थित हों तथा लग्न में कर्क या वृश्चिक राशि हो तो नवजात शिशु उत्पन्न होने के बाद शीघ्र मर जाता है।

यदि पाप ग्रह बारहवें और सातवें भाव में स्थित हो तो शिशु जल्दी मर जाता है।

(i) कुछ विद्वान लग्न से सप्तम भाव तक को पूर्वार्ध और सप्तम से द्वादश भाव तक को उत्तरार्ध कहते हैं।
(ii) कुछ विद्वान दसवें से चौथे भाव तक पूर्वार्ध और चौथे से दसवें भाव तक को उत्तरार्ध कहते हैं।
(iii) लग्न राशि के जितने अंश भुक्त हो चुके हों लग्न राशि से चतुर्थ राशि में उतने अंश छोड़कर शेषांश लेकर लग्न राशि से दशम राशि में लग्न के भुक्तांश तुल्य अंश तक राशि तक का उत्तरार्ध और शेष पूर्वार्ध होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

(iv)यदि पाप ग्रह लग्न से द्वादश या सप्तम भाव में हो तो शिशु शीघ्र मर जाता है। कुछ का कहना है कि यदि पाप ग्रह 12वें व 2रे भाव में या 6ठे या 8वें भाव में हो तो शिशु शीघ्र मर जाता है। दूसरे कहते हैं कि पाप ग्रह 2, 6, 8, 12 भाव में स्थित हों तो शिशु शीघ्र मर जाता है। गार्गी का वचन ऐसा है—पाप ग्रह छठे और बारहवें हों या आठवें और दूसरे हों या बारहवें और दूसरे हो या आठवें और छठे हों तो शिशु शीघ्र मर जाता है।

पापवुदयास्तगतौ क्रूरेण युतश्च शशी।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युश्च भवेदिचरात्॥ 3॥

यदि पाप ग्रह लग्न और सातवें भाव में स्थित हो और चन्द्रमा पाप ग्रह युत होकर किसी भी भाव में स्थित हो, किन्तु शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो नवजात शिशु शीघ्र मर जाता है।

क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः।
केन्द्रेषु शुभाश्च न चेत् क्षिप्रं निधनं प्रवदेत॥ 4॥

यदि लग्न से बारहवें भाव में क्षीण चन्द्रमा, पाप ग्रह लग्न व आठवें भाव में हो और केन्द्र (1, 4, 7, 10) में कोई शुभ ग्रह न हो तो नवजात शिशु की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

क्रूरेण संयुतः शशी स्मारान्त्यमृत्युलग्नगः।
कण्टकाद्बहिः शुभैरवीक्षितश्च मृत्युदः॥ 5॥

यदि पाप ग्रह से युत चन्द्रमा बारहवें, आठवें या पहले भाव में से किसी में स्थित हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तथा केन्द्र (1, 4, 7, 10) में कोई शुभ ग्रह न हो तो नवजात शिशु की मृत्यु हो जाती है।

अनुभव में आया है कि यदि केन्द्र भाव में शुभ ग्रह हों तो नवजात शिशु पल जाता है अर्थात् उसकी मृत्यु नहीं होती है।

शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते
शुभैरथ समाष्टकन्दलमतश्च मिश्रैः स्थितिः।
असद्भिरवलोकिते बलितिभरत्र मासं शुभे कलत्रसहिते
च पापविजिते विलग्नाधिपे॥ 6॥

यदि चन्द्रमा लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो नवजात शिशु शीघ्र मर जाता है।

यदि लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवजात शिशु आठ वर्ष तक जीता है ।

यदि लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित चन्द्रमा पर पाप व शुभ ग्रह दोनों प्रकार के ग्रह दृष्टि डालें तो शिशु चार वर्ष तक जीवित रहकर मर जाता है ।

यदि छठे या आठवें भाव में कोई शुभ ग्रह बुध, गुरु या शुक्र स्थित हो तथा बली पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो शिशु मात्र एक मास तक जीवित रहता है ।

यदि लग्नेश सातवें भाव में स्थित हो और युद्ध में पाप ग्रह से पराजित हो तो भी शिशु एक मास तक जीता है ।

टिप्पणी—1. यहां यह ध्यान रखें कि जब चन्द्रमा छठे या आठवें भाव में हो और किसी भी पाप या शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसी परिस्थितियां बनती हैं जिससे ऐसा लगे कि बच्चा मरने वाला है किन्तु मरता नहीं है । 2. इसी प्रकार यदि चन्द्रमा शुक्र ग्रह के भाव में बैठे या शुभ ग्रह से युति करे तो भी शिशु की मृत्यु नहीं होती है । 3. यंदि बच्चे का जन्म शुक्ल पक्ष में रात्रि में हुआ हो तो भीं बच्चा नहीं मरता है, यदि चन्द्रमा छठे या आठवें भाव में स्थित होकर शुभाशुभ ग्रहों से दृष्ट हो ।

लग्ने क्षीणे शशिने निधनं रन्ध्रकेन्द्रेषु पापैः ।
पापान्तस्थे निधनहिबुकद्यूनसंस्थे च चन्द्रे ॥
एवं लग्ने भवति मदनच्छिद्रसंस्थैश्च पापैर्मात्रा
सार्द्धं यदि न च शुभैर्वीक्षितः शक्तिभृद्भिः ॥ 7 ॥

यदि लग्न में क्षीण चन्द्रमा हो, आठवें और केन्द्र भाव में पाप ग्रह स्थित हो तो शिशु की जल्दी मृत्यु हो जाती है ।

यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों के मध्य स्थित होकर 8, 4 व 7 भावों में स्थित हो तो शिशु की शीघ्र मृत्यु होती है ।

यदि चन्द्रमा लग्न में होकर दो पाप ग्रहों के मध्य में स्थित हो और यदि पाप ग्रह सातवें या आठवें भाव में स्थित हों व चन्द्रमा बली शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो शिशु माता सहित मर जाता है । यदि इस योग में किसी बली शुभ ग्रह की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो शिशु मरता है और माता की रक्षा होती है अर्थात् बच जाती है ।

राश्यंतेग सद्भिरवीक्ष्माणे चंद्रे त्रिकोणप्रगतैश्च पापैः ।
प्राणैः प्रायात्याशु शिशुर्वियोगमस्ते च पापैस्तुहिनां शुलग्ने ॥ 8 ॥

यदि चन्द्रमा किसी भी राशि के अन्तिम नवांश में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो और पाप ग्रह पांचवें व नौवें स्थान पर हो तो शिशु की शीघ्र मृत्यु हो जाती है ।

यदि चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह सप्तम भाव में स्थित हो तो शिशु शीघ्र मर जाता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बच्चे व माता की एक साथ मृत्यु का योग

अशुभसहिते ग्रस्ते चंद्रे कुजे निधनाश्रिते
जननिसुतयोर्मृत्युर्लग्ने रवौ तु सशस्त्रजः ।
उदयति रवौ शीतांशौ वा
त्रिकोणविनाशगैर्निधनमशुभैर्वियोपितैः शुभैर्न युतेक्षिते ॥ 9 ॥

यदि चन्द्रमा शनि व राहु से युत होकर लग्न में स्थित हो और आठवें भाव में मंगल हो तो माता व बच्चा दोनों ही मर जाते हैं ।

यदि शनि, बुध और राहु इन तीनों से युत सूर्य लग्न में स्थित हो एवं मंगल आठवें भाव में स्थित हो तो शिशु एवं माता की मृत्यु हथियार से होती है ।

यदि सूर्य या चन्द्र लग्न में स्थित हो और पाप ग्रह पांचवें, नौवें व आठवें भाव में स्थित हों तथा सूर्य या चन्द्र ग्रह बली शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो बच्चे व माता की शीघ्र मृत्यु होती है ।

शिशु की मृत्यु का योग

असितरविशशांभूमिजैर्व्यय नवमोदयनैधनाश्रितैः ।
भवति मरणमाशु देहिनां यदि बलिना गुरुणा न वीक्षिताः ॥ 10 ॥

यदि बारहवें शनि हो, सूर्य नौवें हो, चन्द्र लग्न में हो, मंगल आठवें भाव में हो एवं इन पर बली ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो तो शिशु की मृत्यु हो जाती है ।

यदि बली गुरु चारों को देखता है तो बच्चा बच जाता है । यदि क्षीण गुरु या बली गुरु एक को देखता है और दूजे को नहीं देखता है तो बच्चे की मृत्यु तो होगी किन्तु देर से ।

सुतमदननवांत्यलग्नरंध्रेष्वशुभयतो मरणाय शीतरश्मिः ।
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि बलिभिर्न युतोऽवलोकिता वा ॥ 11 ॥

यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न या 5, 7, 9, 8 या 12वें भाव में स्थित हो, न पाप ग्रह से युत हो और न बली ग्रह बुध, शुक्र या गुरु से दृष्ट हो तो जन्मते ही शिशु की मृत्यु हो जाती है ।

योगे स्थानं गतवति बलिनश्चंद्रे स्वंवा तनुगृहमथवा ।
पापैर्दृष्टे बलवति मरणं वर्षस्यांतः किल मुनिगदितम् ॥ 12 ॥

यदि पूर्वोक्त कहे गए अरिष्ट योगों में जिनमें मृत्यु होने का समय नहीं कहा गया, उन सब योगों में मृत्यु काल का निश्चय करते हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

योग कारक ग्रहों में जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उसकी राशि में गोचरवश जब चन्द्रमा आता है, तब बच्चें की मृत्यु होगी, ऐसा कहना चाहिए।

यदि जन्म समय में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो उसी में गोचरवश पुनः जब वह आता है तब बच्चे की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिए।

जन्म लग्न राशि में जब चन्द्रमा आता है तब भी बच्चे की मृत्यु होती है, ऐसा समझना चाहिए।

योगकारक स्थानों में पाप ग्रह से युत चन्द्रमा जब गोचरवश आता है और पाप ग्रहों से दृष्ट होता है तब बच्चे की मृत्यु होती है, ऐसा कहना चाहिए।

टिप्पणी—1. अन्य अरिष्टकारक योगों के लिए अन्य ज्योतिष ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए। 2. यदि गुरु लग्न में स्थित हो और बली हो तो बच्चे की मृत्यु न होकर रक्षा हो जाती है। 3. यदि लग्नेश बली हो और केन्द्र में स्थित शुभ ग्रहों से दृष्ट हो एवं किसी पाप ग्रह से दृष्ट न हो तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 4. यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में स्थित हो और शुक्र, गुरु या बुध से दृष्ट हो या इनके द्रेष्काण में हो तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 5. यदि बली चन्द्र शुभ भाव में शुभ ग्रहों के बीच स्थित हो और शुक्र ग्रह से दृष्ट हो तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 6. यदि केन्द्र में बली बुध, शुक्र या गुरु स्थित हों और पाप ग्रह से दृष्ट न हों तो शिशु की शीघ्र मृत्यु नहीं होती है। 7. यदि चन्द्रमा छठे भाव में स्थित हो और गुरु, शुक्र या बुध से दृष्ट हो या इनके द्रेष्काण में हो तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 8. यदि पूर्णबली चन्द्र शुक्ल पक्ष में कुंडली में दो शुभ ग्रहों के मध्य में स्थित हो तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 9. यदि बली गुरु केन्द्र में हो और बली व शुभ चन्द्र से दृष्ट हो तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 10. गुरु, चन्द्र, शुक्र व बुध ग्रह जन्मपत्री में शुभ भाव में या शुभ नवांश में हो या स्व द्रेष्काण में हो तो शिशु को मृत्यु का खतरा नहीं रहता है। 11. चन्द्रमा स्व राशि में या शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो शिशु की मृत्यु नहीं होती है। 12. यदि अरिष्टकारक ग्रह शुभ ग्रह के वर्ग में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो शिशु की शीघ्र मृत्यु (Early Death) नहीं होती है। 13. यदि राहु 3, 6 या 11वें भाव में स्थित हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो शिशु की शीघ्र मृत्यु नहीं होती है। 14. शुभ ग्रह जन्म कुंडली में शीर्षोदय राशि (5, 6, 7, 8, 11) में स्थित हों तो शिशु की शीघ्र मृत्यु नहीं होती है।

इस अध्याय में बालारिष्ट या शिशु के शीघ्र मृत्यु संबंधी योगों की चर्चा की गई है अब अगले अध्याय में आयु संबंधी योगों की चर्चा करेंगे।

इति श्री वराहमिहिराचार्य प्रणीते बृहज्जातकेऽरिष्टाध्यायः षष्ठ ॥ 6 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आयुर्दायाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर आयु सम्बन्धी ग्रह योगों की चर्चा करेंगे जिससे यह ज्ञात हो सके कि जातक दीर्घायु, मध्यायु या अल्पायु है। आयु संबंधी योगों को जन्मकुण्डली में ध्यान से देखना चाहिए क्योंकि यदि आयु ही नहीं होगी तो शेष सभी शुभाशुभ का ज्ञान करने से क्या लाभ ?

ग्रहों की परमायु

मयवनमणित्य शक्तिपूर्वैर्दिवसकरादिषु वत्सराः प्रदिष्टाः ।
नवतिथिविषयाश्विभूतरुद्रदशसहिता दशभिः स्वतुंगभेषु ॥ 1 ॥

मय नाम के राक्षस (जो सूर्य की कृपा से ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हुआ), यवनाचार्य विदेशी ज्योतिषी, मणित्थ ज्योतिषी और शक्तिपूर्वा अर्थात पाराशर (शक्ति पाराशर के पिता) आदि आचार्यों ने सूर्यादि ग्रहों के अपने-अपने परमोच्च अंश में रहने पर परमायु वर्ष क्रम से दशयुत करके 9,15,5,2,5,11,10 हैं। अतः स्पष्ट है कि यदि ग्रह अपने परमोच्च अंश पर हो तो उनके परमायु वर्ष निम्न प्रकार होगें—

परमोच्च अंश पर परमायु वर्ष चक्रम्

ग्रह	परमायु वर्ष (परमोच्च पर रहने पर)
सूर्य	9 + 10 = 19
चन्द्र	15 + 10 = 25
मंगल	5 + 10 = 15
बुध	2 + 10 = 12
गुरु	5 + 10 = 15
शुक्र	11 + 10 = 21
शनि	10 + 10 = 20

टिप्पणी— 1. सूर्यादि ग्रहों के परमोच्च अंश पहले अध्याय के 13 वें श्लोक में बताये गए हैं। 2. ग्रहों के अनुसार मनुष्य जीवन की आयु निर्धारित करने की तीन रीतियाँ हैं - अमायु, पिण्डायु और निसर्गायु। पिण्डायु और निसर्गायु रीति को प्राचीन आचार्यों (मयाचार्य, यवनाचार्य, मणित्थाचार्य, पाराशर) ने भी मान्यता प्रदान की है। 3. आयु निर्धारित करते समय विभिन्न प्रकार के संस्कार भी करने पड़ते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमनीच ग्रहों की आयु

नीचेऽतोऽर्द्धंह्रसति हि तत्श्चांतरस्थेऽनुपातो
होरा त्वंशप्रतिममपरे राशितुल्यं वदंति।
हित्वा वक्रं रिपुग्रहगतैर्हीयते स्वत्रिभागः
सूर्योच्छिन्नद्युतिषु च दलं प्रोज्भय शुक्रार्कपुत्रौ ॥2॥

जब सूर्यादि ग्रह परम नीच अंश पर स्थित हों तो उनकी आयु पहले श्लोक में कही परमायु की आधी होती है। जोकि इस प्रकार है

परमनीच अंश पर परमायु वर्ष चक्रम्

ग्रह	परमायु वर्ष परमनीच अंश पर
सूर्य	9.5 वर्ष
चन्द्र	12.5 वर्ष
मंगल	7.5 वर्ष
बुध	6.0 वर्ष
गुरु	7.5 वर्ष
शुक्र	10.5 वर्ष
शनि	10.0 वर्ष

यदि ग्रह उच्च और नीच में हों तो उक्त वर्ष और यदि उच्च-नीच दोनों के मध्य में स्थित हों तो आयुर्दाय नीच और स्पष्ट ग्रह के अन्तर या उच्च और स्पष्ट ग्रह के अन्तर से अनुपात द्वारा जानना चाहिए। बाद में नीच और स्पष्ट ग्रह के अन्तर से लाए आयुर्दाय (वर्षादि) को नीच वर्षादि में जोड़ने से ग्रह की स्पष्टायु वर्ष ज्ञात होते हैं। उच्च और स्पष्ट ग्रह के अन्तर से लाए आयुर्दाय (वर्षादि) को उच्च वर्षादि से घटाने पर स्पष्ट आयु ज्ञात होती है।

लग्न नवांश तुल्य आयुर्दाय देता है अर्थात् लग्न में जितने नवांश भुक्त हो गए हों उतने वर्ष और शेष का अनुपात से मासादि ज्ञात करने चाहिएं। अन्य आचार्य (मणित्थ) का मत है कि लग्न राशि तुल्य आयुर्दाय होता है अर्थात् लग्न में मेषादि क्रम से जितनी राशि भुक्त हो गई हैं उतने वर्ष और अंशादि से अनुपात से शेष आयुर्दाय ज्ञात करना चाहिए।

वक्री ग्रहों को छोडकर अन्य ग्रह शत्रुग्रही हों तो पूर्वोत्तर रीति से ज्ञात आयु का तीसरा भाग कम कर लेते हैं। यदि वक्री ग्रह शत्रुग्रही हों तो वह अपनी आयु का त्रिभाग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं करता है । यदि शुक्र और शनि को छोडकर मात्र मंगल, चन्द्र, बुध और गुरु ग्रह सूर्य से अस्त हों तो अपनी आयु का आधा हर लेते हैं । ग्रहों के सूर्य से अस्त अंश निम्न प्रकार है

ग्रह	अस्त अंश	
मंगल	17	अंश
बुध	14	अंश
बुध (वक्री)	12	अंश
गुरु	11	अंश
शुक्र	10	अंश
शुक्र (वक्री)	8	अंश
शनि	15	अंश
चन्द्र	12	अंश

अब यहाँ पर उच्च-नीच ग्रहों के आयुर्दाय वर्ष ज्ञात करने के लिए 'ग्रहों के उच्च-नीच वर्ष ज्ञान चक्रम्' बनाकर दे रहें हैं

ग्रहों के उच्च - नीच वर्ष ज्ञान चक्रम्

ग्रह	उच्च		उच्च वर्षायु	नीच		नीच वर्षायु
	राशि	अंश		राशि	अंश	
सूर्य	0	10	19	6	10	9.5
चन्द्र	1	03	25	7	3	12.5
मंगल	9	28	15	3	28	7.5
बुध	5	15	12	11	15	6.0
गुरु	3	05	15	9	5	7.5
शुक्र	11	27	21	5	27	10.5
शनि	6	20	20	0	20	10.0

अब आयु ज्ञात करने के लिए एक उदाहरण देकर समझाते हैं । मान लो एक व्यक्ति की जन्म कुण्डली और ग्रह स्पष्ट व लग्न स्पष्ट निम्न प्रकार हैं—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म कुंडली

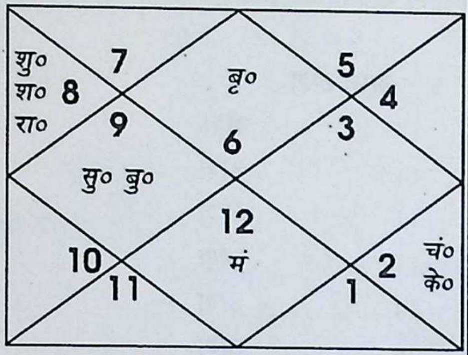

ग्रह स्पष्ट चक्रम्

ग्रह	राशि	अंश	कला	विकला
सूर्य	8	0	36	01
चन्द्र	1	4	23	17
मंगल	11	11	30	49
बुध	8	17	59	21
गुरु	5	6	59	48
शुक्र	7	1	49	52
शनि	7	14	20	19
लग्न	5	16	38	23

टिप्पणी— 1. उच्च राश्यादि में से ग्रह स्पष्ट घटाकर यदि शेष उच्चांतर 6 राशि से कम हों तो 12 राशि में से उच्चांतर घटा लें। यदि उच्च राश्यादि में से ग्रह न घटे तो उच्च राशि में 12 जोडकर घटाने पर शेष उच्चांतर प्राप्त होगा।

बाद में निम्न सूत्र से ग्रहायु प्राप्त कर लेते हैं—

$$\text{ग्रहायु} = \text{उच्च वर्षायु} - \frac{\text{उच्च वर्षायु} \times \text{उच्चांतर अंशों में}}{360}$$

उदाहरण देकर समझते हैं।

सूर्य स्पष्ट $8/0^{\circ}/36'/01''$ है और सूर्य के उच्च राश्यादि $0/10^{\circ}/0'/0''$ हैं। उच्च राश्यादि $0/10^{\circ}/0'/0''$ में से ग्रह स्पष्ट $8/0^{\circ}/36'/01''$ घटाया तो वह नहीं घटता है, इसलिए 12 राशि जोडकर घटाया तो $4/9^{\circ}\,23'/5''$ अर्थात 129.3997222 अंश उच्चांतर आया। सूर्य की आयु सूत्रानुसार—

$$\text{ग्रहायु} = 19 - \frac{19 \times 129.3997222}{360} = 19 - 6.88294298$$

$$= 12.1705792 \text{ सूर्य की स्पष्ट आयु है।}$$

2. ग्रह स्पष्ट को देखें कि उच्च के समीप है या नीच के समीप। जिसके समीप हो उससे ग्रह का अन्तर निकालो अर्थात् जिससे जो घंटे घटाकर अन्तर ज्ञात करो। बाद में सूत्रानुसार अन्तर की आयु निकालों

1. यदि ग्रह स्पष्ट से नीच राश्यादि घटे तो ग्रहायु वर्षों में—

$$= \text{नीच वर्षायु} + \frac{\text{ग्रह अन्तर अंशों में} \times \text{उच्च वर्षायु}}{360}$$

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. यदि ग्रह स्पष्ट से उच्च राश्यादि घटे तो ग्रहायु वर्षों में

$$= \text{उच्च वर्पायु} - \frac{\text{ग्रह अन्तर अंशों में} \times \text{उच्च वर्षायु}}{360}$$

उक्त उदाहरण को पुन: करके बताते हैं। सूर्य स्पष्ट 8/0°/36′/01″ है, उच्च राश्यादि 0/10°/0′/0″ है और नीच राश्यादि 0/10°/0′/0″ हैं। सूर्य स्पष्ट नीच राश्यादि के समीप और उससे आगे हैं, अत: सूर्य स्पष्ट में से नीच राश्यादि घटाये तो (8/0°/36′/01″ – 6/10°/0′/0″)1/20°/36′/01″ अर्थात् 50.6002778 अंश आया। ग्रहायु सूत्रानुसार–

$$\text{ग्रहायु} = \text{नीच वर्षायु} + \frac{\text{ग्रह अन्तर अंशों में} \times \text{उच्च वर्षायु}}{360}$$

$$= 9.5 + \frac{50.6002778 \times 19}{360}$$

$= 9.5 + 2.6705702 = 12.1305702$ वर्ष सूर्य की स्पष्ट आयु आयी।

चन्द्र स्पष्ट की आयु

चन्द्र स्पष्ट 1/4°/23′/17″ हैं, चन्द्र के उच्च राश्यादि 1/3°/0′/0″ और नीच राश्यादि 7/3°/0′/0″ हैं। यहाँ चन्द्र स्पष्ट उच्च राश्यादि के समीप और उससे आगे है, अत: चन्द्र स्पष्ट में से नीच राश्यादि घटाये तो (1/4°/23′/17″ – 1/3°/0′/0″) 0/1°/23′/17″ अर्थात् 1.3880556 अंश आया। ग्रहायु सूत्रानुसार–

$$\text{ग्रहायु} = \text{उच्च वर्षायु} - \frac{\text{ग्रह अन्तर अंशों में} \times \text{उच्च वर्षायु}}{360}$$

$$= 25 - \frac{1.3880556 \times 25}{360} = 25 - 0.0963927$$

$= 24.9036073$ वर्ष चन्द्र स्पष्ट की आयु आयी।

मंगल स्पष्ट की आयु

मंगल स्पष्ट 11/11°/30′/49″ है जो कि मंगल की उच्च राश्यादि 9/2 8/00′/00″ के समीप है, मंगल स्पष्ट से घटाया तो अर्थात (11/11°/30′/49″ – 9/28°/00′/00″) 1/13°/30′/49″ अर्थात् 43.5136111 अंश आया। ग्रहायु सूत्रानुसार—

$$\text{ग्रहायु} = \text{उच्च वर्षायु} - \frac{\text{ग्रह अन्तर अंशों में} \times \text{उच्च वर्षायु}}{360}$$

$$= 15 - \frac{43.5136111 \times 15}{360} = 15 - 1.8130671$$

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

= 13.1869329 वर्ष मंगल की स्पष्ट आयु आयी ।

बुध स्पष्ट की आयु

बुध स्पष्ट 8/17°/59′/21″ है जोकि उच्च राश्यादि 5/15°/00′/00″ के समीप और आगे है, बुध स्पष्ट से घटाया तो (8/17°/59′/21″ – 5/15°/00′/00″) 3/2°/59′/21″ अर्थात् 92.9891667 अंश आया । ग्रहायु सुत्रानुसार—

$$= 12 - \frac{92.9891667 \times 12}{360}$$

$$= 12 - 3.0996389 = 8.9003611$$ वर्ष बुध की स्पष्ट आयु आयी ।

गुरु स्पष्ट की आयु

गुरु स्पष्ट 5/6°/59′/48″ है जोकि उच्च राश्यादि 8/17°/59′/21″ के समीप और आगे है , गुरु स्पष्ट से घटाया तो (5/6°/59′/48″ – 3/5°/00′/00″) अर्थात् 61.9966667 अंश आया । ग्रहायु सूत्रानुसार–

$$= 15 - \frac{61.9966667 \times 15}{360} = 15 - 2.5831944$$

= 12.4168056 वर्ष शुक्र की स्पष्ट चक्रम् आयु आयी ।

शुक्र स्पष्ट की आयु

शुक्र स्पष्ट 7/1°/49′/52″ है जोकि नीच राश्यादि 5/27°/00′/00″ के समीप और आगे है , शुक्र स्पष्ट से घटाया तो (7/1°/49′/52″ – 5/21°/00′ 00″) अर्थात् 34.8311111 अंश आया । ग्रहायु सूत्रानुसार—

$$= 10.5 + \frac{34.8311111 \times 21}{360} = 10.5 + 2.0318148$$

= 12.5318148 वर्ष शुक्र की स्पष्ट आयु आयी ।

शनि स्पष्ट आयु

शनि स्पष्ट 7/14°/20′/19″ है जोकि उच्च राश्यादि 6/20°/00′/00″ के समीप और आगे है , शनि स्पष्ट से घटाया तो (7/14°/20′/19″ – 6/20°/00′ 00″) अर्थात् 24.3386111 अंश आया । ग्रहायु सूत्रानुसार—

$$= 20 - \frac{24.3386111 \times 20}{360} = 20 - 1.3521451$$

= 18.6478549 वर्ष शनि की स्पष्ट आयु आयी ।

लग्नायु ज्ञात करने की रीति

अब लग्नायु ज्ञात करने की रीति बताते हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न के जितने नवाँश भुक्त हुए हों उतने वर्ष लग्नायु के होंगे। कलादि की लग्नायु अनुपात से ज्ञात करनी चाहिए। अत: शेषांश की लग्नायु का सूत्र है—

$$\text{शेषांश की लग्नायु} = \frac{1 \times \text{शेषांश}}{3.3333333}$$

उदाहरण कुण्डली की लग्नायु स्पष्ट करके बताते हैं। लग्न स्पष्ट $5/16^{o}/38'/23''$ है। एक नवांश 3.3333333 या 200 कला का होता है।

$16^{o}/38'/23''$ अंश को $3^{o}\,20'$ अर्थात 3.3333333 से विभाजित किया तो $(16.6397222 \div 3.3333333 = 4.9919167)$ ज्ञात हुआ कि 4 नवांश भुक्त हो गए हैं और पांचवें नवांश के शेषांश $(16.6397222 - 13.3333333 = 3.3063889)$ आयी 3 अंश 18 कला 23 विकला अर्थात 3.3063889 आया तो सूत्रानुसार शेषांश की लग्नायु–

शेषांश की लग्नायु = 0.3 × शेषांश

= 0.3 × 3.3063889 = 0.9919167

भुक्त नवांश 4 के 4 वर्ष में शेषांश की लग्नायु 0.9919167 वर्ष जोड़ी तो 4.9919167 लग्नायु आयी।

लग्नायु की सरल रीति का सूत्र निम्न प्रकार है—

लग्नायु = 0.3 × लग्न स्पष्ट के भुक्तांशादि

सूर्यादि ग्रहायु स्पष्ट चक्रम्

ग्रह	स्पष्ट आयु (वर्ष)	संस्कार श्लोक 3 के अनुसार के बाद
सूर्य	12.1705702	12.1705702
चन्द्र	24.9036073	18.6777055
मंगल	13.1869329	10.9891107
बुध	8.9003611	8.9003611
गुरु	12.4168056	12.4168056
शुक्र	12.5318148	12.5318148
शनि	18.6478549	18.6478549
लग्न	4.9919167	4.9919167
योग	107.748635	99.3261395

लग्न स्पष्ट $5/16^{o}/38'/23''$ है। भुक्त राशि 5 छोडकर शेष लग्न स्पष्ट के भुक्तांश $16^{o}/38'/23''$ अर्थात 16.6397222 है। तो सूत्रानुसार लग्नायु–

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

= 0.3 × 16.6397222 = 4.9919167 वर्ष

अतः सूर्यादि स्पष्ट का आयु चक्रम् इस प्रकार बना ।

यहाँ लग्न का 5वाँ नवांश वर्तमान है इसलिए श्लोक 4 के अनुसार कुल आयु में 5 का गुना करके 108 का भाग दिया तो 99.3261395 × 5 ÷ 108 = 4.5984324 वर्ष आया इसे कुल आयु से घटाया तो 94.7277072 वर्ष स्पष्टायु आयी ।

ग्रहायु में ह्रास

सर्पार्द्धत्रिचरणपंचषष्टभागाः क्षीयंते व्ययभवनादसत्सु वामम् ।
सत्स्वर्द्धं ह्रसति तथैकराशिगनामेकोंऽशं हरति बली तथाह सत्यः ॥ 3 ॥

यदि पापग्रह द्वादश स्थान से विलोम क्रम से छह भावों में स्थित हों तो क्रम से ग्रह अपनी-अपनी आयु का सम्पूर्ण (Full), अर्ध (Half), तृतीयांश, चतुर्थांश, पंचयांश और षष्ठांश नाश या ह्रास कर देते हैं । कहने का तात्पर्य यही है कि द्वादश भाव में बैठा पापग्रह अपनी आयु का सम्पूर्ण भाग, एकादश भाव में बैठा ग्रह अपनी आयु का आधा भाग, दसवें भाव में बैठा ग्रह अपनी आयु का तीसरा भाग, नौवें भाव में बैठा ग्रह अपनी आयु का चौथा भाग, अष्टम भाव में बैठा ग्रह अपनी आयु का पाँचवां भाग और सप्तम भाव में बैठा पाप ग्रह अपनी आयु का छठा भाग नष्ट या ह्रास कर देता है ।

यदि शुभ ग्रह इसी तरह बैठे हों तो इसका अर्द्ध भाग नाश कर देता है । कहने का तात्पर्य यही है कि शुभ ग्रह द्वादश भाव में बैठा हो तो अपनी आयु का आधा भाग, एकादश भाव में बैठा ग्रह अपनी आयु का चतुर्थांश (1/4), दसवें भाव में बैठा हो तो षष्ठांश (1/6), नौवें भाव में बैठा हो तो अष्टमांश (1/8), आठवें भाव में बैठा हो तो दशमांश (1/10) और सातवें भाव में बैठा हो तो अपनी आयु का द्वादशांश (1/12) भाग नाश या ह्रास करता है ।

यदि इन भावों में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली ग्रह हो वही अपनी आयु के उक्त भाग का नाश करता है, अन्य नहीं । इस प्रकार का सत्याचार्य का भी मत है ।

आयु में ह्रास के विशेष संस्कार

सार्द्धोदितोदितनवांशहतात्समस्ताद्भागोऽष्टयुक्तशतसंख्यमुपैति नाशम् ।
क्रूरे विलग्नसजिते विधिना त्वनेन सौम्येक्षिते दलमतः प्रलयं प्रयाति ॥ 4 ॥

यदि पाप ग्रह लग्न में बैठा हों तो लग्न के जितने नवांश भुक्त हुए हों वे उदित नवांश कहे जाते हैं । जिस नवांश में लग्न हो उसका जितना भुक्त हो उस पर से

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रैराशिक से जो फल मिले उसको उदित नवाँश में युक्त करने से जो हो वह सार्धोदित नवाँश होता है । उसको सम्पूर्ण आयु में गुणा करने से जो फल मिले उसका 108 वाँ भाग सम्पूर्ण आयु में से घटायें , यदि लग्न में स्थित पाप ग्रह के ऊपर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उस लब्धि फल का आधा घटाने से आयु आती है ।

टिप्पणी— 1. एक राशि में नौ नवाँश होते हैं, अत: 12 राशियों में 108 नवाँश हुए । उनमें से स्पष्ट लग्न के वर्तमान नवाँश पर्यन्त जितने नवाँश हों उनको कलात्मक बनाकर उससे प्रत्येक ग्रह के दशा वर्ष को अलग-अलग गुणाकर 21600 का भाग देने से लब्धि वर्षादि जो भी आए उनको उसी ग्रह के दशा वर्ष में से घटाने से उसी ग्रह की आयु स्पष्ट हो जाती है । उसी तरह लग्नादि सब ग्रहों की आयु स्पष्ट करनी चाहिए । 2. कुछ विद्वान इस तरह अर्थ करते हैं - "सब ग्रहों के आयुर्दाय योग को सार्धोदित नवाँश से गुणा कर 108 का भाग देने से जो फल मिले उसको सम्पूर्ण पिण्ड में से घटाना चाहिए । यदि लग्न में शुभ ग्रह हों तो आधा घटायें, शेष जो हो वह समस्त ग्रहों की दशा होती है । अन्तर दशा की गणना से सब ग्रहों के दशा वर्षादि ग्रहण करें ।"

उदाहरणत: एक जातक के ग्रह स्पष्ट इस प्रकार है , उसकी आयुर्दाय ज्ञात करो

जन्म कुंडली

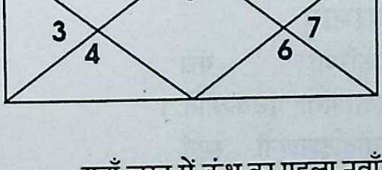

ग्रह	राशि	अंश	कला
सूर्य	0	9	0
चन्द्र	1	2	0
मंगल	10	28	0
बुध	11	24	0
गुरु	9	4	0
शुक्र	11	26	0
शनि	0	19	7
लग्न	10	0	1

यहाँ लग्न में कुंभ का पहला नवाँश हैं । सूर्य , चन्द्र और शुक्र उच्च में हैं । बुध, गुरु और शनि नीच राशि में हैं । मंगल कुंभ राशि के 28 वें अंश पर है । सूर्य, चन्द्र व शुक्र के क्रमश: उच्च में होने के कारण इनके वर्ष 19,25,21 है, बुध, व शनि के क्रमश: नीच में होने के कारण इनके वर्ष आधे 6,7.5 व 10 हैं । मंगल के वर्ष 15 में से 1 वर्ष 3 माह घटाने पर 13 वर्ष 9 माह आए । लग्न में कुंभ का पहला नवाँश उदित है इसलिए कोई वर्ष प्राप्त नहीं हुए ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभ ग्रह गुरु द्वादश में है, इसलिए इसकी आयु आधी ह्रास होगी अर्थात 3 वर्ष 9 माह। ग्रहायु इस प्रकार प्राप्त हुई

ग्रह	आयु
सूर्य	19 वर्ष 0 माह
चन्द्र	25 वर्ष 0 माह
मंगल	13 वर्ष 9 माह
बुध	6 वर्ष 0 माह
गुरु	3 वर्ष 9 माह
शुक्र	21 वर्ष 0 माह
शनि	10 वर्ष 0 माह
लग्न	0 वर्ष 0 माह
योग	98 वर्ष 6 माह

मंगल लग्न में स्थित है, इस लिए कुल आयु में ह्रास होगा। यहाँ $10 \times 9 + 1 = 91$ नवाँश मेष से कुल आयु में है तो ह्रास इस प्रकार होगा

$$= \frac{91 \times 98.5}{108} = \frac{8963.5}{108} = 82.9953704 \text{ वर्ष}$$

कुल आयु 98.5 वर्ष में से घटाया तो 15.5046296 वर्ष आयी अर्थात् 15 वर्ष 6 माह 1 दिन 40 घटी आयी जोकि 20 वर्ष से अल्प है।

टिप्पणी— 1. यह ह्रास की रीति प्रत्येक ग्रह में प्रयोग में लाने पर शुद्ध आयुर्दाय प्राप्त होगा। 2. वर्तमान नवाँश संख्या से प्रत्येक ग्रह को गुणाकर 108 से विभाजित करने पर जो वर्षादि प्राप्त हों उसे उसकी आयुर्दाय में से घटाना चाहिए।

जीवों की परमायु

समाषष्टिर्द्विघ्ना मनुजकरिणां पंच
च निशा हयानां द्वात्रिंशित्खरकरभयोः पंचककृतिः।
विरूपा साऽप्यायुर्वृषमहिषयोर्द्वादशशुनां स्मृतं
छागादीनां दशकसहिताः षट् च परमम्॥ 5॥

मनुष्य और हाथी की परमायु 120 वर्ष 5 दिन, घोडे की 32 वर्ष, गधा और ऊंट की 25 वर्ष, बैल और भैंस की 24 वर्ष, कुत्ते व इस जैसे जीवों की 12 वर्ष और बकरी, भेंड व हिरन की 16 वर्ष परमायु होती है।

टिप्पणी— 1. जिस किसी जीव की आयु जाननी हो तो मनुष्य की तरह उसकी भी गणित द्वारा स्पष्ट आयु ज्ञात कर लें। मान लो घोड़े की आयु स्पष्ट करनी है। पहले मनुष्य की

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरह गणित द्वारा स्पष्ट आयु लाकर घोड़े की परमायु 32 वर्ष से गुणा करके 120 वर्ष 5 दिन अर्थात 120.4166667 वर्ष से भाग देने जो लब्धि आयेगी वह घोड़े की स्पष्टायु होगी ।अत: सूत्र बना—

$$\text{जीव की स्पष्टायु वर्ष} = \frac{\text{जीवों की परमायु} \times \text{जीवों की स्पष्ट आयु मनुष्य की तरह}}{120.4166667}$$

परमायु योग

अनिमिषपरमांशके विलग्ने शशितनये गवि पंचवर्गलिप्ते।
भवति हि परमायुषः प्रमाणं यदि सकलः सहिताः स्वतुंगभेषु ॥ 6 ॥

यदि जातक का जन्म मीन राशि के नौवें नवाँश (अन्तिम नवाँश) में हो, बुध वृष राशि की 25 कला पर हो और शेष ग्रह अपने-अपने उच्च में हों तो जातक की परमायु 120 वर्ष 5 दिन होती है । पूर्ण कथित गणित से भी यही आयु आती है ।

टिप्पणी— 1. यहाँ परमायु जातक का उदाहरण दे रहे हैं । ग्रह स्पष्ट इस प्रकार है—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
राशि	0	1	9	1	3	11	6	11
अंश	9	2	27	0	4	26	19	29
कला	0	0	0	25	0	0	0	59

जन्म कुंडली

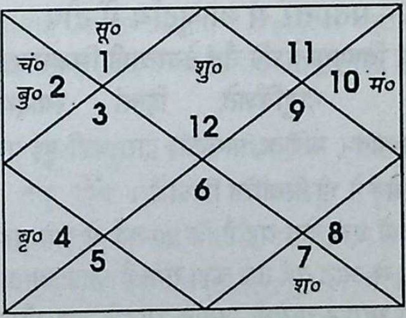

उपरोक्त ग्रह स्पष्ट में बुध को छोडकर सभी ग्रह अपने उच्च में है । बुध स्पष्ट $1/0^{\circ}/25'/0''$ में से परम नीच राश्यादि $11/15^{\circ}/00'/00''$ घटाया तो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

1/15°/25'/00" अर्थात् शेषांश 45.4166667 आया। सूत्रानुसार बुध की आयु इस प्रकार होगी–

$$= 6 + \frac{45.4166667 \times 12}{360}$$
$$= 6 + 1.5138889$$
$$= 7.5138889 \text{ वर्ष}$$

अर्थात 7 वर्ष 6 माह 5 दिन बुध की आयु ज्ञात हुई।

लग्न में 8.995 अर्थात 9 नवाँश भुक्त है इसलिए लग्नायु 8.995 वर्ष अर्थात् 9 वर्ष हुई।

श्लोक 3 के अनुसार मंगल व शनि दो पाप ग्रह 11 वें व आठवें भाव में क्रम से स्थित हैं। मंगल की परमायु 15 वर्ष की अर्ध हानि करने से स्पष्ट आयु 7/6/00 हुई। शनि अष्टम होने से उसकी परमायु 20 वर्ष का पंचमांश (1/5) किया तो उसकी स्पष्ट आयु 16 वर्ष हुई। स्पष्ट आयु उक्त ग्रह स्पष्ट से सूर्य की 19 वर्ष, चन्द्र की 25 वर्ष, मंगल की 7 वर्ष 6 माह, बुध की 7 वर्ष 6 माह 5 दिन, गुरु की 15 वर्ष, शुक्र की 21 वर्ष, शनि की 16 वर्ष और लग्न की 9 वर्ष आयी, इन सबका कुल योग 120 वर्ष 5 दिन आता है जोकि परमायु है।

यहाँ सूर्य ग्रह अपने उच्च (मेष) में होने से बुध ग्रह अपने उच्च (कन्या) में नहीं हो सकता या बुध ग्रह अपने उच्च में होने से सूर्य अपने उच्च में नहीं हो सकता है। अतः छह ग्रह अपने-अपने उच्च और बुध वृष राशि की 25 कला में होने पर यह योग बनता है।

मतान्तर से आयुर्दाय में दोष

आयुर्दायं विष्णुगुप्तोऽपि चैवं देवस्वामी सिद्धसेनश्च चक्रे।
हत्वां नायुर्विंशतेः हित्वां स्यादधस्तात्॥ 7॥

आचार्यों (मय, यवन, मणित्थ, पाराशर) द्वारा कही हुई परमायु को विष्णुगुप्त, देवस्वामी और सिद्धिसेन ने भी निर्धारित किया है।

इस आयुर्दाय में एक दोष यह है कि 20 वर्ष से कम यह आयु नहीं आती है जबकि बालारिष्ट जन्म से आठ वर्ष तक कहा गया है। अतः आठ वर्ष के बाद और 20 वर्ष के भीतर किसी की आयु न आयेगी, जबकि आठ के बाद और बीस के भीतर लाखों मरते हैं। यह एक महान दोष है।

भट्टोत्पल ने उदाहरण देकर समझाया है–

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म कुंडली

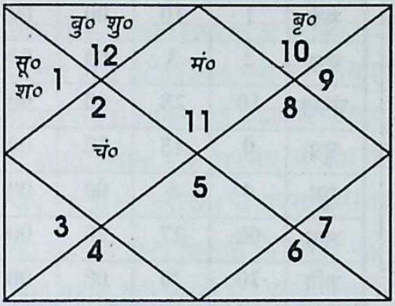

ग्रह स्पष्ट चक्रम्

ग्रह	राशि	अंश	कला
सूर्य	0	10	00
चन्द्र	1	3	00
मंगल	10	28	00
बुध	11	15	00
गुरु	9	5	00
शुक्र	11	27	00
शनि	00	20	00
लग्न	10	00	01

लग्नायु 0 है क्योंकि लग्न राश्यादि में अंश शून्य हैं । मंगल की आयु 13 वर्ष 9 माह है । गुरु नीच में होकर लग्न से बाहर ही बैठा है । ह्रास के नियमानुसार गुरु की आयु 3 वर्ष 9 माह हुई । सूर्य, चन्द्र और शुक्र उच्च में है, अत: सूर्य की आयु 19 वर्ष, चन्द्र की आयु 25 वर्ष एवं शुक्र की आयु 21 वर्ष है ।बुध और शनि नीच में है, अत: बुध की आयु 6 वर्ष और शनि की आयु 10 वर्ष हुई । सबका योग 98 वर्ष 6 माह हुआ । यहाँ लग्न में पाप ग्रह मंगल स्थित है, लग्न की भुक्त नवाँश संख्या 10 × 9 = 90 में कुम्भ की सार्धोदित नवाँश संख्या 91 हुई । पूर्ण आयु 98 वर्ष 6 मास को 91 से गुणा करके 108 से भाग देने पर 32 वर्ष 11 मास 28 दिन 20 घटी आया, इसको पूर्णायु में से घटाने पर (98/6 – 82/11/28/20) 15/6/1/40 आयु आयी । अत: वराहमिहिर का "नायुर्विधते: स्यादधस्तात" कहना असंगत है । इसलिए भट्टोत्पल ने कहा है—यह श्लोक वराहमिहिर का नहीं हैं ।बाद में लेखक और अध्येता के दोष से प्रक्षिप्त हो गया है ।

यस्मिन्योगे पूर्णमायु: प्रदिष्टं तस्मिन्प्रोक्तं चक्रवर्तित्वमन्यै: ।
प्रत्यक्षोऽयं तेषु दोष: परोऽपि जीवत्यायु: पूर्णमर्थैर्विनापि ॥ 8 ॥

जिस योग में पूर्णायु प्रमाण कहा गया है , उस योग में छह ग्रहों के उच्च में होने के कारण अन्य आचार्यों ने राजाधिराजत्व (Sovereignty) चरित्र कहा है ।

किन्तु यह एक दूसरा प्रत्यक्ष दोष है , क्योंकि धन के बिना भी लोग लम्बे समय तक (पूर्णायु पर्यन्त) जीते देखे गए हैं ।

उदाहरण कुण्डली से यह बात असंगत सिद्ध हो जाती है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म कुण्डली

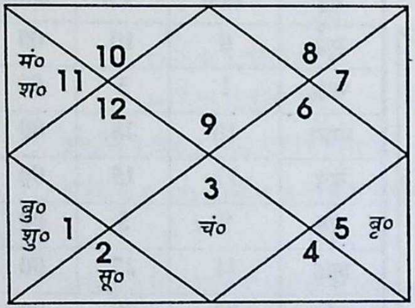

ग्रह स्पष्ट

ग्रह	राशि	अंश	कला	विकला
सूर्य	1	10	00	00
चन्द्र	2	3	00	00
मंगल	10	28	00	00
बुध	0	15	00	00
गुरु	4	5	00	00
शुक्र	00	27	20	00
शनि	10	20	00	00
लग्न	8	29	59	59

ग्रह	ग्रहायु प्रथम संस्कार				ग्रहायु संस्कार के बाद			
	वर्ष	मास	दिन	घटी	वर्ष	मास	दिन	घटी
सूर्य	17	5	00	00	17	5	00	00
चन्द्र	22	11	00	00	19	1	05	00
मंगल	13	9	00	00	13	9	00	00
बुध	7	0	00	00	7	00	00	00
गुरु	13	9	00	00	12	00	11	15
शुक्र	19	2	26	30	19	2	26	30
शनि	13	4	00	00	13	4	00	00
लग्न	9	0	00	00	9	00	00	00
योग	116	4	26	30	110	10	12	45

इस तरह आयु 110 वर्ष 10 माह 12 दिन 45 घटी सिद्ध हुई। तेरहवें अध्याय के श्लोक 3 के अनुसार केमद्रुम (दारिद्रय) योग भी सिद्ध होता है। यहाँ दारिद्रय योग में पूर्णायु योग सिद्ध होने के कारण उक्त योग असंगत हो जाता है।

जीव शर्मा और सत्याचार्य के मतानुसार आयु

स्वमतेन किलाह जीवशर्मा ग्रहदायं परमायुषः स्वरांशम्।
ग्रहभुक्तनवांशराशितुल्यं बहुसाम्यं समुपैति सत्यवाक्यम्॥ 9॥

जीव शर्मा ने अपने मत से परमायु 120 वर्ष 5 दिन का सप्तमांश (1/7) 17 वर्ष 1 मास 22 दिन 8 घटी 34 पल के बराबर उच्च स्थान स्थित ग्रहों की आयु कही है

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जोकि सर्वमान्य नहीं है ।

ग्रह के जितने नवाँश भुक्त हों उतनी राशि तुल्य ग्रहों का आयुर्दाय होता है । सत्याचार्य का यह मत अनेक विद्वानों द्वारा बहुसम्मत है ।

टिप्पणी— 1. जीवशर्मा के अनुसार उच्च स्थित ग्रहों की आयु 17/1/22/8/34 वर्षादि है और नीच राशि स्थित ग्रहों की आयु इसका आधा 8/6/28/4/14 वर्षादि है । मध्य में अनुपात से लाकर पूर्ण प्रकार से स्पष्टायु ज्ञात करनी चाहिए । यदि ग्रह चक्र के उत्तरार्ध में हो तो श्लोक 3 के अनुसार संस्कार करें और शत्रु राशि स्थित ग्रह, अस्त व लग्न में पाप ग्रह हों तो श्लोक 4 के अनुसार संस्कार करके आयु ज्ञात करनी चाहिए । जीव शर्मा का यह मत अन्य विद्वानों से सम्मत नहीं है । 2. मान लो ग्रह स्पष्ट $7/25^{o}/10'/0''$ है और ग्रहायु ज्ञात करनी है । इसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग करें

ग्रहायु = 0.3 × ग्रह स्पष्ट के भुक्तांशादि
= 0.3 × 25.1666667 अंश
= 7.55 वर्ष अर्थात् 7 वर्ष 6 मास 18 दिन

विस्तार व अन्य जानकारी के लिए अगला श्लोक नं. 10 देखें ।

सत्योक्ते ग्रहमिष्टं लिप्तीकृत्वा शतद्वयेनाप्तम् ।
मंडलभागविशुद्धेऽब्दाः स्युः शेषात्तु मासाद्याः ॥ 10 ॥

अब सत्याचार्य के मतानुसार आयु ज्ञात करने की रीति कहते हैं । ग्रह स्पष्ट राश्यादि को कलात्मक बनाकर उसमें 200 का भाग देने से जो लब्धि आए वह यदि बारह से अधिक हो तो 12 का भाग देने पर लब्धि वर्ष और शेष से मासादि ज्ञात करने चाहिएं ।

टिप्पणी— एक राशि में नौ नवाँश होते है अर्थात् एक राशि में 30 अंश और 30 अंश में 1800 कलाएँ होती हैं । 1800 कला में 9 का भाग देने पर एक नवाँश का कलात्मक मान 200 होगा । अब तात्कालिक ग्रह स्पष्ट को कलात्मक बनाकर 200 से भाग देने पर भुक्त नवाँश संख्या प्राप्त होगी ।

$$\frac{\text{ग्रह स्पष्ट की कलाएं}}{200} = \text{भुक्त नवांश संख्या}$$

भुक्त नवाँश संख्या के समान वर्ष ग्रहण करने के कारण तथा राशि संख्या 12 होने के कारण लब्धि भुक्त नवाँश संख्या में 12 का भाग देना उचित है ।

शेष कला का 12 से गुणा करके 200 का भाग देने पर लब्धि मास आयेंगे । फिर मास व शेष को 30 से गुणा करके 200 से भाग देने पर लब्धि दिन होगी । फिर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनावशेष को 60 से गुणा करके 200 का भाग देने पर लब्धि घटी होगी और घटी के शेष को पुनः 60 से गुणा करके 200 से भाग देने पर लब्धि पल आयेंगें।

पूर्व श्लोक के उदाहरण के ग्रह स्पष्ट को पुनः इस प्रकार से समझाते हैं—

ग्रह स्पष्ट = $7/25^{\circ}/10'/00''$

ग्रह स्पष्ट कलाएं = 14110

14110 कलाओं में 200 का भाग देने पर लब्धि 70 और शेष 110 कला आयीं, 70 में (70 ÷ 12 = लब्धि 5 और शेष वर्ष 10 प्राप्त हुए। शेष वर्ष 10 प्राप्त हुए।

वर्षावशेष 110 × 12 ÷ 200 = 6 मास प्राप्त हुए और 120 शेष बचा।

मासावशेष 120 × 30 ÷ 200 = 18 दिन प्राप्त हुए। अतः ग्रहायु 10 वर्ष 6 मास 18 दिन प्राप्त हुई। इस प्रकार किसी भी ग्रह की आयु ज्ञात कर सकते हैं। सातों ग्रह और लग्न की आयु निकालकर जोड़ लें और फिर संस्कार करके स्पष्ट आयु ज्ञात कर लेनी चाहिए, देखें— श्लोक नं० 11।

यह मत वराहमिहिर यवनेश्वर, सत्याचार्य, बादरायण और अन्य ज्योर्तिविदों का है। इस आयु साधन की रीति को अंशायु रीति कहते हैं।

स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणं द्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागगैः।
इयान्विशेषस्तु भदत्तभाषिते समानमन्यत्प्रथमेऽप्युदीरितम्॥ 11॥

सत्याचार्य के मतानुसार आयु स्पष्ट करके यदि ग्रह उच्च राशि में स्थित हो या वक्री हो तो आयु को त्रिगुणित कर देना चाहिए।

यदि ग्रह वर्गात्तम, स्व नवाँश या स्वद्रेष्काण में हो तो आयु को द्विगुणित कर देना चाहिए।

अन्य आचार्यों की अपेक्षा यह क्रिया सत्याचार्य के मत में विशेष रूप से है। शेष आयु में संस्कार पूर्ववतः ही करने चाहिएं। कहने का तात्पर्य यही है कि जैसे मय, यवन आदि के मत में आयु में संस्कार किया गया है वैसे यहाँ भी करना चाहिए।

जैसे शत्रु ग्रह में स्थित ग्रह का तृतीयांश हानि, अस्त ग्रह की आधी हानि और चक्रार्ध हानि ये सब समान ही हैं।

किं त्वत्र भांशप्रतिमं ददाति वीर्यान्विता राशिसमं च होरा।
क्रूरोदये चोपचयः स नात्र कार्यं च नाब्दैः प्रथमोपदिष्टैः॥ 12॥

मेषादि से आरम्भ कर के लग्न में जितनी नवाँश संख्या भुक्त हो उतने वर्ष और शेषांश पर से मासादि के तुल्य लग्नायु ज्ञात होती है।

यदि लग्न बली हो अर्थात् लग्नेश, गुरु या बुध से युत या दृष्ट हो तो मेषादि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुक्त राशि तुल्य वर्ष और शेष अंशादि पर से मासादि आयु ज्ञात होती है ।

यदि पाप ग्रह लग्न में हो तो श्लोक 4 में वर्णित रीति से आयु में ह्रास कहा है, वह सत्याचार्य के मत से नहीं करना चाहिए ।

पूर्व कथित से भी यहाँ नहीं करना चाहिए अर्थात् "नवतिथि विषयाश्विभूत" व "ग्रहदायं परमायुषः स्वरांशम" इससे कथित वर्षों द्वारा सत्याचार्य के मत से लग्नायु नही ज्ञात करनी चाहिए, यही इस मत की विशेषता है ।

सत्योपदेशो वरमत्र किन्तु कुर्वन्त्ययोग्यं बहुवर्गणाभिः ।
आचार्यकत्वं च बहुघ्नतायामेकं तु यद्भूरि तदेव कार्यम् ॥ 13 ॥

वराहमिहिर का कहना है कि मयादि, जीवशर्मा और सत्याचार्य इन तीनो में से सत्याचार्य का मत सर्वश्रेष्ठ है ।

किन्तु अनेक इनके मत से ज्ञात आयु में भी बहुवर्गाणा (Many Multiplications) के द्वारा अयोग्य (अनुचित) बना देते हैं ।

पांडित्य तो यही है कि बहुत गुणनफल प्राप्त होने पर भी जो अधिक हो उसी को ग्रहण करें ।

इसका यह तात्पर्य है कि जो ग्रह वक्री होकर उच्च का हो तो सत्याचार्य के मत से आयु ज्ञात करके उसको उच्च या वक्री होने के कारण दो बार त्रिगुणित नहीं करना चाहिए । ऐसी स्थिति में स्पष्ट आयु को एक बार ही त्रिगुणित करना उचित है ।

इसी प्रकार जो ग्रह स्वनवांश, स्वद्रेष्काण या वर्गोत्तम नवाँश का होकर उच्च या वक्री हो तो ऐसी-स्थिति में द्विगुणित, त्रिगुणित होने पर भी मात्र त्रिगुणित करना उचित है ।

इसी तरह तृतीयांश और अर्ध दोनो एक साथ प्राप्त हों तो मात्र अर्ध ही करना उचित है ।

अमितायु योग

गुरुशशिसहिते कुलीरलग्ने शशितनये भृगुजे च केंन्द्रयाते ।
भवरिपुसहजोपगैश्च शेषैरमितमिहायुरनुक्रमाद्विना स्यात् ॥ 14 ॥

गुरु व चन्द्र की युक्ति कर्क लग्न में हों, बुध व शुक्र केन्द्र (1,4,7,10) में हों, शेष ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) लग्न से ग्यारहवें, छठे व तीसरे भाव में हों तो गणित द्वारा प्राप्त आयु को छोड़कर उस जातक की अमितायु होती है ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके आयुर्दायाध्यायः सप्तमः ॥ 7 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

8 दशान्तर्दशाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर 'दशान्तर्दशा' की चर्चा करेंगे.जोकि फलित करते समय सहयोगी साबित होगी ।

ग्रहों का दशाक्रम

उदयरविशशांक प्राणिकेंद्रादिसंस्थाः
प्रथमवयसि मध्येंऽत्ये च दद्युः फलानि।
न हि न फलविपाकः केंन्द्रसंस्थाद्य भावे
भवति हि फलपक्तिः पूर्वमापोक्लिमेऽपि ॥ 1 ॥

लग्न, सूर्य व चन्द्र इन तीनों में जो सर्वाधिक बली हो पहले उसकी दशा होती हैं। उसके बाद चारों केन्द्र स्थान में स्थित ग्रहों की दशा होती है । उसके बाद मध्य काल में प्रथम दशाप्रद से पणफर (2,5,8,11) स्थित ग्रहों की दशा होती है । उसके बाद अन्त काल में प्रथम दशाप्रद से आपोक्लिम (3,6,9,12) स्थित ग्रहों की दशा होती ।

यदि केन्द्र या पणफर में ग्रह न हो तो प्रथम और मध्य आयु में फल नहीं होता है । किन्तु इस स्थिति में अन्त समय में आपोक्लिम स्थिति ग्रहों की दशा होती है ।

टिप्पणी— 1. लग्न, सूर्य या चन्द्र में से जो बली हो सर्वप्रथम उसकी दशा होगी । 2. उसके बाद चारों केन्द्र स्थित जो ग्रह बली हों दूसरे क्रम में उसकी दशा होगी । यदि केन्द्र स्थित ग्रहों का समान बल है तो जिस ग्रह के अधिक दशा वर्ष हों, उसकी दशा पहले होगी । 3. बाद में पणफर स्थित ग्रहों की दशा तीसरे क्रम में होगी । जो ग्रह बली हो उसकी पहले होगी । 4. इसके बाद आपोक्लिम स्थित ग्रहों की दशा होगी । यहाँ भी बलानुसार क्रम रखना है अर्थात् बली की पहले और निर्बल की बाद में दशा होगी । यदि केन्द्र में ग्रह हों और पणफर व आपोक्लिम में ग्रह न हों तो शेष जीवन में केन्द्र स्थित ग्रहों की दशा होगी । यदि पणफर और केन्द्र में ग्रह न हों तो शेष जीवन में आपोक्लिम स्थित ग्रह की दशा होगी । यदि केन्द्र व आपोक्लिम में ग्रह न हों तो शेष जीवन में पणफर स्थित ग्रहों की दशा होगी । यह मत यवनेश्वर और अन्य आचार्यों का हैं ।

ग्रहों के दशावर्ष

आयुः कृतं येन हि यत्तदेव कल्प्या दश सा प्रबलस्य पूर्वाम् ।
साम्ये बहूनां बहुवर्षदस्य तेषां च साम्ये प्रथमोदितस्य ॥ 2 ॥

पूर्व कथित प्रकार से जिस ग्रह की जितनी आयुर्दाय संख्या हो, उस ग्रह की उतनी दशा होती हैं । यह दशा भी बलानुसार होती है । कहने का तात्पर्य यही है कि सर्वाधिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बली ग्रह की दशा पहले होती है । यदि ग्रहों का बल समान हो तो जिस ग्रह का दशाकाल अधिक हो उसकी दशा पहले आयेगी । यदि ग्रहों के वर्ष भी समान हों तो सूर्य के निकट जो ग्रह पहले उदय हो उसकी दशा प्रथम होती है ।

उदाहरण देखें - जातक का जन्म 15.12.1956 की रात्रि 1 बजकर 38 मिनट पर हुआ है । सूर्य स्पष्ट 8/0/36/01 है । कुण्डली एवं ग्रह स्पष्ट निम्न प्रकार हैं–

ग्रह स्पष्ट

ग्रह	राशि	अंश	कला	विकला
सूर्य	8	0	36	01
चन्द्र	1	4	23	17
मंगल	11	11	30	49
बुध	8	17	59	21
गुरु	5	6	59	48
शुक्र	7	1	49	52
शनि	7	14	20	19
लग्न	5	16	38	23
राहु	7	4	18	53
केतु	1	4	18	53

जन्म कुंडली

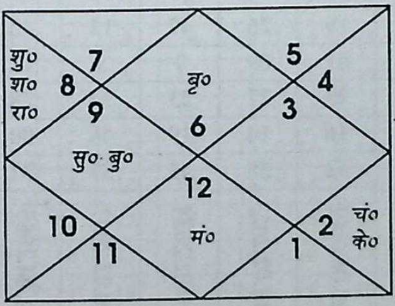

नवांश कुंडली

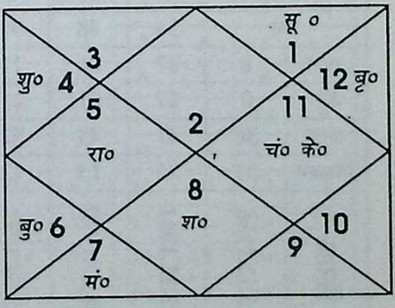

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यादि ग्रहायु स्पष्ट चक्रम् यहां दे रहे हैं—

ग्रह	स्पष्ट आयु संस्कार के बाद				
	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
सूर्य	12	2	1	24	19
चन्द्र	18	8	3	58	26
मंगल	10	11	26	04	47
बुध	8	10	24	07	48
गुरु	12	5	00	03	00
शुक्र	12	6	11	27	12
शनि	18	7	23	13	40
लग्न	4	11	27	5	24

यहाँ लग्नेश बुध , सूर्य व चन्द्र इन तीनों में बुध और गुरु स्वनवांश में हैं, बुध सूर्य के साथ युत है जबकि गुरु पर मंगल की दृष्टि है । चन्द्र उच्च का होकर नवम भाव में स्थित है एवं शुक्र, शनि व राहु से दृष्ट है और शनि के नवाँश में स्थित है । यहाँ सर्वाधिक बली लग्नेश बुध और गुरु हैं । यहाँ सर्वप्रथम लग्न, लग्नेश की दशा, फिर केन्द्र स्थित बुध और फिर केन्द्र स्थित गुरु की दशा होगी । बाद में केन्द्र स्थित सूर्य , चन्द्र, मंगल, शुक्र एवं शनि की क्रम से दशा होगी ।अत: दशा चक्रम् इस प्रकार बना—

ग्रह		लग्न	बुध	गुरु	सूर्य	चन्द्र	मंगल	शुक्र	शनि
वर्ष		4	8	12	12	18	10	12	18
मास		11	10	5	02	08	11	06	07
दिन		27	24	00	01	03	26	11	23
घटी		5	07	3	24	58	4	27	13
पल		24	48	00	19	26	47	12	40
राशि	8	07	06	11	01	09	9	3	11
अंश	0	27	21	21	23	27	23	34	28
कला	36	41	49	52	16	14	19	46	00
विकला	01	25	13	13	32	58	45	57	37
दिनांक	15.12.1956	13.12.1961	08.11.1970	05.04.1992	08.06.2005	10.02.2023	10.02.2034	10.02.2047	12.04.2065

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य अंश से अंग्रेजी तारीख व मास ज्ञात करने का चक्र

सूर्य राशि अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्०	धनु	मकर	कुंभ	मीन
1	अप्रै 14	16	16	18	19	18	19	17	17	15	14	16
2	15	17	17	19	20	20	20	18	18	16	15	17
3	16	18	18	20	21	21	21	19	19	17	16	18
4	17	19	20	21	22	22	22	20	20	18	17	19
5	18	20	21	22	23	23	23	21	21	19	18	20
6	19	21	22	23	24	24	24	22	22	20	19	21
7	20	22	23	24	25	25	25	23	23	21	20	22
8	21	23	24	25	26	26	26	24	24	22	21	23
9	22	24	25	26	27	27	27	25	25	23	22	24
10	24	25	26	27	28	28	28	26	26	24	23	25
11	25	26	27	28	29	29	29	27	27	25	24	26
12	26	27	28	30	30	30	30	28	28	26	25	27
13	27	28	29	31	31	अक्टू 1	31	29	29	27	26	28
14	28	30	30	अग 1	सित 1	2	नव 1	30	30	28	27	29
15	29	31	जुला 1	2	2	3	2	दिस 1	31	29.	मार्च28	30
16	मई 30	जून 1	2	3	3	4	3	2	जन 1	30	1	31
17	1	2	3	4	4	5	4	3	2	31	2	अप्रै 1
18	2	3	4	5	5	6	5	4	3	फर 1	3	2
19	3	4	5	6	6	7	6	5	4	2	4	2
20	5	5	6	7	7	8	7	6	5	3	5	4
21	6	6	8	8	8	9	8	7	6	4	6	5
22	7	7	9	9	9	10	9	8	7	5	7	6
23	8	8	10	10	10	11	10	9	8	6	8	7
24	9	9	11	11	11	12	11	10	9	7	9	8
25	10	10	12	12	12	13	12	11	10	8	10	9
26	11	11	13	13	13	14	13	12	11	9	11	10
27	12	12	14	14	14	15	14	13	12	10	12	11
28	13	13	15	15	15	16	15	14	12	11	13	12
29	14	14	16	16	16	17	16	15	13	12	14	13
30	15	15	17	17	17	18	17	16	14	13	15	14

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आप जान चुके हैं कि जातक के जन्म के समय सूर्य जितने राशिादि पर था उतने ही राशिादि पर वह जितनी बार जीवन में आता है उतने ही जातक के वर्ष व्यतीत माने जाते हैं । दशा-अन्तर्दशा के वर्ष भी इसी प्रकार ज्ञात किए जाते हैं । वस्तुतः ज्योतिर्विदों को ग्रहों की दशा के भुक्त-भोग्य वर्षादि का निर्देश और वर्ष, मास व दिनों के माध्यम से करना चाहिए। ईस्वी सन सौर विक्रम संवत् दोनों सौर संवत्सर हैं, फलतः दशा-अन्तर्दशा का निर्णय इन दोनों संवत्सरों में से किसी एक के माध्यम से किया जा सकता है । अंग्रेजी मास, तिथि का प्रयोग करते समय 29-30-31 दिनों के मासों का भेद भी ध्यान रखना पड़ेगा जोकि व्यवहारतः कठिन है । अतः उचित यही होगा कि अंग्रजी तिथि को (1 मास = 30 दिन) साथ में सूर्य स्पष्ट के अनुसार दशारम्भ व समाप्ति अंकित करें । प्रायः ज्योतिषी दशा-चक्र में जन्मकालिक सूर्य स्पष्ट की राशि, अंश, कला व विकला में क्रमशः भोग्य दशा के मास, दिन, घटी व पल को जोडकर जन्म विक्रम संवत में भोग्य वर्षों को जोड़ते हैं ।

उदाहरण दशा चक्र में विकला में पल, कला में घटी, अंश में दिन और राशि में मास जोड़कर 12 से अधिक हो तो घटाकर लिखें और 12 राशि का एक वर्ष समझकर वर्ष में जोड़कर कुल वर्ष मास आंग्ल सन् में जोड़ दें । सूर्य राशि- अंशादि को दिनाँक में बदलने के लिए देखें—'सूर्य अंश से अंग्रजी तारीख व मास ज्ञात करने का चक्रम्' ।

उदाहरण कुण्डली में जन्म सूर्य राश्यादि की विकला 01 में 24 पल जोड़ें तो 25 आया, 36 कला में 5 घटी जोड़ी तो 41 आया, 0 अंश में 27 दिन जोडें तो 27 आया, राशि 8 में 11 मास जोड़ें तो 19 आया जोकि 12 से अधिक होने के कारण 12 घटाकर शेष 7 लिखा और 1 वर्ष 4 वर्ष में जोड़कर 5 को अंग्रेजी सन् 1956 में जोड़ा तो सन् 1961 आया । राश्यादि 7/27°/41'/25" अर्थात् वृश्चिक राशि के 27 अंश पर सूर्य अंश से अंग्रेजी तारीख व मास ज्ञात करने के चक्रम् में देखा तो उससे दिसम्बर मास की 13 तारीख ज्ञात हुई । इसी प्रकार आप किसी भी सूर्य राश्यादि से अंग्रेजी तारीख बना सकते है ।

अन्तर्दशा

एकर्क्षगोऽर्द्धमपहत्य ददाति तु स्वं त्र्यंशं त्रिकोणगृहगः स्मरगः स्वरांशम् ।
पादं फलस्य चतुरस्रगतः सहोरास्त्वेवं परस्परगताः परिपाचयंति ॥ 3 ॥

अब अन्तर्दशा (Sub Period) के ज्ञान को कहते हैं । दशापति के साथ जितने ग्रह हों उनमें सर्वाधिक बली जो ग्रह हो वह दशापति के आयुर्दाय (दशावर्ष) के आधे का अन्तर्दशाधिप होता है । इसके बाद दशापति से नौवें व पाँचवें भाव में स्थित ग्रहों में

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो बली हो वह दशापति के आयुर्दाय (दशावर्ष) के तृतीयांश $\left(\frac{1}{3}\right)$ का अन्तर्दशाधिप होता है। इसके बाद दशापति से सातवें भाव में स्थित ग्रहों में बली ग्रह दशाधीश के आयुर्दाय के सप्तमांश $\left(\frac{1}{7}\right)$ का अन्तर्दशाधिप होता है। इसी तरह दशापति से चौथे, आठवें भाव में स्थित ग्रहों में बली ग्रह के आयुर्दाय का चतुर्थांश $\left(\frac{1}{4}\right)$ अन्तर्दशाधिप होता है।

इस प्रकार लग्न सहित सब ग्रह अपनी-अपनी दशा में अन्तर्दशा का स्थान ग्रहण करके तत्काल में अपना फल देता है।

टिप्पणी— एक स्थान में अनेक ग्रह स्थित हों तो उनमें जो सर्वाधिक बली हों मात्र वही अपने अंश का पाचक होता है। अतः स्पष्ट है कि जहाँ पर दशापति से 1,4,5,7,8 और 9वें भाव में कोई ग्रह न हो तो उस ग्रह की दशा के अन्तर्गत अन्य ग्रह की अन्तर्दशा न होगी, किन्तु वही ग्रह अन्तर्दशाधिप होता है।

पूर्व उदाहरण में लग्नपति बुध के साथ सूर्य चौथे भाव में स्थित है, जबकि लग्न में गुरु स्थित है। लग्न से चौथे सूर्य, पाँचवें कोई ग्रह नहीं है, सातवें मंगल स्थित है, आठवें कोई ग्रह नहीं है और नौवें चन्द्रमा स्थित है। अतः गुरु, बुध, मंगल, चन्द्र, लग्न की दशा अन्तर्दशा पाचक हुए जिनका अनुपात इस प्रकार है—लग्न $\left(\frac{1}{1}\right)$, गुरु $\left(\frac{1}{2}\right)$, बुध $\left(\frac{1}{4}\right)$, मंगल $\left(\frac{1}{7}\right)$, चन्द्र $\left(\frac{1}{3}\right)$।

अन्तर्दशा वर्ष लाने की रीति

स्थानान्यथैतानि सवर्णयित्वा सर्वाण्यधश्छेदविवर्जितानि।
दशाब्दपिंडे गुणका यथांशं छेदस्तदैक्येन दशाप्रभेदः ॥ 4 ॥

पूर्व कथित प्रकार से लाए अन्तर्दशा पाचक $\left(\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{7},\frac{1}{4}\right)$ को हर (Denominator) से सवर्णन करने से नीचे जो छेद हो उसे त्याज्य देना तथा ऊपर जो अलग-अलग अंश हो उनको अपने-अपने दशा वर्ष के गुणक और सब अंशो के योग को भाजक मानकर अन्तर्दशा साधन करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यही है कि पूर्व साधित दशावर्ष को अपने-अपने गुणक (Multipliers) से गुणा करके भाजक (Divider) से भाग देने से अन्तर्दशा वर्षादि ज्ञात होते हैं।

उदाहरण कुंडली में पाचक लग्न $\frac{1}{1}$, गुरु $\frac{1}{2}$, बुध $\frac{1}{4}$, मंगल $\frac{1}{7}$ और चन्द्र $\frac{1}{3}$ हैं। $\frac{84}{84}, \frac{42}{84}, \frac{21}{84}, \frac{12}{84}$, व $\frac{28}{84}$ में छेद या हर 84 को त्याज्य करके अंश 84 + 42 + 21 + 12 + 28 का योग 187 भाजक प्राप्त हुआ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब लग्न की दशा 4 वर्ष 11 मास 27 दिन 5 घटी 24 पल को अपने गुणक 84 का गुणा करके प्राप्त लब्धि में भाजक 187 का भाग दिया तो (4.9919167 × 84 ÷ 187 = 2.2423583) 2 वर्ष 2 माह 27 दिन 14 घटी 56 पल लग्न में लग्न का अन्तर दशा वर्ष आए। इसी प्रकार अन्य अन्तर दशा वर्ष ज्ञात किए— गुरु 4.9919167 × 42 ÷ 187 = 1.1211791 अर्थात् 1 वर्ष, 1 मास, 13 दिन, 37 घटी 23 पल।

बुध 4.9919167 × 21 ÷ 187 = 0 वर्ष, 6 मास, 21 दिन 48 घटी 44 पल
मंगल 4.9919167 × 12 ÷ 187 = 0 वर्ष, 3 मास, 25 दिन 19 घटी 17 पल
चन्द्र 4.9919167 × 28 ÷ 187 = 0 वर्ष, 8 मास, 29 दिन 4 घटी 59 पल

अब अन्तर्दशा वर्षों से दशा चक्रम् की तरह अन्तर्दशा चक्रम् बना लेना चाहिए

लग्न अन्तर्दशा चक्रम्

ग्रह		लग्न	गुरू	बुध	मंगल	चन्द्र
वर्ष		2	1	0	0	0
मास		2	1	6	3	8
दिन		27	13	21	25	29
घटी		14	37	48	19	4
पल		56	26	44	17	59
राशि	8	10	0	7	10	7
अंश	0	27	11	3	28	27
कला	36	50	28	17	36	41
विकला	01	57	23	7	24	23
दिनांक	15.12.1956	12.03.1958	25.04.1959	16.12.1959	11.02.1960	13.12.1961

टिप्पणी— विभिन्न पाचकों के उदाहरण संभावना रूप में दे रहें हैं जोकि आपके लिए सहयोगी होंगे।

Prof Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाचक	गुणक	भाजक	क्रम
$\frac{1}{2},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{4}$	12, 6, 4, 3	25	1
$\frac{1}{1},\frac{1}{2}$	2, 1	3	2
$\frac{1}{4},\frac{1}{4}$	4, 1	5	3
$\frac{1}{7},\frac{1}{7}$	7, 1	8	4
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3}$	6, 3, 2	11	5
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{4}$	8, 4, 2	14	6
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{7}$	14, 7, 2	23	7
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{3}$	9, 3, 3	15	8
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{4}$	12, 4, 3	19	9
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{7}$	21, 7, 3	31	10
$\frac{1}{1},\frac{1}{4},\frac{1}{4}$	16, 4, 4	24	11
$\frac{1}{1},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	28, 7, 4	39	12
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{4}$	24,12, 8, 6	50	13
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{3}$	18, 9, 6, 6	39	14
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{7}$	42, 21, 14, 6	83	15
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{4},\frac{1}{4}$	32, 16, 8, 8	64	16
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	56, 28, 14, 8	106	17
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{3},\frac{1}{4}$	36, 12, 12, 9	69	18
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{4}$	48, 16, 12, 12	88	19
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	84, 28, 21, 12	145	20
$\frac{1}{1},\frac{1}{4},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	112, 28, 28, 16	184	21
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{3},\frac{1}{4}$	24, 12, 8, 8, 6	58	22
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{3},\frac{1}{7}$	42, 21, 14, 14, 6	97	23
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{4}$	24, 12, 8, 6, 6	56	24
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{4},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	56, 28, 14, 14, 8	120	25
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{4}$	84, 42, 28, 21, 12	187	26
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	144, 48, 48, 36, 36	312	27
$\frac{1}{1},\frac{1}{3},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	84, 28, 28, 21, 12	173	28
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	252, 126, 84, 84, 63, 36	645	29
$\frac{1}{1},\frac{1}{2},\frac{1}{3},\frac{1}{4},\frac{1}{4},\frac{1}{7}$	168, 84, 56, 42, 42, 24	416	30

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

$\frac{1}{1}, \frac{1}{2}, \frac{1}{3}, \frac{1}{3}, \frac{1}{4}, \frac{1}{4}$	96, 48, 32, 32, 24, 24	256	31
$\frac{1}{1}, \frac{1}{2}, \frac{1}{3}, \frac{1}{3}, \frac{1}{4}, \frac{1}{4}, \frac{1}{7}$	168, 84, 56, 56, 42, 42, 24	472	32

स्थानादि बल क्रम से दशा की संज्ञा व फल

सम्यग्बलिनः स्वतुंगभागे संपूर्णा बलवर्जितस्य रिक्ता।
नीचांशगतस्य शत्रुभागे ज्ञेयानिष्टफला दशा प्रसूतौ ॥ 5 ॥

यदि **उच्च स्थान** में स्थित ग्रह **बली** हो तो उसकी दशा और अन्तर्दशा की **सम्पूर्णा संज्ञा** होती है ।

यदि **नीच स्थान** में स्थित ग्रह **निर्बल** हो तो उसकी दशा और अन्तर्दशा की **रिक्ता संज्ञा** होती है ।

यदि ग्रह **शत्रु नवांश** में स्थित हो और **नीच** का भी हो तो उसकी दशा और अन्तर्दशा की **अनिष्टा संज्ञा** होती है ।

टिप्पणी— 1. सम्पूर्णा की दशा-अन्तर्दशा शुभ होती है और इसमें धन, स्वास्थ्य, प्रसन्नता और सम्पन्नता प्राप्त होती है । 2. जब ग्रह उच्च राशि में हो और अधिक बली न हो तो इस ग्रह की दशा पूर्णा होती है और इसके दशाकाल में स्वास्थ्य, धन और सुख मिलते हैं । 3. रिक्ता की दशा में धन हानि और स्वास्थ्य हानि या रोग़ होता है । 4. अनिष्टा की दशा में रिक्ता का फल अधिक मात्रा में मिलता है ।

अवरोहिणी एवं आरोहिणी दशा

भ्रष्टस्य तुंगादवरोहिसंज्ञा मध्या भवेत्सा सुहृदुच्च भागे।
अरोहिणी निम्नपरिच्युतस्य नीचारिभांशेष्वधमा भवेत्सा ॥ 6 ॥

जब ग्रह परमोच्च भाग से आगे और नीच भाग से छह राशि पूर्व कहीं भी स्थित हो तो उस ग्रह की दशा को अवरोहिणी (Descending) संज्ञा होती है । यदि ग्रह अपने परम नीच भाग से आगे और पीछे छह राशियों में कहीं स्थित हो, तो उसकी दशा आरोहिणी संज्ञक होती है और शत्रु नवांश या नीच राशि के नवांश में हो तो इसकी अधम संज्ञा होती है । यदि ग्रह मित्र राशि, मित्र नवांश, स्व राशि या उच्च नवांश में हो तो इसकी आरोहिणी (Ascending) संज्ञा या मध्यम फल वाली होती है ।

टिप्पणी— 1. अवरोहिणी ग्रह की दशा अशुभ फलदायी और आरोहिणी ग्रह की दशा शुभ फलदायी होती है । 2. आरोहिणी दशा यदि स्व नवांश , मित्र राशि , मित्र नवांश या उच्च नवांश वाली हो तो मध्यम फल वाली होती है । 3. अधम संज्ञा वाली दशा कष्टकारी और अशुभ होती है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशाओं के नामान्तर और फल

नीचारिभांशे समवस्थितस्य शस्ते गृहे मिश्रफला प्रदिष्टा।
संज्ञानुरूपाणि फलान्यथैषां दशासु वक्ष्यामि यथोपयोगम्॥ 7 ॥

यदि ग्रह उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्व राशि, मित्र राशि में स्थित होकर नीच राशि या शत्रु राशि के नवांश में स्थित हो तो उसकी संज्ञा **'मिश्र फला'** होती है जिसमें शुभाशुभ मिश्रित फल होते हैं अर्थात् एक ही समय में एक तरफ तो धन प्राप्ति होगी और दूसरी तरफ शारीरिक कष्ट होगा।

इसी तरह यदि ग्रह शत्रु राशि, नीच राशि में स्थित होकर उच्च राशि या उच्च राशि के नवांश में हो तो उसकी भी संज्ञा 'मिश्र फला' होती है और इसकी दशा में शुभाशुभ मिश्रित फल एक साथ मिलते हैं।

टिप्पणी—कहने का तात्पर्य यही है कि दशा फल ज्ञात करने के लिए श्लोक 5,6,7 में उनकी संज्ञा व फल बताया है। सम्पूर्णा दशा अधिक शुभ, पूर्णा दशा शुभ, अधम दशा हानिकारक और स्वल्प शुभ, रिक्ता दशा कंजूसी व निर्धनता कारक, आरोहिणी दशा अशुभ फलदायी, अवरोहिणी दशा अशुभ फलदायी एवं मिश्रफला दशा शुभाशुभ मिश्रित फलदायी होती है।

लग्न दशा का शुभाशुभ फल

उभयेऽधममध्यपूजिता द्रेष्काणैश्चरभेषु चोत्क्रमात्।
अशुभेष्टसमाः स्थिरे क्रमाद्धोरायाः परिकल्पिता दशा॥ 8 ॥

द्विस्वभाव राशि लग्न में हो तो द्रेष्काण के क्रमानुसार पहला द्रेष्काण अधम (Worst), दूसरा द्रेष्काण मध्यम अर्थात् आंशिक शुभाशुभ और तीसरा द्रेष्काण में उत्तम (Good) फलदायी लग्न की दशा होती है।

यदि चर राशि लग्न में हो तो इसका विपरीत फल मिलता है अर्थात् लग्न में पहला द्रेष्काण हो तो उत्तम, दूसरा द्रेष्काण हो तो मध्यम और तीसरा द्रेष्काण हो तोअधम दशा फल होता है।

यदि लग्न में स्थिर राशि हो तो लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो अशुभ दशाफल, द्वितीय द्रेष्काण हो तो शुभ फल और तीसरा द्रेष्काण हो तो मध्यम फल मिलता है।

टिप्पणी— 1 यदि लग्न राशि द्विस्वभाव अर्थात् मिथुन, कन्या, धनु और मीन हो तो पहला द्रेष्काण अधम, द्वितीय द्रेष्काण मध्यम और तीसरा द्रेष्काण उत्तम फलदायी होता है। 2. यदि लग्न राशि चर अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर हो तो पहला द्रेष्काण उत्तम,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरा द्रेष्काण मध्यम और तीसरा द्रेष्काण अधम होता है । 3. यदि लग्न राशि स्थिर अर्थात वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ राशि हो तो पहला द्रेष्काण अधम, दूसरा द्रेष्काण उत्तम और तीसरा द्रेष्काण मध्यम फलदायी होता है ।

नैसर्गिक दशा काल

एकं द्वौ नवविंशतिर्धृतिकृती पंचाशदेषां
क्रमाच्चंद्रारेंदुजशुक्रजीवदिनकृद्दैवाकरीणां समाः ।
स्वैः स्वैः पुष्टफलानि सर्गजनितैः पक्तिर्दशायाः क्रमादंते
लग्नदशा शुभेति यवना नेच्छंति केचित्तथा ॥ 9 ॥

जन्म समय से आरम्भ करके **एक वर्ष तक चन्द्र का**, उसके बाद **दो वर्षों तक मंगल का**, उसके बाद **नौ वर्ष तक बुध का**, उसके बाद **बीस वर्ष तक शुक्र का**, उसके बाद **अठारह वर्ष तक गुरु का**, उसके बाद **बीस वर्ष तक सूर्य का** और उसके बाद **पचास वर्ष तक शनि का** नैसर्गिक दशा काल होता है । इन सबका योग 120 वर्ष होता है ।यवनेश्वर के मतानुसार यह दशा शुभ है जबकि अन्य आचार्य इसे पसन्द नहीं करते ।

टिप्पणी— यदि नैसर्गिक दशा के स्वामी (दशापति) बली होकर उपचय स्थान में स्थित हों तो दशा शुभ फलदायी होती है । यदि निर्बल होकर अपचय.(उपचय से भिन्न) स्थान में स्थित हों तो दशा अशुभ फलदायी होती है ।

दशा का अन्य प्रकार से फल

पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि वा वर्गेऽस्य सौम्येऽपि
वा प्रारब्धा शुभदा दशा त्रिदशषड्लाभेषु वा पाकपे ।
मित्रोच्चोपचयस्त्रिकोणमदने पाकश्वरस्य स्थितश्चंद्रः
सत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा ॥ 10 ॥

दशापति (दशा का स्वामी) लग्न में स्थित हो या दशापति के मित्र लग्न में हों या दशापति के मित्र के वर्ग के लग्न में हों या शुभग्रह या शुभग्रह के वर्ग लग्न में हों या दशापति 1,3,6,10 या 11वें भाव में हो तो इस समय में आरम्भ हुई दशा शुभ फलदायी होती है ।

गोचरवश चन्द्र दशापति के मित्र राशि, उच्च राशि या दशापति से उपचय स्थान (3,6,10,11) में आता है तब शुभ फलदायी दशा होती है, अन्यथा अशुभ फल होता है अर्थात् दशापति की शत्रु राशि, नीच राशि या दशापति से अपचय राशि में चन्द्रमा गोचरवश आता है तो अशुभ फलदायी दशा होती है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी—काल को चार प्रकार से नापते हैं —सौर, सावन, चन्द्र एवं नक्षत्र। सूर्य के एक-एक अंश भोग करने से सौर दिन बनता है और पूर्ण राशि चक्र भोगने से सौर वर्ष (365 दिनों का) बनता है। सूर्योदय से सूर्योदय पर्यन्त एक सावन दिन होता है जोकि 60 घटी का होता है, एक सावन वर्ष में 360 दिन होते हैं। एक-एक तिथि के भोग से चन्द्रकाल और चन्द्रमा के एक नक्षत्र के भोग से नक्षत्र काल बनता है।
दशाकाल सावन मान से ही ज्ञात करना चाहिए।

दशाकाल में चन्द्रमा का शुभाशुभ फल

प्रारब्धा हिमगौ दशा स्वगृहे मानार्थसौख्यावहा
कौजे दूषयति स्त्रियं बुधगृहे विद्यासुहृद्वित्तदा।
दुर्गारण्यपथालये कृषिकरी सिंहे सितर्क्षेऽन्नदा कुस्त्रीदा
मृगकुंभयोर्गुरुगृहे मानार्थसौख्यावहा॥ 11॥

जिस समय दशा का प्रारम्भ हो यदि उस समय चन्द्रमा कर्क राशि में स्थित हो तो उस दशा में सम्मान, धन और सुख मिलता है। मंगल की राशि (मेष या वृश्चिक) में चन्द्र स्थित हो तो उस दशा में जातक की पत्नी व्याभिचारिणी होती है या उसका चरित्र अपवादों से परिपूर्ण होता है। बुध की राशि (मिथुन या कन्या) में चन्द्र स्थित हो तो उस दशा में विद्या, ज्ञान, मित्र एवं धन की प्राप्ति होती है। शुक्र की राशि (वृष या तुला) में चन्द्र स्थित हों तो उस दशा में मधुर व स्वादिष्ट व्यजंन खाने को मिलते हैं। सिंह राशि में चन्द्र स्थित हो तो उस दशा में दुर्ग, जंगल, मार्ग, खेती की भूमि आदि से लाभ होता है। शनि की राशि (मकर या कुंभ) में चंन्द्र स्थित हो तो उस दशा में बदसूरत पत्नी मिलती है। गुरु की राशि (धनु या मीन) में चन्द्र स्थित हो तो उस दशा में मान, धन और सुख मिलता है।

टिप्पणी—दशा का आरम्भ शुभ समय में हो तो दशा काल में शुभ फल, अशुभ समय में दशारम्भ हो तो दशा काल में अशुभ फल और यदि मिश्रित (शुभाशुभ) समय में दशा आरम्भ हो तो दशा काल में मध्यम फल (मिश्रित) मिलते हैं।

सूर्य दशा का शुभाशुभ फल

सौर्यां स्वन्नखदंतचर्मकनकक्रौर्याध्वभूपाहवैस्तक्ष्ण्यं
धैर्यमजस्त्रमुद्यमरतिः ख्यातिः प्रतापोन्नतिः।
भार्यापुत्रधनारिशस्त्रहुतभुगभूपोद्भवा व्यापदस्त्यागी
पापरतिः स्वभृत्यकलहो हृत्क्रोडपीडामयाः॥ 12॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभ स्थान में स्थित सूर्य की दशा में नख, इत्र, सुगन्धित द्रव्य, हाथी दाँत, चर्म (मृग, व्याघ्रादि), सोना, क्रूर कर्म, मार्ग, राजा या युद्ध से धन का लाभ होता है। अन्तःकरण में कठोरता, धैर्य, उद्योग या कर्म में सदैव सक्रियता, कीर्ति और प्रताप की वृद्धि होती है। अशुभ स्थान में स्थित सूर्य की दशा में पत्नी, सन्तान, धन, शत्रु, शस्त्र अग्नि या राजा से विभिन्न विपत्तियाँ प्राप्त होती हैं। अधिक व्यय, कुकर्मों में प्रीति, सेवकों से झगड़ा, हृदय व पेट में पीड़ा से रोग होता है।

टिप्पणी—यदि सूर्य शुभाशुभ दोनों ग्रहों से सम्बन्ध रखता हैं तो शुभाशुभ दोंनो प्रकार के फल सूर्य दशा में मिलते हैं।

चन्द्र दशा का शुभाशुभ फल

इंदोः प्राप्य दशां फलानि लभते
मंत्रद्विजात्युद्भवानीक्षुक्षीरविकारवस्त्रकुसुमक्रीडातिलान्नश्रमैः।
निद्रालस्यमृदुद्विजामररतिः स्त्रीजन्म मेधाविता
कीर्त्यर्थोपचक्षयौ च बलिभिर्वैरं स्वपक्षेण च ॥ 13 ॥

शुभ स्थान में स्थित चन्द्रमा की दशा में मन्त्र व ब्राह्मणों से लाभ, शीरा, गुड, चीनी, दूध, दही, घी, वस्त्र, पुष्प, मनोरंजक खेलों, तिल, भोज्यपदार्थ और व्यक्तिगत श्रम से लाभ होता है। देवता व ब्राह्मणों में विश्वास, बुद्धि, यश व धन में वृद्धि होती है।

अशुभ स्थान में स्थित चन्द्रमा की दशा में निद्रा, आलस्य, परहेज या अलग रहने की प्रकृति, कन्या का जन्म, यश, धन व बुद्धि में कमी, बली शत्रु और स्वजनों से शत्रुता होती है।

मंगल दशा का शुभाशुभ फल

भौमस्यारिविमर्दभूपसहजक्षित्याविकाजैर्धनं प्रद्वेषः
सुतमित्रदारसहजैर्विद्वद्गुरुद्वेष्टता ।
तृष्णासृग्ज्वरपित्तभंगजनिता रोगाः परस्त्रीकृताः
प्रीतिः पापरतैरधर्मनिरतिः पारुष्यतैक्ष्ण्यानि च ॥ 14 ॥

शुभ स्थान में स्थित मंगल की दशा में शत्रु की पराजय, राजा भाई, भूमि, भेंड़, बकरी और ऊनी वस्तुओं से धन की प्राप्ति होती हैं।

अशुभ स्थान में स्थित मंगल की दशा में पुत्र, मित्र, पत्नी, भाई, बुद्धिजीवी और गुरुजनों से घृणा या उनसे मतभेद, तृष्णा, रक्त व पित्त विकार से कष्ट, अंग भंग से कष्ट, परस्त्री गमन, कुत्सित लोगों की संगति, कुकर्म या अधर्म के मार्ग में प्रवृत्ति, कठोर वाणी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

और क्रूर स्वभाव होता है।

बुध दशा का शुभाशुभ फल

बौध्यां दौत्यसुहृद्गुरुद्विजधनं विद्वत्प्रशंसा
यशो युक्तिद्रव्यसुवर्णवेसरमहीसौभाग्यसौख्याप्तयः।
हास्योपासनकौशलं मतिचयो धर्मक्रियासिद्धयः पारुष्यं
श्रमबंधमानसशुचः पीडा च धातुत्रयात् ॥ 15 ॥

शुभ स्थान में स्थित बुध की दशा में दूत कर्म से, मित्रों से, आचार्य और ब्राह्मणों से, धन लाभ होता है। बुद्धिजीवियों में प्रशंसा व यश बढ़ता है। कांसा व पीतल के बर्तनादि, सोना, सेवक, घोड़ा, भूमि, सौभाग्य और सुख की प्राप्ति होती है। हास्य तथा सेवा में कुशलता, बुद्धि की वृद्धि और धर्म कार्यों में सफलता मिलती हैं। प्रत्येक कार्य में निजस्वार्थ पूर्ति की भावना रहती है।

अशुभ स्थान में स्थित बुध की दशा में कठोर वचन, परिश्रम, बन्धन, मनस्ताप और वात-पित्त-कफ तीनों से कष्ट होता हैं।

गुरु दशा का शुभाशुभ फल

जैव्यां मानगुणोदयो मतिचयः कान्तिः
प्रतापोन्नतिर्माहात्म्योद्यममन्त्रनीतिनृपतिस्वाध्यायमन्त्रैर्धनम्।
हेमाश्वात्मजकुञ्जराम्बरचयः प्रीतिश्च सद्भूमिपैः
सूक्ष्म्योहागहनाश्रमः श्रवणरुग्वैरं विधर्माश्रितैः ॥ 16 ॥

शुभ स्थान में स्थित गुरु की दशा में सम्मान व गुणों में वृद्धि, बुद्धि, कान्ति, पराक्रम में वृद्धि से उन्नति, परोपकार, उद्योग, मन्त्र, नीति, राजा और स्वाध्याय आदि के द्वारा धन का लाभ होता है। सोना, वस्त्र, घोड़ा, हाथी और पुत्र की प्राप्ति तथा राजा से मित्रता के कारण प्रीति प्राप्त होती है।

अशुभ स्थान में स्थित गुरु की दशा में गहन चिंतन या सूक्ष्म वस्तुओं पर विचार करने से मानसिक कष्ट, कर्ण रोग, अधर्मियों से प्रीति होती हैं।

शुक्र दशा का शुभाशुभ फल

शैव्रयांगीतरतिः प्रमोदसुरभिद्रव्यान्नपानाम्बर-
स्त्रीरत्नद्युतिमन्मथोपकरणज्ञानेष्ट मित्रागमाः।
कौशल्यं क्रयविक्रये कृषिनिधिप्राप्तिर्धनस्यागमो
वृन्दोर्वीशनिषादधर्मरहितैर्वैरं शुचः स्नेहतः ॥ 17 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभ स्थान में स्थित शुक्र की दशा में संगीत व गायन में रुचि, मनोरंजक खेलों में रुचि से मनोविनोद, सुगन्धित पदार्थों की प्राप्ति, स्वादिष्ट भोजन का सेवन वस्त्र-आभूषण, पेय पदार्थों, स्त्री, रत्न, कान्ति, विलासिता व इसके साधनों में रुचि, ज्ञान व मित्रजनों से समागम होता हैं।

अशुभ दशा में स्थित शुक्र की दशा में जनता, राजा, शिकारी और अधर्मियों से शत्रुता होती हैं और कुसंगति और कुकर्मों से कष्ट होता हैं।

शनि दशा का शुभाशुभ फल

सौरीं प्राप्य खरोष्ट्रक्षिमहिषीवृद्धाङ्गनावाप्त्यः।
श्रेणीग्रामपुरुधिकारजनिता पूजा कुधान्यागमः॥
श्लेष्मेर्ष्यानिलकोपमोह मलिनव्यापत्तितन्द्राश्रमान्।
भृत्यापत्यकलत्रभर्त्सनमपि प्राप्नोति च व्यङ्गयताम्॥ 18॥

शुभ स्थान में स्थित शनि की दशा में गधा, ऊंट, पक्षी, भैंस, वृद्धा स्त्री और ग्रामवासी या नगरवासी के सहयोग से ज्वार-बाजरा आदि निन्दित धान्य की प्राप्ति होती हैं।

अशुभ स्थान में स्थित शनि की दशा में कफ व खांसी से कष्ट, ईर्ष्या, वात व्याधि, क्रोध, मूर्छा, मनोमालिन्य से कष्ट, कठोर श्रम करना पड़े, सेवक, सन्तान व स्त्री से अपमान और अंग-भंग से कष्ट होता है।

शुभाशुभ दशा फल

दशासु शस्तासु शुभानि कुर्वंत्यनिष्टसंज्ञा स्वशुभानि चैवम्।
मिश्रासु मिश्राणि दशाफलनि होराफलं लग्नपतेः समानम्॥ 19॥

शुभ ग्रह की दशा में शुभ फल, अशुभ ग्रह की दशा में अशुभ फल और शुभाशुभ ग्रहों की दशा में मिश्रित फल होता है।

इसी तरह लग्नेश की स्थितिवश लग्न दशा का शुभाशुभ फल समझना चाहिए। कहने का तात्पर्य यही कि लग्नेश शुभ स्थान में हो तो शुभ फल, अशुभ स्थान में हो तो अशुभ फल व शुभाशुभ दोनों स्थान में हो तो मिश्रित फल लग्न दशा का मिलता है।

सामान्य रूप से दशा फल

संज्ञाध्याये यस्य यद्द्रव्यमुक्तं कर्माजीवो यश्च यस्योपदिष्टः।
भावस्थानालोकयोगोद्भवं च तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम्॥ 20॥

संज्ञाध्याय में जिस ग्रह का जो द्रव्य कहा गया है, कर्मा जीवाध्याय में जिस ग्रह की जो वृत्ति कही जायेगी और भाव, स्थान संबंधी दृष्टि, योग से जो फल कहे जायेंगे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वे सब ग्रह विशेष की दशा में जानने चाहिएं। अतः ग्रहों की शुभ दशा में उक्त फलों की प्राप्ति और अशुभ दशा में उक्तं फलों की हानि समझनी चाहिए।

अज्ञात जन्म समय होने पर ग्रह दशा जानने की रीति

छायां महाभूतकृतां च सर्वेऽभिव्यंजयन्ति स्वदशामवाप्य।
कंव्ब्वग्निवाय्वंबरजान्गुणाश्च नासास्यदृक्त्वक्छ्रवणानुमेयात ॥ 21 ॥

जिस मनुष्य की जन्म दशा ज्ञात नहीं होती है उसकी कान्ति देखकर दशा जानने की रीति कहते हैं। सभी ग्रह अपनी-अपनी दशा में अपने-अपने महाभूत (तत्त्वादि) सम्बन्धी छाया (कान्ति) प्राणियों के शरीर में प्रकट करते हैं तथा नाक, मुख, दृष्टि, त्वचा और कान से ग्रहण योग्य पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के गुण को भी अपनी-अपनी दशा में प्रकट करते हैं।

टिप्पणी- पृथ्वी तत्व का गुण गन्ध है जोकि नाक से प्रकट होता है, जल तत्व का गुण रस है जोकि जीभ से स्वाद रूप में प्रकट होता है, अग्नि तत्व का गुण रूप है जोकि दृष्टि से रोशनी के रूप में प्रकट होता है, वायु तत्व का गुण स्पर्श है जोकि त्वचा से ज्ञात होता है और आकाश तत्व का गुण शब्द है जोकि कान से श्रवण होता है।

कहने का तात्पर्य यही है कि ग्रहों की शुभाशुभ दशा में उनके गुण-अवगुणों की छाया मनुष्य में परिलक्षित होती है जिससे वह पहचाना जा सकता है कि किस ग्रह के लक्षणानुरूप दशा चल रही है। अतः जिस ग्रह के अनुरूप लक्षण दिखाई दें उसी ग्रह की दशा चल रही है—ऐसा निश्चय उनके लिए करना चाहिए जिनकी जन्मपत्री नहीं हैं।

दशा ज्ञान की विशेष रीति

शुभफलददशायां तादृगेवात्तरात्मा।
बहु जनयति पुंसां सौख्यमर्थागमं च॥
कथितफल विपाकैस्तर्कयेद्वर्तमानां।
परिणमति फलाप्तिः स्वप्नचिन्तास्ववीर्यैः ॥ 22 ॥

शुभ फल देने वाले ग्रहों की दशा में ग्रहानुरूप अन्तरात्मा (जीवात्मा) होकर सभी प्रकार के सुख व धन का लाभ होता है।

अशुभ फल देने वाले ग्रहों की दशा में ग्रहानुरूप अन्तरात्मा होकर सभी प्रकार के कष्ट, निर्बलता एवं हानि होती है।

टिप्पणी— जिस ग्रह के जो फल परिलक्षित हो उन फलों को विवेक सम्मत बुद्धि से समझकर वर्तमान ग्रह दशा का अनुमान करते हुए निश्चय करना चाहिए। अतः वर्तमान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशा के लिए तत्काल परिलक्षित ग्रह के लक्षणों के अनुरूप ग्रह दशा का निश्चय करना चाहिए ।

एक ग्रहस्य सदृशे फलयोर्विरोधे ।
नाशंवदेद्यदधिकं परिपच्यते तत् ॥
नान्यो ग्रहः सदृशमन्यफलं हिनस्ति ।
स्वां स्वां दशामुपगताः सफलप्रदास्युः ॥ 23 ॥

यदि किसी एक ग्रह के शुभ-अशुभ दोनों फल समान हों तो उनका नाश होता है अर्थात् ऐसे में न तो शुभ फल होता है और न अशुभ फल होता हैं ।इसे इस तरह समझें - मान लो ग्रह की शुभ स्थिति इस प्रकार है कि वह राज्य देगा और अन्य प्रकार से उसी दशा में राज्य हरण का फल होता है तो ऐसे में न राज्य मिलेगा और न राज्य छिनेगा ।

यदि शुभ-अशुभ दोनों फल न्यूनाधिक हों तो जो अधिक हो उसी का फल मिलता है ।

कोई ग्रह दो तीन प्रकार से राज्यप्रद हो और एक प्रकार से राज्यहर्ता हो तो राज्यप्रद वाला ही फल मिलेगा ।

कोई ग्रह अपने अनुसार फल देते हैं और अन्य ग्रह के फल का नाश नहीं करते हैं । अपनी-अपनी दशा में अपना-अपना फल प्रदान करते हैं । मान लो एक ग्रह धन देता है और और दूसरा धन हानि देता है तो धन दायक ग्रह अपनी दशा में धन देगा और धनहर्ता ग्रह अपनी दशा में धन छीनकर हानि करायेगा ।

इति श्रीवराहमिहिराविरचिते बृहज्जातके दशान्तर्दशाध्यायोऽष्टमः ॥8 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टकवर्गाध्याय

इस अध्याय में 'अष्टक वर्ग' के सिद्धान्तों की चर्चा वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर करेंगे। इस अध्याय को ध्यान से पढें क्योंकि कुण्डली का फलित करते समय ये सिद्धान्त भी सहयोगी बन पडते हैं।

सूर्याष्टक वर्ग

स्वादर्कः प्रथमायबंधुनिधनद्व्याज्ञातपोद्यूनगो
वक्रास्त्वादिव तद्वदेव रविजाच्छुक्रात्स्मरांत्यारिषु।
जीवाद्धर्मसुतायशत्रुषु दशत्र्यायारिगः शीतगोरेष्वेवांत्यतपः
सुतेषु च बुधल्लग्नात्संबंध्वत्यगः ॥ 1 ॥

ग्रह गोचरवश प्रत्येक राशि में जो शुभाशुभ फल देते हैं, उनका विचार अष्टक वर्ग से किया जाता है। जन्म समय जो ग्रह जिस स्थान पर रहता है वही अपना स्थान (स्वस्थान) होता है। शुभ स्थान में बिन्दु (०) और अशुभ स्थान में रेखा (।) रखनी चाहिए।

सूर्यादि सात ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि) एवं लग्न ये आठ अष्टक वर्ग में लिए जाते हैं।

सूर्य अपने स्थान (स्वस्थान अर्थात् जन्मकुंडली में जहाँ पर है) से 1,2,4,7,8,9,10 एवं 11 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (3,5,6,12) पर अशुभ फल करता है।

मंगल व शनि से भी 1,2,4,7,8,9,10 एवं 11 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (3,5,6,12) पर अशुभ फल करता है।

शुक्र से 6,7,12 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (1,2,3,4,5,8,9,10,11) पर अशुभ फल करता है।

गुरु से 5,6,9 व 11 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (1,2,3,4,7,8,10 व 12 वें) पर अशुभ फल करता है।

चन्द्र से 3,6,10,11 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (1,2,4,5,7,8,9,12 वें) पर अशुभ फल करता है।

बुध से 3,5,6,9,10,11 व 12 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (1,2,4,7,8) पर अशुभ फल करता है।

शनि से 3,5,6,12 वें स्थान पर शुभ एवं शेष स्थान (1,2,4,7,8,9,10,11) पर अशुभ फल करता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न से 3,4,6,10,11 व 12 वें स्थान पर शुभ फल करता है, जबकि शेष स्थान (1,2,5,7,8,9) पर अशुभ फल करता है ।

सूर्याष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
1	०	।	०	।	०	।	०	।
2	०	।	०	।	।	।	०	।
3	।	०	।	०	।	।	।	०
4	०	।	०	।	।	।	०	०
5	।	।	।	०	०	।	।	।
6	।	०	।	०	०	०	।	०
7	०	।	०	।	।	०	०	।
8	०	।	०	।	।	।	०	।
9	०	।	०	०	०	।	०	।
10	०	०	०	०	।	।	०	०
11	०	०	०	०	।	।	०	०
12	।	।	।	०	।	०	।	०

टिप्पणी— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (०) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) का चिन्ह हैं । 2. शुभ स्थानों पर सूर्य गोचरवश शुभ फल करता है और अशुभ स्थानों पर अशुभ फल करता है ।

चन्द्राष्टक वर्ग

लग्नात्ष्ट्त्रिदशायगः सधनधीधर्मेषु चाराच्छशी
स्वात्सास्तादिषु साष्टसप्तसु रवेः षट्त्र्यायधीस्थो यमात् ।
धीत्र्यायाष्टमकंटेकेषु शशिजाज्जीवाद्व्ययायाष्टगः
केंद्रस्थश्च सितात्तु धर्मसुखीत्र्यायास्पदानंगगः ॥ 2 ॥

चन्द्रमा ग्रह **लग्न** से 6,3,10,11 , **मंगल** से 6,3,10,11,2,5,9 , **चन्द्र**(स्वस्थान) से 6,3,10,11,7,1 , **सूर्य** से 6,3,10,11,8,7 , **शनि** से 6,3,11,5 , **बुध** से 5,3,11,8,1,4,7,10 , **गुरु** से 12,11,8,1,4,7,10 एवं **शुक्र** से 9,4,5,3,11,10,7 वे स्थान पर शुभ फल देता है , जबकि शेष सभी स्थानों पर अशुभ फल करता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (0) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) का चिन्ह अंकित है । 2. शुभ स्थानों पर चन्द्र गोचरवश शुभ फल करता है और अशुभ स्थानों पर अशुभ फल देता हैं ।

चन्द्राष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य
1	o	।	o	o	।	।	।	।
2	।	o	।	।	।	।	।	।
3	o	o	o	।	o	o	o	o
4	।	।	o	o	o	।	।	।
5	।	o	o	।	o	o	।	।
6	o	o	।	।	।	o	o	o
7	o	।	o	o	o	।	।	o
8	।	।	o	o	।	।	।	o
9	।	o	।	।	o	।	।	।
10	o	o	o	o	o	।	o	o
11	o	o	o	o	o	o	o	o
12	।	।	।	o	।	।	।	।

मंगलाष्टक वर्ग

वक्रस्तूपचयेष्विनात्   सतनयेष्वाद्याधिकेषूदया ।
च्चन्द्राद्विग्विफलेषु केन्द्रनिधनप्राप्त्यर्थगः स्वाच्छुभः ॥
धर्मायाष्टमकेन्द्रगोऽर्कतनयाज्ज्ञात् षट्त्रिधीलाभगः ।
शुक्रात् षड्व्ययलाभमृत्युषु गुरोः कर्मान्त्यलाभारिषु ॥ 3 ॥

मंगल ग्रह सूर्य से 3,6,10,11,5 , शनि से 9,11,8,1,4,7,10 , लग्न से 3,6,10,11,1, चन्द्रमा से 3,6,11 , मंगल (स्वस्थान से) से 1,4,7,10,8,11,2 ,बुध से 6,3,5,11 , शुक्र से 6,12,11,8 , एवं गुरु से 10,12,11,6 ठे स्थान पर शुभ फल देता हैं , जबकि शेष सभी स्थानों पर अशुभ फल करता है

टिप्पणी— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (०) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) का चिन्ह हैं । 2. शुभ स्थानों पर मंगल गोचरवश शुभ फल करता है और अशुभ स्थानों पर अशुभ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल देता हैं ।

मंगलाष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र
1	०	।	।	।	०	०	।	।
2	०	।	।	।	।	।	।	।
3	।	०	।	।	।	०	०	०
4	०	।	।	।	०	।	।	।
5	।	०	।	।	।	।	०	।
6	।	०	०	०	।	०	०	०
7	०	।	।	।	०	।	।	।
8	०	।	।	०	०	।	।	।
9	।	।	1	।	०	।	।	।
10	०	।	०	।	०	०	०	।
11	०	०	०	०	०	०	०	०
12	।	।	०	०	।	।	।	।

बुधाष्टक वर्ग

द्व्याद्यायाष्टतपः सुखेषु भृगुजात्सत्र्यात्मजेष्विंदुजः
साज्ञास्तेषु यमारयोर्व्ययरिपुप्राप्त्यष्टगो वाक्पतेः ।
धर्मायारिसुतव्ययेषु सवितुः स्वात्साद्यकर्मत्रिगः
षट्स्वायाष्टसुखास्पदेषु हिमगोः साद्येषु लग्नाच्छुभः ॥ 4 ॥

बुध ग्रह **शुक्र** से 2,1,11,8,9,4,3,5 , **शनि** से 2,1,11,8,9,4,10,7, **मंगल** से 2,1,11,8,9,4,10,7 , **गुरु** से 12,6,11,8 , **सूर्य** से 9,11,6,5,12 , **बुध** (स्वस्थान) से 9,11,6,5,12,1,10,3 , **चन्द्रमा** से 6,2,11,8,4,10 और **लग्न** से 6,2,11,8,4,10,1 स्थानों पर शुभ फल देता है , जबकि शेष सभी स्थानों पर अशुभ फल देता हैं ।

टिप्पणी— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (०) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) का चिन्ह अंकित है । 2. शुभ स्थानों पर बुध गोचरवश शुभ फल करता है और अशुभ स्थानों पर अशुभ फल देता हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुधाष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल
1	०	।	०	०	०	।	।	०
2	।	।	०	०	०	।	०	०
3	०	।	०	।	।	।	।	।
4	।	।	०	०	०	।	०	०
5	०	।	०	।	।	०	।	।
6	०	०	।	।	०	०	०	।
7	।	।	।	०	।	।	।	०
8	।	०	०	०	०	।	०	०
9	०	।	०	०	।	०	।	०
10	०	।	।	०	०	।	०	०
11	०	०	०	०	०	०	०	०
12	०	०	।	।	।	०	।	।

गुर्वाष्टक वर्ग

दिक्स्वाद्याष्टमदायबंधुषु कुजात्स्वात्सत्रिकेष्वं
गिराः सूर्यात्सत्रिनवेषुधरिवनवदिग्लाभारिगो भार्गवात्।
जायायार्थन्वात्मजेषु हिमगोर्भदात्रिषड्धीव्यये
दिग्धीषट्स्वसुखायपूर्वनवगो ज्ञात्सस्मख्छोदयात् ॥ 5 ॥।

गुरु ग्रह **मंगल** से 10,2,1,8,7,11,4 , **गुरु** (स्वस्थान) से 10,2,1,8,7,11,4,3 , **सूर्य** से 10,2,1,8,7,11,4,3,9 **शुक्र** से 5,2,9,10,11,6, **चन्द्रमा** से 7,11,2,9,5, **शनि** से 3,6,5,12, **बुध** से 10,5,6,2,4,11,1,9 और **लग्न** से 10,5,6,2,4,11,1,9,7 वें स्थान पर शुभ फल करता है और शेष सभी स्थानों पर अशुभ फल करता है ।

टिप्पणी— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (०) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) का चिन्ह अंकित है । 2. शुभ स्थानों पर गुरु गोचरवश शुभ फल करता है और अशुभ स्थानों पर अशुभ फल करता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुर्वाष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध
1	०	।	।	०	०	।	०	०
2	०	०	।	०	०	०	०	०
3	०	।	०	।	०	।	।	।
4	०	।	।	०	०	।	०	०
5	।	०	०	०	।	०	।	०
6	।	०	०	०	।	।	।	०
7	०	।	।	०	०	०	०	।
8	०	।	।	।	०	।	०	।
9	।	०	।	०	०	०	।	०
10	०	०	।	०	०	।	०	०
11	०	०	।	०	०	०	०	०
12	।	।	०	।	।	।	।	।

शुक्राष्टक वर्ग

लग्नादासुतलाभरंध्रनवगः सांत्यः शशांकात्सितः
स्वात्साज्ञेषु सुखत्रिधीनवदशच्छिद्राप्तिगः सूर्यजात्।
रंध्रायव्यगो रवेर्नवदशप्राप्त्यष्टधीस्थो
गुरोर्ज्ञाद्धीत्र्यायनवारिगस्त्रिनवषट्पुत्रायसांत्यः कुजात्॥ 6 ॥

शुक्र ग्रह **लग्न** से 1,2,3,4,5,11,8,9 , **चन्द्र** से 1,2,3,4,5,11,8,9,12 **शुक्र** (स्व-स्थान) से 1,2,3,4,5,11,8,9,10 , **शनि** से 4,3,5,9,10,8,11 , **सूर्य** से 8,11,12 , **गुरु** से 9,10,11,8,5 , **बुध** से 5,3,11,9,6 और **मंगल** से 3,9,6,5,11,12 वें स्थान पर शुभ फल करता है , जबकि शेष सभी स्थानों पर अशुभ फल करता है ।

टिप्पणी— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (०) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) का चिन्ह अंकित है । 2. शुभ स्थानों पर शुक्र शुभ फल करता है और अशुभ स्थानों पर अशुभ फल करता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्राष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू
1	o	।	o	।	o	।	।	।
2	o	।	o	।	o	।	।	।
3	o	o	o	।	o	o	o	।
4	o	o	o	।	o	।	।	।
5	o	o	o	।	o	o	o	o
6	।	।	।	।	।	o	o	।
7	।	।	।	।	।	।	।	।
8	o	o	o	o	o	।	।	o
9	o	o	o	।	o	o	o	o
10	o	o	।	।	।	।	।	o
11	o	o	o	o	o	o	o	o
12	1	1	1	o	o	o	1	1

शन्याष्टक वर्ग

मंदूस्वात्रिसुतायशत्रुषु शुभः साज्ञांत्यगो
भूमिजात् केंद्रायाष्टधनेष्विनादुपचयेष्वाद्ये सुखे चोदयात्।
धर्मायारिदशांत्यमत्युषु बुधच्चंद्रात्त्रीषड्लाभगः षष्ठायांत्यगतः
सितात्सुरगुरोः प्राप्त्यंत्यधशित्रुषु ॥ 7 ॥

शनि ग्रह **शनि** (स्वस्थान) से 3,5,11,6 , **मंगल** से 3,5,11,6,10,12 , **सूर्य** से 1,4,7,10,11,8,2 , **लग्न** से 3,6,10,11,1,4 , **बुध** से 9,11,6,10,12,8 , **चन्द्र** से 3,6,11, **शुक्र** से 6,11,12 और **गुरु** से 11,12,5,6 स्थानों पर शुभ फल करता है, जबकि शेष सभी स्थानों पर अशुभ फल देता हैं।

टिप्पणा— 1. शुभ स्थान पर बिन्दु (०) और अशुभ स्थान पर रेखा (।) चिन्ह अंकित है। 2. शुभ स्थानों पर शनि गोचरवश शुभ फल और अशुभ स्थानों पर अशुभ फल करता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शन्याष्टक वर्ग में शुभाशुभ स्थान चक्रम्

ग्रह स्थान	शनि	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
1	।	o	o	।	।	।	।	।
2	।	।	o	।	।	।	।	।
3	o	o	।	o	o	।	।	।
4	।	o	o	।	।	।	।	।
5	o	।	।	।	o	1	o	।
6	o	o	।	o	o	o	o	o
7	।	।	o	।	।	।	।	।
8	।	।	o	।	।	o	।	।
9	।	।	।	।	।	o.	।	।
10	।	o	o	।	o	o	।	।
11	o	o	o	o	o	o	o	o
12	।	¡	।	।	o	o	o	o

अष्टक् वर्ग संबंधी विशेष विचार

इति निगदितमिष्टं नेष्टमन्यद्विशेषादधिक
फलविपांक जन्मभात्तत्र दद्युः ।
उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैः पुष्टमिष्टं
त्वपचयगृहीचारातिगैर्नेष्ट सम्पत् ॥ 8 ॥

सूर्यादि ग्रहों के उपर्युक्त सब स्थान शुभ और शेष स्थान (जो अंकित) नहीं है अशुभ हैं ।

जन्म राशि से प्रत्येक राशि में शुभ, अशुभ स्थानों का अन्तर करने से शुभ शेष बचे तो शुभ फल और अशुभ शेष बचे तो अशुभ फल समझना चाहिए । प्रत्येक ग्रह के शुभ स्थान में बिन्दु (०) और अशुभ स्थान में रेखा (।) देकर फल विचारना चाहिए ।

जैसे यदि आठों बिन्दु हों तो पूर्ण शुभ फल, जबकि आठों रेखाएँ हों तो पूर्ण अशुभ फल, शुभाशुभ दोनों स्थान बराबर हों तो फल शून्य और कम या अधिक हों तो अनुमान से शुभ फल जानना चाहिए ।

इस लग्न से लाए हुए शुभ स्थान , जन्म लग्न या जन्म चन्द्र से 3,6,10,11 मित्रस्थान, स्व स्थान या उस स्थान में पड़ें तो पूर्ण शुभ फल समझना चाहिए ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि 1,2,4,5,7,8,9,12 स्वनीच स्थान या स्व शत्रु स्थान में पड़ें तो पूर्ण अशुभ फल देता है ।

मान लो अधोलिखित कुण्डली से सूर्य का शुभाशुभ स्थान का ज्ञान करना है ।

जन्म कुण्डली

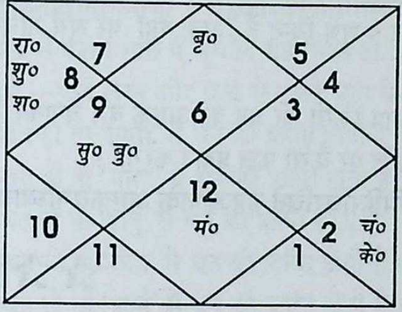

सूर्याष्टक वर्ग

भाव	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग्रह	×	चं० के०	×	×	×	बृ०	×	शु० श० रा०	सू० बु०	×	×	मं०
सूर्य	।	।	०	०	०	०	०	।	०	०	।	०
चन्द्र	।	।	।	०	।	।	०	।	।	।	०	०
मंगल	०	।	०	।	।	०	०	०	०	०	।	०
बुध	०	०	।	।	०	०	०	०	।	।	०	।
गुरु	।	०	।	।	।	०	।	।	।	०	०	1
शुक्र	०	०	।	।	।	।	०	।	।	।	।	।
शनि	।	०	०	०	०	०	।	०	०	।	०	।
लग्न	।	।	०	०	०	।	।	०	०	।	०	।
बिंदु योग	3	4	4	4	4	5	5	4	4	3	5	3
रेखा योग	5	4	4	4	4	3	3	4	4	5	3	5

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उक्त सूर्याष्टक वर्ग में मेष राशि में 3 बिन्दु हैं, जबकि रेखा योग 5 हैं। यहाँ शुभ बिन्दु अशुभ रेखा से कम है इसलिए सूर्य गोचरवश मेष राशि में अशुभ फल देगा।अत: मेष, मकर, तुला राशि में गोचर का सूर्य अशुभ फलदायी होगा क्योंकि इन सभी पर शुभ ब्रिन्दु 3 हैं। वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक व धनु राशि पर 4 शुभ बिन्दु हैं, अत: इन राशियों पर गोचरवश सूर्य न शुभ न अशुभ अर्थात् सम फल देगा। शेष राशि कन्या, तुला व कुंभ राशि पर 5 शुभ बिन्दु हैं, अत: यहाँ पर सूर्य गोचरवश शुभ फल प्रदान करेगा।

इस प्रकार आप किसी भी ग्रह का अष्टक वर्ग बनाकर यह जान सकते हैं कि कौन सा ग्रह किस राशि पर कैसा फल प्रदान करेगा ?

इति श्री वराहमिहिरविरचिते ब्रृहज्जातके अष्टकवर्गाध्यायो नवमः ॥ 9 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

10 कर्माजीवाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर उन सिद्धान्तों की चर्चा करेंगे जिनसे यह ज्ञात होता है कि धन किससे, कैसे और कब प्राप्त होगा।

धन किससे प्राप्त होगा ?

अर्थाप्ति पितृःपत्निशत्रुमित्रभ्रातृस्त्रीभृतकजनाद्दिवाकाराद्यैः।
होरेंद्वोर्दशमतैर्विकल्पनीया भेंद्वर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या॥ 1॥

लग्न और चन्द्र से दशम भाव में सूर्यादि ग्रह स्थित हों तो पिता, मातादि से धन की प्राप्ति होती है, जैसे—यदि लग्न और चन्द्र से दसवें भाव में—

—**सूर्य** स्थित हो तो **'पिता'** से धन की प्राप्ति होती है।
—**चन्द्र** स्थित हो तो **'माता'** से धन की प्राप्ति होती है।
—**मंगल** स्थित हो तो **'शत्रु'** से धन की प्राप्ति होती है।
—**बुध** स्थित हो तो **'मित्र'** से धन की प्राप्ति होती है।
—**गुरु** स्थित हो तो **'भाई'** से धन की प्राप्ति होती है।
—**शुक्र** स्थित हो तो **'स्त्री'** से धन की प्राप्ति होती है।
—**शनि** स्थित हो तो **'नौकर या नीच जाति'** से धन की प्राप्ति होती है।

यदि दसवें भाव में कोई ग्रह न हो तो लग्न, चन्द्र या सूर्य से दसवें भाव का स्वामी (दशमेश) जिस राशि के नवांश में हो उसके स्वामी ग्रह के अनुसार पूर्व कथित व्यक्ति से धन की प्राप्ति होती है।

टिप्पणी— यदि लग्न से दशम भाव में एक ग्रह और चन्द्र से दशम भाव में दूसरा ग्रह स्थित हो तो दोनों ग्रह अपनी-अपनी दशान्तर्दशा में धन की प्राप्ति कराते हैं। यदि एक से अधिक ग्रह अपनी-अपनी दशान्तर्दशा में धन की प्राप्ति कराता है, लेकिन यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि बली और शुभ ग्रह ही धनदाता होते हैं नाकि निर्बल औरअशुभ ग्रह।

धन कैसे प्राप्त होगा ?

अर्कांशे तृणकनकोर्णभेषजाद्यैश्चंद्रांशे कृषिजलजांगनाश्रयाच्च।
धात्वग्निप्रहरणसाहसैः कुजांशे सौम्यांशे लिपिगणितादिकाव्यशिल्पैः॥ 2॥
जीवांशे द्विजविबुधाकरादिधर्मैः काव्यांशे मणिरजतादिगोमहिष्यैः।
सौरांशे श्रमवधभारनीचशिल्पैः कर्मेशाध्युषितनवांशकर्मसिद्धिः॥ 3॥

सूर्य, चन्द्र और लग्न से दशम भाव का स्वामी (दशमेश) जिस नवांश राशि में हो उसके स्वामी ग्रह की वृत्ति से धन की प्राप्ति होती है, जैसे—यदि नवांश स्वामी —

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य हो तो इत्र, स्वर्ण, ऊनी वस्तुएं, औषधि और चिकित्सक संबंधी कार्यों से धन अर्जित करता है ।

चन्द्र हो तो खेती, शंख, सीप, मोती या समुद्री वस्तुओं का विक्रेता, स्त्री या आश्रितों के सहयोग से धन का अर्जन होता है ।

मंगल हो तो धातु, खनिज पदार्थ, मिट्टी के बर्तन, हरताल, ड्राईवर, माचिस का व्याएारी, साहसिक कार्यों, अग्नि संबंधी कार्य, हथियार और भूमि क्रय-विक्रय संबंधी कार्यों से धन की प्राप्ति होती है ।

बुध हो तो पढ़ना-लिखना, गणित, काव्य, शिल्प कला, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, बुक बाइन्डिंग, लेखक, अध्यापन, इत्र, कवि और एकाउन्ट संबंधी कार्यों से धन का लाभ होता है ।

गुरु हो तो ब्राह्मण के कर्म-कांड, देव या विद्वान, खान या खनिज पदार्थों, धार्मिक कार्यों, गिफ्ट संबंधी वस्तुओं, धार्मिक कार्यों, तीर्थ यात्राओं, शिक्षक, प्रवचनकर्त्ता और महन्त, मठाधीश संबंधी कार्यों से धन का अर्जन होता है ।

शुक्र हो तो आभूषण, हीरे-जवाहारात, रत्न, चांदी के आभूषण, जौहरी, सरार्फ, गाय-भैंस संबंधी कार्यों से धन की प्राप्ति होती है ।

शनि हो तो मजदूर, बोझा ढोने, शिकार, निन्दित कार्य, अत्याचारी, नीचकार्यों से धन को अर्जित करता है ।

इस प्रकार जातक लग्न, सूर्य और चन्द्र से दसवें भाव के स्वामी के नवांश स्वामी की प्रकृति के अनुसार व्यवसाय करके धन को अर्जित करता है ।

धन कब प्राप्त होगा ?

मित्रारिस्वगृहगतैर्ग्रहैस्ततोऽर्थं तुंगस्थे बलिनि च भास्करे स्ववीर्यात् ।
आयस्थैरुदयधनाश्रितैश्च सौम्यैः संचिंत्यं वलसहितैरनेकधा स्वम् ॥ 4 ॥

जब लग्न, सूर्य और चन्द्र से दसवें भाव का स्वामी (दशमेश) ग्रह जिस नवांश राशि में हो उसका स्वामी ग्रह मित्र क्षेत्री हो तो मित्रों से, शत्रु क्षेत्री हो तो शत्रुओं से और स्वक्षेत्री हो तो स्वक्षेत्र से अपनी दशा-अन्तर्दशा में धनलाभ कराता है । यदि उक्त योग में सूर्य उच्च का हो तो जातक अपने बाहुबल से धन का अर्जन करता है । यदि बली शुभ ग्रह एकादश, लग्न और द्वितीय भाव में स्थित हो या बली ग्रह से रक्षित हो तो विभिन्न व्यवसायों से सहजता के साथ धन अर्जित करता है ।

अब उदाहरण देकर समझाते हैं, देखें—एक जातक की जन्म कुंडली और नवांश कुंडली ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म कुंडली

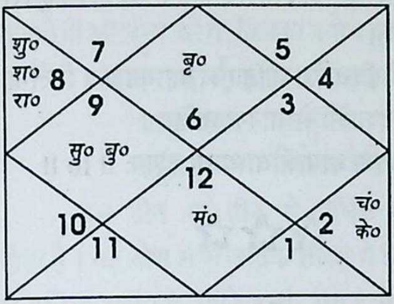

नवांश कुंडली

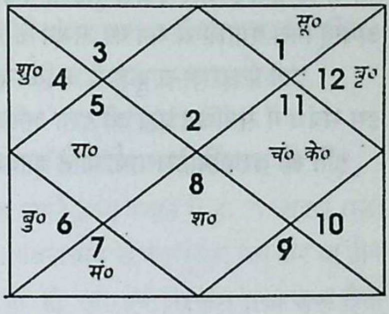

धन किससे, कैसे और कब प्राप्त होगा ?

उक्त कुंडली में लग्न से दसवें भाव में मिथुन राशि और चन्द्र से दसवें भाव में कुंभ राशि है, इन दोनों भाव में ग्रह नहीं है। अत: लग्न से दसवें भाव का स्वामी बुध है जोकि नवांश राशि कन्या में स्थित है जिसका स्वामी बुध ग्रह है, चन्द्र से दसवें भाव का स्वामी शनि है जोकि नवांश राशि वृश्चिक में स्थित है जिसका स्वामी मंगल ग्रह है और सूर्य से दसवें भाव में कन्या राशि में गुरु ग्रह स्थित है जिसका स्वामी बुध है जोकि नवांश राशि कन्या में स्थित है जिसका स्वामी बुध ग्रह है। **फलत: जातक को बुध, मंगल और गुरु ग्रह के अनुसार मित्र, शत्रु और भाई से धन की प्राप्ति होगी किन्तु मंगल निर्बल होने के कारण शत्रु की अपेक्षा मित्र व भाई से अधिक धन की प्रप्ति होगी।**

जातक बुध, मंगल और गुरु ग्रह से संबंधित व्यवसाय में सफल होगा। अत: इन ग्रहों (बुध, मंगल और गुरु) से संबंधित जो व्यवसाय बतलाये हैं, उनको करके धन अर्जित करना चाहिए।मंगल ग्रह की अपेक्षा शेष दो ग्रहों (बुध और गुरु) के व्यवसायों में से ही कोई व्यवसाय चुनना श्रेयस्कर है क्योंकि मंगल ग्रह निर्बल है। बुध और गुरु के कार्य इस प्रकार हैं—**बुध** के कार्य हैं, जैसे पढ़ना-लिखना, गणित, काव्य, शिल्पकला, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता, बुक बाइन्डिग, लेखक, अध्यापन, इत्र, कवि और एकाउन्टेन्ट आदि। **गुरु** के कार्य है, जैसे ब्राह्मण के कर्मकाण्ड, विद्वान, खनिज पदार्थों, धार्मिक कार्य, तीर्थ यात्राओं शिक्षक, प्रवचन कर्त्ता और महन्त, मठाधीश आदि।

बुध और गुरु स्वक्षेत्री हैं जबकि मंगल शत्रुक्षेत्री है (यहां मित्रता पंचधा मैत्री मे विचारी गई है) वस्तुत: जातक बुध और गुरू ग्रह संबंधी कार्योंसे विशेष धन लाभ करेगा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जबकि मंगल ग्रह संबंधी कार्यों को करने पर शुभाशुभ फल प्राप्त होगा। सूर्य ग्रह अधिमित्र क्षेत्री है और नवांश कुंडली में उच्च का है, इसलिए जातक अपने बाहुबल अर्थात् निज प्रयासों से धन का अर्जन करेगा।

इसी प्रकार अन्य कुंडली के विषय में विचारना चाहिए। यह धन कब मिलेगा, इस संबंध में संबंधित ग्रहों की दशा अन्तर दशाओं से जानना चाहिए।

इति श्री वराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके कर्माजीवाध्यायो दशमः ॥ 10 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

11 राजयोगाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर द्वारा रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर विभिन्न राजयोगों की चर्चा करेगें, जिनका प्रयोग कुण्डली का फलित करते समय करना चाहिए।

यवनाचार्य और जीव शर्मा के मतानुसार राजयोग

प्राहुर्यवनाः स्वतुंगगैः क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिः।
क्रूरैस्तु न जीवशर्मणः पक्षे क्षित्यधिपः प्रजायते ॥ 1 ॥

जब तीन या तीन से अधिक ग्रह अपने उच्च स्थान में हों तो जातक राजा होता है। यह योग सभी जातक शास्त्रों में है। यवनाचार्य के मतानुसार जब तीन या तीन से अधिक पाप ग्रह अपने उच्च स्थान में हों तो क्रूर एवं निरंकुश राजा जन्म लेता है। किन्तु जीवशर्मा के मतानुसार पाप ग्रह अपने उच्च स्थान में हों तो राजा नहीं होता है।

टिप्पणी— 1. यदि तीन शुभ ग्रह अपने उच्च स्थान में हों तो सच्चरित्र राजा होता है। 2. यदि शुभ और अशुभ ग्रह दोनों अपने उच्च स्थान में हों तो राजा आंशिक रूप में सच्चरित्र और आंशिक रूप में पापी होता है। 3. यदि तीन या अधिक पाप ग्रह उच्च स्थान में हों तो राजा निर्दयी और निरंकुश होता है। ये तीन विचार यवनेश्वर के है।

इसी प्रकार जीवशर्मा के मतानुसार जातक राजा न होकर धनी, क्रोधी, कठोर व झगड़ालू होता है।

वराहमिहिर यवनाचार्य के मत से सहमत हैं।

बत्तीस प्रकार के राजयोग

वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च
स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितैकलग्ने।
द्व्येकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने स्वक्षेत्रगे
शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः ॥ 2 ॥

मंगल, शनि, सूर्य और गुरु उच्च के हों या इनमें से तीनं ग्रह उच्च के हों, चार में से एक ग्रह या तीन ग्रह लग्न में हों तो सोलह प्रकार के राजयोग बनते है। कोई दो या एक पूर्वाक्त ग्रह जब उच्च के हों और उनमें से एक या दो ग्रह लग्न में हों तो भी सोलह प्रकार के राजयोग बनते हैं, लेकिन चन्द्र स्वराशि कर्क में होना चाहिए।

टिप्पणी— सभी बत्तीस प्रकार के राजयोग यहाँ समझा रहे हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार ग्रह उच्च और उनमें से एक ग्रह लग्न में हो तो चार प्रकार के राजयोग बनेगें

1. सूर्य मेष राशि का लग्न में , गुरु कर्क में , शनि तुला में और मंगल मकर राशि में हों तो **पहला राजयोग** बनता है ।

पहला राजयोग

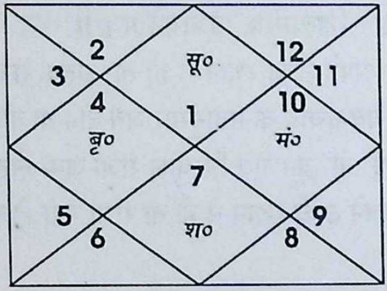

दूसरा राजयोग

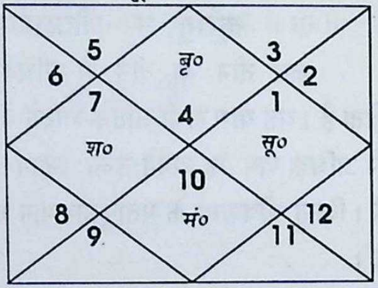

तीसरा राजयोग

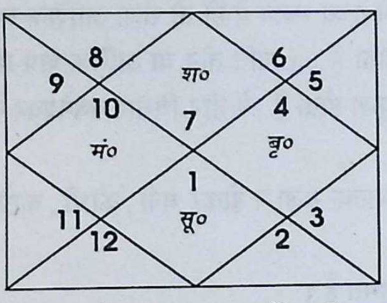

चौथा राजयोग

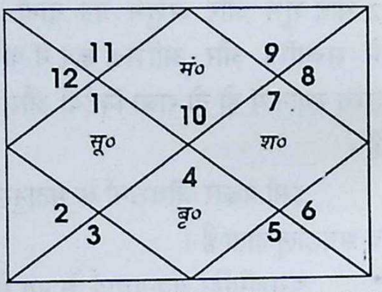

2. गुरु कर्क राशि का लग्न में , शनि तुला में , मंगल मकर में और सूर्य मेष राशि में हों तो **दूसरा राजयोग** बनता है ।
3. शनि तुला राशिं का लग्न में , मंगल मकर में , सूर्य मेष में और गुरु कर्क राशि में हों तो **तीसरा राजयोग** बनता है ।
4. मंगल मकर लग्न में, सूर्य मेष में, गुरू कर्क में, और शनि तुला में हो तो **चौथा राजयोग** बनता है ।

तीन ग्रह उच्च में और उनमें से एक लग्न में हो तो बारह राजयोग बनेंगे

1. **पहला राजयोग—** सूर्य मेष राशि का लग्न में , गुरु कर्क में , शनि तुला में हों तो ।
2. **दूसरा राजयोग—** सूर्य मेष राशि का लग्न में , गुरु कर्क में , मंगल मकर में हो तो ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहला राजयोग

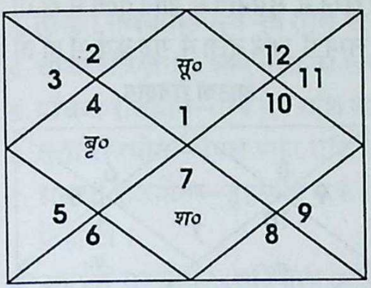

दूसरा राजयोग

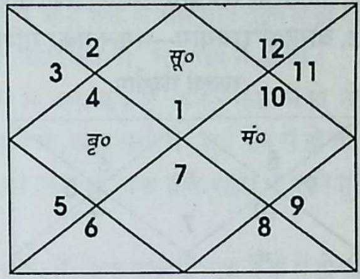

तीसरा राजयोग

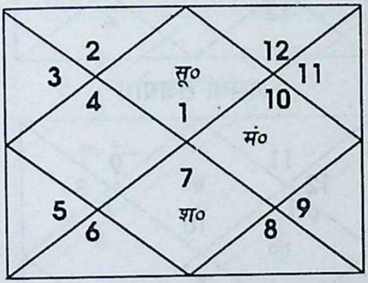

चौथा राजयोग

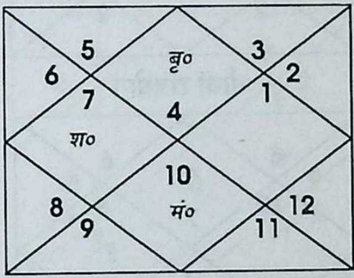

पाँचवां राजयोग

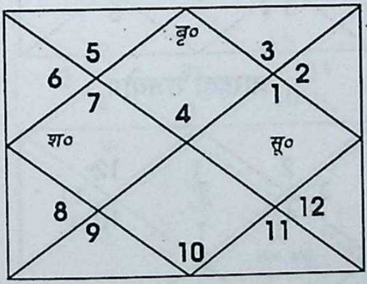

छठा राजयोग

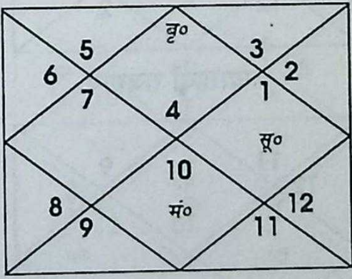

3. **तीसरा राजयोग**—सूर्य मेष राशि का लग्न में, शनि तुला में, मंगल मकर में हों तो ।

4. **चौथा राजयोग**— गुरु कर्क राशि का लग्न में, शनि तुला में, मंगल मकर में हों तो ।

5. **पाँचवां राजयोग**— गुरु कर्क राशि का लग्न में, शनि तुला में, सूर्य मेष में हों तो ।

6. **छठा राजयोग**— गुरु कर्क राशि का लग्न में, मंगल मकर में, सूर्य मेष में हों तो ।

7. **सातवां राजयोग**— शनि तुला राशि का लग्न में, मंगल मकर में, सूर्य मेष में हों तो ।

8. **आठवां राजयोग**—शनि तुला राशि का लग्न में, मंगल मकर में, गुरु कर्क में हों तो ।

9. **नौवां राजयोग**— शनि तुला राशि का लग्न में, गुरु कर्क में, सूर्य मेष में हों तो ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. **दसवां राजयोग**—मंगल मकर राशि का लग्न में, सूर्य मेष में, गुरु कर्क में हों तो ।

11. **ग्याहरवां राजयोग**—मंगल मकरराशि का लग्न में, सूर्य मेष में, शनि तुला में हों तो ।

12. **बारहवां राजयोग**—मंगल मकर राशि का लग्न में, शनि तुला में, गुरु कर्क में हों तो ।

सातवां राजयोग

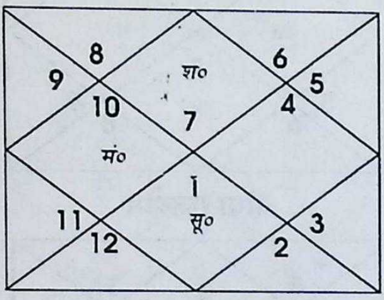

आठवां राजयोग

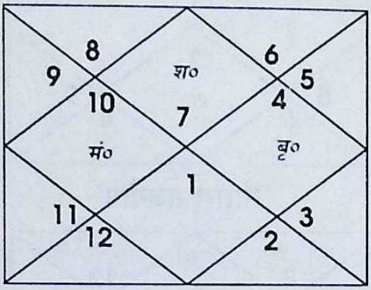

नौवां राजयोग

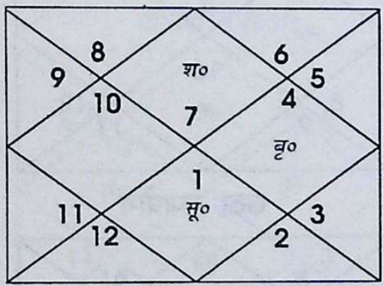

दसवां राजयोग

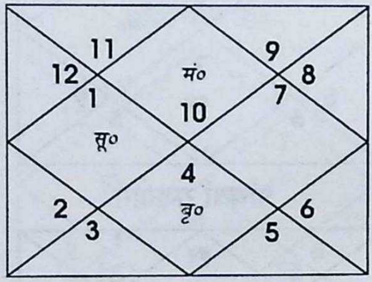

ग्यारहवां राजयोग

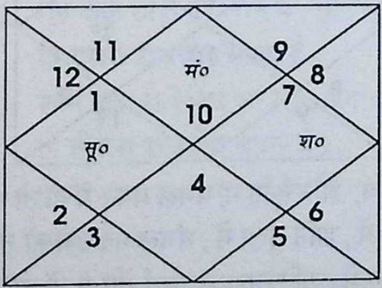

बारहवां राजयोग

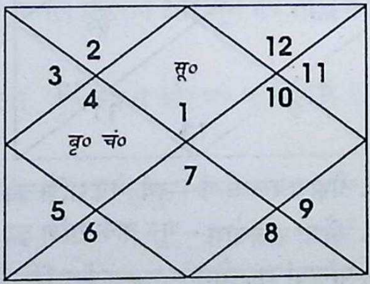

चन्द्र कर्क में, दो ग्रह उच्च के और ग्रह लग्न में हों तो बारह राजयोग बनेंगे

1. **पहला राजयोग**— सूर्य मेष राशि का लग्न में, गुरु कर्क में, चन्द्र कर्क में हो तो ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. **दूसरा राजयोग**— गुरु व चन्द्र कर्क राशि का लग्न में और सूर्य मेष राशि में हो तो ।
3. **तीसरा राजयोग**—सूर्य मेष राशि का लग्न में, चन्द्र कर्क में औरशनि तुला में हो तो ।
4. **चौथा राजयोग**— शनि तुला का लग्न में , चन्द्र कर्क में , सूर्य मेष में हो तो ।
5. **पाँचवां राजयोग**—सूर्य मेष राशि का लग्न में, चन्द्र कर्क में , मंगल मकर में हो तो ।
6. **छठा राजयोग**—मंगल मकर राशि का लग्न में , चन्द्र कर्क में , सूर्य मेष में हो तो ।
7. **सातवां राजयोग**— बृहस्पति कर्क राशि का लग्न में , चन्द्र कर्क राशि में, शनि तुला में हो तो ।
8. **आठवां राजयोग**— शनि तुला राशि का लग्न में , चन्द्र कर्क में , गुरु कर्क में हो तो ।

पहला राजयोग

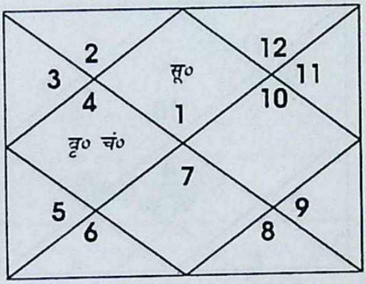

दूसरा राजयोग

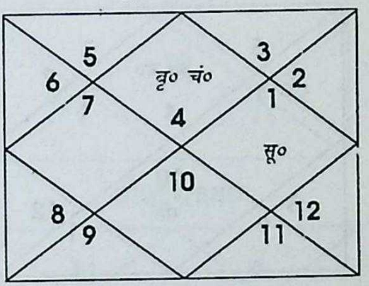

तीसरा राजयाग

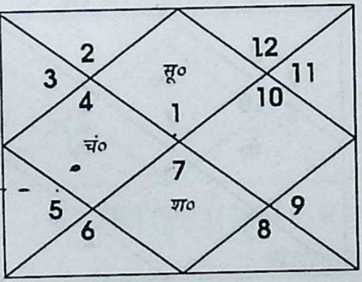

चौथा राजयोग

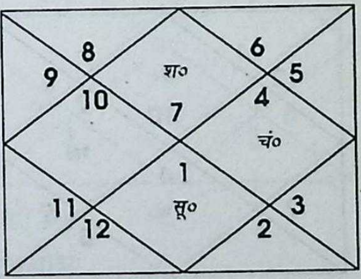

पाँचवां राजयोग

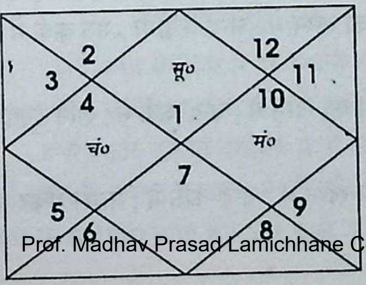

छठा राजयोग

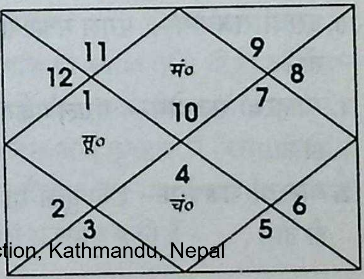

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सातवां राजयोग

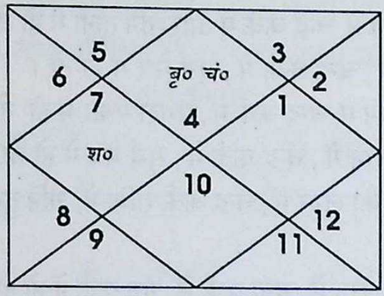

आठवां राजयोग

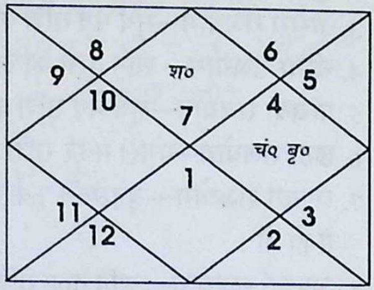

नौवां राजयोग

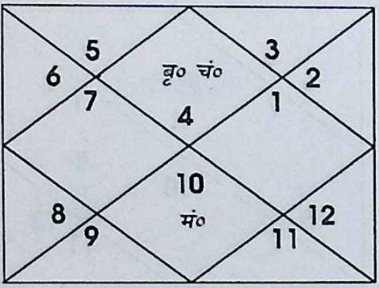

दसवां राजयोग

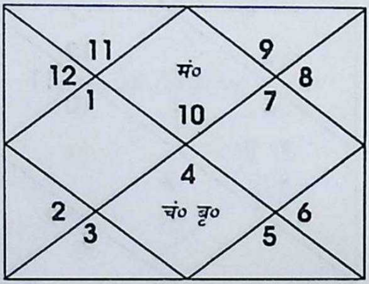

ग्यारहवां राजयोग

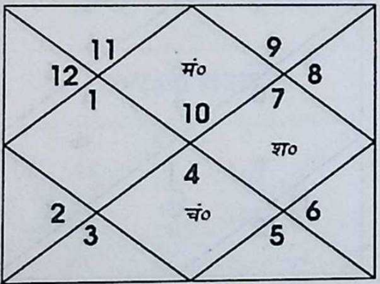

बारहवां राजयोग

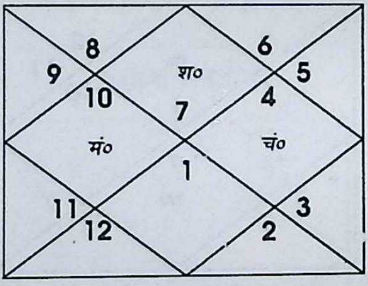

9. **नौवां राजयोग**—गुरु कर्क राशि का लग्न में, चन्द्र कर्क में, मंगल मकर में हो तो।

10. **दसवां राजयोग**— मंगल मकर राशि का लग्न में, चन्द्र कर्क में, गुरु कर्क में हो तो।

11. **ग्याहरवां ऱाजयोग**— मंगल मकर राशि का लग्न में, चन्द्र कर्क में, शनि तुला में हो तो।

12. **बाहरवां राजयोग**— शनि तुला राशि का लग्न में, चन्द्र कर्क में, मंगल मकर का हो तो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्र कर्क में, एक ग्रह उच्च का लग्न में हों तो चार राजयोग

1. **पहला राजयोग**—सूर्य मेष राशि का लग्न में हो और चन्द्र कर्क में हो तो।
2. **दूसरा राजयोग**—बृहस्पति कर्क राशि का लग्न में हो और चन्द्र कर्क में हो तो।
3. **तीसरा राजयोग**— शनि तुला राशि का लग्न में हो और चन्द्र कर्क में हो तो।
4. **चौथा राजयोग**— मंगल मकर राशि का लग्न में हो और चन्द्र कर्क में हो तो।

पहला राजयोग

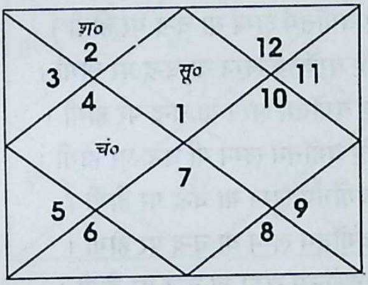

दूसरा राजयोग

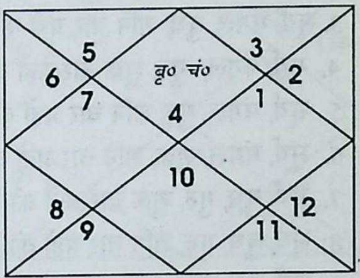

तीसरा राजयोग

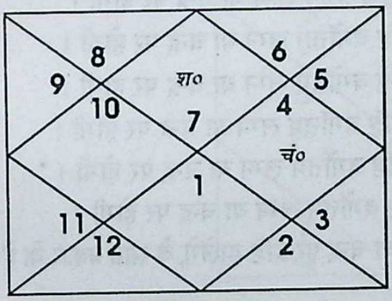

चौथा राजयोग

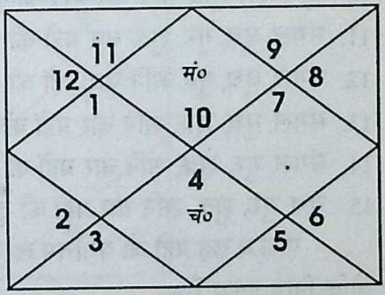

इस प्रकार कुल 32 प्रकार के राजयोग होते है।

चवालिस राजयोग

वर्गोत्तमगते लग्ने चंद्रे वा चन्द्रवार्जते।
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः ॥ 3 ॥

यदि लग्न वर्गोत्तम में हों अर्थात् लग्न राशि ही नवांश राशि भी हो और लग्न को चार, पाँच या छह ग्रह चन्द्र को छोडकरदेखते हों तो 22 प्रकार के राजयोग बनते हैं।

इसी प्रकार चन्द्रमा वर्गोत्तम में हों अर्थात् चन्द्र जन्म कुण्डली में जिस राशि में हों उसी राशि में नवांश कुण्डली में हो और चार, पाँच या छह ग्रह से दृष्ट हो तो बाईस प्रकार के राजयोग बनते हैं। अतः कुल चवालिस राजयोग बनते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— चार, पाँच या छह ग्रह का समूह इस प्रकार बनेगा जिसकी द्रष्टि वर्गोत्तम के लग्न या चन्द्र पर होगी।

चार ग्रह जो वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर द्रष्टि डालेंगे वे पन्द्रह प्रकार के हैं जोकि निम्न प्रकार हैं —

1. सूर्य, मंगल, बुध, गुरु चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
2. सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
3. सूर्य, मंगल, बुध, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
4. सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
5. सूर्य, मंगल, गुरु, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
6. सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
7. सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
8. सूर्य, बुध, गुरु, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
9. सूर्य, बुध, शुक्र, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
10. सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
11. मंगल, बुध, गुरु, शुक्र चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
12. मंगल, बुध, गुरु, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
13. मंगल, बुध, शुक्र, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
14. मंगल, गुरु, शुक्र, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
15. बुध, गुरु, शुक्र, शनि चार ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।

पाँच व छह ग्रहों जो वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर द्रष्टि डालेंगे, वे सात प्रकार के हैं जोकि निम्न प्रकार हैं—

1. सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
2. सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
3. सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
4. सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
5. सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
6. मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।
7. सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि पाँच ग्रहों की दृष्टि वर्गोत्तम लग्न या चन्द्र पर होगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँच प्रकार के राजयोग

यमे कुम्भेऽर्केऽजे गवि शशिनि तैरेव
तनुगैर्नृयुक्सिंहालिस्थैः शशिजगुरुवक्रैर्नृपतयः ।
यमेन्दू तुङ्गेऽङ्गे सवितृशशिजौ षष्ठभवने तुलाजेन्दुक्षेत्रैः
ससितकुजजीवैश्च नरपौ ॥ 4 ॥

पहला राजयोग

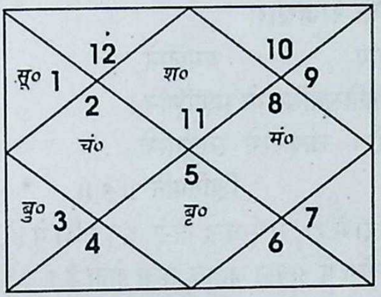

दूसरा राजयोग

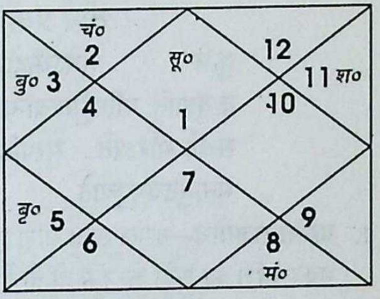

तीसरा राजयोग

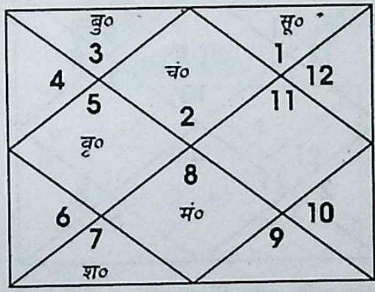

पहला राजयोग

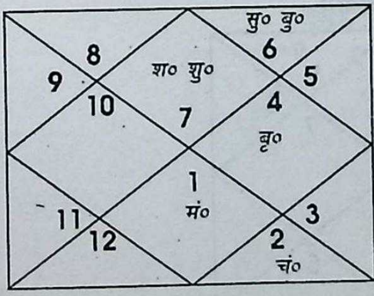

दूसरा राजयोग

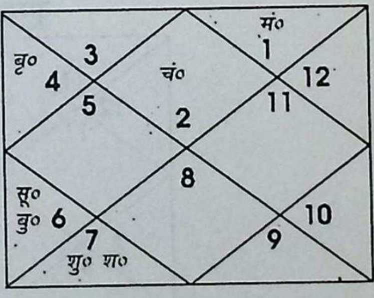

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि कुंभ राशि में, सूर्य मेष राशि में, चन्द्र वृष राशि में और इन तीनों राशियों में से कोई एक राशि लग्न में हो और बुध मिथुन राशि में, गुरु सिंह राशि में व मंगल वृश्चिक राशि में हो तो तीन प्रकार के राजयोग बनते हैं।

शनि तुला में और चन्द्र वृष राशि में हो अर्थात् अपनी उच्च राशि में हो तथा दोनों में से कोई एक राशि लग्न में हो, सूर्य-बुध कन्या में, शुक्र तुला में, मंगल मेष में व गुरु कर्क में हो तो दो प्रकार के राजयोग बनते हैं।

तीन प्रकार के राजयोग

कुजे तुंगेऽर्केन्द्वोर्द्धनुषि यमलग्ने
च कुपतिः पतिर्भूमेश्चान्यः क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि।
सचंद्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे स्वतुंगस्थे
भनावुदयमुपयाते क्षितिपतिः ॥ 5 ॥

1. **पहला राजयोग**—मंगल उच्च राशि (मकर) में हो, सूर्य-चन्द्र दोनों धनु राशि में हो, मकर राशि का शनि लग्न में हो तो इस योग में उत्पन्न जातक राजा होता है।

पहला राजयोग

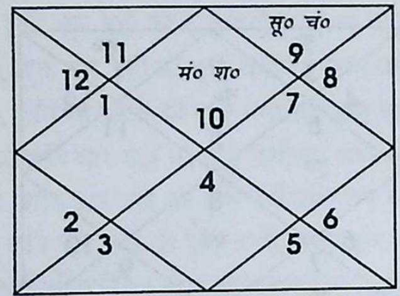

2. **दूसरा राजयोग**—मकर राशि लग्न में हों चन्द्र व मंगल भी मकर में हों और सूर्य धनु राशि में हो इस योग में तो उत्पन्न जातक राजा होता है।

दूसरा राजयोग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. तीसरा राजयोग—मेष राशि लग्न में हो, सूर्य मेष राशि में हो, गुरु धनु में और चन्द्र व शनि तुला में हो तो इस योग में उत्पन्न जातक राजा होता है ।

तीसरा राजयोग

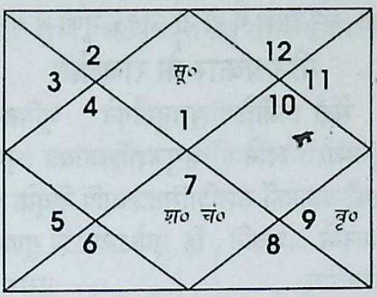

दो प्रकार के राजयोग

वृषे सेंदौ लग्ने सवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैः
सुहृज्जायाखस्थैर्भवति नियमान्मानवपतिः ।
मृगे मंद लग्ने सहजरिपुधर्मव्ययगतै शशांकाद्यैः
ख्यातः पृथुगुणयशाः पुंगलपतिः ॥ 6 ॥

पहला राजयोग

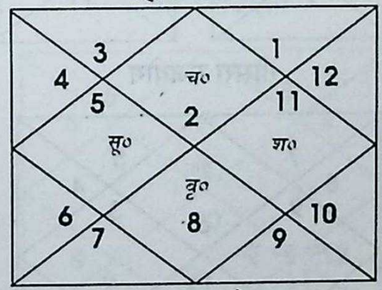

दूसरा राजयोग

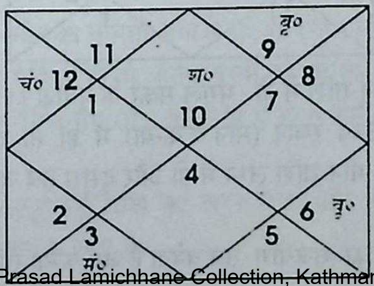

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. **पहला राजयोग**—वृष राशि का चन्द्रमा लग्न में हो, सूर्य सिंह राशि में, गुरु वृश्चिक राशि में और शनि कुंभ राशि में हो तो जातक अवश्य राजा होता है।
2. **दूसरा राजयोग**—मकर का शनि लग्न में हो और चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु क्रम से मीन, मिथुन, कन्या, धनु राशि में हों तो जातक गुणी व यशस्वी राजा होता है।

तीन प्रकार के राजयोग

हये सेंदौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये
स्वतुंगस्थौ लग्ने भृगुजशशिजावत्र नृपती।
सुतस्थौ वक्रार्की रुशशिसिताश्चापि हिबुके बुधे
कन्यालग्ने भवति हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान्॥ 7 ॥

पहला राजयोग

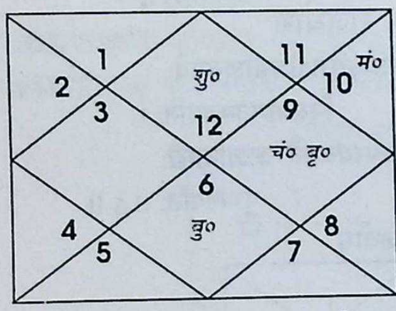

दूसरा राजयोग

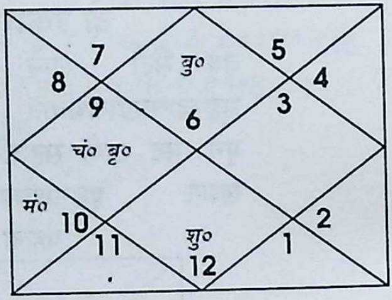

तीसरा राजयोग

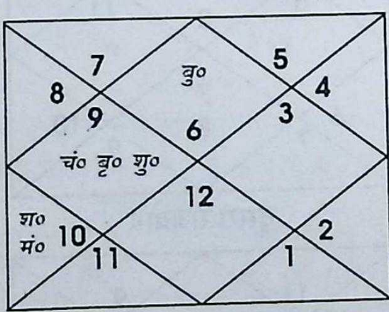

चन्द्र व गुरु धनु राशि में हो, मंगल मकर के पूर्वार्द्ध (1 से 15 अंश तक) में हो और शुक्र-बुध अपने उच्च स्थान (मीन व कन्या) में हों तो दो प्रकार के राजयोग बनते हैं, एक तब जब मीन राशि लग्न में हो और दूसरा तब जब कन्या राशि लग्न में हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

तीसरे प्रकार का राजयोग तब बनता है जब कन्या राशि का बुध लग्न में हो,

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि-मंगल मकर राशि में हो और गुरु, चन्द्र व शुक्र धनु राशि में हों तो जातक शिक्षित, गुणी व यशस्वी राजा होता है।

अन्य तीन प्रकार के राजयोग

झषे सेंदौ लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेषु सहितैर्यमारार्कैर्योऽ भूत्स
खलु मनुजः शास्ति वसुधाम्।
अजे सारे मूर्तौ शशिगृहगते चामारगुरौ
सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योऽपि गुणवान्॥ ४॥

पहला राजयोग

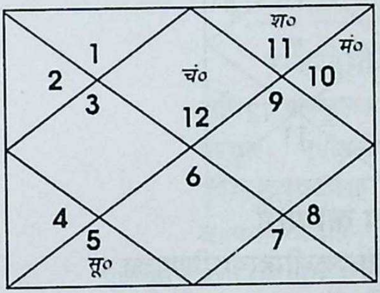

दूसरा राजयोग

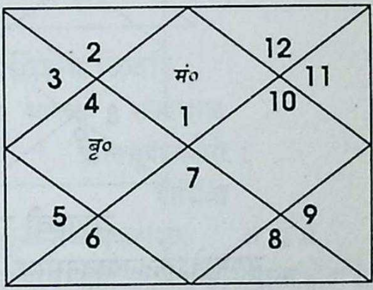

तीसरा राजयोग

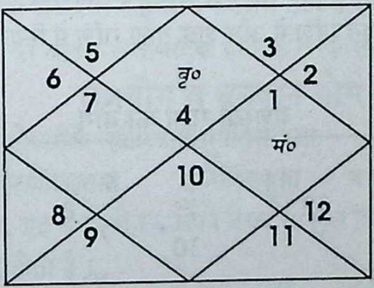

1. **पहला राजयोग**—मीन का चन्द्रमा लग्न में हों, शनि कुंभ राशि में, मंगल मकर राशि में और सूर्य सिंह राशि में हों तो जातक पृथ्वी का शासक होता है।
2. **दूसरा राजयोग**—मंगल मेष राशि का लग्न में हो व गुरु कर्क राशि हो तो जातक राजा होता है।
3. **तीसरा राजयोग**—गुरु कर्क राशि का लग्न में हो और मंगल मेष राशि का हो तो जातक भूमि का शासक होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पराक्रमी राजा का योग

कर्किणि लग्ने तत्स्थे जीवे चंद्रसिझैरायप्राप्तेः ।
मेषगतेऽर्के जातं विंद्याद्विक्रमयुक्तं पृथ्वीनाथम् ॥ 9 ॥

कर्क राशि का गुरु लग्न में हो , चन्द्र , शुक्र व बुध ग्यारहवें भाव में वृष राशि में हों और सूर्य मेष राशि में हो तो जातक पराक्रमी राजा होता है ।

पराक्रमी राजा का योग

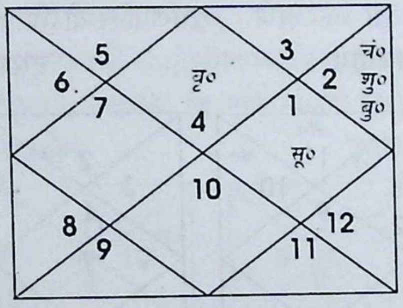

यशस्वी राजा का योग

मृगमुखेऽर्कतनयस्तनुसंस्थ क्रियकुलीरहरयोऽधिपयुक्ताः ।
मिथुनतौलिसहितौ बुधशुक्रौ यदि तदा पृथुयशाः पृथिवीशः ॥ 10 ॥

शनि मकर राशि का लग्न में हो , मंगल मेष राशि में , चन्द्र कर्क राशि में , सूर्य सिंह राशि में , बुध मिथुन राशि में और शुक्र तुला राशि में स्थित हो तो जातक यशस्वी राजा होता है ।

यशस्वी राजा का योग

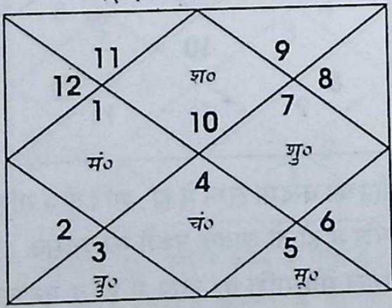

राजयोग

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते ।
[illegible] निशानाथे राजा मंदारयोः सुते ॥ 11 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुध कन्या लग्न में हो, शुक्र मिथुन राशि में, गुरु व चन्द्र मीन राशि में, शनि व मंगल मकर राशि में स्थित हो तो जातक राजा होता है।

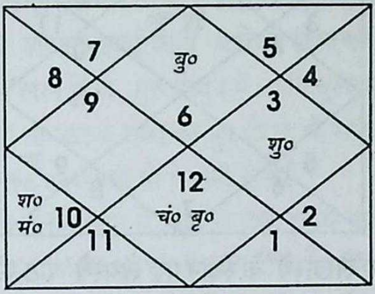

राजयोगों में विशेष विचार

अपि खलकुलजाता मानवा राज्यभाजः
किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तभूपालयोगैः।
नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवा
वक्ष्यमाणैर्भवतिनृपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्रः ॥ 12 ॥

पूर्वोक्त समस्त राजयोगों में उत्पन्न नीच जाति का जातक भी राजा होता है, तब राजवंश में उत्पन्न जातक निश्चय ही राजा होता हैं।

अब आगे जो राजयोग कहें जायेंगे उसमें उत्पन्न राजकुल का जातक ही राजा होता है, अन्य कुल का जातक राजा सदृश होता है न कि राजा होता है।

राजयोग व धनवान योग

उच्चस्वत्रिकोणगैर्बलस्थैस्त्र्याद्यैर्भूपतिवंशजा नरेंद्राः।
पंचादिभिरन्यवंशजाता हीनैर्वित्तयुता न भूमिपालाः ॥ 13 ॥

तीन या चार ग्रह बली होकर अपने उच्च या मूल त्रिकोण में हों तो राजवंश में उत्पन्न जातक राजा होता है।

यदि पाँच, छह या सात ग्रह बली होकर अपने उच्च या मूल त्रिकोण में हों तो नीच कुल में उत्पन्न जातक भी राजा होता है।

यदि उपर्युक्त से अन्य अर्थात तीन, चार ग्रह बली होकर उच्च या मूल त्रिकोण में हों तो राजा न होकर धनवान होता है।

लेखास्थेऽर्केऽजेंदौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुंभे मंदे।
चापप्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विंद्यात्पृथ्वीनाथम ॥ 14 ॥

मेष राशि के सूर्य व चन्द्र लग्न में हों, मंगल उच्च राशि में, शनि कुंभ राशि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में और गुरु धनु राशि में स्थित हों तो राजकुल में उत्पन्न जातक ही राजा होता है ।

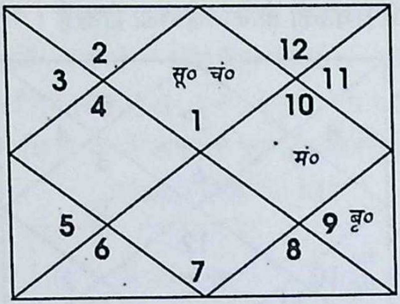

टिप्पणी—कोई विद्वान 'लेखास्थे' के स्थान पर 'लेयस्थे' पाठ को मानते हैं अर्थात उक्त योग में सूर्य मेष का न होकर सिंह का हो तो राजा होता है, ऐसा अर्थ करना भी उचित है ।

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चंद्रे।
दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः ॥ 15 ॥

शुक्र स्वराशि वृष या तुला का लग्न से चतुर्थ भाव में हो, चन्द्र नौवें भाव में और अन्य ग्रह सूर्य, मंगल व बुध और गुरु, शनि क्रम से 3,1,11वें हों तो राजकुल में उत्पन्न जातक राजा होता है ।

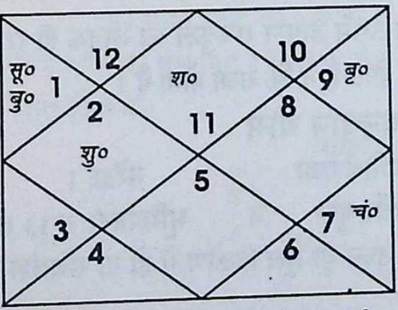

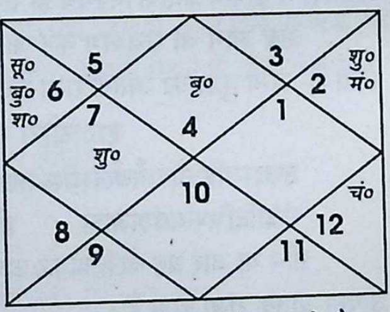

टिप्पणी—यदि कुम्भ लग्न हो या कर्क लग्न हो तो दो प्रकार के राजयोग बनते है ।

सौम्ये वीर्ययुते तनुयुक्ते वीर्याढ्ये च शुभे शुभयाते।
धर्मार्थोपचयेष्ववशेषैर्धर्मात्मा नृपजः पृथिवीशः ॥ 16 ॥

बली बुध लग्न में हों , शुभ ग्रह शुक्र या गुरु बली होकर नौवें भाव में हो और शेष ग्रह (सूर्य , चन्द्र , मंगल , शनि) सम्भवतः 9,2,3,6,10 या 11वें भाव में हों तो जातक धर्मात्मा राजा होता है ।

टिप्पणी—1. यह योग किसी भी [illegible] राशि में हो सकता है । 2. कुछ विद्वान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

'शुभयाते' के स्थान पर 'सुखयाते' पाठ पढ़ते हैं अर्थात् इससे तात्पर्य यही है कि शुभ ग्रह चौथे भाव में हों।

वृषोदये मूर्तिधनारिलाभगैः शशांकजीवार्कसुतापरैर्नृपः।
सुखे गुरौ खे शशितीक्ष्णदीधिती यमोदये लाभगतै नृपोऽपरैः ॥ 17 ॥

चन्द्र वृष राशि का लग्न में हो, गुरु मिथुन में, शनि तुला में, सूर्य, मंगल, बुध और शुक्र मीन राशि में हो तों जातक राजा का पुत्र हो तो ही राजा होता है। यदि इस योग से अन्य कुल के जातक उत्पन्न हों तो वे धनी होते हैं।

गुरु चतुर्थ भाव में, शनि लग्न में, सूर्य व चन्द्र दसवें भाव में, मंगल, बुध व शुक्र ग्याहरवें हों तो जातक राजा का पुत्र हो तो राजा होता है। यह योग द्वादश राशियों में किसी में भी हो सकता है।

मेषूरणायतनुगाः शशिमंदजीवा
ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेंद्रम।
वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या
होरासुखास्तशुभखाप्तिगताः प्रजेशम् ॥ 18 ॥

चन्द्र दसवें भाव में, शनि ग्याहरवें भाव में, गुरु लग्न में, बुध-मंगल द्वितीय भाव में और शुक्र व सूर्य चौथे भाव में हो तो राजकुल में उत्पन्न जातक राजा होता है।

मंगल व शनि लग्न में हो, चन्द्र चतुर्थ भाव में हो, गुरु सातवें भाव में हो, शुक्र नौवें भाव में हो, सूर्य दसवें भाव में हो, बुध ग्याहरवें भाव में हो तो राजकुल में उत्पन्न जातक राजा होता है। यदि अन्य कुल का जातक इस योग में उत्पन्न हो तो वह राजा की तरहं धनी होता है।

राज्य प्राप्ति का समय

कर्मलग्नयुतपाकदशायां नाज्यलब्धिरथवा प्रबलस्य।
शत्रुनीचगृहयातदशायां छिद्रसंश्रयदशा परिकल्प्या ॥ 19 ॥

राजयोग कारक ग्रहों में जो ग्रह दसवें या लग्न में स्थित हो उसकी दशा-अन्तर्दशा में राज्य लाभ होता है। यदि दोनों स्थानों (दसवें या लग्न) में राजयोग कारक ग्रह हों तो उनमें से जो बली हो उसकी दशा-अन्तर्दशा में राज्य लाभ होता है। यदि बली ग्रह शत्रु या नीच स्थान में हों तो उनकी दशा-अन्तर्दशा में सत्ता मुक्त होना पड़ता है। किन्तु राजादि के आश्रय से पुनः राज्य प्राप्त हो जाता है, यदि निर्बल ग्रह शत्रु या नीच स्थान पर हों।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोगी योग

गुरुसितबुधलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे वियति
दिवसनाथे भोगगिनां जन्म विंद्यात्।
शुभबलयुतकेन्द्रैः क्रूरसंस्थैश्च पापैर्व्रजति
शबरदस्युस्वामिता मर्थभाकच ॥ 20 ॥

यदि गुरु , शुक्र या बुध लग्न में हों , शनि सातवें भाव में हो और सूर्य दसवें भाव में हों तो इस योग में उत्पन्न जातक भोगी होता है ।

यदि केन्द्र में शुभ ग्रह शुभ राशि में हो और पाप ग्रह पाप राशियों में हो तो जातक धनी उत्पन्न होता है । किन्तु बाद में डकैतों व चोरों का सरदार बन जाता है ।

टिप्पणी—कोई विद्वान 'गुरुसित बुधलग्ने' का अर्थ गुरु की राशि (धनु-मीन) , शुक्र की राशि (वृष-तुला) या बुध की राशि (मिथुन-कन्या) लग्न में हो करते है । कुछ 'शुभ बलयुक्त केन्द्र' अर्थात् बली शुभ ग्रह केन्द्र में हों किन्तु यह ठीक नहीं है । गार्गी के अनुसार वराहमिहिर ने यह माना है कि यह योग अपथ्थ है क्योंकि दशम में सूर्य के रहने पर बुध व शुक्र लग्न में नहीं हो सकते हैं । यह प्राचीन लेखक के मत से अधिक कुछ नहीं है ।

इति श्री वराहमिहिर विरचिते बृहज्जातके राजयोगाध्याय: एकादश: ॥ 11 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

12 नाभसयोगाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर अनेक ज्योतिष योगों की चर्चा करेंगे। इन ज्योतिष योगों की सहायता से फलित करने में सहायता मिलती है।

योगों की संख्या

नवदिग्वसवस्त्रिकाग्निवेदै गुंणिता
द्वित्रिचतुर्विकल्पजाः स्युः।
थवनैस्त्रिगुणा हि षट्शती सा कथिता
विस्तरतोऽत्र तत्समाः स्युः ॥ 1 ॥

संख्या 9,10,8 को क्रम से 3,3,4 से गुणा करने पर 27,30,32 भेद क्रम से आकृतादि योगों को परस्पर बदलने से इनकी संख्या प्राप्त होती है। प्रथम दो, प्रथम तीन और प्रथम चार संख्या का औसत चार प्रकार के नाभस योगों के भेदों का संकेत देता है। पहले प्रकार का आकृति योग, दूसरे प्रकार का संख्या योग, तीसरे प्रकार का आश्रय योग और चौथे प्रकार का दल योग।

इनमें द्विविकल्प के (आकृति के संख्या के साथ बदलने से) 27, त्रिविकल्प के (आकृति, संख्या, आश्रय इन तीनों को आपस में बदलने से) 30, चतुर्विकल्प के (आकृति, संख्या, आश्रय, दल इन चारों को आपस में बदलने से) 32 भेद होते हैं।

आकृति योग के 20 भेद, संख्या योग के सात भेद, आश्रय योग के 3 भेद और दल योग के 2 भेद हैं। कुल बत्तीस भेद होते हैं।

इन योगों के यवनाचार्य ने विस्तार से 1800 भेद कहे हैं। यहाँ वराहमिहिराचार्य ने संक्षेप में 32 योग कहें हैं क्योंकि यवनाचार्य के 1800 योगों का फल इन 32 योगों में समाहित हैं।

तीन आश्रय योग और दो दल योग

रज्जर्मुशलं नलश्चराद्यैः सत्यश्चाश्रयजाज्जगाद योगान्।
केंद्रैः सदसद्युतैर्दलाख्यौ स्त्रक्सर्पौ कथितौ पराशरेण ॥ 2 ॥

सूर्यादि सातों ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि) एक, दो, तीन या चारों चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में स्थित हों तो 'रज्जु' (Rope) नामक योग होता है।

सूर्यादि सातों ग्रह एक, दो, तीन या चारों स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) में हो तो 'मुसल' (Club) नामक योग होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्यादि सातों ग्रह एक, दो, तीन या चारों द्विस्वभाव राशि (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) में हों तो **'नल'** (Tube) नामक योग होता है।

रज्जु योग

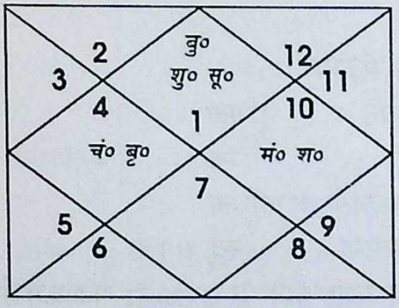

मुसल योग

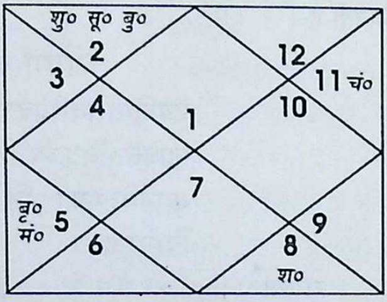

नल योग

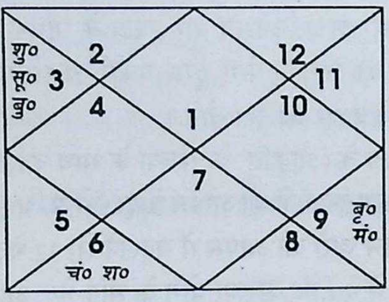

केन्द्र शुभाशुभ ग्रह से युत क्रम से माला (Garlaud) और सर्प (Serpent) नामक दल योग होता है। जैसे चारों केन्द्र में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) क्रम से किसी तीन केन्द्रों में स्थित हो तो **माला** नामक्र योग होता है और यदि पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) केन्द्र में अलग-अलग स्थित हों तो **सर्प** नामक योग होता है।

माला योग

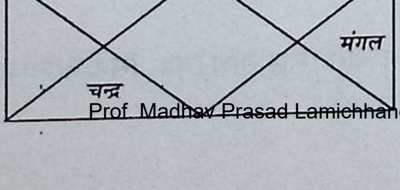

सर्प योग

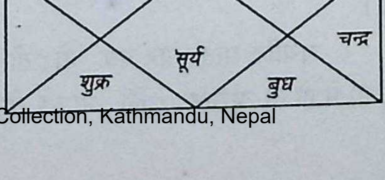

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— 1. रज्जु योग में उत्पन्न जातक जुए में माहिर, धनी और विदेश में रहता है। 2. मुसल योग में उत्पन्न जातक धनी और सम्मानित होता है। 3. नल योग में उत्पन्न जातक कृश या मोटा होता है और चतुर व धन का संचय मनोरंजन या मनोविनोद करता है। 4. सर्प योग अशुभ फल एवं माला योग शुभ फल देता है।

योगों की समता एवं फल पर विचार

योगा व्रजंत्याश्रयजाः समत्वं यवाब्जवज्रांडजगोलकाद्यैः।
केंद्रोपगैः प्रोक्तफलौ दलाख्याावित्याहुरन्ये न पृथक्फलौ तौ ॥ 3 ॥

अन्य ज्योतिर्विदों ने कहा है कि आश्रय योग (रज्जु, मुसल व नल) यव (Barley), अब्ज (Lotus), वज्र (Thunderbolt), अण्डज (Bird), गोलक (Globe) और अगले श्लोक में कहे गए योगों के समान ही हैं और इन के फल भी समान ही हैं। इसीलिए अन्य आचार्यों ने इन आश्रय योगों को पृथक नहीं कहा है।

केन्द्र में शुभ ग्रह होने से शुभ फल और पाप ग्रह होने से अशुभ फल होता है, इस तरह अन्य आचार्यों के फलादेश से माला और सर्प नामक दल योग की उक्ति हो जाती है किन्तु उन्होंने नाम सहित नहीं कहा है। वराहमिहिर ने नाम लेकर कहा हैं और यही उनकी विशेषता है जोकि स्पष्टता के लिए उचित ही है।

आकृति योग

आसन्नकेंद्रभवनद्वयगैर्गदाख्यस्तन्वस्तगेषु शकटं विहगः खंबध्वोः।
श्रृंगाटकं नवमपंचमलग्नसंस्थैर्लग्नान्यगैर्हलमिति प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ 4 ॥

समीप के दो केन्द्र स्थानों में सब ग्रह स्थित हों तो **'गदा'** नामक योग होता है।
सभी ग्रह लग्न और सप्तम स्थान में स्थित हों तो **'शकट'** योंग होता है।
सभी ग्रह दशम और चतुर्थ स्थान में स्थित हों तो **'विहग'** योग होता है।
सभी ग्रह नवम, पंचम और लग्न में स्थित हों तो **'श्रृगांष्टक'** नामक योग होता है।

यदि सभी ग्रह अन्य त्रिकोण भावों में होते हैं तो **'हल'** योग होता है, ऐसा जानेमाने ज्योतिर्विदों का कहना है।

टिप्पणी—1. वराहमिहिर ने इस श्लोक में 5 आकृति योगों की चर्चा की हैं। 2. गदा योग के चार भेद होते हैं—1. गदा योग (लग्न व चतुर्थ में स्थित हो), 2. सामान्य योग (चतुर्थ व सप्तम में स्थित हो), 3. बावरुक (सप्तम व दशम में स्थित हो), 4. ध्वजा (दशम व लग्न में स्थित हो) 3. हल योग के भी तीन भेद होते हैं—(i) सभी ग्रह 2,6 और 10वें भाव में स्थित हों। (ii) सभी ग्रह 3,7 और 11वें भाव में स्थित हों। (iii) सभी ग्रह 4,8

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

और 12वें भाव में स्थित हों।

गदा योग

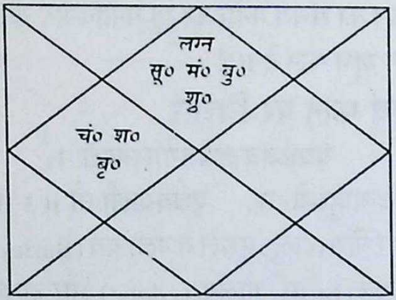

शकट योग

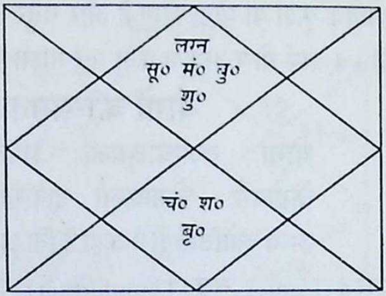

विहग योग

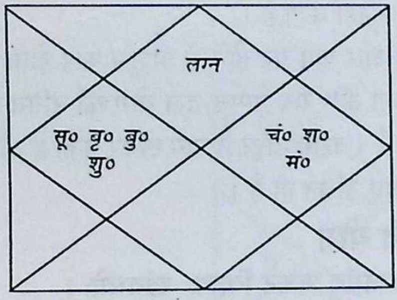

श्रृंगाष्टक योग

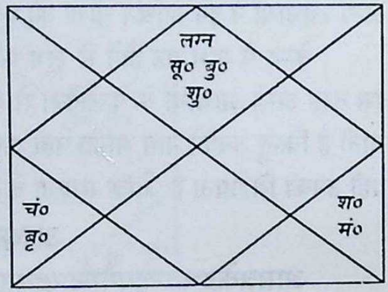

हल योग

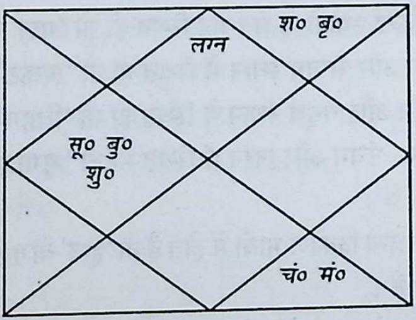

वज्रादि योग

शकटांडजवच्छुभाशुभैर्वज्रं तद्विपरीतगैर्यवः।
कमलं तु विमिश्रसंस्थितैर्वापि तद्यदि केंद्रबाह्यतः ॥ 5 ॥

जब शुभ ग्रह लग्न व सप्तम भाव में हों और चौथे व बारहवें भाव में पाप ग्रह हों तो वज्र योग होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब वज्र से उल्टे शुभ ग्रह व पाप ग्रह स्थित हों तो **यव** योग होता है अर्थात् लग्न व सप्तम में पाप ग्रह और चतुर्थ व दशम में शुभ ग्रह हों तो यव योग होता है ।

सभी शुभ ग्रह और पाप ग्रह चारों केन्द्र में स्थित हों तो कमल योग अर्थात् **अब्ज** योग होता है ।

यदि शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र स्थानों में स्थित न होकर पणकर तथा आपोक्लिम स्थानों में स्थित हों तो **वापी** योग होता है ।

कमल योग

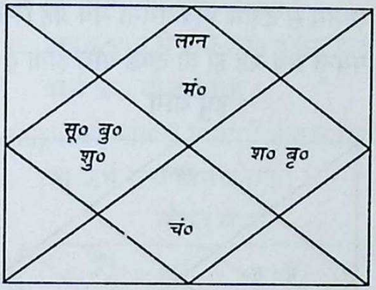

वज्र योग

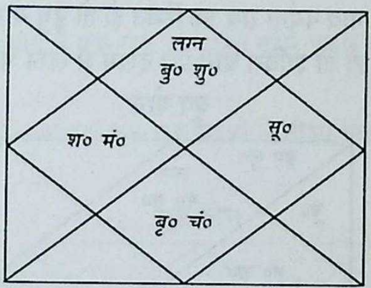

वापी योग

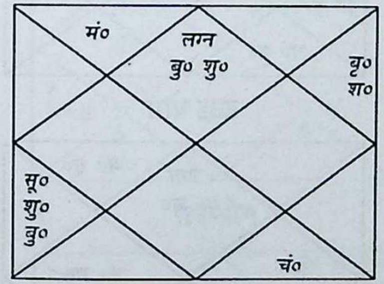

यव योग

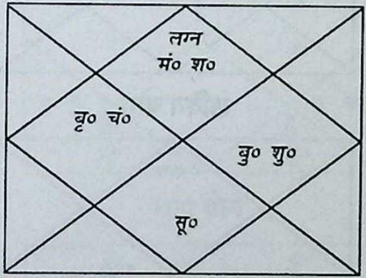

विशेष विचार

पूर्वशास्त्रानुसारेण मया वज्रादयः कृताः ।
चतुर्थे भवने सूर्याज्ञसितौ भवतः क्रथम् ॥ 6 ॥

ग्रन्थकार का कथन है कि मय, यवन और अन्य आचार्यों के कथनानुसार मैंने वज्र आदि योगों को कहा है । लेकिन इन योगों के होने में प्रत्यक्ष दोष यह है - जैसे लग्न व सप्तम इन दोनों में शुभ ग्रह और चतुर्थ व दशम इन दोनों में पाप ग्रह हों तो वज्र योग होता है । ग्रहों में सूर्य पाप ग्रह है जबकि बुध , शुक्र शुभ ग्रह हैं । सूर्य से चतुर्थ स्थान में बुध , शुक्र कदापि नहीं होते हैं क्योंकि सूर्य से बुध और शुक्र 28 या 48 अंश से अधिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूर हो नहीं सकते अर्थात् सूर्य से चौथे भाव में इनका होना असम्भव है ।

यूप , इषु , शक्ति व दण्ड योग

कंटकादिप्रवृत्तैस्तु चतुर्गृहतैर्ग्रहैः ।
यूपेषु शक्तिदंडाख्या होराद्यैः कंटकैः क्रमात् ॥ 7 ॥

केन्द्र के आदि (लग्न) से आरम्भ करके चार-चार स्थानों में जब सब ग्रह स्थित हों तो क्रमशः यूप, इषु, शक्ति, दण्डये चार योग होते हैं ।

जैसे लग्न से चतुर्थ भाव पर्यन्त सब ग्रह स्थित हों तो **यूप योग**, चतुर्थ से सप्तम भाव पर्यन्त सब ग्रह स्थित हों तो **इषु योग**, सप्तम से दशम भाव पर्यन्त सब ग्रह स्थित हों तो **शक्ति योग** एवं दशम से लग्न भाव पर्यन्त सब ग्रह हों तो **दण्ड योग** होता है ।

यूप योग

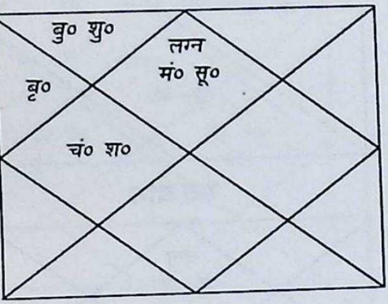

इषु योग

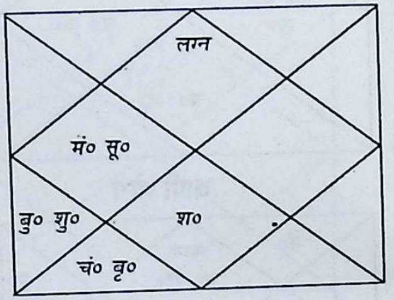

शक्ति योग

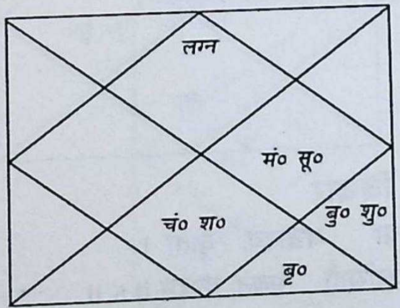

दण्ड योग

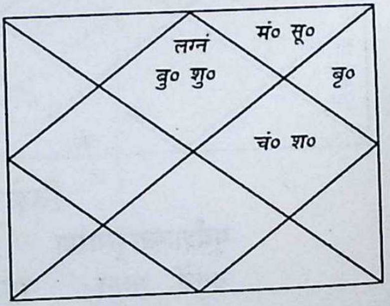

नौका , कूट , छत्र , चाप और अर्ध चन्द्र योग

नौकूटच्छत्रचापानि तद्वत्सप्तर्क्षसंस्थितैः ।
अर्द्धचंद्रस्तु नावाद्यैः प्रोक्तस्त्वन्यर्क्षसंस्थितैः ॥ 8 ॥

लग्न, चतुर्थ, सप्तम व दशम भाव से आरम्भ करके सात-सात स्थानों में सब ग्रह स्थित हों तो क्रमशः नौका, कूट, छत्र, चाप ये चार योग होते हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे लग्न से सप्तम भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह स्थित हों तो **नौका योग**, सप्तम से दशम भाव पर्यन्त सातों भावों में सात ग्रह हों तो **कूट योग**, सप्तम से लग्न भाव पर्यन्त सातों भावों में सात ग्रह हों तो **छत्र योग** और दशम भाव से लेकर चतुर्थ भाव पर्यन्त सातों भावों में सात ग्रह हों तो **चाप योग** होता है ।

यदि ये सातों ग्रह सात भावों में पणकर (2,5,8,11) या आपोक्लिम (3,6,9,12) से प्रारम्भ करके आठ प्रकार के अर्ध चन्द्र योग बनते हैं, जो इस प्रकार हैं—

(i) द्वितीय भाव से आठवें भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो एक प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा ।

(ii) तृतीय भाव से नौवें भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो दूसरे प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा ।

(iii) पाँचवें भाव से ग्याहरवें भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो तीसरे प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा ।

नौका योग

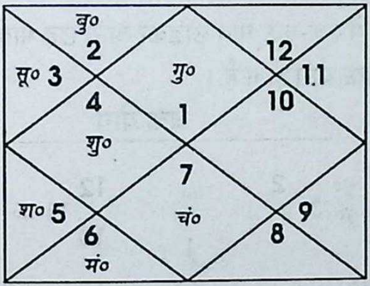

कूट योग

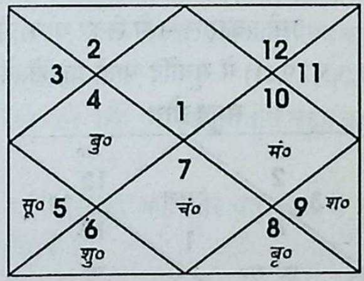

छत्र योग

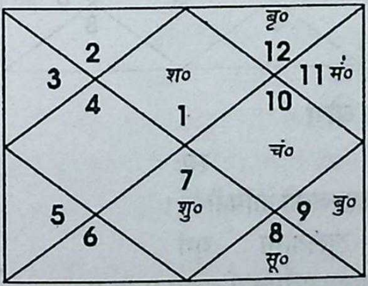

चाप योग

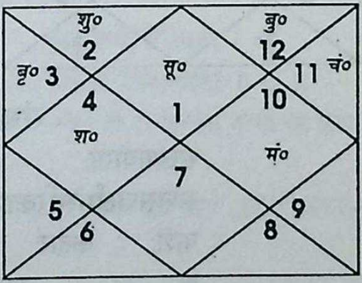

(iv) छठें भाव से बारहवें भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो चौथे प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

(v) आठवें भाव से दूसरे भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो पाँचवें प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा।

(vi) नौवें भाव से तीसरे भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो छठें प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा।

(vii) ग्याहरवें भाव से पाँचवें भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो तो सातवें प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा।

(viii) बारहवें भाव से छठे भाव पर्यन्त प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हों तो आठवें प्रकार का अर्ध चन्द्र योग बनेगा।

समुद्र और चक्र योग

एकांतरगतैरर्थात्समुद्रः षड्गृहाश्रितैः।
विलग्नादिस्थितैश्चक्रमित्याकृतिजसंग्रहः ॥ 9 ॥

दूसरे भाव से लेकर बीच-बीच में एक-एक भाव छोड़कर अन्य छह भावों (2,4,6,8,10,12) में सूर्यादि सातों ग्रह हों तो **समुद्र योग** होता है।

इसी प्रकार लग्न से लेकर बीच-बीच में एक-एक भाव छोडकर अन्य छह भावों (1,3,5,7,9,11) में सूर्यादि सातों ग्रह हों तो **चक्र योग** होता है।

समुद्र योग

चक्र योग

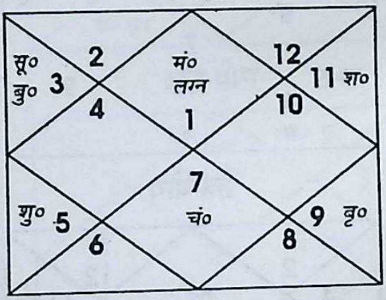

संख्या योग

संख्यायोगाः स्युः
सप्तसप्तर्क्षसंस्थैरेकापायाद्वल्लकी दामिनी च।
पाशः केदारः शूलयोगो युगं
च गोलश्चान्यान्पूर्वमुक्तान्विहाय ॥ 10 ॥

सूर्यादि सातों ग्रह किसी भी सात भावों में स्थित हों तो **'वल्लकी योग'** होता हैं, सातों ग्रह किसी भी छह भावों में स्थित हों तो **'दामिनी योग'**, सातों ग्रह जिस किसी भी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँच भावों में स्थित हों तो **'पाश योग'** होता है , सातों ग्रह जिस किसी भी चार भावों में स्थित हों तो **'केदार योग'** होता है , सातों ग्रह जिस किसी भी तीन भावों में स्थित हों तो **'शूल योग'** होता है , सातों ग्रह जिस किसी भी दो भावों में स्थित हों तो **'युग योग'** होता है और सातों ग्रह जिस किसी भी एक भाव में स्थित हों तो **'गोल योग'** होता है ।

पूर्व कथित अन्य योगों को छोडकर ये योग होते हैं । कहने का तात्पर्य यही है कि पूर्व कथित योगों के होते हुए भी किसी योग के समान इन संख्या योगों में से कोई योग हो तो पूर्व कथित योग ही मानना चाहिए, संख्या योग नहीं । क्योंकि ऐसी कुण्डली में पूर्व कथित योग का फल ही घटता है , संख्या योग का नहीं ।

आश्रय और दल योग का फल

ईर्ष्युर्विदेशनिरतोऽध्वरुचिश्च रज्ज्वां
मानी धनी च मुशले बहुकृत्यसक्तः ।
व्यंगः स्थिराढ्यनिपुणो नलजः स्त्रगुत्थो भोगान्वितो
भुजगजो बहुदुःखभाक्स्यात् ॥ 11 ॥

रज्जु योग में उत्पन्न जातक ईष्यालु अर्थात् दूजों की भलाई देखकर सन्ताप करने वाला , परदेश में रहने वाला और यात्रा का शौकीन होता है ।

मूसल योग में उत्पन्न जातक अभिमानी, धनी और परिश्रमी अर्थात् बहुत कार्य करने वाला होता है ।

नल योग में उत्पन्न जातक अंगहीन, दृढ़ निश्चयी, धनी और चतुर होता है ।

माला योग में उत्पन्न जातक भोगी होता है ।

सर्प योग में उत्पन्न जातक अत्यन्त दुःखी होता है ।

विशेष फल विचार

आश्रयोक्तास्तु विफला भवन्त्यन्यैर्विमिश्रताः ।
मिश्रा यैस्ते फलं दद्युरमिश्राः स्वफलप्रदाः ॥ 12 ॥

यदि आश्रय योग अन्य यवादि योगों से मिश्रित हों तो आश्रय योगों का फल न होकर यवादिं योगों का फल घटित होता है ।

यदि यवादि योगों में आश्रय योग मिश्रित हो तो आश्रय योग अपना फल देता है ।

गदा , शकट , विहग व श्रृंगाष्टक योग का फल

यज्वार्थभाक्सततमर्थरुचिर्गदायां तद्वृत्तिभुक् शकटजः सरुजः कुदारः ।
दूतोऽटनः कलहकृद्विहगे प्रदिष्टः शृङ्गाटके चिरसुखी कृषिकृद्धलाख्ये ॥ 13 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

गदा योग में उत्पन्न जातक यज्ञ कर्ता, धार्मिक, बलिदान करने वाला, धन संग्रह करने वाला और भोगने वाला होता है ।

शकट योग में उत्पन्न जातक गाड़ियों से जीविका कमाने वाला, रोगी और निन्दित स्त्री से युक्त होता है ।

विहग योग में उत्पन्न जातक दूत का कार्य करने वाला, यात्रा में रहने वाला और झगड़ालू होता है ।

शृंगाष्टक योग में उत्पन्न जातक जीवन पर्यन्त सुखी होता है ।

हल योग में उत्पन्न जातक किसान या खेती से जीविका कमाने वाला होता है ।

वज्र , यव , पद्म व वापी योग का फल

वज्रेंऽत्यपूर्वसुखिनः सुभगोऽतिशूरो
वीर्यान्वितोऽप्यथ यवे सुखितो वयोंऽतः ।
विख्यातकीर्त्यमितसौख्यगुणश्च पद्मे वाप्यां
तनुस्थिरसुखो निधिकृन्न दाता ॥ 14 ॥

वज्र योग में उत्पन्न जातक युवा एवं वृद्धावस्था में सुखी, सबका प्रिय और महावीर या शूरवीर होता है ।

यव योग में उत्पन्न जातक पराक्रमी और मध्यावस्था में सुखी होता है ।

पद्म योग में उत्पन्न जातक अतिशय कीर्ति, गुणों व सुखों का स्वामी होता है ।

वापी योग में उत्पन्न जातक दीर्घ काल पर्यन्त थोडा सुख पाने वाला, भूमि में धन छिपाने वाला और कंजूस होता है ।

यूप , शर , शक्ति व दण्ड योग का फल

त्यागात्मवान्क्रतुवरैर्यजयते च यूपे
हिंस्त्रोऽथ गुप्त्यधिकृतः शरकृच्छराख्ये ।
नीचोऽलसः सुखधनैर्वियुतश्च शक्तौ दंडे
प्रियैर्विरहितः पुरुषोंऽत्यवृत्तिः ॥ 15 ॥

यूप योग में उत्पन्न जातक दानी, अप्रमादी और महायज्ञी या बलिदान देने वाला होता है ।

शर योग में उत्पन्न जातक जीव हत्या या शिकारी, जेलर, हत्यारा और धनुष-बाण बनाने वाला होता है ।

शक्ति योग में उत्पन्न जातक गरीब, अप्रसन्न, नीच कर्मरत और आलसी होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दण्ड योग में उत्पन्न जातक पुत्र, मित्र, स्त्री आदि प्रिय या निकटस्थों से हीन और दास कर्म करके जीवन यापन करता है ।

नौका, कूट, छत्र व चाप योग का फल

कीर्त्या युतश्चलसुखः कृपणश्च नौजः
कूटेऽनृतप्लवनबंधनपश्च जातः ।
छत्रोद्भवः स्वजनसौख्यकरोंऽत्यसौख्यः
शूरश्च कार्मुकभवः प्रथमांत्यसौख्यः ॥ 16 ॥

नौका योग में उत्पन्न जातक यशस्वी, कभी सुखी व कभी दुःखी और कृपण होता है ।

कूट योग में उत्पन्न जातक झूठा, मध्यस्थ, जेलर या जेल का रक्षक होता है ।

छत्र योग में उत्पन्न जातक स्वजनों को सुख देने वाला और वृद्धावस्था में सुखी होता है ।

चाप योग में उत्पन्न जातक शूर, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में सुखी होता है ।

अर्ध चन्द्र, समुद्र, चक्र व वीणा योग का फल

अर्धेंदुजः सुभगकांतवपुः प्रधानस्तोयालये नरपतिप्रतिमस्तु भोगी ।
चक्रे नरेंद्रमुकुटद्युतिरंजितांघ्रिर्वीणोद्भवश्च निपुणः प्रियगीतनृत्यः ॥ 17 ॥

अर्ध चन्द्र योग में उत्पन्न जातक सबका प्रिय, सुन्दर और सबसे श्रेष्ठ होता है ।

समुद्र योग में उत्पन्न जातक राजा के समान और भोगी होता है ।

चक्र योग में उत्पन्न जातक महाराजाधिराज होकर राजाओं द्वारा पूज्य होता है एवं सिर पर स्वर्ण-रत्नादि जड़ित मुकुट पहनता है ।

वीणा योग में उत्पन्न जातक चतुर, नृत्य, गायन एवं संगीत मं रुचि रखने वाला होता है ।

दामिनी, पाश, केदार और शूल योग का फल

दातान्यकार्यनिरतः पशुपश्च दाम्नि पाशे धनार्जनविशीलसभृत्यबन्धुः ।
केदारजः कृषिकरः सुबहूपयोज्यः शूरः क्षतो धनरुचिर्विधनश्च भूले ॥ 18 ॥

रज्जु (दामिनी) योग में उत्पन्न जातक दानी, परोपकारी और पशु पालक होता है ।

पाश योग में उत्पन्न जातक ईमानदारी से धन कमाने वाला, सेवक, मित्र व बन्धुओं से युक्त होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

केदार योग में उत्पन्न जातक खेती द्वारा धन कमाने वाला एवं बहुतों का भला करने वाला होता है।

शूल योग में उत्पन्न जातक शूरवीर, शरीर पर जख्मों के चिह्न से युक्त या अंगहीन शरीर वाला, धन कमाने में रुचि रखने पर भी गरीब होता है।

युग व गोल योग का फल

धनविरहितः पाखंडी वा युगे त्वथ
गोलके विधनालिनो ज्ञानोपेतः कुशिल्प्यलसोऽटनः।
इति निगदिता योगाः सार्द्धं फलैरिह नाभसा
नियतफलदाश्चिंत्या ह्येते समस्तदशास्वपि॥ 19॥

युग योग में उत्पन्न जातक धनहीन, अधर्मी और धर्मशास्त्रों की निन्दा या आलोचना करने वाला होता है।

गोल योग में उत्पन्न जातक निर्धन, मलिन, अज्ञानी, कुकर्मी, आलसी और यायावर या घूमने वाला होता है।

इस प्रकार फल के साथ नाभस योगों को इस अध्याय में कहा है। इन योगों का फल दशा-अन्तर्दशा में मिलता है।

टिप्पणी—1. बीस प्रकार के आकृति योग इस प्रकार हैं—1. गदा योग, 2. शकट योग, 3. विहग योग, 4. श्रृंगाष्टक योग, 5. हल योग, 6. वज्र योग, 7. यव योग, 8. कमल योग, 9. वापी योग, 10. यूप योग, 11. शर (इशू) योग, 12. शक्ति योग, 13. दण्ड योग, 14. नौका योग, 15. कूट योग, 16. छत्र योग, 17. चाप योग, 18. अर्ध चन्द्र योग, 19. समुद्र योग, 20. चक्र योग।

2. सात प्रकार के संख्या योग और इस प्रकार के हैं—1. वल्कि योग, 2. दामिनी योग, 3. पाश योग, 4. केदार योग, 5. शूल योग, 6. युग योग, 7. गोल योग।

3. तीन प्रकार के आश्रय योग इस प्रकार हैं—1. रज्जु योग 2. मूसल योग और 3. नल योग।

4. दो प्रकार के दल योग इस प्रकार हैं—1. माला योग एवं 2. सर्प योग।

इस प्रकार 32 प्रकार के नाभस योग और उनका फल कहा है।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके नाभसयोगाध्यायो द्वादशः॥ 12॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

13 चन्द्र योगाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर चन्द्र सम्बन्धी योगों की चर्चा करेगें । कुण्डली का फलित करते समय इन योगों को प्रयोग में लाना चाहिए ।

चन्द्र योग

अधमसमवरिष्ठान्यर्ककेंद्रादिसंस्थे शशिनि
विनय वित्तज्ञानधीनैपुणानि ।
अहनि निशि च चंद्रे स्वेऽधिमित्रांशके वा
सुर गुरुसितदृष्टे विवान्स्यात्सुखी च ॥ 1 ॥

जन्म कुंडली में सूर्य जिस स्थान में स्थित हो उससे केन्द्रादि (केन्द्र, पणफर, आपोक्लिम) में स्थित हों तो जातक सभ्य, विनयी, धनी, ज्ञानी, बुद्धिमान और चतुर श्रेष्ठ जातक योग होता है ।

यदि सूर्य से केन्द्र (1,4,7,10) में चन्द्रमा हो तो उक्त फल अल्प मात्रा में होता है, यदि चन्द्रमा सूर्य से पणफर (2,5,8,11) भाव में हो तो उक्त फल मध्यम अनुपात में होता है और यदि चन्द्रमा सूर्य से आपोक्लिम (3,6,9,12) भाव में हो तो उक्त फल श्रेष्ठ अनुपात या पूर्ण रूप से होता है ।

यदि चन्द्रमा स्वनवांश या अधिमित्र नवांश में हो, जातक का जन्म दिन में हो और गुरु से दृष्ट हो तो वह धनी व सुखी होता है ।

यदि चन्द्रमा स्वनवांश या अधिमित्र नवांश में हो, जातक का जन्म रात्रि में हो और चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो तो भी वह धनी व सुखी होता है ।

टिप्पणी— 1. केन्द्र में शून्य, पणफर में मध्यम और आपोक्लिम में श्रेष्ठ फल होता है ।
2. उक्त फल यवनेश्वर, गार्गी और अन्य आचार्यों द्वारा सम्मत है ।

अधियोग

सौम्यैः स्मरारिनिधनेष्वधियोग इंदोस्तस्मिंश्चमूपसचिवक्षितिपालजन्म ।
संपन्नसौख्यविभवा हतशत्रवश्च दीर्घायुषो विगतरोगभयाश्च जाताः ॥ 2 ॥

चन्द्रमा से शुभ ग्रह बुध , गुरु और शुक्र 6,7,8वें इन तीनों भाव में या इन तीनों में से दो भाव में या इन तीनों में से किसी एक भाव में स्थित हो तो "अधियोग" नामक योग होता है ।

इस योग में उत्पन्न जातक सेनापति, राजा , मन्त्री होता है । वे प्रिय मित्र , प्रसन्नता व धन से युक्त होते हैं । उनके शत्रु समाप्त हो जाते हैं और रोग व भय रहित

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीर्घ जीवन होता है ।

टिप्पणी— 1. ये अधियोग सात प्रकार के होते हैं - 1. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से छठें हों । 2. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से सातवें हों । 3. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से आठवें हों । 4. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से छठे व सातवें हों । 5. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से छठे व आठवें हों । 6. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से सातवें व आठवें हों । 7. सभी शुभ ग्रह चन्द्र से छठे, सातवें, आठवें हों । 2. शुभ ग्रह पूर्ण बली हों तो जातक राजा होता है, यदि सभी शुभ ग्रह मध्य बली हों तो जातक मन्त्री होता है और यदि सभी शुभ ग्रह निर्बल हों तो जातक सेनापति होता है । 3. शुभ ग्रह अस्त या पापग्रह से युक्त या दृष्ट न होने पर ही इस योग का पूर्ण फल प्रदान करते हैं ।

सुनफा, अनफा, दुरुधरा और केमद्रुम योग

हित्वार्कं सुनफानफादुरुधुराः स्वांत्योभयस्थैर्ग्रहैः शीतांशोः
कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ ।
केंद्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते
केचित्केंद्रनवांशकेषु च वदंत्युक्तिः प्रसिद्धा न ते ॥ 3 ॥

यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में सूर्य को छोडकर अन्य भौमादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि) ग्रह हों तो **'सुनफा'** नामक योग होता है ।

यदि चन्द्रमा से द्वादश स्थान में सूर्य को छोडकर अन्य भौमादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि) ग्रह हों तो **'अनफा'** नामक योग होता है ।

यदि चन्द्रमा से द्वितीय व द्वादश दोनों स्थान में सूर्य को छोडकर अन्य भौमादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि) ग्रह हों तो **'दुरुधरा'** नामक योग होता है ।

यदि चन्द्रमा से द्वितीय व द्वादश दोनों स्थान में सूर्य को छोडकर अन्य भौमादि (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि) ग्रह न हों तो **'केमद्रुम'** नामक योग होता है ।

टिप्पणी—1. यदि सूर्य अन्य योगकारक ग्रहों के साथ हो तो योग भंग नहीं समझना चाहिए । परन्तु केवल सूर्य योग कारक नहीं हो सकता है, यह सिद्ध ही है । 2. चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में सूर्य को छोडकर अन्य कोई ग्रह हो तो सुनफा, दशम में हो तो अनफा और चतुर्थ व दशम दोनों में हो तो दुरुधरा योग होता है । यदि चौथे व दसवें कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है । 3. किसी का मत है कि जिस राशि के नवांश में चन्द्रमा स्थित हो उस नवांश स्थित राशि से द्वितीय भाव में सूर्य को छोडकर कोई ग्रह हो तो सुनफा, द्वादश में हो तो अनफा, दोनों में हो तो दुरुधरा और दोनों में से किसी में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है । किन्तु यह मत मान्य नहीं हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनफादि योगों के प्रकार

त्रिंशत्सरुपाः सुनफानफाख्याः षष्टित्रयं दौरुधुरे प्रभेदाः ।
इच्छाविकल्पैः क्रमशोऽभिनीय नीते निवृत्तिः पुनरन्यनीतिः ॥ 4 ॥

सुनफा, अनफा इन दोनों योगों के 31-31 प्रकार होते हैं और दुरुधरा के 180 प्रकार होते हैं । ये प्रकार गणित के नियम के अनुसार एक-एक करके ज्ञात करने चाहिएं ।

टिप्पणी — ये तीनों योग सुनफा , अनफा और दुरुधरा मंगल (1) , बुध (2) , गुरु (3) , शुक्र (4) और शनि (5) पाँच ग्रहों से बनते हैं । सुनफा योग के 31 प्रकार और अनफा के 31 प्रकार इस प्रकार बनेंगे । एक पंक्ति में 5,4,3,2 व 1 अंक और इस पंक्ति के नीचे विपरीत क्रम से 1,2,3,4 व 5 अंक इस प्रकार रखें—

5	4	3	2	1
1	2	3	4	5

जब एक ग्रह गिनती में रखेंगे तो योग के प्रकार $\left(\frac{5}{1}=5\right)$ पाँच होंगे । जब दो ग्रह गिनती में रखेंगें तो योग के प्रकार $\left(\frac{5\times4}{1\times2}=\frac{20}{2}=10\right)$ दस होंगे । जब तीन ग्रह गिनती में रखेंगे तो योग के प्रकार $\left(\frac{5\times4\times3}{1\times2\times3}=\frac{60}{6}=10\right)$ दस होंगे । जब चार ग्रह गिनती में रखेंगे तो योग के प्रकार $\left(\frac{5\times4\times3\times2}{1\times2\times3\times4}=\frac{120}{24}=5\right)$ पाँच होंगे । जब पाँच ग्रह गिनती में रखेंगे तो योग के प्रकार $\left(\frac{5\times4\times3\times2\times1}{1\times2\times3\times4\times5}=\frac{120}{120}=1\right)$ एक ही होंगे । इस प्रकार योगों के समस्त भेदों का योग 5 + 10 + 10 + 5 + 1 = 31 हुआ ।

ये 31 योग इस प्रकार हैं—

1. मंगल
2. बुध
3. गुरु
4. शुक्र
5. शनि
6. मंगल, बुध
7. मंगल, गुरु
8. मंगल,शुक्र ,
9. मंगल, शनि
10. बुध, गुरु
11. बुध, शुक्र
12. बुध, शनि
13. गुरु, शुक्र
14. गुरु, शनि
15. शुक्र, शनि
16. मंगल, बुध, गुरु
17. मंगल, बुध, शुक्र
18. मंगल, बुध, शनि
19. मंगल, गुरु, शुक्र
20. मंगल, गुरु, शनि
21. मंगल, शुक्र, शनि
22. बुध, गुरु, शुक्र
23. बुध, गुरु, शनि
24. गुरु, शुक्र, शनि
25. बुध, शुक्र, शनि
26. मंगल, बुध, गुरु, शुक्र
27. मंगल, बुध, गुरु, शनि
28. मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
29. बुध, गुरु, शुक्र, शनि
30. मंगल, बुध, शुक्र, शनि
31. मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि उक्त 31 ग्रह योग चन्द्र से द्वितीय भाव में स्थित हों तो सुनफा के 31 भेद होंगे और यदि उक्त 31 ग्रह योग चन्द्र से द्वादश भाव में स्थित हों तो अनफा के 31 भेद होंगे। इस प्रकार सुनफा योग और अनफा योग के भेदों की चर्चा करने के बाद अब दुरुधरा योग के एक सौ अस्सी भेदों की चर्चा करेगें।

चन्द्र से दूसरे भाव में एक ग्रह और द्वादश भाव में एक ग्रह से बनने वाले बीस दुरुधरा योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में एक ग्रह हो और द्वादश भाव में एक ग्रह हो तो बीस प्रकार के दुरुधरा योग बनेंगे । अब इन सभी बीस योगों को क्रम से यहां दे रहे हैं जोकि निम्न प्रकार हैं—

क्रम	चन्द्र से दूसरे भाव में	चन्द्र से द्वादश भाव में
1.	मंगल	बुध
2.	बुध	मंगल
3.	मंगल	गुरु
4.	गुरु	मंगल
5.	मंगल	शुक्र
6.	शुक्र	मंगल
7.	मंगल	शनि
8.	शनि	मंगल
9.	बुध	गुरु
10.	गुरु	बुध
11.	बुध	शुक्र
12.	शुक्र	बुध
13.	बुध	शनि
14.	शनि	बुध
15.	गुरु	शुक्र
16.	शुक्र	गुरु
17.	गुरु	शनि
18.	शनि	गुरु
19.	शुक्र	शनि
20.	शनि	शुक्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्र से दूसरे भाव मे दो ग्रह और द्वादश भाव में एक ग्रह एवं द्वादश में दो व द्वितीय में एक ग्रह से बनने वाले साठ दुरुधरा योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में दो ग्रह हो और द्वादश भाव में एक ग्रह एवं द्वादश में दो व द्वितीय में एक ग्रह हो तो साठ प्रकार के दुरुधरा योग बनेंगे जोकि निम्न हैं—

क्रम	चन्द्र से दूसरे भाव में	चन्द्र से द्वादश भाव में
1.	मंगल	बुध, गुरु
2.	बुध, गुरु	मंगल
3.	मंगल	बुध, शुक्र
4.	बुध, शुक्र	मंगल
5.	मंगल	बुध, शनि
6.	बुध, शनि	मंगल
7.	मंगल	गुरु, शुक्र
8.	गुरु,. शुक्र	मंगल
9.	मंगल	गुरु, शनि
10.	गुरु, शनि	मंगल
11.	मंगल	शुक्र, शनि
12.	शुक्र, शनि	मंगल
13.	बुध	मंगल, गुरु
14.	मंगल, गुरु	बुध
15.	बुध	मंगल, शुक्र
16.	मंगल, शुक्र	बुध
17.	बुध	मंगल, शनि
18.	मंगल, शनि	बुध
19.	बुध	गुरु, शुक्र
20.	गुरु, शुक्र	बुध
21.	बुध	गुरु, शनि
22.	गुरु, शनि	बुध
23.	बुध	शुक्र, शनि
24.	शुक्र, शनि	बुध
25.	गुरु	मंगल, बुध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

26.	मंगल, बुध	गुरु
27.	गुरु	मंगल, शुक्र
28.	मंगल, शुक्र	गुरु
29.	गुरु	मंगल,शनि
30.	मंगल, शनि	गुरु
31.	गुरु	बुध, शुक्र
32.	बुध, शुक्र	गुरु
33.	गुरु	बुध, शनि
34.	बुध, शनि	गुरु
35.	गुरु	शुक्र, शनि
36.	शुक्र, शनि	गुरु
37.	शुक्र	मंगल, बुध
38.	मंगल, बुध	बुध शुक्र
39.	शुक्र	मंगल, गुरु
40.	मंगल, गुरु	शुक्र
41.	शुक्र	मंगल, शनि
42.	मंगल, शनि	शुक्र
43.	शुक्र	बुध, गुरु
44.	बुध, गुरु	शुक्र
45.	शुक्र	बुध, शनि
46.	बुध, शनि	शुक्र
47.	शुक्र	गुरु, शनि
48.	गुरु, शनि	शुक्र
49.	शनि	मंगल, बुध
50.	मंगल, बुध	शनि
51.	शनि	मंगल, गुरु
52.	मंगल, गुरु	शनि
53.	शनि	मंगल, शुक्र
54.	मंगल, शुक्र	शनि
55.	शनि	बुध, गुरु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

56.	बुध, गुरु	शनि
57.	शनि	बुध, शुक्र
58.	बुध, शुक्र	शनि
59.	शनि	गुरु, शुक्र
60.	गुरु, शुक्र	शनि

चन्द्र से द्वितीय में एक व द्वादश में तीन ग्रह और द्वादश में एक व द्वितीय में तीन ग्रह से बनने वाले चालीस दुरुधरा योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में एक ग्रह व द्वादश में तीन ग्रह और द्वादश भाव में एक ग्रह व द्वितीय में तीन ग्रह हों तो चालीस प्रकार के दुरुधरा योग बनेंगे जोकि निम्न हैं—

क्रम	द्वितीय भाव में	द्वादश भाव में
1.	मंगल	बुध, गुरु, शुक्र
2.	बुध, गुरु, शुक्र	मंगल
3.	मंगल	बुध, गुरु, शनि
4.	बुध, गुरु, शनि	मंगल
5.	मंगल	बुध, शुक्र, शनि
6.	बुध, शुक्र, शनि	मंगल
7.	मंगल	गुरु, शुक्र, शनि
8.	गुरु, शुक्र, शनि	मंगल
9.	बुध	मंगल, गुरु, शुक्र
10.	मंगल, गुरु, शुक्र	बुध
11.	बुध	मंगल, गुरु, शनि
12.	मंगल, गुरु, शनि	बुध
13.	बुध	मंगल, शुक्र, शनि
14.	मंगल, शुक्र, शनि	बुध
15.	बुध	गुरु, शुक्र, शनि
16.	गुरु, शुक्र, शनि	बुध
17.	गुरु	मंगल, बुध, शुक्र
18.	मंगल, बुध, शुक्र	गुरु
19.	गुरु	मंगल, बुध, शनि
20.	मंगल, बुध, शनि	गुरु

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

21.	गुरु	मंगल, शुक्र, शनि
22.	मंगल, शुक्र, शनि	गुरु
23.	गुरु	बुध, शुक्र, शनि
24.	बुध, शुक्र, शनि	गुरु
25.	शुक्र	मंगल, बुध, गुरु
26.	मंगल, बुध, गुरु	शुक्र
27.	शुक्र	मंगल, बुध, शनि
28.	मंगल , बुध, शनि	शुक्र
29.	शुक्र	मंगल, गुरु, शनि
30.	मंगल, गुरु, शनि	शुक्र
31.	शुक्र	बुध, गुरु, शनि
32.	बुध, गुरु, शनि	शुक्र
33.	शनि	मंगल, बुध, गुरु
34.	मंगल, बुध, गुरु	शनि
35.	शनि	मंगल, बुध, शुक्र
36.	मंगल, बुध, शुक्र	शनि
37.	शनि	मंगल, गुरु, शुक्र
38.	मंगल, गुरु, शुक्र	शनि
39.	शनि	बुध, गुरु, शुक्र
40.	बुध, गुरु, शुक्र	शनि

चन्द्र से द्वितीय भाव में एक व द्वादश में चार ग्रह व द्वितीय भाव में चार ग्रह व द्वादश भाव में एक ग्रह से बनने वाले दस दुरुधरा योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में एक ग्रह हो और द्वादश भाव में चार ग्रह हों एवं द्वितीय भाव में चार ग्रह व द्वादश भाव में एक ग्रह हो तो दस प्रकार के दुरुधरा योग बनेंगे । अब इन सभी दस योगों को क्रम से यहां दे रहें हैं जोकि निम्न प्रकार हैं—

क्रम	द्वितीय भाव में	द्वादश भाव में
1.	मंगल	बुध, गुरु, शुक्र, शनि
2.	बुध, गुरु, शुक्र, शनि	मंगल
3.	बुध	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
4.	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि	बुध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

5.	गुरु	मंगल, बुध, शुक्र, शनि
6.	मंगल, बुध, शुक्र, शनि	गुरु
7.	शुक्र	मंगल, बुध, गुरु, शनि
8.	मंगल, बुध, गुरु, शनि	शुक्र
9..	शनि	मंगल, बुध, गुरु, शुक्र
10.	मंगल, बुध, गुरु, शुक्र	शनि

चन्द्र से द्वितीय में दो ग्रह और द्वादश में दो ग्रह से बनने वाले तीस दुरुधरा योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में दो ग्रह हो और द्वादश भाव में दो ग्रह हो तो तीस प्रकार के दुरुधरा योग बनेंगे जोकि निम्न हैं—

क्रम	द्वितीय भाव में	द्वादश भाव में
1.	मंगल, बुध	गुरु, शुक्र
2.	गुरु, शुक्र	मंगल, बुध
3.	मंगल, बुध	गुरु, शनि
4.	गुरु, शनि	मंगल, बुध
5.	मंगल, बुध	शुक्र, शनि
6.	शुक्र, शनि	मंगल, बुध
7.	मंगल, गुरु	शुक्र, बुध
8.	शुक्र, बुध	मंगल, गुरु
9.	मंगल, गुरु	बुध, शनि
10.	बुध, शनि	मंगल, गुरु
11.	मंगल, गुरु	शुक्र, शनि
12.	शुक्र, शनि	मंगल, गुरु
13.	मंगल, शुक्र	बुध, गुरु
14.	बुध, गुरु	मंगल, शुक्र
15.	मंगल, शुक्र	बुध, शनि
16.	बुध, शनि	मंगल, शुक्र
17.	मंगल, शुक्र	गुरु, शनि
18.	गुरु, शनि	मंगल, शुक्र
19.	बुध, गुरु	मंगल, शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

20.	मंगल, शनि	बुध, गुरु
21.	मंगल, शनि	बुध, शुक्र
22.	बुध, शुक्र	मंगल, शनि
23.	मंगल, शनि	गुरु, शुक्र
24.	गुरु, शुक्र	मंगल, शनि
25.	बुध, गुरु	शुक्र, शनि
26.	शुक्र, शनि	बुध, गुरु
27.	बुध, शुक्र	गुरु, शनि
28.	गुरु, शनि	बुध, शुक्र
29.	गुरु, शुक्र	बुध, शनि
30.	बुध, शनि	गुरु, शुक्र

चन्द से द्वितीय में दो ग्रह और द्वादश में तीन ग्रह द्वितीय में तीन ग्रह एवं द्वादश में दो ग्रह से बनने वाले दुरुधरा के बीस योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में दो ग्रह हो और द्वादश भाव में तीन ग्रह व द्वादश में दो ग्रह एवं द्वितीय में तीन ग्रह हों तो बीस प्रकार के दुरुधरा योग बनेंगे जोकि निम्न हैं—

क्रम	द्वितीय भाव में	द्वादश भाव में
1.	मंगल, बुध	गुरु, शुक्र, शनि
2.	गुरु, शुक्र, शनि	मंगल, बुध
3.	मंगल, गुरु	बुध, शुक्र, शनि
4.	बुध, शुक्र, शनि	मंगल, गुरु
5.	मंगल, शुक्र	बुध, गुरु, शनि
6.	बुध, गुरु, शनि	मंगल, शुक्र
7.	मंगल, शनि	बुध, गुरु, शुक्र
8.	बुध, गुरु, शुक्र	मंगल, शनि
9.	बुध, गुरु	मंगल, शुक्र, शनि
10.	मंगल, शुक्र, शनि	बुध, गुरु
11.	बुध, शुक्र	मंगल, गुरु, शनि
12.	मंगल, गुरु, शनि	बुध, शुक्र
13.	बुध, शनि	मंगल, गुरु, शुक्र
14.	मंगल, गुरु, शुक्र	बुध, शनि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

15.	गुरु, शुक्र	मंगल, बुध, शनि
16.	मंगल, बुध, शनि	गुरु, शुक्र
17.	गुरु, शनि	मंगल, बुध, शुक्र
18.	मंगल, बुध, शुक्र	गुरु, शनि
19.	शुक्र, शनि	मंगल, बुध, गुरु
20.	मंगल, बुध, गुरु	शुक्र,शनि

सुनफा और अनफा योगों का फल

स्वयमधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समो वा
भवति हि सुनफायां धीधनख्यातिमांश्च।
प्रभुरुदशरीरः शीलावान्ख्यातकीर्ति-
र्विषयसुखसुवेषो निर्वृतश्चानफायाम् ॥ 5 ॥

सुनफा योग में उत्पन्न जातक स्वयं धन का उपार्जन करने वाला राजा या राजा सदृश , श्रेष्ठ बुद्धि वाला , धनी और यशस्वी होता है ।

अनफा योग में उत्पन्न जातक समर्थ , प्रभावी , रोग रहित शरीर वाला , सुस्वभाव वाला , यशस्वी , सांसारिक सुखों से युक्त , सुन्दर एवं सन्तुष्ट होता है ।

दुरुधरा और केमद्रुम योगों का फल

उत्पन्नभोगसुखभुग्धनवाहनाढ्यस्त्यागन्वितो
दुरुधुराप्रभवः सुभृत्यः ।
केमद्रुमे मलिनदुः खितनीचनिः स्वाः प्रेष्याः
खलाश्च नृपतेरति वंशजाताः ॥ 6 ॥

दुरुधरा योग में उत्पन्न जातक जहाँ कहीं जिस किसी तरह से उत्पन्न भोग के द्वारा सुख भोगने वाला , धन व वाहन से युक्त दानी और सुसेवकों से युक्त होता है ।

केमद्रुम योग में उत्पन्न जातक मलिन , कंजूस , दुःखित , नीच कर्मरत , कमीना, निर्धन , जाति से या योग्यता से निम्न कार्य करने वाला और दुष्ट होता है । राजकुल में उत्पन्न जातक यदि इस योग में हो तो भी इस फल को पाते हैं तो अन्य वंश में उत्पन्न जातक तो पाता ही है ।

सुनफादि योग में भौमादि ग्रहों का फल

उत्साहशौर्यधनसाहसवान्महीजः सौम्यः पटुः सुवचनो निपुणः कलासु ।
जीवोऽर्थधर्मसुखभाङ् नृपपूजितश्च कामी भृगुर्बहुधनो विषयोपभोक्ता ॥ 7 ॥

उक्त तीनों योगों में **यदि मंगल ग्रह प्रधान हो** तो जातक उत्साही, नायक, धनी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

व साहसी होता है । उक्त तीनों योगों में **यदि बुध ग्रह प्रधान हो** तो जातक चतुर , नम्र , मधुर वचन बोलने वाला और ललित कलाओं में निपुण होता है ।उक्त तीनों योगों में **यदि गुरु ग्रह प्रधान हो** तो जातक धर्मी , सुखी , धनी और राजाओं द्वारा सम्मानित होता है । उक्त तीनों योगों में **यदि शुक्र ग्रह प्रधान हो** तो जातक कामुक , अति धनवान और अनेक विषयों को भोगने वाला होता है ।

योगकारक शनि और चन्द्र ग्रह का फल

परविभवपरिच्छेदोपभोक्ता रवितनयो बहुकार्यकृद्गणेशः ।
अशुभकृदुडुपोऽह्नि दृश्यमूर्तिर्गलिततनुश्च शुभोऽन्यथान्यदूह्यम् ॥ ४ ॥

यदि उक्त तीनों योगों में यदि **शनि ग्रह योगकारक हो** अर्थात् प्रधान हो तो जातक दूसरे के घर, कपडा, वाहन, परिवार को भोगने वाला , अत्यन्त परिश्रमी और अनेक सेवकों का स्वामी होता है ।

यदि दिन में जन्म हो और चन्द्रमा दृश्य चक्रार्ध (सप्तम भाव से लग्न पर्यन्त) में स्थित हो तो अशुभ फल और चन्द्रमा अदृश्य चक्रार्ध (लग्न से सप्तम भाव पर्यन्त) में स्थित हो तो शुभ फलदायी होता है । यदि रात्रि में जन्म हो और चन्द्रमा दृश्य चक्रार्ध में स्थित हो तो शुभ फल एवं अदृश्य चक्रार्ध में स्थित हों तो अशुभ फलदायी होता है ।

टिप्पणी— एक से अधिक ग्रह योगकारक हों तो विवेक सम्मत बुद्धि से सभी ग्रहों का मिश्रित फल या बली ग्रहानुसार समझना चाहिए ।

लग्न और चन्द्रमा से उपंचय स्थान में स्थित शुभ ग्रहों का फल

लग्नादतीव वसुमान्वसुमाञ्छशांकात्सौम्यग्रहैरुपचयोपगतैः समस्तैः ।
द्वाभ्यां समोऽल्पववसुमांश्च तदूनतायामन्येष्वसत्स्वपि फलेष्विदमुत्कटेन ॥ 9 ॥

जन्म समय लग्न से उपचय स्थान (3,6,10,11) में सभी शुभ ग्रह (बुध , गुरु , शुक्र) स्थित हों तो जातक अत्यन्त धनवान होता है । यदि चन्द्रमा से उपचय भावों में सभी शुभ ग्रह (बुध , गुरु , शुक्र) बैठे हों तो जातक धनी होता है । यदि उक्त भावों में दो ग्रह स्थित हों तो जातक कम धनी होता है । यदि एक ही ग्रह उक्त स्थान में से किसी एक में हो तो जातक अल्प धनी होता है । यदि उक्त स्थानों में कोई भी शुभ ग्रह न हो तो जातक दरिद्र होता है । केमद्रुम योग होने पर भी इस योग का फल होता है नाकि कुयोग केमद्रुम का ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके चंद्रयोगाऽध्यायस्त्रयोदशः ॥ 13 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

14 द्विग्रहयोगाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर इस बात की चर्चा करेंगे—'जब कोई से दो ग्रह एक राशि में एक साथ स्थित हों तो क्या फल देंगे ?

सूर्य का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल

तिग्मांशुर्जनयत्युषेशसहितो यंत्राश्मकारं नरं भौमेनाघरतं
बुधेन निपुणं धीकीर्तिसौख्यान्वितम् ।
क्रूरं वाक्पतिनान्यकार्यनिरतं शुक्रेण रंगायुधैर्लब्धस्वं
रविजेन धातुकुशलं भांडप्रकारेषु वा ॥ 1 ॥

जब **सूर्य-चन्द्र** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक यन्त्रकार (Machine-Makers) और शिल्पकार (Craftsman) होता है अर्थात् अनेक प्रकार के यन्त्रों को बनाने वाला और पत्थरों को तराशने में कुशल होता है ।

जब **सूर्य-मंगल** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक पापकर्मों में लिप्त रहने वाला दुष्ट, चरित्रहीन एवं भ्रष्ट होता है ।

जब **सूर्य-बुध** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक चुतर, लोकप्रिय और बुद्धिमान होता है और आसानी से दूसरों को मित्र बनाने वाला होता है ।

जब **सूर्य-गुरु** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हों तो निर्मम, निष्ठुर व निर्दयी होने के साथ-साथ दूसरों का काम करने वाला होता है ।

जब **सूर्य-शुक्र** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक युद्ध और शस्त्रकला से धन अर्जित करता है अर्थात् जातक सेना, कुश्ती, मुक्केबाजी, तलवारबाजी, जूडो-कराटे आदि से आजीविका कमाता है ।

जब **सूर्य-शनि** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातकलुहार, कुम्हार या धातु और मिट्टी के बर्तन बनाने में चतुर होता है । यह भी कह सकते हैं कि वह धातु और मिट्टी संबंधी कार्यों को करता है ।

चन्द्र का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल

कूटस्त्र्यासवकुम्भपण्यमशिवं मातुः सवक्रः शशी ।
सज्ञः प्रश्रितवाक्यमर्थनिपुणं सौभाग्याकीर्त्यान्वितम् ॥
विक्रान्तं कुलमुख्यमस्थिरमतिं वित्तेश्वरं सांगिरा ।
वस्त्राणां ससितः क्रियादिकुशलं सार्किः पुनर्भूसुतम् ॥ 2 ॥

जब **चन्द्र-मंगल** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक स्त्रियों का

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दलाल, भटियारा (Publicans), औजारों को बेचने वाला और माता को कष्ट देने वाला होता है।

जब **चन्द्र-बुध** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक मधुर भाषणकर्त्ता अर्थात् मधुरभाषी, धन कमाने और साहित्य-विश्लेषण में चतुर होता है।

जब **चन्द्र-गुरु** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक नायक, शक्तिशाली, कुल प्रधान, यशस्वी, चंचल बुद्धि वाला और बहुत धन का स्वामी होता है।

जब **चन्द्र-शुक्र** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक कपड़ा बनाने या बुनने, सिलने, रंगने और क्रय-विक्रय करने में चतुर होता है।

जब **चन्द्र-शनि** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक पूनर्भू होता हैं अर्थात् पहले पति को छोड़कर दूसरी शादी के बाद उत्पन्न होता है।

मंगल का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल

मूलादिस्नेहकूटैर्व्यवहरति वणिग्बाहुयोद्धा ससौम्ये।
पुर्यध्यक्षः सजीवे भवति नरपतिः प्राप्तवित्तो द्विजो वा॥
गोपो मल्लोऽथ दक्षः परयुवतिरतो द्यूतकृत्सासुरेज्ये
दुःखार्तोऽसत्यसंधः ससवितृतनये भूमिजे निंदितश्च॥ 3॥

जव **मंगल-बुध** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक पहलवान, कुश्तीबाज, या मल्लयुद्धकर्त्ता एवं फल, फूल, पत्ती, जड़ी, गोंद, छाल, इत्र सुगन्धित व सामान्य तेलों का व्यापारी होता है।

जव **मंगल-गुरु** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक मेयर, नगर का स्वामी, राजा या ब्राह्मण होकर धन की प्राप्ति करता है।

जब **मंगल-शुक्र** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक कुश्ती बाज, गौ पालक, चतुर, परस्त्रीगामी, जुआरी व ठग होता है।

जव **मंगल-शनि** जन्म कुंडली एक राशि में युति करते हैं तो जातक असहनीय दुःखां से पीड़ित, असत्यवादी व निन्दित होता है।

बुध, शुक्र व शनि का अन्य ग्रहों से युति होने पर फल

सौम्ये रंगचरो बृहस्पतियुते गीतप्रियो नृत्यविद्वाग्मी
भूगणपः सितेन मृदुना मायापटुर्लंघकः।
सद्विद्यो धनदारवान्बहुगुणः शुक्रेण युक्ते गुरौ ज्ञेयः
श्मश्रुकरोऽसितेन घटकृज्जातोऽन्नकारोऽपि वा॥ 4॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

जब **बुध-गुरु** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक व्यायामी

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Athlete), संगीत प्रेमी और नृत्य निपुण होता है।

जब **बुध-शुक्र** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक वाक्पटु, भूपति, चतुर और सबको एकत्र करने में अर्थात् भीड़ जुटाने में माहिर होता है।

जब **बुध-शनि** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक दूसरों को ठगने में चतुर, व बड़ों की आज्ञा न मानने वाला होता है।

जब **शुक्र-गुरु** जन्मकुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक विद्वान, धन व स्त्री से युत एवं अनेक गुणों का स्वामी होता है.।

जब **शनि-गुरु** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक नाई, कुम्हार या रसोईया होता है।

शुक्र-शनि का युति फल एवं त्रिग्रह युति का फल

असितसितसमागमेऽल्पचक्षुर्युवतिसमाश्रय सम्प्रवृद्धवित्तः।
भवति च लिपिपुस्तकचित्रवेत्ता कथितफलैः परतो विकल्पनीयाः ॥ 5 ॥

जब **शुक्र-शनि** जन्म कुंडली में एक राशि में युति करते हैं तो जातक अल्पदृष्टि वाला (Short Sighted), पत्नी या युवा स्त्री की सहायता से धन की वृद्धि करने वाला, लेखक व कलाकार होता हैं।

जब दो से अधिक ग्रह एक राशि में युति करें तो दो-दो ग्रहों की युति का अलग-अलग फल पूर्वोक्त प्रकार से ज्ञात करके उन सब फलों को समन्वय करके कहना चाहिए। यह बात उदाहरण देकर बतलाते हैं—मान लो किसी जन्मकुंडली में **सूर्य, चन्द्र और मंगल** एक राशि में युति करते हैं तो सर्वप्रथम **सूर्य-चन्द्र** की युति का फल ज्ञात करना चाहिए, तदोपरान्त **चन्द्र-मंगल** की युति का फल ज्ञात करना चाहिए और फिर दोनों प्रकार की युतियों के फल का समन्वय करके फलित ज्ञात करना चाहिए। इस प्रकार दो से अधिक ग्रहों की युतियों का फल ज्ञात कर सकते हैं।

इति श्री वराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके द्विग्रहयोगाध्यायश्चतुर्दशः ॥ 14 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रव्रज्यायोगाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर प्रव्रज्या अर्थात् सन्यास योगों की चर्चा करेंगे

प्रव्रज्या योग

एकस्थैश्चतुरादिभिर्बलयुतैर्जाताः पृथग्वीर्यगैः ।
शाक्याजीविकाभिक्षुवृद्धचरका निर्ग्रन्थवन्याशनाः ।
माहेयज्ञगुरुक्षपाकरसितप्राभाकरीनैः क्रमात् ।
प्रव्रज्या बलिभिः समापरजितैस्तत्स्वामिभिः प्रच्युतिः ॥ 1 ॥

जब चार ग्रहादि (4, 5, 6 या 7) एक भाव में बैठे हों तो प्रव्रज्या (सन्यास) योग होता है। ग्रहों में कोई एक बली हो तो भी प्रव्रज्या योग होता है। दो ग्रह बली हों तो दोनों ग्रह के प्रव्रज्या योग होते हैं। यदि अनेक ग्रह बलवान हों तो अनेक प्रव्रज्या योग होते हैं।

सब ग्रहों में यदि **मंगल** बली हो तो लाल वस्त्र धारण करने वाला बौद्ध अनुयायी, **बुध** बली हो तो जैन सन्यासी या वैष्णव सन्यासी, **गुरु** बली हो तो भिक्षुक (एक दण्डी ब्राह्मण सन्यासी), **चन्द्र** बली हो तो वृद्ध श्रावक, बौद्ध सन्त या कापालिक, **शुक्र** बली हो तो चक्रधारी, **शनि** बली हो तो नागा सन्यासी एवं **सूर्य** बली हो तो कन्द-मूलादि पर रहने वाला वन्य सन्यासी होता है।

प्रव्रज्या योग कारक ग्रहों में एक ग्रह अन्य बली ग्रह से पराजित हो तो उस ग्रह की अन्तर्दशा में सन्यास ग्रहण करके फिर छोड़ देता है। यदि दो ग्रह पराजित हों तो प्रथम ग्रह की अन्तर्दशा में प्रथम ग्रह की प्रकृति के अनुसार सन्यास ग्रहण करके, दूसरे ग्रह की अन्तर्दशा में पहले ग्रह के सन्यास को छोड़कर दूसरे ग्रह की प्रकृति के अनुसार सन्यास ग्रहण कर लेता है और फिर दशा परिवर्तित होने पर उसे भी छोड़ देता है, तीन-चार प्रव्रज्या योग कारक ग्रह पराजित हों तो उक्त प्रकार से ही जानना चाहिए। यदि प्रव्रज्या योग कारक ग्रह पराजित न हों तो जिस एक ग्रह से सन्यास योग बनता है उसी को ग्रहण कर जीवन भर उसी में रहता है।

दीक्षा के लिए प्रव्रज्या योग में प्रार्थना

रविलुप्तकरैरदीक्षिता बलिभिस्तद्गतभक्तयो नराः ।
अभियाचितमात्रदीक्षिता निहतैरन्यनिरीक्षितैरपि ॥ 2 ॥

यदि प्रव्रज्या योगकारक ग्रह बली हो पर सूर्य से अस्त हो तो जातक बिना **मन्त्रोपदेश** के साधु हो जाता है, लेकिन जिस प्रव्रज्या योग में जन्म होता है उसको ग्रहण

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने वालों में भक्ति होती है। यदि प्रव्रज्या योगकारक ग्रह अन्य ग्रह से पराजित हो गए हों या दृष्ट हों तो जातक योग्य साधुओं से दीक्षा देने की प्रार्थना करता है जो स्वीकार नहीं हो पाती।

शनि संबंधी प्रव्रज्या योग

जन्मेशोऽव्यैर्यद्यदृष्टोऽर्कपुत्रं पश्यत्यार्किर्जन्मपं वा बालोनम्।
दीक्षां प्राप्नोत्यार्किदृक्काणसंस्थे भौमार्क्यंश सौरदृष्टे च चंद्रे ॥ 3 ॥

जन्म राशीश (अन्य ग्रहों से अदृष्ट हों) शनि को देखता हो तों जन्मराशीश और शनि में से जो बली हो उसकी अन्तर्दशा में शनि संबंधी प्रव्रज्या योग घटित होता है।

निर्बल जन्मराशीश बलवान शनि से दृष्ट हो तो भी शनि संबंधी प्रव्रज्या योग बनता है।

शनि (अन्य ग्रहों से अदृष्ट हो) से चन्द्रमा दृष्ट हो, शनि के द्रेष्काण में हो और मंगल या शनि के नवांश में हो और शनि से दृष्ट हो तो शनि संबंधी प्रव्रज्या योग बनता है।

शनि या जन्मेश में से जो बली हो उसकी अन्तर दशा में यह योग घटित होता देखा गया है।

सन्यासी योग

सुरगुरुशशिहोरास्वार्किदृष्टासु धर्मे गुरूरथ
नृपतीनां योगजस्तीर्थकृत्स्यात्।
नवमभवनसंस्थे मंदगेऽन्यैरदृष्टे भवति
नरपयोगे दीक्षितः पार्थिवेंद्रः ॥ 4 ॥

यदि गुरु, चन्द्र या लग्न पर शनि की दृष्टि हो गुरु नवम भाव में हो तो किसी राजयोग में उत्पन्न जातक राजा न होकर तीर्थयात्री, शास्त्रज्ञ और शास्त्रकार होता है।

यदि शनि नवम भाव में हो और किसी ग्रह से दृष्ट न हो तो किसी राजयोग में उत्पन्न जातक राजा न होकर सन्यास की दीक्षा लेता है और यदि राजयोग नहीं है तो साधारण सन्यासी जीवन व्यतीत करता है!

टिप्पणी—कोई-कोई व्याख्याकार 'सुर गुरु शशि हेमासु' का गुरु और चन्द्र की राशि (धनु, मीन व कर्क) लग्न में हो और शनि से दृष्ट हो और गुरु नवम भाव में हो तो किसी राजयोग में उत्पन्न जातक राजा न होकर शास्त्रकार होता है। दो राज योग और एक प्रव्रज्या योग हो तो जातक राजा होता है नाकि सन्यासी।

कुछ सन्यासियों की जन्म एवं नवांश कुंडलियां अभ्यास के लिए दृष्टव्य हैं—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. गौतम बुध

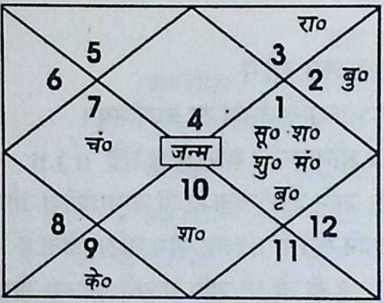

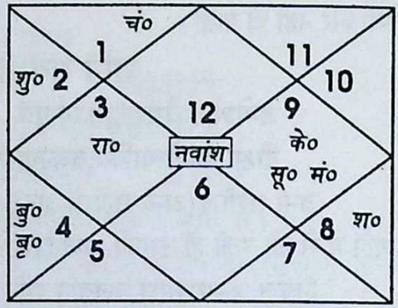

2. स्वामी विवेकानन्द

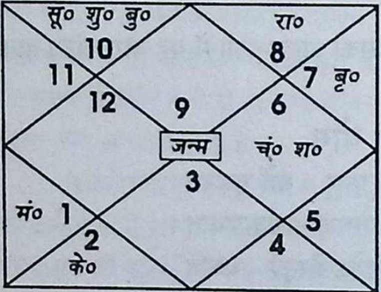

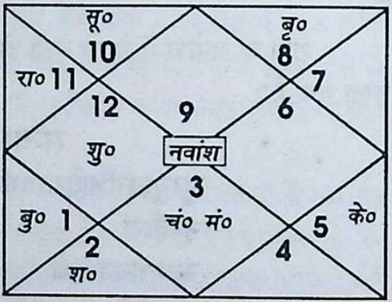

3. आदि शंकराचार्य

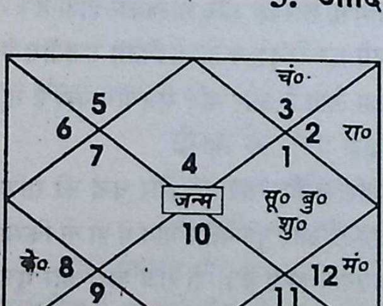

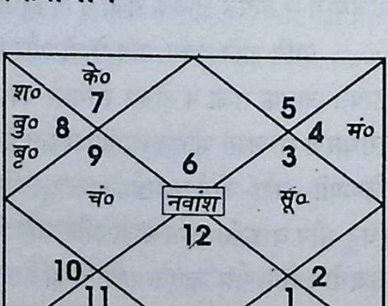

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. श्री रामानुजाचार्य

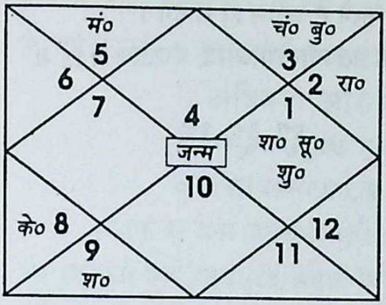

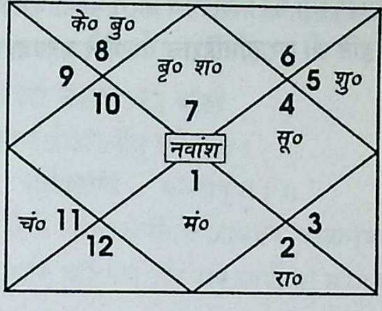

5. श्री रामकृष्ण परमहंस

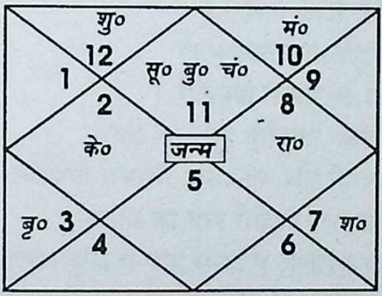

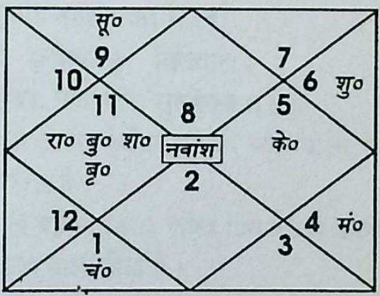

6. स्वामी शिवानन्द

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपर्युक्त कुंडलियों के अध्ययन से आप प्रव्रज्या योगों का अभ्यास कर सकते हैं।अभ्यास से ही फलित करने की सामर्थ्य बढ़ती है।जितनी अधिक से अधिक कुण्डलियों का विश्लेषण करेंगे उतना फलित करने में प्रवीण हो सकेंगे।

इति श्री वराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके प्रव्रज्यायोगाध्यायः पंचदशः ॥ 15 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रफलाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर 27 नक्षत्रों में जन्म लेने पर जातक कैसा होगा, इसकी चर्चा करेंगे। नक्षत्र फल को ध्यान से पढ़कर समझ लें, यह कुंडली का फल कहने में उपयोगी होगा।

अश्विनी और भरणी नक्षत्र का फल

प्रियाभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोऽश्विनीषु मतिमांश्च।
कृतनिश्चयसत्यारुग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु ॥ 1 ॥

जातक का जन्म **अश्विनी** नक्षत्र में हो तो उसका व्यक्तित्व आकर्षक, वस्त्राभूषण एवं अलंकार प्रेमी, खूबसूरत, सबका प्रिय, चतुर, बुद्धिमान और सब कार्यों को करने मे दक्ष होता है।

जातक का जन्म **भरणी** नक्षत्र में हो तो वह निश्चय करके कार्य पूर्ण करने वाला, सत्य वक्ता, स्वस्थ, चतुर और सुखी होता है।

कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र का फल

बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।
रोहिण्यां सत्यशुचिः प्रियंविदः स्थिरमतिः सुरूपश्च ॥ 2 ॥

जातक का जन्म **कृत्तिका** नक्षत्र में हो तो वह अधिक भोजन करने वाला, पर स्त्रीगामी, तेजस्वी, असहनीय और विख्यात होता है।

जातक का जन्म **रोहिणी** नक्षत्र में हो तो वह सत्यवक्ता, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि से युक्त, सुन्दर व आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्र का फल

चपलश्चतुरो भीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्त्रः पापश्च रौद्रर्क्षे ॥ 3 ॥

जातक का जन्म **मृगशिरा** नक्षत्र में हो तो वह चंचल जल्दबाज, चतुर, शर्मीला, भीरू, पटु (Skilful), उत्साही, धनी और भोगी होता है।

जातक का जन्म **आर्द्रा** नक्षत्र में हो तो वह परोपकार न करने वाला, निर्दयी, अभिमानी, दूसरों को हानि पहुंचाने वाला, हिंसक, पापी और कुकृत्यों में लिप्त होता है।

पुनर्वसु नक्षत्र का फल

दांतः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक्पिपासुश्च।
अल्पेन च संतुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः ॥ 4 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक का जन्म **पुनर्वसु** नक्षत्र में हो तो वह इन्द्रियों को वश में करने वाला, सुखी, सुशील, उत्तम स्वभाव से युक्त परंतु कभी-कभी दुर्बुद्धि, रोगी, तृषित और थोड़े से ही संतुष्ट हो जाता है।

पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र का फल

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंसृतः पुष्ये।
शठः सर्वभक्षपापः कृतघ्नधूर्त्तश्च भौजङ्गे ॥ 5 ॥

जातक का जन्म **पुष्य** नक्षत्र में हो तो वह धैर्य के कारण शान्त प्रकृति वाला, शास्त्रकार, धनी व धार्मिक कार्यों में रुचि लेने वाला होता है।

जातक का जन्म **आश्लेषा** नक्षत्र में हो तो वह बेईमान, दूजों को ठगने वाला, सब कुछ खाने वाला, कुकृत्यों को करने वाला, दूजों को हानि पहुंचाने वाला, एहसान न मानने वाला और धूर्त होता है।

मघा और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का फल

बहुभृत्यधनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्र्ये।
प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये ॥ 6 ॥

जातक का जन्म **मघा** नक्षत्र में हो तो वह धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, देवता और पितरों की भक्ति करने वाला, अत्यन्त उद्यमी और भोगी होता है।

जातक का जन्म **पूर्वाफाल्गुनी** में हो तो वह प्रियभाषी, दानी, सुन्दर व आकर्षक, भ्रमणप्रिय और राजा का सेवक (राजकीय सेवा) होता है।

उत्तराफाल्गुनी और हस्त नक्षत्र का फल

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभाक् द्वितीयफाल्गुन्याम्।
उत्साही धृष्टः पानपो घृणी तस्करो हस्ते ॥ 7 ॥

जातक का जन्म **उत्तराफाल्गुनी** नक्षत्र में हो तो वह सुन्दर, आकर्षक, विद्या से धनोपार्जन करने वाला, भोगी और सुखी होता है।

जातक का जन्म **हस्त** नक्षत्र में हो तो वह उत्साही, प्रतिभा सम्पन्न, मद्यपान करने वाला, निर्लज्ज, निर्दयी तस्कर या चोर होता है।

चित्रा और स्वाति नक्षत्र का फल

चित्राम्बरमाल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।
दान्तो वणिक् कृपालुः प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ ॥ 8 ॥

जातक का जन्म **चित्रा** नक्षत्र में हो तो वह रंग बिरंगे वस्त्रों और मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र और शरीर से युक्त होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक का जन्म **स्वाति** नक्षत्र में हो तो वह इन्द्रियों को वश में करने वाला व्यापारी, मृदुभाषी, दयालु एवं धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है ।

विशाखा और अनुराधा नक्षत्र का फल

ईर्ष्युर्लुब्धो द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखसु ।
आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु ॥ 9 ॥

जातक का जन्म **विशाखा** नक्षत्र में हो तो वह ईर्ष्यालु , लालची, और गौर वर्ण, कंजूस, बोलने में चतुर, धन कमाने में चतुर व झगड़ालु होता है ।

जातक का जन्म **अनुराधा** नक्षत्र में हुआ हो तो वह धनी, घर से दूर या विदेश में रहने वाला, भूख से पीड़ित, भ्रमणप्रिय एवं आवारा या घुमक्कड़ होता है ।

ज्येष्ठा और मूला नक्षत्र का फल

ज्येष्ठासु न बहुमित्रः संतुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोपः ।
मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्त्रः स्थिरो भोगी ॥ 10 ॥

जातक का जन्म **ज्येष्ठा** नक्षत्र में हो तो वह कम मित्रों वाला, प्रसन्न, सन्तुष्ट, धार्मिक और अत्यधिक क्रोध करने वाला होता है ।

जातक का जन्म **मूला** नक्षत्र में हो तो वह मानी, धनवान, प्रसन्नचित्त, सुखी, हिंसा न करने वाला, स्थिर बुद्धि वाला और भोगी होता है ।

पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का फल

इष्टानंदकलत्रो मानी दृढसौहृदश्च जलदैवे ।
वैश्वे विनीतधार्मिकबहुमित्रकृतासुभगश्च ॥ 11 ॥

जातक का जन्म **पूर्वाषाढ़ा** नक्षत्र में हो तो वह आज्ञाकारी एवं अभीष्ट सुख देने वाली पत्नी से युत, अभिमानी, सम्मानीय और निष्ठावान मित्रों से युक्त होता है ।

जातक का जन्म **उत्तराषाढ़ा** नक्षत्र में हो तो वह विनीत, धार्मिक, बहुत से मित्रों वाला, कृतज्ञ, आज्ञाकारी एवं सर्वप्रिय होता है ।

श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र का फल

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः ।
दाता आढ्यः शूरो गीतप्रियो धनिष्ठासु धनलुब्धः ॥ 12 ॥

जातक का जन्म **श्रवण** नक्षत्र में हो तो वह भाग्यशाली, सम्पन्न, सुंदर, विद्वान, उदार स्त्री से युक्त धनवान और विख्यात होता है ।

जातक का जन्म **धनिष्ठा** नक्षत्र में हो तो वह दानी, धनवान, नायक, गीत-संगीत प्रेमी एवं लोभी होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का फल

स्फुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिकः शतिभिषिजि दुर्ग्राह्यः ।
भाद्रपदासूद्विगनः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च ॥ 13 ॥

जातक का जन्म **शतभिषा** नक्षत्र में हो तो वह स्पष्टवादी, व्यसनी, शत्रुनाशक, साहसी और मातहतों द्वारा पसंद न किये जाने वाला होता है ।

जातक का जन्म **पूर्वाभाद्रपद** नक्षत्र में हो तो वह चिन्तित, दु:खी, स्त्रीवशवर्ती, धनी, चतुर और कृपण होता है ।

उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र का फल

वक्ता सुखी प्रजावान् जितशत्रुर्धार्मिको द्वितीयासु ।
सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरू शुचिरर्थवान् पौष्णे ॥ 14 ॥

जातक का जन्म **उत्तराभाद्रपद** नक्षत्र में हो तो वह शास्त्रवक्ता, सुखी, पोते-पोतियों वाला, शत्रुओं को जीतने वाला और धार्मिक होता है ।

जातक का जन्म **रेवती** नक्षत्र में हो तो वह सम्पूर्ण अंगों से युक्त, आकर्षक, सर्वप्रिय, अग्रणीय और धनवान होता है ।

टिप्पणी—इस अध्याय में नक्षत्र संबंधी फल वर्णित किया गया है वह पूर्णत: तभी सत्य सिद्ध होता है जबकि कुंडली में चन्द्रमा बली हो ।

इति श्री वराहमिहिरकृते बृहज्जातके नक्षत्र फलाध्यायः ॥ 16 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

17 चन्द्र राशिशीलाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर चन्द्रमा का द्वादश राशि में फल बतलायेंगे जिससे कुण्डली का फल कहने में सहजता हो।

मेष राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

वृत्तातांम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोऽटनः
कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोऽङ्गनावल्लभः।
सेवाज्ञः कनूखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः
शक्तया पाणितलेऽङ्कितोऽतिचपलस्तोयेऽतिभीरुक्रिये ॥ 1 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा मेष राशि में** स्थित हो तो जातक की आँखें गोल व लाल, उष्ण वस्तु एवं थोडा खाने वाला शाकाहारी, शीघ्र प्रसन्न होने वाला, भ्रमणशील, कामी, दुर्बल घुटने एवं जांघ वाला, अस्थिर धन वाला अर्थात् कभी धन से युक्त व कभी धन से रहित शूद्र, स्त्रियों का प्रिय, सेवक कर्म को जानने वाला, वह भली-भांति जानता है कि दूसरों की सेवा किस प्रकार की जाती है, बदसूरत नाखुनों से युक्त, मस्तक पर तिल और जख्म के कई निशान होंगे, भाईयों में सबसे बड़ा, सम्मानीय, हथेली पर शक्ति नामक हथियार के चिह्न वाला, चंचल प्रकृति से युक्त और जल से भय करने वाला होता है।

वृष राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

कांतः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वांकितस्त्यागी
क्लेशसहः प्रभुः ककुदवान्कन्याप्रजः श्लेष्मलः।
पूर्वैर्बंधुधनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी
दीप्ताग्निः प्रमदाप्रियः स्थिरसुत्दृन्मध्यांत्यसौख्यो गवि ॥ 2 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा वृष राशि में** स्थित हो तो जातक सुन्दर एवं आकर्षक रूप वाला, चौड़े मुख एवं मोटी जाँघों वाला, पीठ, चेहरा व बगल में किसी चिह्न से युक्त, दाता, कलेश या दुःख सहन करने वाला, सबको उपदेश देने वाला अर्थात् उपदेशक, भारी गर्दन से युक्त, अनेक कन्या उत्पन्न करने वाला, कफ प्रकृति वाला, पहले के भाई, धन और मित्रों से वियुक्त, सबका प्रिय, सबको क्षमा करने वाला, सौभाग्यशाली, बहुत भोजन करने वाला, ज्येष्ठ पुत्र के द्वारा धन अर्जित करने वाला, स्त्रियों का अत्यधिक प्रिय, निष्ठावान व सच्चे मित्र से युक्त और मध्य व अन्तिम अवस्था में सुखपूर्वक जीवनयापन करता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिथुन राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलस्ताम्रेक्षणः शास्त्रविद्दूतः
कुंचितमूर्द्धजः पटुमतिर्हास्येंगितद्यूतवित्।
चार्वंगः प्रियवाक्प्रभक्षणरुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतनसश्चंद्रे तृतीयर्क्षगे ॥ 3 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा मिथुन राशि में** स्थित हो तो जांतक स्त्री स्नेही या उनमें रुचि लेने वाला अर्थात् स्त्री-लोलुप और काम क्रीडा में कुशल, लाल नेत्रों से युक्त, शास्त्र ज्ञाता, दूत कर्म में प्रवीण, घुँघराले बालों वाला, चतुर और बुद्धिमान, व्यंग्य करने में माहिर, खुशमिजाज, विदूषक, हँसी-मजाक करने वाला, जुआरी, प्रिय, मधुभाषी, बहुभोजी, संगीत प्रिय, गायन-वादन एवं नृत्य में रुचि रखने वाला, हिजड़ों या नपुंसकों से प्रेम करने वाला, भीरु और ऊंची नाक वाला होता है।

कर्क राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्ज्जतः
सत्सुत्दृदैवज्ञः प्रचुरालयक्षयधनैः संयुज्यते चन्द्रवत्।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृद्वत्सलस्तोयोद्यानरतः
स्ववेश्मसहिते जातः शशङ्के नरः ॥ 4 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा कर्क राशि में** हो तो जातक जल्दबाज, टेढ़ा शरीर और तेज चलने वाला, ऊंचे कूल्हें व जँघा से युक्त, पत्नी व स्त्री वशवर्ती, अच्छे मित्रों से युक्त, ज्योतिष का ज्ञाता, अनेक घरों का स्वामी, जीवन में अनेक उतार-चढाव देखने पड़ते हैं, चन्द्रमा की घट-बढ़ की तरह जीवन में धन-मान की स्थिति में उतार-चढाव आते हैं, ठिगना कद, चौड़ी गर्दन, स्नेह से वश में आने वाला, मित्रों से प्रेम करने वाला, जलाशय और बाग-बगीचों से प्रेम रखने वाला होता है।

सिंह राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

तीक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पत्मजः
स्त्रीद्वेषी प्रियमांसकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।
क्षुत्तृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान् विक्रान्तः
स्थिरधीः सुगर्वितमना मातुर्विधेयोऽर्कभे ॥ 5 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा सिंह राशि में** हो तो जातक क्रोधी, गर्म मिजाज, मोटी ठोढी व चौडे चेहरे वाला, पीली आँखों वाला और अल्प संतान वाला होता है। स्त्री से घृणा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने वाला, मांसाहारी, वन-पर्वत में प्रीति रखने वाला, व्यर्थ में दीर्घकाल तक उत्तेजित या क्रोधित रहने वाला होता है। भूख व प्यास से कष्ट को पाता है। दाँतों का रोगी और मानसिक रूप से अस्थिर, असन्तोष एवं तनाव में रहता है। दानी होता है, किन्तु स्वार्थी नहीं होता है। पराक्रमी, स्थिर बुद्धि वाला और अभिमानी होता है। माता का भक्त और आज्ञाकारी होता है।

कन्या राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

ब्रीडामन्थरचारुवीक्षणगतिः स्त्रस्तांसबाहुः सुखी
श्लक्ष्णः सत्यरतः कलासु निपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहैर्वित्तैश्च संयुज्यते
कन्यायां परदेशगः प्रियवचाः कन्याप्रजोऽल्पात्मजः॥ 6॥

जन्म समय **चन्द्रमा कन्या राशि में** स्थित हो तो जातक आलसी, शर्मीला, मनोहर दृष्टि युक्त, धीरे-धीरे चलने वाला और स्त्री सुलभ हाव भाव से युक्त होता है। झुके हुए कन्धों एवं भुजा वाला, सुखी, सुन्दर, सत्यभाषी, अनेक कलाओं को जानने वाला, बहु प्रतिभा का धनी, विशेषकर नृत्य, संगीत, चित्रकला एवं लेखन कला आदि में प्रवीण, शास्त्रार्थ जानने वाला, धर्मात्मा, बुद्धिमान, रति प्रेमी, दूसरे के घर और धन से युक्त, परदेश में रहने वाला, मधुर वचन बोलने वाला और अल्प सन्तान से युक्त होता है।

तुला राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

देवब्राह्मणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः
प्रांशुश्चोन्नतनासिकः कृशचलद्गात्रोऽटनोऽर्थान्वितः।
हीनांगः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा
सरुक् बंधूनामुपकारकृद्विरुषितस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे॥ 7॥

जन्म समय **चन्द्रमा तुला राशि में** स्थित हो तो जातक देवता, ब्राह्मणों और सन्तों की पूजा में तत्पर अर्थात् धार्मिक प्रवृत्ति वाला, पंडित, पवित्र मन वाला, स्त्री वशवर्ती होता है। वह लम्बा, ऊंची नाक वाला, पतला और दुर्बल होता है। वह धनी और भ्रमण प्रिय होता है। वह क्रय-विक्रय करने में चतुर अर्थात् व्यापारिक बुद्धि वाला और खराब या दोषयुक्त टाँगों वाला होता है। देवता के पर्यायवाची नाम से युक्त, रोगी, भाई-बन्धुओं का उपकार करने वाला और निकटस्थों एवं स्वजनों से युक्त होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

पृथुलनयनवक्षा वृत्तजंघोरुजानुर्जनकगुरुवियुक्तः
शैशवे व्याधितश्च ।
नरपतिकुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो
झषकुलिशखगांकश्छन्न पापोऽलिजातः ॥ 8 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा वृश्चिक राशि में** स्थित हो तो जातक बड़े नेत्र और चौडी छाती वाला, गोल जँघा, घुटने और टांगों वाला व स्थूल शरीर से युक्त होता है । पिता और गुरु से रहित, बचपन में व्याधि या कष्ट से युक्त, राजकुल से पूजित, पीतवर्ण से युक्त, क्रूर स्वभाव वाला, शरीर पर वज्र व पक्षी आदि चिन्हों से युक्त और छिपकर पापकर्म करने वाला और रहस्यमयी प्रवृति से युक्त होता है ।

धनु राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

व्यादीर्घास्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्
वक्ता स्थूलरदश्रबोधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित् ।
कुब्जांशः कुनखी समासलभुजः प्रागल्भ्यवान्धर्मविद् बन्धुद्विट
न बलात्समैति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्वजः ॥ 9 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा धनु राशि में** स्थित हो तो जातक की लम्बी गर्दन और चेहरा होता है । पिता के उपार्जित धन से युक्त, दानी, निस्वार्थी, लेखक, त्यागी, कवि, शक्तिशाली, वक्ता, दाँत, आँख, होंठ व नाक मोटी होती है, कार्य करने में तत्पर, शिल्पज्ञ एवं दबे हुए कन्धों वाला होता है । वह खराब नख से युक्त मोटी भुजा वाला, खुश मिजाज, व्यंग्य करने में चतुर, बोलने व व्यवहार में चतुर होता है । धार्मिक होता है किन्तु मित्रों व स्वजनों से घृणा करता है । मधुरभाषी होता है और मीठे वचनों से ही वश में आता है ।

मकर राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

नित्यं लालयति स्वदारतनयान् धर्मध्वजोऽधः कृशः
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः ।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वाधिकः काव्यकृल्लुब्धोऽ
गम्यजराङ्ग नासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः ॥ 10 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा मकर राशि में** स्थित हो तो जातक अपने स्त्री और पुत्रों को प्यार करने वाला, धर्म के प्रति मिथ्या आचरण करने वाला, कमर से नीचे का शरीर निर्बल, सुन्दर नेत्रों से युक्त, पतली कमर, बड़ों की बात मानने वाला, सौभाग्यशाली,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आलसी, सलाह देने में चतुर, अच्छी स्मृति वाला, सर्दी न सहन करने वाला और भ्रमण प्रिय, बली, काव्य का रचियता, लोभी, नीच जाति की वृद्धा स्त्री के साथ गमन करने वाला, बेशर्म व निर्दयी होता है ।

कुंभ राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः
पृथुचरणोरुपृष्ठ जघनास्यकटिर्जरठः ।
परवनितार्थपापनिरतः क्षयवृद्धियुतः
प्रियकुसुमानुलेपनसुहृद्घटजोऽध्वसहः ॥ 11 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा कुंभ राशि में** स्थित हो तो जातक ऊंट की तरह गर्दन वाला व शरीर पर नसें स्पष्ट दीखती हैं, अधिक बालों और लम्बे शरीर से युक्त, स्थूल पैर व पैरों के जोड़, पीठ, जंघा, मुख, कमर व पेट वाला, पराए धन व स्त्री में रुचि रखने वाला अर्थात् पाप कर्मरत, समय-असमय हानि-लाभ पाने वाला अर्थात् कभी लाभ व कभी हानि, फूलों, चन्दन और मित्रों से प्रेम करने वाला और भ्रमण प्रिय होता है ।

मीन राशि में स्थित चन्द्रमा का फल

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः
समरुचिरशरीरस्तुंगनासो बृहत्कः ।
अभिभवति सपत्नान्स्त्रीजितश्चारुदृष्टिर्द्युतिनिधि-
धनभोगी पंडितश्चांत्यराशौ ॥ 12 ॥

जन्म समय **चन्द्रमा मीन राशि में** स्थित हो तो जातक मोती, रत्न और समुद्र से निकलने वाले पदार्थों से धन कमाने वाला, दूसरे के धन का भोग करने वाला, स्त्री, सम्पत्ति और वस्त्र में प्रीति रखने वाला, सन्तुलित शरीर वाला, आकर्षक एवं सुन्दर होता है । नाक लम्बी व सुन्दर एवं बड़े सिर वाला होता है । स्त्री या पत्नी के वश में रहने वाला एव सुन्दर आँखों से युक्त होता है । गड़े हुए धन को भोगने वाला जोकि अचानक ही प्राप्त होता है । आकर्षक शरीर वाला विद्वान होता है जिसका दूजों पर अपना विशेष प्रभाव होता है ।

राशि फल करते समय समन्वय की विशेष आवशयकता

बलवति राशौ तदधिपतौ
च स्वबलयुतः स्याद्यदि तुहिनांशुः ।
कथितफला नामविकलदाता
शशिवदतोऽन्ये त्यनुपरिचिन्त्याः ॥ 13 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि चन्द्रमा स्थित राशि, उसका स्वामी और चन्द्रमा ये तीनों बलवान हों और शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो पूर्वोक्त बारह राशियों का फल पूर्णत: मिलता है, यदि इन तीनों में से दो बली हों तो मध्यम फल एवं एक ही बलवान हो तो फल कम और कोई भी बली न हो तो फल न के बराबर होता है । इसी प्रकार अन्य ग्रहों सूर्य व मंगलादि के फल का भी विचार करना चाहिए ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके चन्द्रराशिशीलाध्याय सप्तदशः ॥ 17 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि शीलाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर सूर्य व मंगलादि ग्रहों का द्वादश राशि में स्थित होने का फल बतायेंगे ।

यह अच्छी तरह जान लें कि ग्रह जिस राशि में स्थित होता है उससे बहुत प्रभावित होता है । जिस राशि में किसी राशि के लिए जितनी अनुकूलता, समता या प्रतिकूलता होती है उसी अनुपात में ग्रह अपना फल प्रदर्शित करता है अर्थात् प्रकट करता है फलादेश की इमारत ग्रह और राशि के परस्पर सम्बन्धों पर ही आधारित है । किसी भाव में कोई राशि होने पर वह भाव उसका क्षेत्र है अर्थात् राशि को क्षेत्र और उसके स्वामी को क्षेत्रज्ञ कहते हैं । क्षेत्र में सम्भावनाएँ होती हैं और क्षेत्रज्ञ में प्रेरणा देने की शक्ति । अत: जिस राशि पर जो ग्रह स्थित होता है, वह उस राशि का प्रेरक होता है । ग्रह और राशि का स्वभाव अलग-अलग होता है, दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों से जो समन्वय युक्त फल परिलक्षित होता है उसे ही कहना चाहिए । किन्तु फल कहते समय भाव और भाव स्वामी को कदापि नहीं भूलना चाहिए । आईए अब यह जान लें कि ग्रहों का राशि में स्थित होने पर क्या फल होता है ।

सूर्य का द्वादश राशि स्थित फल

प्रथितश्चतुरोऽटनोऽल्पवित्तः क्रियगे त्वायुधभृद्वितुङ्गभागे ।
गवि वस्त्रसुगन्धपण्यजीवी वनिताद्विट् कुशलश्च गेयवाद्ये ॥ 1 ॥
विद्याज्योतिषवित्तवान्मिथुनगे भानौ कुलीरे स्थिते
तीक्ष्णोऽस्वः परकार्यकृच्छ्रमपथक्लेशैश्च संयुज्यते ।
सिंहस्थे वनशैलगोकुलरतिर्वीर्यान्वितोऽज्ञः पुमान् कन्यास्थेलिपिलेख्य
काव्यगणितज्ञानान्वितः स्त्रीवपुः ॥ 2 ॥
जातस्तौलिनि शौंडिकोऽध्वनिरतो हैरण्यको नीचकृत् क्रूरू
साहसिको विषार्जितधनः शस्त्रांतगोऽलिस्थिते ।
सत्पूज्यो धनवान्धनुर्द्धरगते तीक्ष्णो भिषक्कारुको नीचोऽज्ञः
कुवणिङ्मृगेऽल्पधन वाँल्लुब्धोऽन्यभाग्यतै रतः ॥ 3 ॥
नीचो घटे
तनयभाग्यपरिच्युतोऽस्वस्तोयोत्थपण्यविभवो बनितादृतोऽन्त्ये ।
नक्षत्रमानवतनुप्रतिमे विभागे
लक्ष्मादिशेत्तुहिनर श्मिदिनेशयुक्ते ॥ 4 ॥

यदि सूर्य परमोच्च अंश को छोड़कर मेष राशि में स्थित हो तो जातक वि...

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर, भ्रमणशील, थोडे धन वाला और शस्त्रज्ञ होता है। यदि सूर्य परमोच्च अंश में हों तो पूर्वोक्त अशुभ फल के विपरीत फल और शुभ फल वैसे ही होता है अर्थात् विख्यात, चतुर, भ्रमण करने वाला, बहुत धनी और शस्त्रज्ञ नहीं होता है।

यदि सूर्य वृष राशि में स्थित हो तो जातक वस्त्र, इत्र या तेल या सामान्य वस्तुओं का व्यापारी (General Merchant) होता है। उसे स्त्रियों की संगति नापसन्द और गीत-संगीत में कुशल होता है।

यदि सूर्य मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक विद्वान् और व्याकरण व ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता एवं धनी होता है।

यदि सूर्य कर्क राशि में स्थित हो तो जातक गर्म मिजाज, चिड़चिड़ा, क्रोध, निर्धन, दूजों के कार्य करने वाला, प्रबन्धक या कर्त्ता (Agent), अनेक कार्यों एवं पैदल चलने से होने वाली थकान से युक्त होता है।

यदि सूर्य सिंह राशि में स्थित हो तो जातक पर्वतों, वनों व गौशाला का प्रेमी, अति बलवान और अशिक्षित होते हुए भी उच्च दिमाग (High Minded) रखता है।

यदि सूर्य कन्या राशि में स्थित हो तो जातक लेखक, कलाकार, कवि, गणितज्ञ और अन्य विषयों की अच्छी जानकारी रखने वाला होता है और स्त्री सदृश शरीर से युक्त होता है।

यदि सूर्य तुला राशि में स्थित हो तो जातक आसवक (Distiller), महाविक्रेता, घुमक्कड़ अर्थात् भ्रमणशील, सुनार और नीच कर्मरत रहता है।

यदि सूर्य वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक क्रूर, साहसी, विष विक्रेता अर्थात् जहर बेचकर धन कमाने वाला और शस्त्र कला में निपुण होता है।

यदि सूर्य धनु राशि में स्थित हो तो जातक सज्जनों व सन्तों से पूजित, धनी, जिज्ञासु, बुद्धिमान, शिल्पज्ञ या मूर्तिकार, कलाकार या चिकित्सक होता है।

यदि सूर्य मकर राशि में स्थित हो तो जातक नीच, नीचकर्मरत, अशिक्षित, नीच या खराब वस्तुओं का व्यापारी, कभी धनी, चरित्रहीन, कमीना और दूजों के भाग्य व सहृदयता से अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करने वाला होता है।

यदि सूर्य कुंभ राशि में स्थित हो तो जातक ऐसे कार्य करता है जो उसकी योग्यता और समाजिक स्थिति से विपरीत हो, दुर्भाग्य का स्वामी और सन्तान को खोने वाला होता है। वह निर्धन भी होता है।

यदि सूर्य मीन राशि में स्थित हो तो जातक मोती, रत्न और समुद्र से प्राप्त अन्य वस्तुओं को बेचकर धन अर्जित करने वाला होता है, ईमानदार व स्त्री के वश में रहने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला होता है ।

यदि सूर्य चन्द्रमा दोनों एक राशि में स्थित हों तो वह राशि काल पुरुष के जिस अंग की परिचायक हो उस अंग पर तिल व मस्से का चिह्न होता है ।

मंगल का द्वादश राशि स्थित फल

नरपतिसत्कृतोऽटनश्चमूपवणिक्सधनः क्षततनुश्चौरभूरिविषयांश्च
कुजः स्वगृहे ।
युवतिजितान्सुत्दृत्सु विद्वषमान् परदाररतान्
कुहकसुवेषभीरुपरुषान्सितभे जनयेत् ॥ 5 ॥
बौधेऽसहस्तनयवान्वि सुत्दृत्कृतज्ञो
गांधर्वयुद्धकुशलः कृपणोऽभयोऽर्थी ।
चांद्रेऽर्थवान्सलिलयानसमर्जितस्वः प्राज्ञश्च
भूमितनये विकलः खलश्च ॥ 6 ॥
निःस्वः क्लेशसहो वनांतरचरः सिंहेऽल्पदारात्मजो
जैवे नैकरिपुर्नरेंद्रसचिवः ख्यातोऽभयोल्पात्मजः ।
दुःखार्तो विधनोऽटनोऽनृतरतस्तीक्ष्णश्च कुंभस्थिते भौमे
भूरिधनात्मजो मृगगते भूपोऽथवा तत्समः ॥ 7 ॥

यदि मंगल स्वराशि (मेष या वृश्चिक) में स्थित हो तो जातक राजाओं से पूजित, सेनापति और भ्रमण प्रिय होता है । वह धनी और व्यापारी होता है । उसके शरीर पर जख्म या चोट के चिह्न होते हैं । वह चोर भी हो सकता है । वह अनेक सुखों को भोगने वाला और उसका ध्यान विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित होता है अर्थात् अस्थिर होता है ।

यदि मंगल वृष या तुला में स्थित हो तो जातक स्त्री के वश में रहने वाला, मित्रों से खराब सम्बन्ध रहते हैं व परस्त्री गमन करने वाला होता है । जातक जादूगर, सुन्दर और आकर्षक वस्त्रों को पहनने वाला, भीरु, अश्लील भाषी और कठोर होता है ।

यदि मंगल मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो तो जातक तेजस्वी, असहनीय, पुत्रवान, मित्रहीन, दूजों का हित स्मरण रखने वाला अर्थात् कृतज्ञ, गायन और युद्ध कला में प्रवीण, कंजूस, निडर व धन पाने का इच्छुक होता है ।

यदि मंगल कर्क राशि में हो तो जातक धनवान, जहाज एवं समुद्र से गुजरने पर होने वाले व्यापार से लाभ उठाने वाला, विद्वान, दोषयुक्त शरीर वाला व दुष्ट होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि मंगल सिंह राशि में स्थित हो तो जातक निर्धन, दु:खों को सहने वाला, वन में घूमने वाला, थोडी स्त्री व थोडी सन्तान से युक्त होता है ।

यदि मंगल धनु या मीन राशि में स्थित हो तो जातक के अनेक शत्रु होते हैं, राजा का मन्त्री, प्रसिद्ध, निर्भय और थोडी सन्तान वाला होता है ।

यदि मंगल कुंभ राशि में स्थित हो तो जातक दु:खों से पीड़ित, धनहीन, असत्य बोलने वाला, स्वेच्छाचारी, भ्रमणप्रिय व तीक्ष्ण स्वभाव वाला होता है ।

यदि मंगल मकर राशि में स्थित हो तो जातक राजा या राजा सदृश, भूपति, धनवान एवं पुत्रों से युक्त होता है ।

बुध का द्वादश राशि स्थित फल

द्यूतर्णपानरतनास्तिकचौरनि: स्वा:
कुस्त्रीककूटकृदसत्यरता: कुजर्क्षे ।
आचार्यभूरिसुतदारधनार्जनेष्टा: शौक्रे
वदान्यगुरुभक्तिरताश्च सौम्ये ॥ 8 ॥

विकत्थन: शास्त्रलाविदग्ध:
प्रियंवद: सौख्यरतस्तृतीये ।
जलार्जितस्व: स्वजनस्य शत्रु:
शशांकजे शीतकरर्क्षयुक्ते ॥ 9 ॥

स्त्रीद्वेष्यो विधनसुखात्मजोऽटनोऽज्ञ: स्त्रीलोल:
स्वपरिभवोऽर्कराशिगे ज्ञे ।
त्यागी ज्ञ: प्रचुरगुण: सुखी
क्षमावान् युक्तिज्ञो विगतभयश्च षष्ठराशौ ॥ 10 ॥

परकर्मकृदस्व शिल्पबुद्धी
ऋणवान्विष्टिकरो बुधेऽर्कजर्क्षे ।
नृपसत्कृतपंडिताप्तवाक्यो नवमेंऽत्ये
जितसेवकोंऽत्य शिल्प: ॥ 11 ॥

यदि बुध मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक जुआरी, ऋणी, , **पियक्कड़ (Drunkerd)**, नास्तिक, चोर, दरिद्र होता है । उसकी स्त्री व्याभिचारिणी और पतिभक्त नहीं होती है । जातक दम्भी और झूठा होता है ।

यदि बुध वृष या तुला राशि में स्थित हो तो जातक उपदेशक या प्रवचन करने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला, अनेक स्त्री व बच्चों वाला और धन के उपार्जन में तत्पर रहता है। वह दाता, गुरु व आध्यात्मिक गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा व भक्ति रखता है।

यदि बुध मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक झूठा, शास्त्र एवं कला में प्रवीण अर्थात् ज्योतिष, कला, संगीत, गायन, पेन्टिंग आदि का जानकार, मधुरभाषी और सुखी व प्रसन्न रहता है।

यदि बुध कर्क राशि में स्थित हो तो जातक जवाहारात, मोती, रत्न और समुद्र से प्राप्त होने वाली वस्तुओं का व्यापारी और अपने बन्धुजनों का शत्रु होता है।

यदि बुध सिंह राशि में स्थित हो तो जातक स्त्री का अप्रिय या विपरीत लिंगी से घृणा करे, निर्धन, दु:खी, सन्तान रहित, भ्रमण प्रिय, मूर्ख, स्त्री की अभिलाषा रखने वाला और स्वजनों से तिरस्कृत एवं अपमानित होता है।

यदि बुध कन्या राशि में स्थित हो तो जातक दानी, विद्वान, बहुमुखी प्रतिभा का धनी, सुखी, क्षमाशील, अपने कार्य की सिद्धि के लिए अनेक युक्तियों को जानने वाला और निर्भय होता है।

यदि बुध मकर या कुंभ राशि में स्थित हो तो जातक दूजों के कार्य करने व सेवा करने को संलग्न, निर्धन, चित्रकार, ऋणी और दूजों की आज्ञा पालन करने वाला होता है।

यदि बुध धनु राशि में स्थित हो तो जातक राजाओं से सम्मानित, विज्ञान और कानून का विद्वान और यथार्थ वक्ता होता है।

यदि बुध मीन राशि में स्थित हो तो जातक सेवकों को वश में रखने वाला, बुद्धिमान सेवक, चतुरता से सेवा करने वाला, दूसरों के वाक्यों को खोजने वाला और निम्न श्रेणी का कलाकार होता है।

गुरु का द्वादश राशि स्थित फल

सेनानीर्बहुवित्तदारतनयो दाता सुभृत्यः क्षमी तेजोदारगुणान्वितः
सुरगुरौ ख्यातः पुमान्कौजभे।
कल्पांगःसधनार्थमित्रतनयस्त्यागी प्रियः शौक्रभे
बौधे भूरिपरिच्छदात्मजसुहृत्सचिव्ययुक्तः सुखी ॥ 12 ॥
चान्द्र रत्नसुतस्वदारविभव प्रज्ञासुखैरन्वितः।
सिंहे स्याछलनायकः सुरगुरौ प्रोक्तं च यच्चन्द्रभे।
स्वर्क्षे माण्डलिको नरेन्द्रसचिवः सेनापतिर्वा धनी।
कुम्भे कर्कटवत् फलानि मकरे नीचोऽल्पवित्तोऽसुखी ॥ 13 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि गुरु मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक सेनापति, अत्यन्त धनी, अनेक स्त्री व सन्तान से युक्त, दानी, अच्छा व वफादार सेवकों से युक्त, क्षमाशील, तेजस्वी, उदार, गुणों से युक्त व प्रसिद्ध होता है ।

यदि गुरु वृष या तुला राशि में स्थित हो तो जातक स्वस्थ शरीर वाला, सुख, धन, मित्र व पुत्रों से युक्त, दानी, निस्वार्थी और सबका प्रिय होता है ।

यदि गुरु मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो तो जातक अपने वस्त्रों, घर, सेवक, पत्नी, सन्तान और मित्रों से युक्त होता है । वह मन्त्री होकर सुखी रहता है ।

यदि गुरु कर्क राशि में स्थित हो तो जातक जवाहारात, रत्न, पुत्र, धन, जायदायद, पत्नी, सम्पन्नता, प्रभावी, जायदाद, बुद्धिमानी और सुख से परिपूर्ण होता है ।

यदि गुरु सिंह राशि में स्थित हो तो जातक सेनापति और कर्क राशि के गुरु का समस्त फल मिलता है ।

यदि गुरु धनु या मीन राशि में स्थित हो तो जातक मण्डलेश्वर या समूह का नेता, राजा का मन्त्री, सेनापति और धनी होता है ।

यदि गुरु कुम्भ राशि में स्थित हो तो जातक कर्क राशि के गुरु के फल से युक्त होता है ।

यदि गुरु मकर राशि में स्थित हो तो जातक नीच कर्म करने वाला, अल्प धन से युक्त और सुखहीन होता है ।

शुक्र का द्वादश राशि स्थित फल

परयुवतिरतस्तदर्थवादैर्हतविभवः कुलपांसनः कुजर्क्षे ।
स्वबलमतिधनो नरेन्द्रपूज्यः स्वजनविभूः प्रथितोऽभयः सिते स्वे ॥ 14 ॥
नृपकृत्यकरोऽर्थवान् कलाविन्मिथुने षष्ठगतेऽतिनीचकर्मा ।
रविजर्क्षगतेऽमरारिपूज्ये सुभगः स्त्रीविजितो रतः कुनार्य्याम् ॥ 15 ॥
द्विभार्योऽर्थीभीरुः प्रबलमदशोकश्च
शशिभेहरौ योषाप्तर्थः प्रवरयुवतिर्मंदतनयः ।
गुणैः पूज्यः सस्वस्तुरगसहिते दानवगुरौ
झषे विद्वानाढ्यो नृपजनितपूजोऽतिसुभगः ॥ 16 ॥

यदि शुक्र मेष या वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक परस्त्रीगामी और उनके प्रभाव के कारण निर्धन होने वाला एवं कुल पर कलंक लगाने वाला होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitized by eGangotri

यदि शुक्र वृष या तुला राशि में स्थित हो तो जातक अपने प्रयासों एवं बुद्धि से धन अर्जित करने वाला, राजा से सम्मानित, मित्रों व स्वजनों में श्रेष्ठ, निर्भय एवं प्रसिद्ध होता है।

यदि शुक्र मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक राज्याधिकारी, धनी व कला निपुण (गीत, संगीत, नृत्य व कलादि) होता है।

यदि शुक्र कन्या राशि में स्थित हो तो जातक अतिशय नीच कर्म करने वाला होता है।

यदि शुक्र मकर या कुंभ राशि में स्थित हो तो जातक सुन्दर, आकर्षक, सर्वप्रिय, स्त्री वशवर्ती और अनाधिकृत रूप से व्याभिचारिणी और नीच स्त्रियों में आसक्त रहता है।

यदि शुक्र कर्क राशि में स्थित हो तो जातक दो स्त्रियों से युक्त, याचक, डरपोक, अभिमानी, भावुक और किसी कारणवश सदैव शोक से युक्त रहता है।

यदि शुक्र सिंह राशि में स्थित हो तो जातक अपनी पत्नी या स्त्री से धन पाने वाला, पत्नी श्रेष्ठ और गुणवान व थोडी सन्तान वाला होता है।

यदि शुक्र धनु राशि में स्थित हो तो जातक गुणों के कारण सम्मानित होने वाला और धनी होता है।

यदि शुक्र मीन राशि में स्थित हो तो जातक धनी, विद्वान, समृद्ध, राजाओं द्वारा सम्मानित, आकर्षक एवं सर्वप्रिय होता है।

शनि का द्वादश राशि स्थित फल

मूर्खोऽटनः कपटवान्विसुत्दृंधमेऽजे कीटेतु
बंधवधभाक् चपलोऽघृणश्च।
निर्ह्रीसुखार्थतनयः स्खलितश्च लेख्ये
रक्षापतिर्भवति मुख्यपतिश्च बौधे ॥ 17 ॥
वर्ज्यस्त्रीष्टो न बहुविभवो भूरिभार्यो
वृषस्थे ख्यातः स्वोच्चे गणपुरबलग्रामपूज्योऽर्थवांश्च
कर्किण्यस्वो विकलदशनो मातृहीनोऽसुतोऽज्ञः
सिंहेऽनार्यो बिसुखतनयो विष्टिकृत्सूर्यपुत्रे ॥ 18 ॥
स्वंतः प्रत्ययितो नरेंद्रभवने सत्पुत्रजायाधनो
जीवक्षेत्रगतेऽर्कजे पुरबलग्रामाग्रनेताथवा।
अन्यस्त्रीधनसंवृतः पुरबलग्रामाग्रणीर्मंदट्टक् स्वक्षेत्रे मलिनः

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिरार्थविभवो भोक्ता च जातः पुमान् ॥ 19 ॥

यदि शनि मेष राशि में स्थित हो तो जातक अशिक्षित, मूर्ख, घुमक्कड , छली एवं मित्र से रहित होता है ।

यदि शनि वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक अपहरणकर्ता या हत्यारा होता है । उसकी मति चंचल, एवं निर्दयी अर्थात् हृदयहीन होता है । वह जेल जाता है और कष्ट पाता है ।

यदि शनि मिथुन या कन्या राशि में स्थित हो तो जातक लज्जाहीन, कंजूस, गरीब व पुत्र रहित होता है । वह मूर्ख, लेखन एवं कला में गलतियाँ करने वाला, मूर्ख, जेलर या प्रधान या मुख्य अधिकारी होता है ।

यदि शनि वृष राशि में स्थित हो तो जातक अनेक स्त्रियों से युक्त, निर्धन या अल्पधनी और नीच जाति की स्त्रियों से प्रीति करने वाला होता है ।

यदि शनि तुला राशि में स्थित हो तो जातक प्रसिद्ध, सबसे सम्मानित, ग्राम का प्रधान या नगराध्यक्ष, बहुत धनी और बहुतों से पूजित होता है ।

यदि शनि कर्क राशि में स्थित हो तो जातक निर्धन, दोषयुक्त दाँतों वाला, माता व पुत्रों से परित्यक्त और मूर्ख होता है ।

यदि शनि सिंह राशि में स्थित हो तो जातक अशिक्षित, असम्मानित, अप्रसन्न, पुत्रों से परित्यक्त और बोझक का कार्य करने वाला होता है ।

यदि शनि धनु या मीन राशि में स्थित हो तो जातक आत्मविश्वासी या राज्य परिवार से सम्बन्धित होता है । सुपुत्र, अच्छी पत्नी व प्रचुर धन से युक्त होता है । ग्राम प्रधान या नगराध्यक्ष या सेनापति का मुख्य, वृद्धावस्था में सुखी या स्वाभाविक रूप से स्मरणीय मृत्यु को पाता हैं ।

यदि शनि मकर या कुंभ राशि में स्थित हो तो जातक परस्त्रीगामी , दूजों के धन से युक्त या उसे भोगने वाला, नगर या गाँव का प्रमुख नेता या सेनानायक होता है । वह मलिन, स्थिर धन और सुख से युक्त एवं भोगी होता है ।

टिप्पणी —राशि में ग्रह, राशि का स्वामी और राशि तीनों बली हों तो उपर्युक्त राशि स्थित ग्रहों का फल पूर्णतः मिलता है, यदि तीनों निर्बल हों तो फल शून्य मिलता है और दो बली हों तो मध्यम फल मिलता है ।

लग्न फल का निर्णय

शिशिरकरसमागमेक्षणानां सदृशफलं प्रवदन्ति लग्नजातम् ।
फलमधिकमिदं यदत्र भावाद्भवनभनाथगुणैर्विचिन्तनीयम् ॥ 20 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म समय से मेषादि द्वादश राशियों में स्थित चन्द्रमा का जो फल पूर्व अध्याय में कहा गया है और द्वादश राशि में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का जो फल अगले अध्याय में कहा जायेगा वह फल मेषादि द्वादश राशियों के लग्न का और मेषादि द्वादश राशियों पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का फल समझना चाहिए। कहने का तात्पर्य यही है कि मेष राशि के चन्द्र का जो फल है वही मेष लग्न का फल है। इसी प्रकार अन्य लग्नों के लिए समझें, इसी प्रकार मेष राशि के चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का जो फल कहा गया है वही मेष लग्न पर अन्य ग्रहों का समझना चाहिए, इसी प्रकार अन्य लग्नों के लिए समझें।

चन्द्र राशि फल से लग्नादि द्वादश भावों के फल में यही विशेषता है कि भाव एवं भावेश के बलानुसार समस्त फल उत्तम, मध्यम और निम्न कोटि के होते हैं। जैसे—भाव और भावेश (भाव का स्वामी) बली हो तो पूर्वोक्त फल उत्तम रूप में, दोनों में एक बली हों तो फल मध्यम रूप में और दोनों निर्बल हों तो फल निम्न कोटि का प्राप्त होता है।

मेषादि भावों का फल भाव और भावेश के बलानुसार उन भावों के विचारणीय विषय का, दोनों बली हों तो उत्तम फल, एक बली हो तो मध्यम फल एवं दोनों निर्बल हों तो निम्नकोटि का फल मिलता है।

मान लें कि लग्न से शरीर का विचार किया जाता है, यदि भाव और भावेश दोनों बली हों तो शरीर पुष्ट, एक बली हो तो सामान्य और दोनों निर्बल हों तो शरीर कमजोर होता है। इस प्रकार अन्य भावों का फल समझना चाहिए।

किन्तु छह, आठ और बारहवें भाव का फल विपरीत होता है अर्थात् छठे से शत्रु का विचार किया जाता है, यदि छठा भाव और छठें भाव का स्वामी दोनों निर्बल हों तो शत्रुओं का नाश होता है, एक बली हों तो शत्रु होते हैं और दोनों बली हो तो शत्रु अनेक होते है। कहने का तात्पर्य यही है कि भाव और भावेश बली हों तो अशुभ फल, एक बली हो तो सामान्य फल और कोई बली न हो तो अच्छा फल मिलता है। इसी तरह आठवें और बारहवें भाव के लिए समझें।

इति श्रीबृहज्जातके राशिशीलाध्यायोऽष्टादशः ॥ 18 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

19 दृष्टिफलाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार परस्पर ग्रहों के दृष्टिफल की चर्चा करेंगे।

मेषादि चार राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टि फल

चंद्रे भूपबुधौ नृपोपमगुणी स्तेनोऽधनश्चाजगे निः स्वः
स्तेननृमान्यभूपधनिनः प्रेष्यः कुजाद्यैर्गवि।
नृस्थेऽयोव्यवहारिपार्थिवबुधाभीस्तंतुवायोऽधनो स्वर्क्षे
योद्धकाविज्ञभूमिपतयोऽजी विदृग्रोगिणो ॥ 1 ॥

जब जन्म कुंडली में मेष राशि में स्थित चन्द्र—मंगल से दृष्ट हो तो वह राजा, **बुध** से दृष्ट हो तो वह पंडित, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा सदृश, **शुक्र** से दृष्ट हो तो वह गुणवान, शनि से दृष्ट हो तो वह चोर, सूर्य से दृष्ट हो तो वह निर्धन होता है और उसके पास कोई सम्पत्ति नहीं होती है।

जब जन्म कुंडली में वृष राशि में स्थित चन्द्र—मंगल से दृष्ट हो तो निर्धन, बुध से दृष्ट हो तो वह चोर, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा सदृश सम्मान मिले, **शुक्र** से दृष्ट हो तो राजा, **शनि** से दृष्ट हो तो धनी सूर्य से दृष्ट हो तो सेवक होता है।

जब जन्म कुंडली में मिथुन राशि में स्थित चन्द्र—मंगल से दृष्ट हो तो वह जातक व्यवसायिक सिपाही या शस्त्र विक्रेता (Professional Soldier or Seller of Weapons), **बुध** से दृष्ट हो तो वह राजा, **गुरु** से दृष्ट हो तो पंडित या विद्वान, **शुक्र** से दृष्ट हो तो बुनकर, सूर्य से दृष्ट हो तो निर्धन होता है।

जब जन्म कुंडली में कर्क राशि में स्थित चन्द्र—मंगल से दृष्ट हो तो जातक सिपाही, **बुध** से दृष्ट हो तो वह कवि या साहित्यकार, **गुरु** से दृष्ट हो तो विद्वान, **शुक्र** से दृष्ट हो तो राजा या भूपति, **शनि** से दृष्ट हो तो व्यवसायिक सिपाही, **सूर्य** से दृष्ट हो तो नेत्र रोगी होता है।

सिंहादि चार राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का फल

ज्योतिर्ज्ञाढ्यनरेंद्रनापितनृपक्ष्मेशा बुधाद्यैर्हरौ
तदश्द्भूपचमूपनैपुणयुताः पष्ठेऽशुभैः स्त्र्याश्रयः।
जूके भूसुवर्णकारवणिजः शेषेक्षिते नैकृती कीटे युग्मपिता
नतश्च रजकोव्यंगोऽधनो भूपतिः ॥ 2 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

जब जन्म कुंडली में सिंह राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो जातक

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्योतिषी, **गुरु** से दृष्ट हो तो धनी, **शुक्र** से दृष्ट हो तो राजा, **शनि** से दृष्ट हो तो नाई, **सूर्य** से दृष्ट हो तो राजा और **मंगल** से दृष्ट हो तो भी राजा होता है।

जब जन्म कुंडली में कन्या राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो राजा, **गुरु** से दृष्ट हो तो सेना नायक (Commander), **शुक्र** से दृष्ट हो तो सब कार्यों में निपुण **शनि सूर्य** या **मंगल** रूपी अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो स्त्री के आश्रय में रहकर जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

जब जन्म कुंडली में तुला राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो राजा, **गुरु** से दृष्ट हो तो सुनार, **शुक्र** से दृष्ट हो तो व्यापारी, **शनि** या **सूर्य** या **मंगल** ग्रह से दृष्ट हो तो हत्यारा और बेईमान होता है।

जब जन्म कुंडली में वृश्चिक राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो जुड़वाँ बच्चों का पिता या जातक के दो पिता होते हैं (सगा और सोतेला), **गुरु** से दृष्ट हो तो नम्र एवं आज्ञाकारी, **शुक्र** से दृष्ट हो तो धोबी, **शनि** से दृष्ट हो तो लंगड़ा, **सूर्य** से दृष्ट हो तो विद्वान **मंगल** से दृष्ट हो तो राजा होता है।

धनुादि चार राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टि फल

ज्ञात्युर्वीशजनाश्रयश्च तुरगे पापैः सदम्भः
शठश्चात्युर्वीशनरेंद्रपंडितधनी द्रव्योन भूपो मृगे।
भूपो भूपसमोऽन्यदारनिरतः शेषैश्च कुंभस्थिते हास्यज्ञो
नृपतिर्बुधश्च झषगे पापश्च पापेक्षित ॥ 3 ॥

जब जन्म कुंडली में धनु राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो परिवार में श्रेष्ठ अर्थात् मुखिया, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा, **शुक्र** से दृष्ट हो तो बहुतों का आश्रयदाता, **शनि, सूर्य** या **मंगल** से दृष्ट हो तो दम्भी व धूर्त होता है और किसी का भला नहीं करता है।

जब जन्म कुंडली में मकर राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो राजा, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा, **शुक्र** से दृष्ट हो तो विद्वान, **शनि** से दृष्ट हो तो धनी, **सूर्य** से दृष्ट हो तो निर्धन, **मंगल** से दृष्ट हो तो राजा होता है।

जब जन्म कुंडली में कुंभ राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो राजा, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा, **शुक्र** से दृष्ट हो तो पर स्त्रीगामी, **शनि** या **सूर्य** या **मंगल** से दृष्ट हो तो भी परस्त्रीगामी होता है।

जब जन्म कुंडली में मीन राशि में स्थित चन्द्र—बुध से दृष्ट हो तो व्यंग्यकर्त्ता और हंसी मजाक करने वाला, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा, **शुक्र** से दृष्ट हो तो विद्वान,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि, सूर्य या मंगल से दृष्ट हो तो पापी होता है ।

टिप्पणी— यदि उक्त मेषादि बारह राशियों में स्थित चन्द्रमा की राशि लग्न राशि हो तो फल अधिक सटीक और अचूक बैठता है । सामान्यत: राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टि के फल वाले लक्षण जातक मे मिलते हैं । सुविधा हेतु मेषादि राशियों में स्थित चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों की दृष्टि का फल चक्र बनाकर दे रहे हैं—

चन्द्रमा पर अन्य ग्रहों का दृष्टि का फल चक्रम्

चन्द्र राशि	दृष्टा ग्रह (जिसकी दृष्टि चन्द्र पर पड़ रही है)					
	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मेष	निर्धन	राजा	पंडित	राजा सदृश	गुणवान	चोर
वृष	सेवक	निर्धन	चोर	राजा तुल्य	राजा	धनी
मिथुन	निर्धन	सिपाही शस्त्र विक्रेता	राजा	विद्वान	निर्भय	बुनकर
कर्क	नेत्र रोगी	सिपाही	कवि साहित्यकार	राजा	राजा भूपति	सिपाही
सिंह	राजा	राजा	ज्योतिषी	धनी	राजा	नाई
कन्या	स्त्री के आश्रय में	स्त्री के आश्रय में	राजा	सेनानायक	सर्व कार्य निपुण	स्त्री वशवर्ती
तुला	हत्यारा बेईमान	हत्यारा बेईमान	राजा	सुनार	व्यापागी	हत्यारा बेईमान
वृश्चिक	निर्धन	राजा	दो पिता या जुड़वां बच्चे	नम्र आज्ञाकारी	धोबी	लंगड़ा
धनु	दंभी धूर्त	दंभी भला न कहे	परिवार का मुखिया	राजा	आश्रय दाता	दम्भी धूर्त, पाखण्डी
मकर	निर्धन	राजा	राजा	राजा	विद्वान	धनी
कुंभ	परस्त्री गामी	परस्त्री गामी	राजा	राजा	परस्त्री गामी	परस्त्री गामी
मीन	पापी	पापी	व्यंगकार [illegible]	राजा	विद्वान	पापी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

होरा, द्रेष्काण और द्वादशांशों में स्थित चन्द्र पर ग्रह दृष्टि फल

होरेशर्क्षदलाश्रितैः शुभकरो दृष्टः शशीतद्गतस्त्र्यंशे
तत्पतिभिः सुहृद्भवनगैर्वा वीक्षितः शस्यते।
यत्प्रोक्तं प्रतिराशिवीक्षणफलं तद्द्वादशांशे स्मृतं
सूर्याद्यैरवलोकितेऽपि शशिनि ज्ञेयं नवांशेष्वतः ॥ 4 ॥

जन्म समय चन्द्रमा जिस ग्रह की होरा में स्थित होता है उसी होरा स्वामी की होरा में स्थित ग्रहों से दृष्ट हो तो शुभ होता है। जैसे सूर्य होरा में स्थित चन्द्रमा पर सूर्य होरा में स्थित ग्रहों की दृष्टि हो तो शुभ फलदायी होती है और इसी प्रकार चन्द्र होरा में स्थित चन्द्रमा पर चन्द्र होरा में स्थित अन्य ग्रहों की दृष्टि हो तो शुभफलदायी होती है।

जन्म समय चन्द्रमा जिस द्रेष्काण में स्थित हो उस द्रेष्काण स्वामी से दृष्ट चन्द्रमा शुभफलदायी होता है।

द्वादश राशि में स्थित चन्द्रमा के ऊपर प्रत्येक ग्रहों की दृष्टिवश जो फल कहा गया है वही उस राशि के द्वादशांश में कहना चाहिए अर्थात् मेष राशि में स्थित चन्द्रमा के ऊपर मंगलादि ग्रहों का जो दृष्टिफल कहा गया है वही मेष राशि के द्वादशांश में स्थित चन्द्रमा के ऊपर मंगलादि ग्रहों का दृष्टिफल समझना चाहिए। अब मेषादि नवांशों में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि अन्य ग्रहों का दृष्टि फल बताते हैं।

मंगल व शुक्र के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल

आरक्षिको वधरुचिः कुशलो नियुद्धे
भूपोऽर्थवान् कलहकृत् क्षितिजांशसंस्थे।
मुर्खोऽन्यदारनिरतः सुकविः
सितांशे सत्काव्यकृत्सुखपरोऽन्यकलत्रगश्च ॥5॥

मंगल के नवांश (मेष और वृश्चिक राशि के नवांश) में स्थित चन्द्रमा-सूर्य ग्रह से दृष्ट हो तो जातक नगर रक्षक (Magistrate) या कोतवाल होता है, **मंगल** से दृष्ट हो तो हत्यारा, **बुध** से दृष्ट हो तो व्यायामी (Athlete) या कसरती (Gymnast) या पहलवान (Wrestler) होता है, **गुरु** से दृष्ट हो तो राजा होता है, **शुक्र** से दृष्ट हो तो धनी, **शनि** से दृष्ट हो तो झगड़ालू होता है।

शुक्र के नवांश (वृष व तुला राशि के नवांश) में स्थित चन्द्रमा-सूर्य से दृष्ट हो तो जातक अनपढ़ व मूर्ख होता है, **मंगल** की दृष्टि हो तो परस्त्रीगामी, **बुध** से दृष्ट हो तो प्रशंसनीय साहित्यकार या कवि होता है, **गुरु** से दृष्ट हो तो सुकवि या श्रेष्ठ साहित्यकार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है, **शुक्र** से दृष्ट हो तो सुखी एवं **शनि** से दृष्टि हो तो अन्य स्त्रियों से संबंध होते हैं।

बुध व चन्द्र के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल

बौधे हि रंगचरचौरकवींद्रमंत्री
गेयज्ञशिल्पनिपुणः शशिनि स्थितेंऽशे।
स्वांशेऽल्पगात्रधनलुब्धत पस्विमुख्यः
स्त्रीपोष्यकृत्यनिरतश्च निरीक्ष्यमाणं ॥ 6 ॥

बुध के नवांश (मिथुन व कन्या राशि के नवांश) में स्थित चन्द्रमा-सूर्य से दृष्ट हो तो जातक पहलवान (Wrestler), **मंगल** से दृष्ट हो तो चोर, **बुध** से दृष्ट हो तो उत्तम कवि, **गुरु** से दृष्ट हो तो मन्त्री, **शुक्र** से दृष्ट हो तो संगीतकार एवं **शनि** से दृष्ट हो तो कलाकार या शिल्पकार होता है।

चन्द्र के नवांश (कर्क राशि के नवांश) में स्थित चन्द्र-सूर्य से दृष्ट हो तो जातक दुर्बल और पतला होता है, **मंगल** से दृष्ट हो तो लोभी व कंजूस, **बुध** से दृष्ट हो तो तपस्वी **गुरु** से दृष्ट हो तो प्रधान, **शुक्र** से दृष्ट हो तो स्त्रियों द्वारा पालित, **शनि** से दृष्ट हो तो अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने वाला होता है।

सूर्य व गुरु के नवांश में स्थित चन्द्र पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टि फल

सक्रोधो नरपतिसंमतो निधीशः सिहांशे प्रभुरसुतोऽतिहिंस्त्रकर्मा।
जावांशे प्रथितबलो रणोपदेष्टा हास्यज्ञः सचिवविकामवृद्धशीलः ॥ 7 ॥

सूर्य के नवांश (सिंह राशि के नवांश) में स्थित चन्द्रमा-सूर्य से दृष्ट हो तो जातक क्रोधी, **मंगल** से दृष्ट हो तो राजा का प्रिय, **बुध** से दृष्ट हो तो गड़े हुए धन का स्वामी, **गुरु** से दृष्ट हो तो उपदेशक, **शुक्र** से दृष्ट हो तो पुत्रहीन एवं **शनि** से दृष्ट हो तो जीवों का नाशक होता है।

गुरु के नवांश (धनु व मीन राशि के नवांश) में स्थित चन्द्रमा-सूर्य से दृष्ट हो तो जातक शक्तिशाली और प्रसिद्ध होता है, **मंगल** से दृष्ट हो तो युद्ध कला में प्रवीण, **बुध** से दृष्ट हो तो व्यंग्कार व हंसमुख होता है, **गुरु** से दृष्ट हो तो प्रधान मंत्री, **शुक्र** से दृष्ट हो तो नपुंसक एवं **शनि** से दृष्ट हो तो धार्मिक एवं दानी होता है।

शनि के नवांश में स्थित चन्द्र पर सूर्यादि ग्रहों का दृष्टिफल

अल्पापत्यो दुःखितः सत्यपि स्वे मानासक्तः कर्मणि स्वेऽनुरक्तः।
दुष्टस्त्रीष्टः कृपणश्चार्किभागे चंद्रे भानौ तद्वदिन्द्वादिदृष्टे ॥ 8 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि के नवांश (मकर व कुंभ राशि के नवांश) में स्थित चन्द्रमा- सूर्य से दृष्ट हो तो जातक थोड़ी सन्तान वाला, **मंगल** से दृष्ट हो तो कंजूस होने से अप्रसन्न और दुःखी, **बुध** से दृष्ट हो तो अभिमानी, **गुरु** से दृष्ट हो तो निज कुल के लिए अच्छे कार्य करने वाला, **शुक्र** से दृष्ट हो तो दुष्ट स्त्रियों में आसक्त, **शनि** से दृष्ट हो तो कंजूस होता है।

इसी प्रकार जन्मकालिक नवांश के वश ग्रहों की दृष्टि से लग्न में भी फल समझना चाहिए, किन्तु वहां पर कर्क के नवांश को छोड़कर चन्द्रमा की दृष्टि अशुभ होती है। इसी प्रकार चन्द्रमादि से दृष्ट सूर्य का फल समझना चाहिए अर्थात् मेष के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर मेषादि ग्रहों का जो दृष्टि फल कहा गया है वही मेष के नवांश में स्थित सूर्य पर मेषादि ग्रहों का दृष्टिफल समझना चाहिए। किन्तु मेष के नवांश में स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि का जो फल कहा गया है वही फल मेष के नवांश में स्थित सूर्य पर समझना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक राशि के नवांश में स्थित सूर्य पर प्रत्येक ग्रहों का दृष्टिफल कहना चाहिए।

उपर्युक्त फलों पर विशेष विचार

वर्गोत्तमस्वपरमेषु शुभं यदुक्तं तत्पुष्टमध्यलघुताशुभमुत्क्रमेण।
वीर्यान्वितोंऽशकपतिर्निरूणद्धि पूर्वं राशीक्षणस्यफलमंशफलं ददाति ॥ 9 ॥

पूर्व श्लोकों में जो दृष्टि फल बताये गए हैं वो दो प्रकार के हैं—शुभ व अशुभ। मान लो राजा शुभ फल है और हत्यारा अशुभ फल हैं। यदि चन्द्रमा वर्गोत्तम में है तो सभी शुभ फलों को पुष्ट करता है अर्थात् शुभ फल में वृद्धि करता है, यदि चन्द्रमा स्वनवांश में हो तो सभी शुभ फल मध्यम श्रेणी के होते हैं और यदि चन्द्रमा अन्य नवांश में हो तो सभी शुभ फल कम मात्रा में अर्थात् अल्प मिलते हैं।

इसी प्रकार अशुभ फल के लिए समझना चाहिए अर्थात् चन्द्रमा वर्गोत्तम में हो तो सभी अशुभ फल अल्प मात्रा में मिलते हैं, चन्द्र स्वनांश में हो तो सभी अशुभ फल मध्यम होते हैं और चन्द्र अन्य नवांश में हो तो सभी अशुभ फल अधिक मात्रा में अशुभ हो जाते हैं।

यदि नवांश का स्वामी बली हो तो पहले राशि के दृष्टि फल को रोककर नवांश के दृष्टि फल को देता है।

यदि नवांश स्वामी निर्बल हो तो नवांश और राशि दोनों का दृष्टि फल समान रूप से मिलता है। इसी प्रकार चन्द्रमा और लग्न का फल समझना चाहिए। सूर्य का

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मात्र नवांश का दृष्टि फल सदैव कहना चाहिए क्योंकि इसकी राशि का दृष्टिफल नहीं कहा गया है ।

उपर्युक्त सभी फल लग्न व सूर्य के लिए समान रूप से समझने चाहिएं ।

इति श्री वराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके दृष्टिफलाध्यायः एकोनविंशः ॥ 19 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावफलाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर द्वारा रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर ग्रहों का द्वादश भावों में फल कहेंगें जिससे फलित करना आसान हो और फलित भी सटीक हो ।

द्वादश भाव में सूर्य का फल

शूरः स्तब्धो विकलनयनो निर्घृणोऽर्के तनुस्थे मेषे
सस्वस्तिमिरनयनः सिंहसंस्थे निशांधः ।
नीचेंऽधोऽस्वः शशिगृहगते बुद्बुदाक्षः पतंगे भूरिद्रव्यो
नृपहृतधनो वक्ररोगी द्वितीये ॥ 1 ॥
मतिविक्रमवांस्तृतीयगेऽर्के विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे ।
असुतो अनवर्जितस्त्रिकोणे बलवाञ्छत्रुजितश्च शत्रुयाते ॥ 2 ॥
स्त्रीभिर्गतः परिभवं मदगे पतंगे
स्वलपात्मजो निधनगे विकलेक्षणश्च ।
धर्मे सुतार्थसुखभाक् सुखशौर्यभाक्खे
लाभे प्रभूतधनवान्पतितस्तुरिःफे ॥ 3 ॥

यदि जन्म समय **सूर्य लग्न में हो** तो जातक नायक, शूर, मन्द गति से कार्य करने वाला, स्तब्ध, नेत्र रोगी और निर्दयी होता है ।

यदि लग्न का सूर्य मेष राशि में हो तो जातक धनी और नेत्र रोगी होता है ।यदि लग्न का सूर्य सिंह राशि में हो तो जातक रात्र्यन्ध अर्थात् रतौंधी (Moon blindness) का शिकार होता है ।यदि लग्न का सूर्य तुला राशि में हों तो जातक अन्धा और निर्धन होता है ।

यदि लग्न का सूर्य कर्क राशि में हों तो जातक की आँख बुदबुदाक्ष या फूली व जल युक्त नेत्र वाली होती है ।

यदि **द्वितीय भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक बहुत धनी, राजा के कोष से धन का नाश करने वाला और उसका चेहरा रोगग्रस्त होता है ।

यदि **तृतीय भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक बुद्धिमान और पराक्रमी होता है ।

यदि **चतुर्थ भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक अप्रसन्न और मानसिक रूप से अस्थिर होता है ।

यदि **पंचम भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक पुत्र व धन से हीन होता है ।

यदि **षष्ठ भाव में सूर्य** स्थित हो तो जातक बली और शत्रु को जीतने वाला

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है ।

यदि **सप्तम भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक स्त्रियों से अप्रभावित और दुःखी होता है ।

यदि **अष्टम भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक अल्प सन्तान और अल्प दृष्टि वाला, अस्थिर और दूषित होता है ।

यदि **नवम भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक धन, पुत्र व प्रसन्नता से युक्त होता है ।

यदि **दशम भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक बली एवं प्रसन्न होता है ।

यदि **एकादश भाव में सूर्य स्थित हो** तो जातक बहुत धनी होता है ।

यदि **सूर्य द्वादश भाव में स्थित हो** तो जातक पतित एवं भ्रष्ट होता है ।

द्वादश भाव में चन्द्र का फल

मूकोन्मत्तजडान्धहीनबधिरप्रेष्याः शशाङ्कोदये
स्वर्क्षाजोच्चगते धनी बहुसुतः सस्वः कुटुम्बी धने ।
हिंस्रो भ्रातृगते सुखे सतनये तत्प्रोक्तभावान्वितो
नैकारिर्मृदुकाय वह्निमदनस्तीक्ष्णोऽलसश्चारिगे ॥ 4 ॥
ईर्षुस्तीव्रमदो मदे बहुमतिर्व्याध्यर्दितश्चाष्टमे ।
सौभाग्यात्मजमित्रबन्धुधनभाग् धर्मस्थिते शीतगौ ।
निष्पत्तिं समुपैति धर्मधनधीशौर्यैर्युतः कर्मगे
ख्यातो भावगुणान्वितो भगवते क्षुद्रोऽङ्गहीनो व्यये ॥ 5 ॥

यदि **चन्द्र लग्न में स्थित हो** तो जातक गूंगा, मूर्ख, अन्धा, निन्दित कार्य करने वाला, बहरा और सेवकाई करने वाला होता है । यदि लग्न का चन्द्र कर्क राशि का हो तो धनी , मेष का हो तो बहुत पुत्रों वाला और वृष का हो तो धनी होता है ।

यदि **चन्द्र द्वितीय भाव में स्थित हो** तो जातक बडे कुटुम्ब वाला होता है ।

यदि **चन्द्र तृतीय भाव में स्थित हो** तो जातक निर्दयी, हत्यारा या कुकर्मी होता है ।

यदि **चन्द्र चतुर्थ भाव में स्थित हो** तो जातक प्रसन्न , सुखी, स्वजनों व घर से युक्त होता है ।

यदि **चन्द्र पंचम भाव में स्थित हो** तो जातक पुत्रवान, विद्वान और सर्वप्रिय होता है ।

यदि **चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हो** तो जातक अनेक शत्रुओं से युक्त , कोमल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर वाला, कम खाने वाला, दुर्बल, नपुंसक, क्रोधी और समय का अपव्यय करने वाला होता है।

यदि **चन्द्र सप्तम भाव में स्थित हो** तो जातक ईर्ष्यालु, कामुक और दूसरे की जायदायद पर दृष्टि रखता है।

यदि **चन्द्र अष्टम भाव में स्थित हो** तो जातक चंचल बुद्धि वाला और व्याधि से पीड़ित होता है।

यदि **चन्द्र नवम भाव में स्थित हो** तो जातक भाग्यशाली और उन्नतिशील होता है, उसे धन, पुत्र और स्वजनों का सुख मिलता है।

यदि **चन्द्र दशम भाव में स्थित हो** तो जातक सभी कार्यों में सफल, धार्मिक, धनी, बुद्धिमान और नायक होता है।

यदि **चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित हो** तो जातक प्रसिद्ध और सदैव लाभ अर्जित करता है।

यदि चन्द्रमा द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक निन्दित स्वभाव वाला और किसी अंग से हीन होता है।

मंगल व बुध का द्वादश भाव स्थित फल

लग्ने कुजे क्षततनुर्धनगे कदन्नो धर्मेऽघवान्दिनकरप्रतिमोऽन्यसंस्थः।
विद्वान्धनी प्रखलपंडितमंत्र्यशत्रुर्धर्मज्ञ विश्रुतगुणः परतोऽर्कवज्ज्ञे ॥ 6 ॥

यदि **मंगल लग्न में स्थित हो** तो जातक के शरीर पर जख्म का निशान होता है। यदि **मंगल द्वितीय भाव में स्थित हो** तो जातक अल्पभोजी और मोटा अन्न खाने वाला होता है। यदि **मंगल नवम भाव में स्थित हो** तो जातक पाप कर्म करने वाला होता है। **मंगल का अन्य भावों में फल सूर्य के अनुसार समझना चाहिए** अर्थात् सूर्य का तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, दशम, एकादश व द्वादश का जो फल पूर्व में कहा गया है वही फल मंगल का 3,4,5,6,7,8,10,11 व 12 वें भाव का समझना चाहिए। **मंगल चौथे हो** तो अप्रसन्न, **पाँचवें हो** तो पुत्रहीन व धनहीन, **छठें हो** तो शक्तिशाली, **सातवें हो** तो स्त्रीवशवर्ती, **आठवें हो** तो अल्प सन्तान, **दसवें हो** तो पराक्रमी, **ग्याहरवें हो** तो धनी एवं **बारहवें हो** तो पतित होता है।

यदि **बुध लग्न में स्थित हो** तो जातक विद्वान, **दूसरे भाव में हो** तो धनवान, **तीसरे भाव में हो** तो दुर्जन, **चौथे भाव में हो** तो विद्वान, **पाँचवें भाव में हो** तो मन्त्री, **छठें भाव में हो तो** शत्रुहीन, **सातवें भाव में हो** तो सच्चा और धर्म का ज्ञाता, **आठवें भाव में हो** तो शिक्षित और प्रसिद्ध होता है। **बुध का अन्य भावों का फल** (9,10,11

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

व 12 वें भाव का) सूर्य के 9,10,11,12 वें भाव के फलानुसार समझना चाहिए। बुध नौवें हो तो जातक पुत्रवान, धनी व प्रसन्न, दसवें भाव में हो तो पराक्रमी, ग्याहरवें हो तो धनी एवं बारहवें हो तो पतित होता है।

द्वादश भाव स्थित गुरु का फल

विद्वान्सुवाक्यः कृपणः सुखी च धीमानशत्रुः पितृतोऽधिकश्च।
नीचस्तपस्वी सधनः सलाभः खलश्च जीवे क्रमशो विलग्नात् ॥ 7 ॥

यदि गुरु का द्वादश भाव में फल क्रम से इस प्रकार समझना चाहिए - **पहले भाव में** गुरु हो तो विद्वान, **दूसरे भाव में** गुरु हो तो मधुरभाषी, **तीसरे भाव में** गुरु हो तो जातक कंजूस, **चौथे भाव में** गुरु हो तो जातक प्रसन्न, **पाँचवें भाव में** गुरु हो तो बुद्धिमान, **छठे भाव में** गुरु हो तो शत्रुहीन, **सातवें भाव में गुरु** हो तो जातक पिता के गुणों से भी श्रेष्ठ, **आठवें भाव में** गुरु हो तो जातक नीच कर्म करने वाला, **नौवें भाव में** गुरु हो तो जातक आस्तिक, धार्मिक कर्म करने वाला व भक्त या तपस्वी होता है, **दसवें भाव में** गुरु हो तो जातक धनवान, **ग्याहरवें भाव में** गुरु हो तो जातक लाभ प्राप्त करने वाला एवं **बारहवें भाव में** गुरु हो तो जातक दुष्ट एवं निर्भय होकर कुकर्म करता है।

द्वादश भाव स्थित शुक्र फल

स्मरनिपुणः सुखितश्च विलग्ने प्रियकलहोऽस्तगते सुरतेप्सुः।
तनयगते सुखितो भृगुपुत्रे गुरुवदतोऽन्यगृहे सधनोंऽत्ये ॥ 8 ॥

यदि जन्म समय **शुक्र लग्न में स्थित हो** तो जातक सुख साधनों से सम्पन्न एवं काम क्रीडा में चतुर होता है।

यदि जन्म समय **शुक्र सप्तम भाव में स्थित हो** तो जातक झगड़ालू और अधिक कामुक होता है।

यदि जन्म समय **शुक्र पाँचवें भाव में स्थित हो** तो जातक प्रसन्न होता है।

अन्य भावों (2,3,4,6,8,9,10,11,12 वें भाव) में शुक्र का फल गुरु के 2,3,4,6,8,9,10,11 व 12 वें भाव के फल के अनुरूप समझना चाहिए।

शुक्र **दूसरे भाव में हो** तो मधुर भाषी, **तीसरे भाव में हो** तो कंजूस, **चौथे भाव में हो** तो प्रसन्न, **छठें भाव में हो तो** शत्रु रहित, **आठवें भाव में हो** तो कमीना, **नौवें भाव में हो** तो तपस्वी, **दसवें भाव में हो** तो धनी, **ग्याहरवें भाव में हो** तो लाभ प्राप्त करने वाला एवं **बारहवें भाव में हो तो** जातक दुष्ट होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि शुक्र उच्च राशि मीन में हो तो जातक धनवान होता है ।

द्वादश भाव स्थित शनि का फल

अदृष्टर्थो रोगी मदनवशगोऽत्यंतमलिन:
शिशुत्वे पीडार्त्तः सवितृसुतलग्नेत्यलसवाक् ।
गुरुस्वर्क्षोच्चस्थे नृपतिसदृशो ग्रामपुरपः सुविद्वांश्चार्वंगो
दिनकरसमोऽन्यत्र कथितः ॥ 9 ॥

यदि जन्म समय **शनि लग्न में स्थित हो** तो जातक रोगी, निर्धन, कामुक, मलिन, बचपन में दुःखी और बोलने में आलसी होता है । यदि **लग्न में शनि** तुला, धनु, मकर, कुंभ या मीन राशि का हो तो जातक राजा सदृश, ग्राम प्रधान, नगराध्यक्ष, पंडित व आकर्षक होता है ।

अन्य भावों (2,3,4,5,6,7,8,9,10,11 व 12 वें भाव) का फल क्रमशः सूर्य के 2,3,4,5,6,7,8,9,10,11 व 12 वें भाव के अनुरूप ही समझना चाहिए ।

दूसरे भाव में शनि हो तो जातक धनी, राजा के क्रोध से धन हानि एवं मुख का रोगी होता है । **तीसरे भाव में शनि हो** तो जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होता है । **चौथे भाव में शनि हो** तो जातक अप्रसन्न व बीमार होता है । **पाँचवें भाव में शनि हो** तो जातक पुत्र व धन रहित होता है । **छठे भाव में शनि हो** तो जातक पराक्रमी एवं शत्रु पर विजय पाने वाला होता है । **सातवें भाव में शनि हो** तो जातक स्त्री वशवर्ती होता है । **आठवें भाव में शनि हो** तो जातक अल्प सन्तान वाला और आँखों का रोगी होता है । **नौवें भाव में शनि हो** तो जातक पुत्रवान, धनी एवं प्रसन्न होता है । **दसवें भाव में शनि हो** तो जातक शक्तिशाली व प्रसन्न होता है । **ग्याहरवें भाव में शनि हो** तो जातक धनी होता है । **बारहवें भाव में शनि हो** तो जातक पतित होता है ।

ग्रहों का भावों में विशेष फल

सुहृदरिपर कीयस्वर्क्षतुंगस्थितानां
फलमनुपरिचिंत्यं लग्नदेहादिभावैः ।
समुपचयविपत्ती सौम्यपापेषु सत्यः कथयति
विपरीतं रिःफषष्ठाष्टमेषु ॥ 10 ॥

लग्न को शरीर, द्वितीय भाव को धन आदि मानकर उन भावों में स्थित ग्रह मित्रग्रही, शत्रुग्रही या समग्रही, स्वराशि, उच्चराशि में हो तो उसी के अनुरूप फल देते है । मान लो कोई ग्रह किसी भी भाव में मित्रग्रही है तो उस भाव के फल की वृद्धि करता है । ग्रह शत्रुग्रही हो तो उस भाव के फल की हानि करता है और समग्रही हो तो भाव के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

फल की न वृद्धि करता है और न हानि करता है, उदासीन रहता है । उच्चराशि और स्वराशि ग्रह भाव के फल में वृद्धि करते हैं ।

भाव की वृद्धि हो तो शुभ फल और भाव की हानि हो तो अशुभ फल होता है ।

सत्याचार्य का मत है कि जिस भाव में शुभ ग्रह हों उसकी वृद्धि और जिसमें पाप ग्रह बैठा हो उसकी हानि होती है । किन्तु 6, 8 व 12 वें भाव में उक्त फल के विपरीत फल जानना चाहिए अर्थात् इन तीनों भावों में पाप ग्रह हों तो भाव की वृद्धि और शुभ ग्रह हों तो भाव की हानि होती है ।

उच्चत्रिकोण स्वसुहृच्छत्रुनीचगृहार्कगैः ।
शुभं संपूर्णपादोनदलपादाल्पनिष्फलम् ॥ 11 ॥

फल दो प्रकार के होते हैं—शुभ एवं अशुभ । शुभ भाव में स्थित ग्रह शुभ फल और अशुभ भाव में स्थित ग्रह अशुभ फल देता है । किस भाव का शुभाशुभत्व कितना है, अब यह बताते हैं—

उच्च राशि में स्थित ग्रह सम्पूर्ण **100 %** शुभ फल देता है ।

मूल त्रिकोण राशि में स्थित ग्रह **75 %** शुभ फल देता है ।

स्वराशि में स्थित ग्रह **50 %** शुभ फल देता है ।

मित्रराशि में स्थित ग्रह **25 %** शुभ फल देता है ।

शत्रुराशि में स्थित ग्रह **25 %** से कम फल देता है ।

नीच राशि या अस्त ग्रह **0 %** फल देता है ।

अशुभ फल के लिए इसके विपरीत समझना चाहिए अर्थात नीच और अस्त ग्रह 100 % अशुभ फल देता है , शत्रुराशि में स्थित ग्रह 25 % अशुभ फल प्रदान करता है, स्वराशि में स्थित ग्रह 50 % अशुभ फल प्रदान करता है , मूल त्रिकोण राशि में स्थित ग्रह 25 % अशुभ फल प्रदान करता है और उच्चराशि में स्थित ग्रह 0 % अशुभ फल प्रदान करता है अर्थात् अशुभ फल नहीं देता है ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके भावऽध्यायो विंश ॥ 20 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्रय योगाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर द्वारा रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर ग्रह और उसके वर्गों के फल की चर्चा करेगें जिससे फलित करने में आप सक्षम हो सकें।

स्वग्रही और मित्रग्रही ग्रहों का फल

कुलसमकुल मुख्यबंधुपूज्या धनिसुखिभोगिनृपाः स्वभैकवृद्धया।
परविभवसुहृत्स्वबंधुपोष्या गणपबलेशनृपाश्च मित्रभेषु ॥ 1 ॥

यदि जन्म समय जातक की कुण्डली में **एक ग्रह स्वग्रही हो तो** परिवार में उसकी धन एवं सम्मान के रूप में औसत स्थिति होती है। यदि **दो ग्रह स्वग्रही हों तो** वह परिवार का मुखिया होता है। यदि **तीन ग्रह स्वग्रही हों तो** मित्रों व रिश्तेदारों द्वारा सम्मानित होता है। यदि **चार ग्रह स्वग्रही हों** तो धनी होता है। यदि **पाँच ग्रह स्वग्रही हों** तो सुख एवं प्रसन्नता के साथ जीवन-यापन करता है। यदि **छह ग्रह स्वग्रही हों** तो मनुष्य को सभी सुख प्राप्त होते हैं। **सात ग्रह स्वग्रही हों** तो राजा होता है।

इसी प्रकार यदि जातक की कुण्डली में एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात ग्रह मित्र क्षेत्री हों तो क्रमशः निम्न फल होता है—

1. **एक ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो जीवन में दूसरों का सहयोग मिलता है।
2. **दो ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो जीवन में मित्रों का सहयोग मिलता है।
3. **तीन ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो जीवन में रिश्तेदारों का सहयोग मिलता है।
4. **चार ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो जीवन में भाई-बहनों का सहयोग मिलता है।
5. **पाँच ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो जीवन में अनेक लोगों का नेता होता है।
6. **छह ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो सेनापति होता है।
7. **सात ग्रह मित्र क्षेत्री** हों तो राजा होता है।

उच्चस्थ ग्रह या नीचस्थ ग्रह मित्र या शत्रु ग्रह से दृष्ट या युक्त होने का फल

जनयति नृपमेकोऽप्युच्चगो मित्रदृष्टः
प्रचुर धनसमेतं मित्रयोगाच्च सिद्धम्।
विधनविसुखमूढव्याधितो बंधतप्तो
वधदुरितसमेतः शत्रुनीचर्क्षगेषु ॥ 2 ॥

यदि जन्म समय **एक ग्रह उच्च का हो** और मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो जातक राजा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है।

यदि जन्म समय **एक ग्रह उच्च का हो और मित्र ग्रह से युक्त हो** तो जातक प्रचुर धन प्राप्त करता है।

यदि जन्म समय **एक ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हो** तो जातक गरीब होता है।

यदि जन्म समय **दो ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हों** तो जातक दु:खों से पीड़ित होता है।

यदि जन्म समय **तीन ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हों** तो जातक मूर्ख होता है।

यदि जन्म समय **चार ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हों** तो जातक रोगों से पीड़ित होता है।

यदि जन्म समय **पाँच ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हों** तो जातक कारावास से कष्ट भोगता है।

यदि जन्म समय **छह ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हों** तो जातक अधिक दु:ख का शिकार होता है।

यदि जन्म समय **सात ग्रह शत्रु क्षेत्री या अपने नीच स्थान में स्थित हों** तो जातक मृत्यु तुल्य कष्ट या पापकर्मों से युक्त होने के कारण मृत्यु को पाता है।

टिप्पणी—बुध और सूर्य ग्रह एक साथ कभी भी नीच राशि में नहीं हो सकते। इसी प्रकार ग्रह कभी भी एक साथ नीच राशि में नहीं हो सकते। सामान्यत: लेखक ने अपना मत बताने का प्रयास किया है।

कुंभ लग्न का फल

न कुम्भलग्नं शुभमाह सत्यो न भागभेदाद्यवना वदन्ति।
कस्यांशभेदो न तथास्ति राशेरतिप्रसंगस्त्विति विष्णुगुप्तः॥ 3॥

सत्याचार्य का मत है कि कुंभ लग्न में जातक उत्पन्न हो तो यह लग्न उसको शुभ नहीं होता, लेकिन यवनाचार्य का मत है कि कुंभ राशि के द्वादशांश में जातक उत्पन्न हो तो उसको शुभ नहीं होता है। यहाँ पर विष्णुगुप्त का मत है कि कौन सी ऐसी राशि है जिसमें कुम्भ राशि का द्वादशांश नहीं होता है, इस तरह सभी राशियों का फल अशुभ हो जायेगा और लग्नादि द्वादश भावों का फल निरर्थक हो जायेगा। इस प्रकार सत्याचार्य का मत ही ठीक है अर्थात् कुम्भ लग्न ही अशुभ है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

होरा का फल

यातेष्वसत्स्वसमभेषु दिनेशहोरां ख्यातो महोद्यमबलार्थयुतोऽतितेजाः ।
चान्द्रीं शुभेषु युजि मार्द्दवकान्तिसौख्यसौभाग्यधीमधुरवक्ययुतः प्रजातः ॥ 4 ॥
तास्वेव होरास्वपरर्क्षगेषु ज्ञेया नराः पूर्वगणषु मध्याः ।
व्यत्स्तहोराभवनस्थितेषु मर्त्या भवंत्युक्तेगुणैर्विहीनाः ॥ 5 ॥

जब पापग्रह विषम राशि (सूर्य की होरा) के पूर्वार्द्ध में जन्म समय स्थित हों तो जातक प्रसिद्ध, उद्यमी, बली, धनी और अत्यन्त प्रतापी होता है ।

जब शुभ ग्रह सम राशि (चन्द्र की होरा) के पूर्वार्द्ध में जन्म समय स्थित हों तो जातक सीधा, नम्र, गौरवर्ण वाला, बहु मित्रों वाला, बुद्धिमान, मधुर वक्ता और सबका प्रिय होता है ।

जब पापग्रह सम राशि (सूर्य की होरा) के उत्तरार्द्ध में जन्म समय स्थित हों तो पूर्वाक्त सब फल मध्यम रूप से मिलता है अर्थात् मध्यम रूप से प्रसिद्ध, उद्यमी, बली, धनी और प्रतापी होता है ।

जब शुभ ग्रह विषम राशि (चन्द्र की होरा) के उत्तरार्द्ध में जन्म समय स्थित हों तो पूर्वाक्त सब फल मध्यम रूप से मिलता है अर्थात् जातक सीधा, नम्र, गौरवर्ण, बहु मित्रों वाला, बुद्धिमान, मधुर वक्ता और सबका प्रिय आदि फल मध्यम रूप में मिलते हैं । यदि ये सब इसके विपरीत हों (विषम राशि से संबंधी सूर्य की होरा में शुभ ग्रह और सम राशि सम्बन्धी चन्द्र की होरा में पाप ग्रह स्थित हों) तो पूर्वोक्त सब फल नहीं होता है और जिस होरा में ग्रह अधिक हों उसका फल अधिक और जिसमें अल्प हों उसका फल अल्प होता है ।

द्रेष्काण स्थित चन्द्रमा का फल

कल्याणरूपगुणमात्मसुत्दृदृकाणे चंद्रोऽन्यगस्त दधिनाथगुणं करोति ।
व्यालोद्यतायुधचतुश्चरणांडजेषु तीक्ष्णोऽतिहिंस्त्रगुरुतल्परतोऽटनश्च ॥ 6 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा स्व या मित्र द्रेष्काण में स्थित हो तो जातक गुणी और आकर्षक होता है । यदि इन दोनों द्रेष्काणों से भिन्न द्रेष्काण में स्थित हो तो जिस द्रेष्काण में स्थित हो उस द्रेष्काण स्वामी के सदृश गुण वाला होता है । कहने का तात्पर्य यही है कि चन्द्रमा जिस द्रेष्काण राशि में स्थित हो उसका स्वामी चन्द्रमा का सम हो तो मध्यम फल देता है और द्रेष्काण स्वामी चन्द्रमा का शत्रु हो तो जातक गुण व रूप से रहित होता है ।

यदि जन्म समय चन्द्रमा व्याल संज्ञक (कर्क का द्वितीय व तृतीय द्रेष्काण,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक का प्रथम और द्वितीय द्रेष्काण और मीन का तृतीय द्रेष्काण व्याल (Serpent) संज्ञक होता है) हो तो जातक उग्र स्वभाव, क्रूर या निष्ठुर होता है ।

यदि चन्द्र या उधतायुध संज्ञक (मेष का पहला और तीसरा द्रेष्काण, मिथुन का दूसरा और तीसरा द्रेष्काण, सिंह का दूसरा और तीसरा द्रेष्काण कन्या का दूसरा द्रेष्काण, तुला का तीसरा, धनु का पहला ओर तीसरा द्रेष्काण और मकर का तीसरा द्रेष्काण उधतायुध (Armed) संज्ञक होता है ।) हो तो जातक पापकर्मी और हत्यारा होता है ।

यदि जन्म समय चन्द्रमा चतुष्पाद संज्ञक (मेष के द्वितीय द्रेष्काण, वृष के द्वितीय व तृतीय द्रेष्काण, कर्क के पहले द्रेष्काण, सिंह के दूसरा व तीसरा द्रेष्काण, तुला का दूसरा, वृश्चिक का तीसरा, धनु का पहला और मकर का पहला द्रेष्काण चतुष्पाद संज्ञक है) हो तो जातक गुरु स्त्रीगामी होता है ।

यदि जन्म समय चन्द्रमा पक्षी संज्ञक (मिथुन का दूसरा, सिंह का पहला, तुला का दूसरा और कुम्भ का पहला द्रेष्काण पक्षी संज्ञक होता है ।) हो तो जातक भ्रमण प्रिय या घुमक्कड़ होता है ।

नवांश का फल

स्तेनो भोक्ता पंडिताढ्यो नरेन्द्रः क्लीबः शूरो विष्टिकृद्दासवृत्तिः ।
पापो हिंस्त्रोऽभीश्च वर्गोत्तमांशेष्वेषामीशा राशिवद्द्वादशांशैः ।। 7 ।।

यदि जातक **मेष राशि के नवांश** (लग्न राशि मेष न हो) में उत्पन्न हो तो चोर होता है । यदि जातक **वृष राशि के नवांश** (लग्न राशि वृष न हो) में उत्पन्न हो तो भोगी होता है । यदि जातक **मिथुन राशि के नवांश** (लग्न राशि मिथुन न हो) में उत्पन्न हो तो विद्वान या पंडित होता है । यदि जातक **कर्क राशि के नवांश** (लग्न राशि कर्क न हो) में उत्पन्न हो तो धनवान होता है । यदि जातक **सिंह राशि के नवांश** (लग्न राशि सिंह न हो) में उत्पन्न हो तो राजा होता है । यदि जातक **कन्या राशि के नवांश** (लग्न राशि कन्या न हो) में उत्पन्न हो तो नपुंसक होता है । यदि जातक **तुला राशि के नवांश** (लग्न राशि तुला न हो) में उत्पन्न हो तो शूरवीर होता है । यदि जातक **वृश्चिक राशि के नवांश** (लग्न राशि वृश्चिक न हो) में उत्पन्न हो तो बोझक (Porter) होता है । यदि जातक **धनु राशि के नवांश** (लग्न राशि धनु न हो) में उत्पन्न हो तो सेवक होता है । यदि जातक **मकर राशि के नवांश** (लग्न राशि मकर न हो) में उत्पन्न हो तो पापी होता है । यदि जातक **कुंभ राशि के नवांश** (लग्न राशि कुंभ न हो) में उत्पन्न हो तो जातक दुष्ट होता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। यदि जातक मीन राशि के नवांश (लग्न राशि मीन न हो) में उत्पन्न हो तो जातक निर्भय होता है।

यदि जातक का जन्म वर्गोत्तम नवांश में हो तो पूर्वोक्त नवांश फल का राजा या सरदार क्रम से होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मान लो जातक मेष के वर्गोत्तम में उत्पन्न है तो वह चोरों का सरदार होता है। इसी प्रकार अन्यत्र समझें जैसे वृष हो तो भोगियों का सरदार आदि।

द्वादशांश का फल चन्द्रमा के फल के अनुरूप ही समझना चाहिए।

मंगल, शनि, गुरु, बुध, शुक्र का त्रिशांश फल

जायान्वितो बलविभूषणसत्वयुक्तस्तेजोऽतिसाहसयुतश्च कुजे स्वभागे।
रोगी मृतस्वयुवतिर्विषमोऽन्यदारो दुःखी परिच्छदयुतो मलिनोऽर्कपुत्रे ॥ 8 ॥
स्वांशे गुरौ धनयशः
सुखबुद्धियुक्तास्तेजस्विपूज्यनिरू गुद्यमभोगवंतः।
मेधाकलाकपटकाव्यविवाद शिल्पशास्त्रार्थ
साहसयुताः शशिजेऽतिमान्याः ॥ 9 ॥
स्वे त्रिंशांशे बहुसुतसुखारोग्यभाग्यार्थरूपः
शुक्रे तीक्ष्णः सुललितवपुः सुप्रकीर्णेंद्रियश्च।
शूरस्तब्धौ विषमवधकौ सद्गुणाढ्यौ
सुखिज्ञौ चार्वंगेष्टौ रविशशियुतेष्वारपूर्वकिषु ॥ 10 ॥

यदि **मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो** तो जातक स्त्री, बल, आभूषण और उदारता से युक्त, तेजस्वी और साहसी होता है।

यदि **शनि अपने त्रिशांश में स्थित हो** तो जातक रोगी, पत्नी पहले मरे, क्रोधी, परस्त्री गामी, कंजूस, घर, वस्त्र, सेवक से युक्त एवं मलिन होता है।

यदि **गुरु अपने त्रिशांश में स्थित हो** तो जातक धनी, प्रसिद्ध, प्रसन्न और बुद्धिमान होता है। तेजस्वी, सम्मानित, स्वस्थ, आशावान, प्रत्येक कार्य को करने वाला और सभी सुख-साधन प्राप्त करता है।

यदि **बुध अपने त्रिशांश में स्थित हो** तो जातक बुद्धिमान, सभी कलाओं में प्रवीण या किसी एक में प्रवीण या बहुमुखी प्रतिभा का धनी, कपटी, लेखक, विवादी, शिल्पज्ञ, धनी साहसी औंर अति सम्मानीय होता है।

यदि **शुक्र अपने त्रिशांश में हो** तो जातक अनेक पुत्रों से युक्त, सुखी, स्वस्थ, भाग्यशाली, धनी और आकर्षक गौर वर्ण, सीधा, नम्र, भोगी व पापी होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि जन्म **समय मंगल के त्रिशांश में सूर्य स्थित हो** तो जातक नायक या शूर होता है, यदि जन्म समय **मंगल के त्रिशांश में चन्द्र हो** तो जातक स्तब्ध एवं शिक्षित होता है।

यदि जन्म समय **शनि के त्रिशांश में सूर्य स्थित हो** तो जातक पापी होता है और **चन्द्रमा शनि के त्रिशांश में हो** तो जातक जल्लाद होता है।

यदि **गुरु के त्रिशांश में सूर्य स्थित हो** तो जातक गुणवान, **चन्द्रमा स्थित हो** तो धनवान होता है।

यदि **बुध के त्रिशांश में सूर्य स्थित हो** तो जातक सुखी व प्रसन्न, **चन्द्र स्थित हो** तो विद्वान या शोधार्थी होता है।

यदि **शुक्र के त्रिशांश मे सूर्य स्थित हो** तो जातक सुन्दर व आकर्षक शरीर का स्वामी होता है, **चन्द्रमा स्थित हो** तो सबका प्रिय व सुन्दर होता है।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके आश्रययोगाध्याय एकविंश ॥ 21 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकीर्णाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर मिश्रित ग्रह योगों की चर्चा करेंगे। इन योगों को ध्यान से समझकर फलित कहते समय उपयोग में लाना चाहिए।

ग्रहों की परस्पर कारक संज्ञा

स्वर्क्षतुङ्गमूलत्रिकोणगाः कण्टकेषु यावन्त आश्रिताः।
सर्व एव तेऽन्योन्यकारकाः कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ 1 ॥

जो ग्रह स्वराशि या उच्च या मूलत्रिकोण में होकर केन्द्र (1, 4, 7, 10) भाव में स्थित हो और दूसरा कोई ग्रह भी ऐसा हो तो वे दोनो परस्पर कारक संज्ञक होते हैं अर्थात् निश्चित प्रभाव सहित एवं दूसरे के सहायक होते हैं। इन कारक संज्ञक ग्रहों में से दशम भाव में जो ग्रह स्थित हो वह विशेष कारक (Special Co-Worker) होता है।

टिप्पणी—उक्त प्रकार के ग्रहों की त्रिकोण भाव में स्थित होने पर भी केन्द्र जैसा फल मिलता है, किन्तु नवम भाव में विशेष कारक होता है।

कारक संज्ञक ग्रह का उदाहरण

कर्कटोदयगते यथोडुपे स्वोच्चागाः कुजयमार्कसूरयः।
कारका निगदिताः परस्परं लग्नगस्य सकलोंऽबराम्बुगः ॥ 2 ॥

मान लो कर्क लग्न हो और उसमें स्वराशि का चन्द्र स्थित हो और मंगल, शनि, सूर्य और गुरु उच्च राशि में स्थित हों तो ये चारों ग्रह परस्पर कारक संज्ञक होते हैं।

लगनस्थ ग्रह स्वक्षेत्र, उच्च या मूलत्रिकोण का हो तो उससे दशम या चतुर्थ भाव स्थित ग्रह स्वक्षेत्र, उच्च या मूल त्रिकोण में स्थित हो तो लगनस्थ ग्रह का वह कारक संज्ञक होता है, किन्तु उसका लग्न गत ग्रह कारक संज्ञक नहीं होता है।

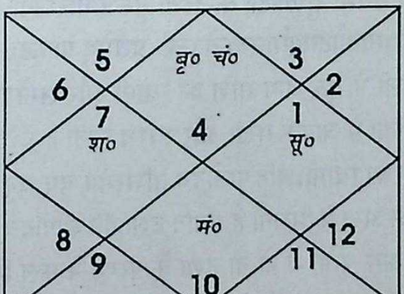

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारकान्तर योग

स्वत्रिकोणोच्चगो हेतुरन्योन्यं यदि कर्मगः ।
सुहृत्तद्गुणसम्पन्न कारकश्चापि स स्मृतः ॥ 3 ॥

कोई ग्रह स्वक्षेत्र या उच्च या मूल त्रिकोण में हो तो कारक होता है। यदि ये किसी भी ग्रह से दशम भाव में स्थित हो और स्वक्षेत्र, मूलत्रिकोण और उच्चस्थ हो तो पहले ग्रह मित्र या मित्र हो सकता है और वह दूसरे ग्रह का कारक होता है, जबकि दूसरा ग्रह पहले ग्रह का कारक नहीं होता है। यह योग यात्रा में उपयोगी है।

टिप्पणी—कारक ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभफलदायी होते हैं।

कारक संज्ञक ग्रह का प्रयोजन

शुभं वर्गोत्तमे जन्म वेशिस्थाने च सद्गृहे ।
अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ 4 ॥

जातक का जन्म वर्गोत्तम नवांश में हो या चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांश में स्थित हो तो वह जीवन भर प्रसन्न और सम्पन्न रहता है। जिस जातक के जन्मकाल में शुभ ग्रह वेशि स्थान (सूर्य जिस भाव में हो उससे दूसरा भाव) में स्थित हो या चारों केन्द्र (1,4,7,10) भावों में ग्रह हों तो जीवन में प्रसन्नता और सम्पन्नता रहती है। जिस जातक के जन्मकाल में कारक ग्रह हों तो उसका जन्म शुभ और प्रसन्नता से युक्त होता है।

यदि केन्द्र में एक ग्रह हो तो जातक सुखी होगा, यदि दो या दो से अधिक ग्रह केन्द्र में हों तो अधिक सुखी रहेगा और यदि ग्रह शुभ भी हों तो सर्वाधिक सुखी और सम्पन्न रहेगा। यदि ग्रह योग अधिक अनुकूल हों तो सर्वप्रकार से सुखी, प्रसन्न एवं सम्पन्न होगा। यह फल योगकारक ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में मिलेगा।

युवावस्था का सुखयोग

मध्ये वयसः सुखप्रदाः केन्द्रस्था गुरुजन्मलग्नपाः ।
पृष्ठोभयकोदयर्क्षगास्त्वन्तेऽन्तः प्रथमेषु पाकदाः ॥ 5 ॥

यदि जन्मकुंडली में गुरु, जन्म राशि का स्वामी और लग्नेश में तीनों ग्रह केन्द्र में स्थित हों तो युवावस्था में जातक सुखी और स्वस्थ रहता है।

दशापति (दशा का स्वामी) यदि पृष्ठोदय राशि (मेष, वृष, धनु, कर्क और मकर) में हो तो उक्त फल दशा के अन्त में मिलता है। यदि दशापति शीर्षोदय राशि (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुंभ) में हो तो दशा के प्ररम्भ में फल मिलता है और यदि दशापति उभयोदय राशि (मीन) में हो तो दशा के मध्य में फल मिलता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह फल का काल ज्ञान

दिनकररुधिरौ प्रवेशकाले गुरुभृगुजौ भवनस्य मध्ययातौ।
रविसुतशशिनौ विनिर्गमस्थौ शशितनयः फलदस्तु सर्वकालम् ॥ 6 ॥

गोचर वश सूर्य और मंगल राशि के प्रथम भाग (पहले दस अंशों में) में शुभाशुभ फल देते हैं, गुरु और शुक्र राशि के मध्य भाग (11 से 20 अंशों) में शुभाशुभ फल देते हैं शनि और चन्द्र राशि के अन्तिम भाग (21 से 30 अंशों में) में शुभाशुभ फल देते हैं और बुध ग्रह जिस राशि में हो उसका शुभाशुभ फल पूर्ण राशि (30 अंशो) में सदैव देता है।

इति श्री वराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके प्रकीर्णकाध्यायो द्वाविंशतितमः ॥22 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनिष्टाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर पाप ग्रहों से बनने वाले योगों की चर्चा करेंगे जो फलित करते समय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

पुत्र एवं स्त्री संबंधी योग

लग्नात्पुत्रकलत्रभे शुभपतिप्राप्तेऽथवालोकिते चंद्राद्वा
यदि संपदस्ति हि तयोर्ज्ञेयोऽन्यथासंभवः।
पाथोनोदयगे रवौ रविसुतो मीनस्थितो दारहा..
पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति ॥ 1 ॥

यदि जन्म समय लग्न या चन्द्र से पांचवें भाव में शुभ ग्रह हो या अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो तो जातक के पास पुत्र रूपी सम्पत्ति होती है, यदि पंचम भाव शुभ ग्रह या अपने स्वामी से युत या दृष्ट न हो तो पुत्र सम्पत्ति नहीं होती है।

इसी प्रकार लग्न या चन्द्र से सातवें भाव में शुभ ग्रह हो या अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो तो जातक के पास स्त्री रूपी सम्पत्ति होती है, यदि सप्तम भाव शुभ ग्रह या अपने स्वामी से युत या दृष्ट न हो तो स्त्री रूपी सम्पत्ति नंहीं होती है।

यदि सूर्य लग्न में कन्या राशि में स्थित हो और शनि मीन राशि में स्थित हो तो जातक की स्त्री मर जाती है अर्थात् वह विधुर हो जाता है। इसी प्रकार कन्या राशि का सूर्य लग्न में हो और मकर राशि में मंगल स्थित हो तो जातक का पुत्र मर जाता है।

टिप्पणी — हिन्दु शास्त्रों के अनुसार बारह प्रकार के पुत्र होते हैं—

1. औरस — जो सगे माँ-बाप से उत्पन्न होता है उसे औरस पुत्र कहते है। **2. क्षेत्रज्ञ**— अपने पति के लिए किसी संबंधी द्वारा उत्पन्न पुत्र को क्षेत्रज्ञ कहते है। **3. दत्तक** — सगे माँ-बाप की इच्छा से गोद लिया बच्चा दत्तक पुत्र होता है। **4. कृत्रिम**— सगे माँ-बाप का इच्छा के बिना गोद लिया पुत्र कृत्रिम पुत्र होता है। **5. अधम प्रभव** — नीच जाति का पुत्र गोद लेने पर वह अधम प्रभव कहलाता है। **6. गूढ़ोत्पन्न** — उस स्त्री का गुप्त पुत्र जिसका पति परदेश में हो और वास्तविक पिता का पता न हो। **7. अपविद्ध**— माता-पिता द्वारा परित्यक्त पुत्र जिसे किसी अपरिचित व्यक्ति ने गोद लिया हो उसे अपविद्ध पुत्र कहते हैं। **8. पुनर्भव** — पुनः ब्याही गई स्त्री से उत्पन्न पुत्र को पुनर्भव कहते हैं। **9. कानीन**— अविवाहिता का पुत्र कानीन कहलाता है। **10. सहोढ**—विवाह के समय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्भवती स्त्री का पुत्र सहोढ कहलाता है । **11. क्रीतक** — सगे माँ-बाप से खरीदा गया पुत्र क्रीतकं कहलाता है । **12. दासी प्रभव** —सेविका से उत्पन्न पुत्र दासी प्रभव कहलाता है ।

स्त्री की मृत्यु संम्बन्धी योग

उग्रग्रहैः सितचतुरस्त्रसंस्थितैर्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथवोग्रयोः ।
सौम्यग्रहैरसहितसंनिरीक्षिते जायावधो दहननिपातपाशजः ॥ 2 ॥

जन्म समय पाप ग्रह शनि, मंगल या सूर्य, शुक्र से चौथे व आठवें भाव में स्थित हों तो जातक की पत्नी अग्नि में जल कर मर जाती है । यदि शुक्र पाप ग्रहों के मध्य स्थित हो अर्थात् शुक्र के दोनों तरफ पापग्रह हों तो जातक की पत्नी उंचे से गिरकर मरती है । यदि शुक्र शुभग्रह से युत या दृष्ट न हो तो जातक की पत्नी फाँसी लगाकर आत्महत्या करती है । ये फल पति की जीवन काल में ही घटते हैं ।

स्त्री-पुरुष अंगहीन योग

लग्नाद्व्ययारिगतयोः शशितिग्मरश्म्योः पत्न्या सहैकनयनस्य वदंति जन्म ।
द्यूनस्थयोर्नवमपंचमसंस्थयोर्वा शुक्रार्कयोर्विकलादारमुशंति जातम् ॥ 3 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा सूर्य लग्न से द्वादश और छठे भाव में स्थित हो तो पति-पत्नी दोनों काने होते हैं ।

यदि सूर्य व शुक्र एक साथ 7,9 या 5 वें भाव में स्थित हो तो जातक की स्त्री अंगहीन होती है ।

वन्ध्या योग

कोणोदये भृगुतनयेऽस्तचक्रसंधौ वंध्यापतिर्यदि न सुतर्क्षमिष्टयुक्तम् ।
पापग्रहैर्व्ययमदलग्नराशिसंस्थैः क्षीणे शशिन्यसुतकलत्रजन्मधीस्थे ॥ 4 ॥

यदि जन्म समय शनि लग्न में स्थित हो , लग्न से सातवें भाव में शुक्र स्थित होकर कर्क , वृश्चिक या मीन के अन्तिम नवांश में हो (चक्र संधि नवांश में हो) और पंचम भाव किसी शुभ ग्रह से युत न हो तो जातक की स्त्री वन्ध्या **(Barren)** होती है ।

यदि पाप ग्रह द्वादश , सप्तम या लग्न में स्थित हो और लग्न से पंचम भाव में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो जातक स्त्री व पुत्र से रहित होता है ।

टिप्पणी — लग्न वृष या कन्या या मकर हो और सातवें भाव में क्रमशः वृश्चिक मीन और कर्क का अन्तिम नवांश हो तो ये तीन भाव चक्र संधि नवांश कहलाते हैं । देखें - अध्याय एक का श्लोक 7 ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

परस्त्रीगमन योग

असितकुजयोर्वर्गेऽस्तस्थे सिते तदवेक्षिते
परयुवतिगस्तौ चेत्सेंदुस्त्रिया सह पुंश्चल।
भृगुजशशिनोरस्तेऽभार्यो नरो विसुतोऽपि वा
परिणततनू नस्त्र्योर्दृष्टौ शुभैः प्रमदापती ॥ 5 ॥

जन्म समय यदि शुक्र सप्तम भाव में स्थित होकर शनि या मंगल के वर्ग में हो और शनि या मंगल से दृष्ट हो तो जातक परस्त्री गमन करने वाला होता है ।

यदि चन्द्र, शनि और मंगल सप्तम भाव में स्थित हो और शुक्र, शनि या मंगल के वर्ग में हो और शनि या मंगल से दृष्ट हो तो पति-पत्नी दोनों व्याभिचार में शामिल होते हैं अर्थात् पुरुष परस्त्री गमन एवं स्त्री पर पुरुष गमन में रत रहता है ।

यदि शुक्र और चन्द्र एक राशि में स्थित हों तथा उसके सातवें में शनि और मंगल स्थित हों तो जातक स्त्री व पुत्र रहित होता है ।

यदि पुरुष एवं स्त्री संज्ञक ग्रह किसी एक राशि में स्थित हो, उससे सातवें भाव में शनि व मंगल स्थित हों तथा उन पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो जातक की स्त्री व्यभिचारिणी होती है, विलम्ब से विवाह होता है और वृद्धा स्त्री प्राप्त होती है ।

विभिन्न योग

वंशच्छेत्ता खमदसुखगैश्चन्द्रदैत्येज्यपापैः ।
शिल्पी त्र्यंशेक्षशि सुतयुते केन्द्रसंस्थार्किदृष्टे
दास्यां जातो दितिसुतगुरौ रिःफगे सौरभागे।
नीचोऽर्केन्द्वोर्मदनगतयोर्दृष्टयोः सूर्यजेन ॥ 6 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा दसवें भाव में, शुक्र सातवें भाव में और पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) चौथे भाव में हों तो जातक वंश का नाश करने वाला होता है ।

यदि जन्म समय शनि 1,4,7,10 वें भाव में स्थित हो और बुध जिस राशि के द्रेष्काण में हो वह राशि केन्द्र में स्थित हो तो जातक कलाकार या पेन्टर होता है ।

यदि जन्म समय शनि 1,4,7,10 वें भाव में स्थित हो और बुध जिस राशि के द्रेष्काण में हो वह राशि केन्द्र में स्थित हो एवं शनि के नवांश में स्थित होकर शुक्र लग्न से द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक दासी पुत्र होता है ।

यदि जन्म समय सूर्य व चन्द्र सप्तम भाव में स्थित होकर शनि से द्रष्ट हो तो जातक नीच कर्म करने वाला होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोग एवं अंगहीन योग

पापालोकितयोः सितानिजयोरस्तस्थयोर्वाध्यरुक्
चंद्रे कर्कटवृश्चिकांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक्।
श्रिवत्री रिः फधनस्थयोरशुभयोश्चंद्रोदयेऽस्ते रवौ चंद्रे
खेऽवनिजेऽस्तगे च विकलो यद्यर्कजो वेशिगः ॥ 7 ॥

यदि जन्म समय शुक्र एवं मंगल सप्तम भाव में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक बाल रोग से ग्रस्त होता है।

यदि जन्म समय चन्द्रमा वृश्चिक या कर्क नवांश में स्थित हो तथा पाप ग्रह से युत हो तो जातक गुप्त रोग से ग्रस्त होता है।

यदि जन्म समय शनि और मंगल लग्न से द्वादश या द्वितीय भाव में स्थित हो, चन्द्रमा लग्न में और सूर्य लग्न से सप्तम भाव में स्थित हो तो जातक श्वेत कुष्ठ (White leprosy) से ग्रस्त होता है।

यदि जन्म समय दसवें भाव में चन्द्र, सप्तम भाव में मंगल और सूर्य से द्वितीय भाव में शनि स्थित हो तो जातक अंगहीन होता है।

श्वास व क्षय रोग योग

अंतः शशिन्यशुभयोर्मृगगे पतंगे श्वासक्षयप्लिहकविद्रधिगुल्मभाजः।
शोषी परस्परगृहांशगयो रवींद्वोः क्षेत्रेऽथवा युगपदेकगयोः कृशो वा ॥ 8 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा शनि और मंगल के मध्य स्थित हो और मकर राशि में सूर्य हो तो जातक दमा, तिल्ली, क्षय, फोड़ा, पित्त, विद्रधि या गुल्म रोग से ग्रस्त होता है।

यदि सूर्य चन्द्रमा के नवांश में और चन्द्रमा सूर्य के नवांश में स्थित हो तो जातक श्वास या क्षय रोग से पीड़ित होता है।

यदि सूर्य व चन्द्र एक साथ सिंह राशि या सिंह के नवांश में या कर्क राशि या कर्क के नवांश में स्थित हों तो क्षय रोग ग्रस्त या दुर्बल शरीर वाला होता है।

कुष्ठ रोग योग

चन्द्रेश्विमध्यझषकर्किमृगाजभागे कुष्ठी समन्दरुधिरे तदवेक्षिते वा।
यातैस्त्रिकोणमलिकर्किवृषैर्मृगे च कुष्ठी च पासहितैरवलोकितैर्वा ॥ 9 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा धनु राशि के पांचवें नवांश (मध्य नवांश) में स्थित होकर शनि व मंगल से युत या दृष्ट हो तो जातक कुष्ठ रोग ग्रस्त होता है।

यदि जन्म समय चन्द्रमा किसी भी राशि में स्थित होकर मीन, कर्क, मकर या

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेष राशि के नवांश में स्थित होकर शनि व मंगल से युत या दृष्ट हो तो भी जातक कुष्ठ रोग ग्रस्त होता है ।

टिप्पणी — यदि उपरोक्त दोनों योगों में चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक कुष्ठ रोग से ग्रस्त न होकर खुजली , दाद या त्वचा रोग से ग्रस्त होता हैं । यह मत यवनाचार्य का है ।

नेत्रहीन योग

निधनारिधनव्ययस्थिता रविचन्द्रारयमा यथा तथा ।
बलवद्ग्रहदोषकारणैर्मनुजानों जनयन्त्यनेत्रताम् ॥ 10 ॥

यदि जन्म समय सूर्य , चन्द्र , मंगल व शनि किसी भी तरह क्रम या अक्रम रूप में लग्न से 8,6,2,12 वें भाव में स्थित हों तो जातक अन्धा होता है, यह अन्धत्व इन चारों ग्रह में से जो बली हो उसकी धातु के कारण होता है अर्थात् सूर्य व मंगल बली हो तो पित्त , चन्द्र हो तो कफ एवं शनि हो तो वात के कारण अन्धत्व होता है ।

टिप्पणी— चारों भावों (8,6,2,12 वें) में से किसी एक स्थान में सूर्य, द्वितीय में चन्द्रमा, तृतीय में मंगल, चतुर्थ में शनि बैठा हो तो जो ग्रह बली हो उसके कारण नेत्रहीन होता है ।

बधिर योग

नवमायतृतीयधीयुता नच सौम्यैरशुभा निरीक्षिताः ।
नियमाच्छ्रवणोपघातदा रदवैकृत्यकराश्च सप्तेम ॥ 11 ॥

यदि जन्म समय पाप ग्रह (सूर्य , चन्द्र , मंगल या शनि) 9,11,3 व 5 वें भाव में स्थित हो तथा किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक बहरा (Deef) होता है और उस धातु के प्रभाव से बहरा होता है जो ग्रह बली हो ।

यदि पाप ग्रह लग्न से सातवें भाव में स्थित हो तो जातक के दांत कमजोर एवं दांतों का रोगी होता है ।

पिशाच एवं अन्ध योग

उदयत्यडुपे सुरास्यगे सपिशाचोऽशुभयोस्त्रिकोणयोः ।
सोपप्लवमंडले रवावुदयस्थे नयनापवर्जितः ॥ 12 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा राहु ग्रस्त होकर लग्न में स्थित हो और शनि लग्न से पाँचवें व मंगल नौवें भाव में स्थित हो तो जातक पिशाच (Ghost) प्रभावित होता है अर्थात् उस पर पिशाच का कोप होता है या पिशाच को पूजने वाला होता है ।

यदि जन्म समय सूर्य राहु ग्रस्त होकर लग्न में स्थित हो और शनि लग्न से पाँचवें

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव में व मंगल नौवें भाव में स्थित हो तो जातक अन्धा हो जाता है।

वात का उन्माद रोग योग

संस्पृष्टः पवनेन मंदगयुते द्यूने विलग्ने गुरौ
सोन्मादोऽवनिजे स्थितेऽस्तभवने जीवे विलग्नाश्रिते।
तद्वत्सूर्यसुतोदयेऽवनिसुते धर्मात्मजद्यूनगे जातो
वाससहस्त्ररश्मितनये क्षीणे व्यये शीतगौ ॥ 13 ॥

यदि जन्म समय लग्न में गुरु और सातवें भाव में शनि स्थित हो तो जातक वात रोग से ग्रस्त होता है।

यदि जन्म समय लग्न में गुरु और सातवें भाव में मंगल स्थित हो तो जातक उन्माद रोग से ग्रस्त होता है।

यदि जन्म समय शनि लग्न में स्थित हो और मंगल 5,7 या 9 वें भाव में स्थित हो तो जातक मूर्ख होता है।

यदि जन्म समय शनि से युत क्षीण चन्द्रमा द्वादश स्थान में स्थित हो तो भी जातक मूर्ख होता है।

दास योग

राश्यंशपोष्णकर शीतकरामरे ज्यैर्नीचाधिपांशक गतैररिभागगैर्वा।
एभ्योऽल्पमध्यबहुभिः क्रमशः प्रसूता ज्ञेयाः स्युरभ्युपगमक्रय गर्भदासाः ॥ 14 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में स्थित हो उसके स्वामी सूर्य, चन्द्र और गुरु नीच राशि के स्वामी के नवांश में या शत्रु राशि के नवांश में स्थित हो तो जातक जीवन भर दूसरों की सेवा करता रहता है। यहाँ विशेष बात यह है कि उक्त चारों ग्रहों में से एक ग्रह नीचाधियांश या शत्रु नवांश में स्थित हो तो अपनी जीविका चलाने के लिए दास कर्म करता है, दो ग्रह हों तो बिका हुआ दास होता है, तीन-चार ग्रह हों तो दास का ही पुत्र होकर दास कर्म करता है।

विकृत दाँत या गंजा योग

विकृतदशनः पापैर्दृष्टे वृषाजहयोदये
खलतिरशुभक्षेत्रे लग्ने हये वृषभेऽपि वा।
नवमसुतगे पापैर्दृष्टे रवावदृढेक्षणो दिनकरसुते
नैकव्याधिः कुजे विकलः पुमान् ॥ 15 ॥

यदि जातक वृष, मेष या धनु लग्न में उत्पन्न हो और पाप ग्रह से लग्न दृष्ट हों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो जातक के दाँत बदसूरत व विकृत होते हैं ।

यदि जातक मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ, धनु या वृष लग्न में उत्पन्न हो और पाप ग्रह से लग्न दृष्ट हो तो गंजा होता है ।

यदि लग्न से नौवें या पाँचवें भाव में सूर्य स्थित हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक मन्द दृष्टि वाला होता है ।

यदि शनि लग्न से नवम या पंचम भाव में हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक अनेक व्याधि से युत होता है ।

यदि मंगल लग्न से नवम या पंचम भाव में हो और पाप ग्रह से दृष्ट हो तो जातक अंगहीन होता है ।

बन्धन योग

व्ययसुतधनधर्मगैरसौम्यैर्भवनसमाननिबंधनं विकल्प्यम् ।
भजगनिगडपाशभृद्दृकाणैर्बलवदसौम्यनिरीक्षितैश्च तद्वत् ॥ 16 ॥

यदि जन्म समय पाप ग्रह लग्न से 12,5,2 व 9 वें भाव में स्थित हो तो जातक लग्न राशि के अनुसार बन्धन में डाला जाता है अर्थात् चतुष्पद राशियों (1,2,9) में से कोई लग्न हो तो रस्सी से बाँधा जाता है, मानव राशियों (3,6,7,11) में से कोई राशि लग्न में हो तो बेड़ी से बन्धन युक्त होता है, कर्क, मकर व मीन में से कोई राशि लग्न में हो तो जेल या कटघरे में बन्धन युक्त होता है और वृश्चिक राशि लग्न में हो तो जातक मिटटी के घर में कैद होता है ।

यदि जन्म समय लग्न में जो द्रेष्काण हो वह पाप ग्रह दृष्ट न हो तो द्रेष्काणानुसार बन्धन युत होता है अर्थात् कर्क के द्वितीय व तृतीय द्रेष्काण, वृश्चिक के प्रथम व द्वितीय द्रेष्काण और मीन के तृतीय द्रेष्काण में हो तो भुजगपाशभृत् होता है, मकर का प्रथम द्रेष्काण हो तो निगडपाशभृत् होता है ।

सेवक योग

परुषवचनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे ।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभः
स्थलामश्रितैर्भृतकमनुजः पूर्वोद्दिष्टैर्वराधममध्यमाः ॥ 17 ॥

यदि जन्म समय चन्द्रमा शनि से युत हो तो कठोर वचन बोलने वाला, शनि से युत चन्द्रमा मंगल से दृष्ट हो तो मिर्गी रोग से ग्रस्त और शनि युत चन्द्रमा मंगल से दृष्ट

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिवेष युक्त हो तो क्षय रोग से ग्रस्त होंता है, इस प्रकार तीन योग बनते हैं।

यदि जन्म समय शनि व मंगल एक साथ लग्न में दसवें भाव में स्थित हों और इन पर किसी शुभ ग्रह की द्रष्टि न पड़ती हो तो जातक सेवक का कार्य करता है। इनमें से एक योग हो तो श्रेष्ठ सेवक, दो हों तो मध्यम सेवक और तीन योग हों तो अधम श्रेणी का सेवक होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शनि व मंगल एक साथ युत होकर स्थित हों तो श्रेष्ठ, शनि-मंगल युत हों पर शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो मध्यम सेवक और शनि-मंगल दसवें भाव में युत हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक अधम श्रेणी का सेवक होता है।

इति श्रीबृहज्जातकेऽनिष्टाध्यायस्त्रयोविंशः ॥ 23 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रीजातकाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर स्थित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर स्त्री जातक के जन्मकुन्डली सम्बन्धी योगों की चर्चा करेंगे जिससे आपको स्त्री जातक की कुंडली का विश्लेषण करने में आसानी रहे ।

स्त्री जातक का फल कथन कैसे हो ?

यद्यत्फलं नरभवे क्षममंगनानां तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम् ।
तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु लग्नेंदुगं सुभगतासतमये पतिश्च ॥ 1 ॥

विभिन्न अध्यायों में पुरूष जातक सम्बन्धी जितने भी फलित सिद्धान्त बताए गए हैं, उन सबको स्त्री जातक की कुन्डली का फलित करते समय प्रयोग में लाना चाहिए । कहने का तात्पर्य यही है कि पुरूष जातक के फलित सिद्धान्त स्त्री जातक के भी कहने चाहिए । लेकिन उनमें जो फल स्त्रियों के लिए असम्भव हों वह उनके पतियों के लिए कहने चाहिएं । जैसे स्त्री की कुंडली में राजयोग हो और वह कार्यरत् नहीं है तो योग को पति की कुण्डली में कहना चाहिए ।

आठवें भाव से पति की आयु व मृत्यु का विचार लग्न व चन्द्र राशि से स्त्री के शरीर व स्वास्थ्य एवं सप्तम भाव से सौभाग्य व पति संबंधी विचार करना चाहिए ।

स्त्रियों के स्वभाव व आकार का विचार

युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री
सच्छीलभूषणयुता शुभदृष्टयोश्च ।
ओजस्थयोश्चमनुजाकृतिशीलयुक्ता पापा
च पापयुतवीक्षितयोर्गुणोना ॥ 2 ॥

यदि जन्म समय लग्न व चन्द्र राशि दोनों सम (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन) हों तो स्त्री का स्वभाव और आकार स्त्रियों जैसा होता हैं । वह सुन्दर एवं अच्छे चरित्र की होती हैं । उसके पास आभूषण भी होते है ।शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर यह फल मिलता हैं ।

यदि जन्म समय लग्न एवं चन्द्र राशि दोनों विषम (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, व कुंभ) हों तो स्त्री पुरुष जैसे आकार व स्वभाव वाली होती है । यदि लग्न व चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो स्त्री गुणहीन, पापकर्मरत् एवं अशिक्षित होती है ।

टिप्पणी—ग्रहों की दृष्टियाँ, युति, एवं अन्य ग्रह योगों के आधार पर उक्त फल पूर्ण, मध्यम एवं सामान्य भी हो सकता है । आकार, स्वभाव एवं सौन्दर्य का विचार सम्यक विश्लेषण के बाद करना चाहिए ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल राशिगत लग्न और चन्द्रमा त्रिशांश फल

कन्यैव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वी समाया कुचरित्रयुक्ता।
भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोऽशकेषु वक्रार्किजीवेंदुजभार्गवनाम्॥ 3 ॥

यदि स्त्री के जन्म समय लग्न व चन्द्रमा दोनों मंगल की राशि (मेष व वृश्चिक) में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में हो तो वह विवाह पूर्व ही चरित्रभष्ट हो जाती है ।

यदि लग्न व चन्द्रमा दोनों मंगल की राशि में स्थित होकर शनि के त्रिशांश में हो तो स्त्री दासी होती है । गुरू के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता होती है, बुध के त्रिशांश में हो तो चतुर व मायावी स्वभाव की होती है और शुक्र के त्रिशांश में हो तो निन्दित चरित्र वाली होती है ।

शुक्र राशिगत लग्न और चन्द्रमा का त्रिशांश फल

दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुरूजितर्क्षे।
स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा॥ 4 ॥

यदि स्त्री के जन्म समय लग्न व चन्द्रमा दोनों शुक्र की राशियों (वृष व तुला) में से किसी एक में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में हो तो दुष्ट स्वभाव वाली, शनि के त्रिशांश में हो तो पुनर्विवाह करने वाली, गुरू के त्रिशांश में हो तो नृत्य व संगीत में निपुण, शुक्र के त्रिशांश में हो तो अनेक सद्‌गुणों से युक्त होती है ।

यदि जन्म समय लग्न व चन्द्रमा बुध की राशियों (मिथुन व कन्या) में से किसी में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में हो तो छली या विश्वासघातिनी, शनि के त्रिशांश में हो तो नपुंसक, गुरु के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता, बुंध के त्रिशांश में हो तो अनेक गुणों से युक्त अर्थात् बहुमुखी प्रतिभा की धनी और शुक्र के त्रिशांश में हो तो व्याभिचारिणी होती है ।

कर्क सिंह, धनु व मीन मकर व कुंभ में स्थित लग्न और चन्द्रमा का त्रिशांश फल

स्वच्छन्दा पतिघातिनी बहुगुणा शिल्पिन्यसाध्वीन्दुभे।
नाचारा कुलटार्कभे नृपवधूः पुंश्चेष्टितागम्यगा॥
जैवेनैकगुणाल्परत्यतिगुणा विज्ञानयुक्तासती।
दासी नीचरतार्किभे पतिरता दुष्टाप्रजा स्वांशकैः॥ 5 ॥

जन्म समय लग्न और चन्द्रमा कर्क राशि में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में स्थित हो तो स्त्री स्वछन्द, शनि के त्रिशांश में हो तो पति की हत्या करने वाली, गुरु के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिशांश में हो तो अनेक गुणों से युक्त, बुध के त्रिशांश में हो तो कलाकार एवं शुक्र के त्रिशांश में हो तो दुष्टा होती है ।

जन्म समय लग्न व चन्द्रमा सिंह राशि में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में हो तो पुरूष के समान आचरण करने वाली, शनि के त्रिशांश में हो तो व्याभिचारिणी, गुरू के त्रिशांश में हो तो रानी, बुध के त्रिशांश में हो तो पुरुष के समान व्यवहार करने वाली, शुक्र के त्रिशांश में हो तो अगम्य पुरुषों के साथ रमण करती है ।

जन्म समय लग्न व चन्द्रमा गुरु की राशियों (धनु व मीन) में विभक्त होकर मंगल के त्रिशांश में हो तो अनेक गुणों से युक्त, शनि के त्रिशांश में हो तो अल्प सम्भोग करने वाली, गुरु के त्रिशांश में हो तो अनेक गुणों से युक्त, बुध के त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, शुक्र के त्रिशांश में हो तो व्याभिचारिणी होती है ।

जन्म समय लग्न व चन्द्रमा शनि की राशियों (मकर व कुंभ) में से किसी में स्थित होकर मंगल के त्रिशांश में हो तो दासी होती है, शनि के त्रिशांश में हो तो नीच काम करने वाली, गुरू के त्रिशांश में हो तो व्याभिचारिणी, बुध त्रिशांश में हो तो बुरा आचरण करने वाली और शुक्र के त्रिशांश में हो तो वन्धया होती है ।

त्रिशांश फल पर विशेष विचार

शशिलग्नसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम् ।
ब्लाबलविकल्पेन तयोरुक्तं विचिंतयेत् ॥ 6 ॥

पूर्व में लग्न व चन्द्र से युक्त त्रिशांशों का जो फल कहा है, उसमें लग्न और चन्द्र में से जो बली हो उसके अनुरूप फल कहना चाहिए ।

कहने का तात्पर्य यही है कि लग्न और चन्द्रमा दोनों एक राशि में स्थित होकर एक ही ग्रह के त्रिशांश में बैठे तो पूर्व कथित फल कहना चाहिए । यदि भिन्न-भिन्न राशि में विभक्त होकर भिन्न-भिन्न ग्रह के त्रिशांश में स्थित हो तो उनमें से जो बली हो उसका फल कहना चाहिए, निर्बल का नहीं ।

दृक्संस्थवसितसितौ परस्परांशे
शौक्रे वा यदि घटराशिसंभवोंऽशः ।
स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलप्रदीप्तं संशांतिं
नयति नराकृतिस्थिताभिः ॥ 7 ॥

यदि जन्म समय शुक्र और शनि परस्पर त्रिशांश में हो अर्थात् शुक्र शनि के त्रिशांश और शनि शुक्र के त्रिशांश में हो और शनि शुक्र को व शुक्र शनि को देखता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो स्त्री बनावटी लिंग बनाकर दूसरी स्त्री के भग स्थान में बाँधकर अपनी काम जिज्ञासा शान्त करती है ।

यदि शुक्र की राशियों (वृष और तुला) में से कोई राशि लग्न में स्थित हो और उसमें कुंभ राशि के त्रिशांश का उदय हो तो भी स्त्री- स्त्री से उक्त प्रकार से संभोग करके काम जिज्ञासा शान्त करती है ।

कापुरूष पति का योग

शून्ये कापुरुषो बलेऽस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते क्लीबोऽस्ते
बुधमंदयोश्चरगृहे नित्यं प्रवासान्वितः ।
उत्सृष्टा रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते
कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जरां गच्छति ॥ 8 ॥

यदि जन्म समय लग्न या चन्द्रमा से सातवें भाव में कोई ग्रह न हो या किसी शुभ ग्रह से न देखा जाता हो तो उस स्त्री का पति कापुरूष (Blamable Man) अर्थात् निन्दित कर्म करने वाला होता है ।

यदि उक्त सातवें भाव में बुध या शनि स्थित हो तो स्त्री का पति नपुंसक होता है ।

यदि उक्त सातवें भाव में चर राशियों (मेष, कर्क, तुला और मकर) में से कोई राशि हो तो स्त्री का पति परदेश में रहने वाला होता है । यदि स्थिर राशि हो तो घर पर एवं अस्थिर राशि हो तो घर-बाहर दोनों जगह रहने वाला होता है ।

यदि उक्त सातवें भाव में सूर्य स्थित हो तो वह स्त्री पति द्वारा परित्यक्त होती है ।

यदि उक्त सातवें भाव में मंगल स्थित हो तो वह स्त्री बाल्यावस्था में विधवा हो जाती है ।

यदि सातवें भाव में शनि स्थित होकर पाप ग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री कुंवारी होती हुई वृद्धा हो जाती है ।

यहाँ पर भी चन्द्र और लग्न में जो बली हो उसके अनुसार फल विचारना चाहिए ।

टिप्पणी—यदि शनि शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो स्त्री वृद्धावस्था में विवाहित होती है ।

वैधव्य योग

आग्नेयैर्विधवास्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत् ।
क्रूरे हीनबलेऽस्तेग स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता ॥
अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्ताङ्गना ।
द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया ॥ 9 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि जन्म समय लग्न या चन्द्रमा से सातवें भाव में पापग्रह स्थित हो तो स्त्री विधवा होती है अर्थात् कहने को पत्नी मात्र रह जाती है ।

यदि किसी राशि में स्थित होकर शुक्र और मंगल परस्पर त्रिशांश में स्थित होकर (शुक्र मंगल के त्रिशांश में और मंगल शुक्र के त्रिशांश में) तो स्त्री व्याभिचारिणी होती है ।

यदि लग्न व चन्द्रमा से सातवें भाव में शुक्र, मंगल व चन्द्रमा से युत हो तो वह स्त्री पति की आज्ञा से परपुरूषगामिनी होती है ।

माता सहित व्याभिचारिणी होने का भय

सौरारर्क्षे लग्नगे सेंदुशुक्रे मात्रा सार्द्धं बंधकी पापदृष्टे ।
कौजेऽस्तांशे सौरिणा व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे ॥ 10 ॥

यदि जन्म समय शनि की राशियाँ (मकर व कुंभ) में से या मंगल की राशियों (मेष व वृश्चिक) में से किसी राशि में चन्द्रमा से युत शुक्र लग्न में स्थित हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो वह स्त्री माता सहित व्याभिचार करने वाली होती है ।

यदि जन्म समय लग्न से सातवें भाव में मंगल की राशि (मेष, वृश्चिक) सम्बन्धी त्रिशांश हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो योनि में गुप्त रोग अर्थात् सुजाक आदि कोई रोग होता है ।

यदि उक्त सातवें भाव में शुक्र ग्रह की राशियों में से किसी राशि सम्बन्धी त्रिशांश का उदय हो तो स्त्री सुन्दर योनि और पतिप्रिया होती है ।

पति सम्बन्धी योग

वृद्धो मूर्खः सूर्यजर्क्षेंऽशके वा स्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेये ।
शौक्रे कांतोऽतीवसौभाग्ययुक्तो विद्वान्भर्त्ता नैपुणज्ञश्च बौधे ॥ 11 ॥
मदनवशगतो मृदुश्च चांद्रे त्रिदशगुरौ गुणवान् जितेंद्रियश्च ।
अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सौर्ये भवति गृहेऽस्तमयस्थितेंऽशके वा ॥ 12 ॥

यदि जन्म समय लग्न से सातवें भाव में शनि की कोई राशि (मकर या कुंभ) या इस राशि संबंधी त्रिशांश हो तो स्त्री का पति वृद्ध और मूर्ख होता है ।

यदि उक्त सप्तम भाव में मंगल की राशियों (मेष या वृश्चिक) हो तो स्त्री का पति क्रोधी होता है, किन्तु स्त्री भक्त होता है ।

यदि उक्त सप्तम भाव में शुक्र की राशियों (वृष व तुला) में से कोई राशि या उस राशि संबंधी त्रिशांश हो तो स्त्री का पति सुन्दर व सर्वप्रिय होता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal
यदि उक्त सप्तम भाव में शुक्र की राशियों (वृष या तुला) में से कोई राशि या

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस राशि संबंधी त्रिशांश हो तो स्त्री का पति सुन्दर, विद्धान एवं कार्यकुशल होता है ।

यदि जन्म समय लग्न या चन्द्रमा से सातवें भाव में कर्क राशि या उसका त्रिशांश हो तो स्त्री का पति क़ामुक और कोमल स्वभाव वाला होता है ।

यदि जन्म समय लग्न या चन्द्रमा से सातवें भाव में गुरु की राशियों (धनु या मीन) में से कोई राशि या उस राशि संबंधी त्रिशांश हो तो स्त्री का पति गुणी और जितेन्द्रिय होता है ।

यदि जन्म समय लग्न या चन्द्रमा से सातवें भाव में सूर्य की राशि या उसका त्रिशांश हो तो स्त्री का पति कोमल स्वभाव वाला और कार्य करने में कुशल होता है ।

लग्न स्थित ग्रहों का फल

ईर्ष्यान्विता सुखपरा शशिशुक्रलग्ने
ज्ञेन्द्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या ।
शुक्रज्ञयोस्तु रुचिरा सुभगा कलाज्ञा
त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥ 13 ॥

यदि जन्म समय चन्द्र व शुक्र ग्रह लग्न में हो तो स्त्री दूसरे की बात न सहने वाली और अन्यथा सुखी होती है ।

यदि जन्म समय बुध व चन्द्र ग्रह लग्न में हो तो स्त्री सर्वप्रिय, सुन्दर और विभिन्न कलाओं की ज्ञाता होती है ।

यदि जन्म समय बुध, शुक्र और गुरु ये तीनों शुभ ग्रह लग्न में स्थित हों तो स्त्री गुणवान, अत्यन्त धनी एवं सुखी होती है ।

वैधव्य योग

क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वेरोंऽशे यस्य
स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा ।
सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः
कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिंदौ ॥ 14 ॥

यदि जन्म समय लग्न से आठवें भाव में पापग्रह स्थित हो तो अष्टमेश जिस ग्रह के त्रिशांश में स्थित हो उस ग्रह की दशा या अन्तर्दशा में स्त्री विधवा होती है ।

यदि जन्म समय पापग्रह आठवें भाव में और शुभग्रह दूसरे भाव में हो तो स्त्री पति से पूर्व मरती है ।

यदि जन्म समय चन्द्रमा कन्या, वृश्चिक, वृष और सिंह इन राशियों में से किसी में स्थित हो तो स्त्री के कम पुत्र होते हैं ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभाशुभ योग

सौरे मध्यबले बलेनरहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः ।
शेषैर्वीर्यसमन्वितैः परुषिणी यद्योजराश्युद्गमः ॥
जीवारास्फुजिदैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे ।
विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि ॥ 15 ॥

यदि जन्म समय शनि मध्यबली हो, चन्द्रमा शुक्र व बुध निर्बल हो, सूर्य मंगल और गुरु बली हो तथा विषम राशियों (1,3,,5,9,11) में से कोई राशि लग्न में हो तो वह स्त्री अनेक पुरूषों के साथ संभोग करने वाली होती है ।

यदि जन्म समय गुरु, मंगल, शुक्र और बुध बली हो और सम राशियों (2,4,6,8,10,12) में से कोई राशि लग्न में स्थित हो तो स्त्री प्रसिद्ध, अनेक शास्त्रों की ज्ञाता और वेदान्त में निपुण होती है ।

प्रव्रज्या योग

पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन ।
उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिंतायामापि सकलं विधेयमेतत् ॥ 16 ॥

यदि जन्म समय लग्न से सातवें भाव में पाप ग्रह हो और नवम् भाव में कोई ग्रह स्थित हो तो वह स्त्री पूर्वोक्त फल न पाकर नवम भाव स्थित ग्रह के सदृश प्रव्रज्या अध्याय में कहे फल के अनुसार प्रव्रज्या को पाती है ।

इस अध्याय में जो भी फल कहे गए हैं उन सबको स्त्री के विवाह काल में, वरणकाल, दानकाल और प्रश्नकाल में भी विचारना चाहिए ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके स्त्रीजातकाऽध्याय श्चतुर्विंशः ॥ 24 ॥

☆☆☆

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

25 नैर्याणिकाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर मृत्यु सम्बन्धी विचार करेंगे जन्मपत्री में इन योगों का भी विचार करना चाहिए क्योंकि शरीर या आयु होगी तभी तो अन्य सुख भोग सकेंगे ।

अष्टम भाव सम्बन्धी मृत्यु विचार

मृत्युर्मृत्युगृहेक्षणेन बलिभिस्तद्धातुकोपोद्भव-
स्तत्संयुक्तभगात्रजो बहुभवो वीर्यान्वितैर्भूरिभिः ।
अग्न्यंब्वायुधजो ज्वरामयकृतस्तृट्क्षुत्कृतश्चाष्टमे
सूर्याद्यैर्निधने चरादिषु परस्वाध्वप्रदेशेष्विति ॥ 1 ॥

लग्न से आठवें भाव में कोई ग्रह न हो और उस पर किसी बली ग्रह की दृष्टि पड़े तो उस ग्रह की धातु के कोप से मरण होता है । सूर्य हो तो पित्त के कोप से चन्द्रमा हो तो वायु व कफ के कोप से, मंगल हो तो पित्त के कोप से, बुध हो तो पित्त कफ व वायु के कोप से, गुरु हो तो कफ के कोप से, शुक्र हो तो वात और पित्त के कोप से शनि हो तो वात के कोप से जातक की मृत्यु होती है ।

आठवें भाव मे जो राशि हो वह काल पुरूष के जिस अंग को प्रभावित करती हो उसी अंग में पूर्वोक्त धातु कोप से उस जातक का मरण होता है ।

यदि बहुत से बली ग्रह आठवें भाव को देखते हों तो अनेक रोगों के मिश्रित कोप से उस जातक का मरण होता है ।

यदि आठवें भाव में सूर्य स्थित हो तो अग्नि से, चन्द्रमा हो तो जल से, मंगल हो तो शस्त्र से, बुध हो तो ज्वर से, गुरु हो तो उदर रोग से, शुक्र हो तो प्यास से और शनि हो तो भूख से मरण होता है । यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि ग्रह बली हों तो शुभ कर्म से, निर्बल हों तो अशुभ कर्म से मरण होता है ।

यदि आठवें भाव में चर राशि (1,4,10) हो तो परदेश में, स्थिर राशि (2,5,8,11) हो तो स्वदेश में और द्विस्वभाव राशि (3,6,9,12) हो तो मार्ग में मरण होता है ।

अन्य मृत्यु योग

शैलाग्राभिहतस्य सूर्यकुजयोर्मृत्युः खबंधुस्थयोः
कूपे मंदशशांकभूमितनयैर्बध्वस्तकर्मस्थितैः ।
कन्यायां स्वजनाद्धिमोष्णकरयोः पापग्रहैर्दृष्टयोः स्यातां
यद्युभयोदयेऽर्कशशिनौतोये तदा मज्जितः ॥ 2 ॥

यदि जन्म समय लग्न से चौथे और दसवें भाव में किसी एक में सूर्य और दूसरे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में मंगल हो तो जातक की मृत्यु पत्थर की चोट से होती है ।

यदि जन्म समय चौथे, आठवें सातवें और दसवें भाव में क्रम से शनि, चन्द्रमा और मंगल स्थित हो अर्थात् चौथे शनि, सातवें चन्द्रमा और दसवें मंगल स्थित हो तो कुएँ में गिरकर मृत्यु होती है ।

यदि सूर्य व चन्द्रमा जन्म समय कन्या राशि में स्थित हों और पाप ग्रह से दृष्ट हों तो जातक की मृत्यु स्वजनों या रिश्तेदारों के हाथों होती है ।

यदि द्विस्वभाव राशि (3,6,9,12) लग्न में स्थित हो और उसमें सूर्य चन्द्र स्थित हो तो जल में डूबने से जातक की मृत्यु होती है ।

मंदे कर्कटगे जलोदरकृतो मृत्युर्मृगांके
मृगे शस्त्राग्निप्रभवः शशिन्यशुभयोर्मध्ये कुजर्से स्थिते ।
कन्यायां रूधिरोत्थशोषजनितस्तद्वत्स्थिते शीतगौ सौरर्क्षे
यदि तद्वदेव हिमगौ रज्ज्वग्निपातैः कृतः ॥3॥

यदि जन्म समय शनि कर्क राशि में और चन्द्रमा मकर राशि में स्थित हो तो जातक की मृत्यु जलोदर रोग से होती है ।

यदि मंगल की राशि (मेष या वृश्चिक) में चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के बीच स्थित हो तो रक्त विकार या क्षय रोग से जातक की मृत्यु होती है ।

यदि शनि की राशि (मकर व कुंभ) में चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच स्थित हो तो जातक की मृत्यु फाँसी लगाकर या अग्नि से जलकर होती है ।

बंधाद्धीनवमस्तयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्टयोर्द्रेष्काणैश्च
सपाशसार्पनिगडैश्छिद्र स्थितैर्बंधतः ।
कन्यायामशुभान्विते ऽस्तमयगे चंद्रे सिते मेषगे सूर्ये लग्नगते
च विद्धि मरणं स्त्रीहेतुकं मंदिरे ॥ 4 ॥

यदि जन्म समय लग्न में पाचवें और नौवें भाव में पाप ग्रह स्थित हों और शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक की मृत्यु बन्धन के कारण होती है ।

यदि लग्न से आठवें भाव में सर्प (Serpent) या निगड़ (fetter) द्रेष्काण हो तो भी जातक की मृत्यु बन्धन के कारण होती है।

यदि जन्म समय पाप ग्रह से युत चन्द्रमा कन्या राशि में स्थित हो, लग्न से सातवें भाव में शुक्र मेष राशि में स्थित हो एवं लग्न में सूर्य स्थित हो तो जातक की मृत्यु घर पर स्त्री के कारण होती है ।

टिप्पणी- कर्क राशि का दूसरा व तीसरा, वृश्चिक राशि का पहला व दूसरा और मीन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशि का तीसरा द्रेष्काण सर्प द्रेष्काण होता है। मकर का पहला द्रेष्काण निगड द्रेष्काण होता है।

शूलोद्भिन्नतनुः सुखेऽवनिसुते सूर्येपि वा खे यमे।
सप्रक्षीणहिमांशुभिश्च युगपत्पापैस्त्रिकोणाद्यगैः ॥
बन्धुस्थे च रवौ वियत्यवनिजे क्षीणेन्दुसंवीक्षिते।
काष्ठेनाभिहतः प्रयाति मरणं सूर्यात्मजेनेक्षिते ॥ 5 ॥

यदि जन्म समय लग्न से चौथे भाव में सूर्य या मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो जातक की मृत्यु भाले या नुकीली लोहे की छड से होती है।

यदि क्षीण चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ पांचवें, नौवें या लग्न में स्थित हो तो भी जातक की मृत्यु भाले या नुकीली लोहे की छड से होती है।

यदि चौथे भाव में सूर्य और दसवें भाव में मंगल स्थित हो तथा उन पर क्षीण चन्द्रमा की दृष्टि हो तो भी जातक की मृत्यु भाले या नुकीली लोहे की छड़ से होती है ।

यदि चौथे भाव में सूर्य और दसवें भाव में मंगल स्थित हो तथा इन पर शनि की दृष्टि हो तो जातक की मृत्यु लकड़ी के प्रहार से होती है।

रन्ध्रास्पादाङ्गहिबुकैर्लगुडाहताङ्गः प्रक्षीणचन्द्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तैः।
तैरव कर्मनवमोदयपुत्र संस्थैर्धूमाग्निबन्धनशरीर निकुट्टनान्तः ॥ 6 ॥

यदि जन्म समय आठवें भाव में क्षीण चन्द्रमा, दसवें भाव में मंगल, लग्न में शनि एवं चौथे भाव में सूर्य स्थित हो तो जातक की लाठी या छड़ी के प्रहार से मृत्यु होती है।

यदि जन्म समय लग्न से दसवें भाव में क्षीण चन्द्रमा, नौवें भाव में मंगल, लग्न में शनि और पाँचवें भाव में सूर्य स्थित हो जातक की मृत्यु कुँए, आग, बन्धन या लाठी या छड़ी के प्रहार से होती है।

बन्ध्वस्तकर्मसहितैः कुजसूर्यमन्दैर्निर्याणमायुधशिखिक्षितिपालकोपात्।
सौरेन्दुभूमितनयैः स्वसुखास्पदस्थैर्ज्ञेयः क्षतकृमिकृतश्च शरीरघातः ॥ 7 ॥

यदि जन्म समय लग्न से चौथे भाव में मंगल, सातवें भाव में सूर्य और दसवें भाव में शनि स्थित हो तो जातक की मृत्यु शस्त्र, अग्नि या राजा के कोप से होती है।

यदि जन्म समय शनि दूसरे भाव में, चन्द्रमा चौथे भाव में और मंगल दसवें भाव में स्थित हो तो जातक की मृत्यु शरीर में कीड़े पड़ने से होती है।

खस्थेऽर्केऽवनिजे रसातलगते यानप्रपाताद्वधो।
यन्त्रोत्पीडनजः कुजेऽस्तमयेग सौरेन्दुनाभ्युद्गमे।
विण्मध्ये रुधिरार्किशीतकिरणैर्जूकाजसौरर्क्षगैर्यति
वा गलितेन्दुसूर्यरुधिरैर्ध्यो मास्तबध्याद्वयम् ॥ 8 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि जन्म समय लग्न से दसवें भाव में सूर्य, चौथे भाव में मंगल स्थित हो तो जातक की मृत्यु वाहन से गिरकर होती है ।

यदि जन्म समय लग्न से सातवें भाव में मंगल, लग्न में शनि, चन्द्रमा व सूर्य स्थित हो तो जातक की मृत्यु यन्त्र (machine) में दबकर या यन्त्र के कारण होती है ।

यदि जन्म समय मंगल तुला राशि में, शनि मेष राशि में और चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुंभ) में स्थित हो तो जातक की मृत्यु गन्दे स्थान पर मल में गिरकर होती है ।

वीर्यान्वितवक्रवीक्षिते क्षीणेन्दौ निधनस्थितेऽर्कजे ।
गुह्योद्भवरोगपीडया मृत्युः स्यात् कृमिशस्त्रदाहजः ॥ 9 ॥

यदि जन्म समय क्षीण चन्द्रमा बली मंगल से दृष्ट हो और शनि लग्न से आठवें भाव में स्थित हो जो जातक की मृत्यु गुदा रोग, शरीर में कीड़े पड़ने, शस्त्र या अग्नि में जलने से होती है ।

अस्ते रवौ सरुधिरे निधनेऽर्कपुत्रं क्षीणे रसातलगते हिमगौ खगांतः ।
लग्नात्मजाष्टमतपः स्विनभौममंदचंद्रैस्तु शैलशिखराशनिकुड्यपातैः ॥ 10 ॥

यदि जन्म समय मंगल व सूर्य एक साथ सातवें भाव में, शनि आठवें भाव में और क्षीण चन्द्रमा चौथे भाव में स्थित हो तो जातक की मृत्यु पक्षी के आक्रमण से होती है ।

यदि जन्म समय लग्न में सूर्य, पाँचवे भाव में मंगल, आठवें भाव में शनि और नौवें भाव में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो तो जातक की मृत्यु पर्वत से गिरकर, वज्रपात या दीवार से गिरकर होती है ।

पूर्वोक्त मृत्युयोग न हों तो मृत्यु कैसे कहें ?

द्वाविंशः कथितस्तु कारणं द्रेष्काणो निधनस्य सूरिभिः ।
तस्याधिपतिर्भवोऽपि वा निर्याणं स्वगुणैः प्रयच्छति ॥ 11 ॥

यदि जन्म कुण्डली में पूर्वोक्त कहे गए मृत्यु योगों में से कोई योग न हो तो जन्म समय जो द्रेष्काण हो उससे बाईसवाँ द्रेष्काण मृत्यु का कारण होता है, ऐसा विद्वानों का कहना है ।

बाइसवें द्रेष्काण का जो स्वामी हो उसके अनुरूप मृत्यु का कारण होता है ।

टिप्पणी—पूर्वोक्त मृत्यु योगों में से कोई योग जन्म समय न हो तो जन्म समय जो द्रेष्काण हो उससे बाईसवें द्रेष्काण का स्वामी और आठवें भाव स्थित राशि के स्वामी में जो

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बली हो उसके दोष से जातक की मृत्यु होती है । सामान्यतः बाईसवां द्रेष्काण लग्न से आठवीं राशि में होता है, अर्थात् लग्न में प्रथम द्रेष्काण का उदय हो तो उससे आठवीं राशि का प्रथम द्रेष्काण बाईसवां द्रेष्काण होगा ।

मृत्यु किस स्थान पर होगी ?

होरानवांशकपयुक्त समानभूमौ योगेक्षणादिभिरतः परिकल्प्येमेतत् ।
मोहस्तु मृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः स्वेशेक्षिते द्विगुणितस्त्रिगुणः शुभैश्च ॥ 12 ॥

यदि जन्म समय लग्न में जिस राशि का नवांश हो उस राशि का स्वामी जिस राशि में स्थित हो उस राशिके अनुसार जो स्थान हो उसमें मृत्यु होती है ।

अर्थात् नवांश स्वामी मेष राशि में स्थित हो तो भेड़-बकरी के रहने की जगह पर , नवांश स्वामी वृष में स्थित हो तो बैल, भैसे आदि मनुष्यों के रहने के स्थान पर, नवांश स्वामी मिथुन में हो तो घर पर, नवांश स्वामी कर्क में स्थित हो तो कुँए में, नवांश स्वामी सिंह में स्थित हो तो जंगल में, नवांश स्वामी कन्या में स्थित हो तो कुँए में, नवांश स्वामी तुला में स्थित हो तो बाजार में, नवांश स्वामी वृश्चिक में स्थित हो तो किसी छिद्र में, नवांश स्वामी मकर में स्थित हो तो तलाब या जलयुक्त स्थान पर, नवांश स्वामी कुंभ में स्थित हो तो घर पर एवं नवांश स्वामी मीन में स्थित हो तो जलयुक्त स्थान पर जातक की मृत्यु होगी ।

यहध्यान रखें कि पूर्वोक्त जिस मृत्यु योग में जातक का मरण हो उसी को कहना चाहिए, नाकि राशि के स्थानानुसार नहीं अथवा वह नवांश स्वामी जिस राशि में स्थित हो उसमें और अन्य कोई ग्रह स्थित हो तो उसके स्थानानुसार जातक की मृत्यु कहनी चाहिए अथवा नवांश स्वामी जिस राशि के नवांश में स्थित हो उसी के स्वामी ग्रह के स्थान पर मृत्यु कहनी चाहिए ।

यदि भिन्न -भिन्न मृत्यु स्थान ज्ञात हो तो उनमें से जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उसी के स्थान में मृत्यु कहनी चाहिए ।

यदि ग्रह दो राशि का स्वामी हो तो त्रिकोण राशि सम्बन्धी स्थान पर मृत्यु जाननी चाहिए । जन्म समय लग्न में जितने नवांश भागने शेष रहें, उस भोग्य नवांश के भुक्त होने पर जितना समय हो उतने समय तक मृत्यु के वक्त बेहोशी रहती है । यदि लग्न लग्नेश से दृष्ट हो तो दुगने समय तक बेहोशी कहनी चाहिए यदि लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो तिगुने समय तक बेहोशी मृत्यु समय रहती है और यदि लग्न पर लग्नेश एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो मृत्यु समय छह गुने समय तक बेहोशी रहती है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृतक के शरीर की स्थिति का ज्ञान

दहन जलविमिश्रैर्भस्मसंक्ले-
दशोषैर्निधनभवनसंस्थैर्व्यालवर्गैर्विडन्तः ।
इति शवपरिणामश्चिन्तनीयो यथोक्तः
पृथुविरचितशास्त्राद्गत्यनूकादि चिंत्यम् ॥ 13 ॥

यदि जन्म समय लग्न से आठवें भाव में 22वां द्रेष्काण अग्निसंज्ञक हो तो मृतक का शरीर जलाया जाता है । जलसंज्ञक हो तो मृतक का शरीर जल में बहा दिया जाता है । मिश्रसंज्ञक (शुभ ग्रह का द्रेष्काण पापग्रह युत या पापग्रह का द्रेष्काण शुभ ग्रह युत) हो तो मृतक का शरीर कहीं पर भी पड़ा-पड़ा सूख जाता है एवं सर्प संज्ञक हो तो मृतक का शरीर (कुत्ता, भेडिया, कौआ आदि के खाने से) विष्ठा हो जाता है ।

ज्योतिष शास्त्र रूपी समुद्र में अनेक ग्रन्थों को देखकर मृतक की क्या गति होगी, जातक किस लोक से आया है और जन्मान्तर में किस योनि में कहाँ था, कहना चाहिए ।

टिप्पणी— अब द्रेष्काणों की संज्ञा बताते है — पाप ग्रहों के द्रेष्काण को अग्नि संज्ञक, शुभ ग्रहों के द्रेष्काण को जलसंज्ञक, शुभग्रहों के द्रेष्काण पापग्रह से युत हों तो मिश्र संज्ञक एवं कर्क के द्वितीय, तृतीय, वृश्चिक के द्वितीय और मीन के तृतीय द्रेष्काण को सर्प संज्ञक कहते है ।

पूर्व जन्म का ज्ञान

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञो
विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः ।
दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितात् त्र्यंशनाथात्प्रवरसम
निकृष्टास्तुंगह सादनूके ॥ 14 ॥

यदि जन्म समय सूर्य और चन्द्रमा इन दोनों में जो बली हो वह गुरू के द्रेष्काण में हो तो देवलोक से, चन्द्रमा या शुक्र के द्रेष्काण में हो तो पितृलोक से , सूर्य या मंगल के द्रेष्काण में हो तो तिर्यग्लोक से, शनि या बुध के द्रेष्काण में हो तो नरक लोक से आए है ।

यदि द्रेष्काण स्वामी बली हो या उच्च में हो तो जिस लोक से जातक आया है वहाँ श्रेष्ठ अर्थात् पूर्व जन्म में उत्तम था । यदि द्रेष्काण स्वामी उच्च का नीच के मध्य हो तो पूर्व जन्म में मध्यम और नीच में हो तो पूर्व जन्म में कुकर्म करने वाला था ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगले जन्म के लोक का ज्ञान

गतिरपि रिपुरंध्रत्र्यंशपोऽस्तस्थितो
व गुरुरथ रिपुकेंद्रच्छिद्रग: स्वोच्चसंस्थ: ।
उदयति भवनेंऽत्ये सौम्यभागे च मोक्षो भवति
यदि बलेन प्रोज्झितास्तत्र शेषा: ॥ 15 ॥

यदि जन्म समय छठे, सातवें व आठवें स्थान ग्रह रहित हों तो छठे और आठवें भाव में जिस राशि का द्रेष्काण हो उन दोनों में जो बली हो उसका जो पूर्वोक्त लोक 14वें श्लोकानुसार हो जातक उसी लोक में है । यदि छठे, सातवें व आठवें स्थान में से किसी एक स्थान में ग्रह हो तो यह ज्ञात करें कि कौन सा ग्रह सर्वाधिक बली है, उसी के अनुरूप पूर्वोक्त लोक में 14वें श्लोकानुसार जाता है ।

यदि जन्म समय उच्च का गुरु छठे, केन्द्र या आठवें भाव में स्थित हो तो जातक मोक्ष पाता है ।

यदि गुरु मीन राशि में स्थित होकर लग्न में स्थित हो और शुभ ग्रह के नवांश में हो, जबकि अन्य ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र व शनि बलहीन हों तो जातक मोक्ष पाता है ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके नैर्याणिकाऽध्याय: पंचविंश ॥ 25 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

नष्टजातकाध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर रचित 'बृहज्जातकम्' के आधार पर जिनकी कुण्डली नहीं है या नष्ट हो गई है तो इस स्थिति में क्या करें, इसकी चर्चा करेंगे । यदि आपने समझकर इस ज्ञान को पा लिया तो नष्ट कुंडलियों (lost horoscopes) पुनः जीवित करने में आसानी रहेगी ।

अयन ज्ञान कैसे करें ?

आधनजन्मापरिबोधकाले सम्पृच्छतो जन्म वदेद्विलाग्नात्।
पूवाप्रार्द्धे भवनस्य विंद्याद्भानावुदग्दक्षिणगे प्रसूतिम् ॥ 1 ॥

इस श्लोक में जन्म काल और गर्भाधान काल (conception time) दोनों का ज्ञान नहीं है तो उसके जन्मकाल का ज्ञान किस प्रकार करें यह बताया है ।

जिस समय प्रश्नकर्ता प्रश्न करे उस समय तात्कालिक लग्न साधन करना चाहिए, उस लग्न के अंश 15 से कम हो तो सूर्य उत्तरायण में और 15 से अधिक हो तो सूर्य दक्षिणायन में समझना चाहिए ।

टिप्पणी— प्रश्न लग्न के अनुसार ज्ञात करें कि अयन कौन सा है । लग्न के अंश 15 से कम है तो सूर्य उत्तरायण में होगा अर्थात 15 जनवरी से 15 जुलाई तक सूर्य उत्तरायण में मकर, कुभ, मीन, मेष, वृष, और मिथुन से गुजरता है ।

यदि प्रश्न काल के अंश 15 से अधिक है तो सूर्य दक्षिणायण में होगा अर्थात् 15 जुलाई से 15 जनवरी तक सूर्य दक्षिणायण में कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और धनु से गुजरता है ।

वर्षा और ऋतु ज्ञान

लग्नत्रिकोणेषु गुरुस्त्रिभागैर्विकल्प्य वर्षाणि वयोनुमानात्।
ग्रीष्मोऽर्कलग्ने कथितास्तु शेषैरन्यायनर्तावृतुरर्कचारात् ॥ 2 ॥

सर्वप्रथम प्रश्न लग्न में वर्तमान द्रेष्काण से गुरु की स्थिति ज्ञात करे । जैसे— यदि प्रश्न लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो उसी राशि के गुरु रहने पर जन्म कहना चाहिए । यदि प्रश्न लग्न में दूसरा द्रेष्काण हो तो गुरु की राशि लग्न से पांचवी राशि होती है । यदि तृतीय द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो गुरु की राशि लग्न से नौवीं राशि होती है ।

कुछ विद्धानों का मत है कि प्रश्न लग्न में जितनी संख्या वाली राशि में गुरु वर्तमान हो उतने वर्ष प्रश्नकर्त्ता के कहने चाहिएं । प्रश्न लग्न में तृतीय द्रेष्काण हो तो प्रश्न लग्न के पाचवें स्थान की राशि से जितनी संख्या वाली राशि में गुरु हो तो उतने वर्ष प्रश्न कर्त्ता के कहने चाहिएं । प्रश्न लग्न में तृतीय द्रेष्काण हो तो प्रश्न लग्न के नौवें

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव की राशि से जितनी संख्या वाली राशि में गुरु हो तो उतने वर्ष प्रश्नकर्त्ता के कहने चाहिएं। जबकि यह अर्थ ठीक नही है, पहला अर्थ ही सर्व सम्मत है।

जन्म वर्ष ज्ञात करके ऋतु का ज्ञान करना चाहिए। प्रत्येक ऋतु दो माह की होती है। यदि सूर्य वृष या मिथुन राशि में हो या सूर्य या मंगल या इनका द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो **ग्रीष्म ऋतु** में जन्म समझना चाहिए।

यदि सूर्य मेष या मीन राशि में या शुक्र या उसका द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो **बसन्त ऋतु** में समझना चाहिए।

यदि सूर्य सिंह या कर्क राशि में हो या चन्द्र या इसका द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो **वर्षा ऋतु** में जन्म कहना चाहिए।

यदि सूर्य कन्या या तुला राशि में हो तो बुध या इसका द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो **शरद् ऋतु** का जन्म समझना चाहिए।

यदि सूर्य वृश्चिक या धनु राशि में हो या गुरु या इसका द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो **हेमन्त ऋतु** में जन्म समझना चाहिए।

यदि सूर्य मकर या कुंभ राशि में हो या शनि या इसका द्रेष्काण प्रश्न लग्न में हो तो **शिशिर ऋतु** में जन्म समझना चाहिए।

यदि ज्ञात ऋतु अयन के अनुसार ठीक आए तो ठीक ऋतु टिप्पणी के तीसरे निर्देश के अनुसार ज्ञात करनी चाहिए।

टिप्पणी — 1. गुरु राशि चक्र को भोगने में 12 वर्ष का समय लगाता है। यदि गुरू की भुक्त राशि चक्र की संख्या ज्ञात हो जाए तो जन्मवर्ष का ज्ञान किया जा सकता है। मान लो किसी का गुरु वृश्चिक राशि में प्रश्न लग्न में स्थित है और जन्म समय कन्या राशि में गुरु है। अत: कन्या राशि से वृश्चिक राशि तक तीसरा राशि चक्र भुक्त है। अत: $12 \times 3 = 36$ वर्ष प्रश्न कर्ता की आयु हो सकती है। आप प्रश्नकर्त्ता को देखकर भी आयु का अनुमान लगा सकते हैं।

2. यदि प्रश्न काल में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो जो ग्रह सर्वाधिक बली हो उसी के अनुसार ऋतु का ज्ञान करना चाहिए।

3. मान लो आपने श्लोक के अनुसार अयन उत्तरायण ज्ञात किया है तो आपका महीना या ऋतु मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष या मिथुन राशि में पड़ेगा। यदि प्रश्न लग्न व दूसरे श्लोक के अनुसार आपकी ऋतु बसन्त आती है तो प्रश्नकर्ता का जन्म उत्तरायण में और मास बसन्त ऋतु का पड़ता है। विभिन्न रीतियों से निश्चित करें कि जन्मवर्ष, मरण और अयन कौन सा है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अयन व ऋतु में अन्तर होने पर ऋतु व मास का ज्ञान

चंद्रजीवा: परिवर्तनीया: शुक्रारमंदैरयने विलोमे।
द्रेष्काणभागे प्रथमे तु पूर्वो मासोऽनुपाताच्च तिथिर्विकल्प्य: ॥ 3 ॥

जहाँ पर ऋतु और अयन में अन्तर आए वहाँ चन्द्र, बुध, गुरु इनको क्रमश: शुक्र, मंगल और शनि के साथ परिवर्तित करके ऋतु कहनी चाहिए। जैसे वर्षा से बसन्त, शरद से ग्रीष्म और हेमन्त से शिशिर ऋतु जाननी चाहिए। प्रश्न कर्त्ता के जन्म काल निर्धारण करने में उत्तरायण में वर्षा ऋतु आये तो बसन्त समझें, शरद आए तो ग्रीष्म समझें और हेमन्त आये तो शिशिर समझें। यदि दक्षिणायन में बसन्त आए तो वर्षा समझें, ग्रीष्म आए तो शरद समझें और शिशिर आए तो हेमन्त ऋतु समझें।

अब मास ज्ञान के सम्बन्ध में बताते हैं। प्रश्न लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो पूर्वोक्त प्रकार से आयी ऋतु का पहला मास व दूसरा द्रेष्काण हो तो दूसरा मास समझना चाहिए। यदि तीसरा द्रेष्काण पड़े तो उस द्रेष्काण के दो भाग करके लग्न के अंश पहले भाग में पड़ें तो पहला मास और दूसरे भाग में पड़े तो दूसरा मास समझना चाहिए।

अब तिथि का ज्ञान करना बताते है। द्रेष्काण के द्वारा अनुपात से तिथि का ज्ञान करना चाहिए। जैसे एक द्रेष्काण में 10 अंश में 60 दिन होते हैं। एक आधे द्रेष्काण में 5 अंश (30) दिन होते हैं। $5 \times 60 \div 30 = 10$ कला का एक चन्द्र दिन होता है। लग्न स्पष्ट ज्ञात करके ही नियमानुसार तिथि का अनुमान करना चाहिए।

चान्द्रतिथि, दिन-रात और जन्म काल का ज्ञान

अत्रापि होरापटवो द्विजेंद्रा: सूर्यांशतुल्यां तिथिमुद्दिशंति।
रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोमजन्म भागैश्च वेला: क्रमशो विकल्पया: ॥ 4 ॥

विद्धान ज्योतिर्विद सूर्य अंशों से तिथि आदि ज्ञात करते हैं। यदि प्रश्न लग्न दिन संज्ञक हो तो रात्रि में और रात्रि संज्ञक हो तो दिन में जन्म कहना चाहिए।

जन्म का निर्णय लग्न स्पष्ट व राशि से ही करना चाहिए। दिन का जन्म हो तो दिनमान से व रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान से जन्म काल ज्ञान करना चाहिए।

टिप्पणी— 1. चान्द्रमास का पहला चान्द्र दिन कृष्ण पक्ष के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। मान लो सूर्य स्पष्ट 10 अंश मकर राशि के हैं। चान्द्र दिन पर तिथि जन्म समय अठारह दिन होंगे अर्थात् $18 - 15 = 3$ (तीसरा) शुक्ल पक्ष का होगा। यदि कृष्ण पक्ष का जन्म है तो शुक्ल पक्ष की तीसरी तिथि होगी या शुक्ल पक्ष का है तो कृष्ण पक्ष की तीसरी तिथि समझें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

2. दिनमान या रात्रिमान ज्ञात करके प्रश्न लग्न स्पष्ट के अनुसार ज्ञात करें कि जन्म काल क्या है । यदि दिन में जन्म हो तो दिनमान से ज्ञात करे कि लग्न राशि किस समय उदय होगी । मान लो दिनमान 30 घटी है और लग्न स्पष्ट अंश 5 हैं जोकि 30 घटी का 1/6 है तो प्राय: 5 घटी के मध्य जन्म हुआ है । प्रश्न कालिक लग्न के स्वदेशीय भुक्त पलों को रात्रिमान या दिनमान (जिसमें जन्म हो) से गुणा करके लग्न के स्वदेशीय उदय मान से भाग देने पर जो इष्ट घटी प्राप्त हो वही जन्म काल की समझनी चाहिएं ।

अन्य मतानुसार जन्म मरणऔर राशि का ज्ञान

केचिच्छशांकाध्युषितान्नवांशाच्छुक्लांतसंज्ञं कथयंति मासम् ।
लानत्रिकोणोत्तमवीर्ययुक्तं संप्रोच्यतेंऽगालभनादिभिर्वा ॥ 5 ॥

किसी विद्धान का मत है कि चन्द्रमा के नवांश में जो नक्षत्र हो उसमें जिस माह में पूर्ण बली चन्द्र हो उसी में जन्म कहना चाहिए । जैसे नवांश संबंधी नक्षत्र कृत्तिका या रोहिणी हो तो कार्तिक, मृगशिरा या आर्द्रा हो तो अगहन, पुनर्वसु या पुष्य हो तो पौष, आश्लेषा या मघा हो तो माघ, पूर्वाकाल्गुनी या उत्तराफाल्गुनी या हस्त हो तो फाल्गुन, चित्रा या स्वाति हो तो चैत्र, विशाखा या अनुराधा हो तो वैशाख, ज्येष्ठा हो तो ज्येष्ठं, पूर्वाषाढ़ा या उत्तराषाढ़ा हो तो आषढ़, श्रवण या धनिष्ठा हो तो श्रवण, पूर्वाभाद्रपद या उत्तराभाद्रपद हो तो भाद्रपद रेवती या अश्विनी हो तो अंश्विन मास कहना चाहिए ।

टिप्पणी— 1. प्रश्न कालिक लग्न पंचम व नवम राशि में से जो सर्वाधिक बली हो उसमें जन्म कहना चाहिए ।

2. प्रश्नकर्त्ता का हाथ जिस अंग को स्पर्श करता हो उस अंग में जिस राशि का प्रभाव हो उसी राशि में जन्म कहना चाहिए ।

3. प्रश्न समय जो जीव दिखाई पड़े या जिस जीव की आवाज सुनायी दे उसके अनुसार राशि की कल्पना करनी चाहिए ।

जन्म राशि ज्ञान का उत्तम प्रकार

यावान् गतः शीतकरो विलग्नाच्चंद्राद्वदेत्तावति जन्मराशिः ।
मीनोदये मीनयुगं प्रदिष्टं भक्ष्याहताकाररुतैश्च चिंत्यम् ॥ 6 ॥

प्रश्नकालिक लग्न से चन्द्रमा जितने भाव का स्थित हो, चन्द्रमा से उतने भाव दूर जो राशि हो उसी में जन्म कहना चाहिए ।

यदि प्रश्न लग्न मीन हो तो मीन राशि में जन्म कहना चाहिए । यदि अनेक प्रकारों से जन्म राशि एक आये तो उसी में जन्म कहना चाहिए । यदि भिन्न- भिन्न राशि आये

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो प्रश्नकाल में आयी हुई खाने की वस्तु के स्वरूप या पशु-पक्षी के दर्शन या उनके शब्द से मेष, वृष आदि राशियां कहनी चाहिएं।

टिप्पणी— मान लो प्रश्न लग्न राशि कुंभ है और चन्द्रमा धनु राशि में स्थित है तो कुंभ से धनु तक 11 संख्या आती है, चन्द्रमा से गिनने पर ग्यारहवीं राशि तुला आती हैं। अतः तुला जन्म राशि हुई।इसी प्रकार अन्यत्र समझें।

जन्म लग्न का ज्ञान

होरानवांशप्रतिमं विलग्नं लग्नाद्रविर्यावति च दृकाणे।
तस्माद्वदेत्तावति वा विलग्नं प्रष्टुः प्रसूताविति शास्त्रमाह॥ 7॥

प्रश्नकालिक लग्न में जिस राशि का नवांश हो वही राशि जन्म लग्न समझना चाहिए।

प्रश्नकालिक लग्न में जो द्रेष्काण वर्तमान हो उससे जितनी संख्या के द्रेष्काण में सूर्य हो प्रश्न लग्न से उतनी संख्या की राशि को जन्म लग्न समझना चाहिए।

टिप्पणी— 1. प्रश्न लग्न काल में मान लो कन्या का नवांश है तो जन्म लग्न भी कन्या ही होगा।

2. दूसरे प्रकार से भी ज्ञात कर सकते है। मान लो सिंह के 10 अंश का लग्न स्पष्ट (प्रश्न कालिक) है। यह चौथा नवांश है जिसकी राशि कर्क है। कर्क से चौथी राशि तुला है, इसलिए तुला लग्न समझना चाहिए।

3. मान लो प्रश्न कालिक लग्न में मेष का प्रथम द्रेष्काण है और सूर्य कन्या के तीसरे द्रेष्काण में है। इस प्रकार मेष के प्रथम द्रेष्काण से कन्या के तीसरे द्रेष्काण तक 18 संख्या हुई। अतः मेष से 18 वीं राशि $18 - 12 = 6$ अर्थात् कन्या है। यही जन्म लग्न हुआ।

जन्म लग्न ज्ञान का अन्य प्रकार

जन्मादिशेल्लगनगे वीर्यगे वा छायांगुलघ्नेर्कहतेऽवशिष्टम्।
असीनसुप्तोत्थिततिष्ठताभं जायासुखाज्ञोदयगं प्रदिष्टम्॥ 8॥

प्रश्न कालिक लग्न में जो ग्रह हों उसको या अनेक ग्रह लग्न में हो तो जो सर्वाधिक बली हो उसको तात्कालिक ग्रह स्पष्ट बनाकर प्रश्न कालिक समय में द्वादश अंगुल शंकु की छाया अंगुलात्मक जितनी हो उससे ग्रह स्पष्ट का गुणा करके 12 का भाग देने से जो शेष रहे वह जन्म लग्न समझना चाहिए।

अन्य विद्वानों के अनुसार प्रश्नकर्ता बैठकर प्रश्न करें तो प्रश्न लग्न से सातवें स्थान में जो राशि हो उसे जन्म लग्न राशि समझें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि प्रश्नकर्ता पड़े-पड़े (लेटे हुए) प्रश्न करे तो प्रश्न लग्न से चौथी राशि को लग्न समझें ।

यदि प्रश्नकर्त्ता उठते हुए प्रश्न करे तो प्रश्न लग्न से दसवीं राशि को लग्न समझना चाहिए ।

यदि प्रश्नकर्त्ता खड़े-खड़े प्रश्न करे तो प्रश्न लग्न को ही जन्म लग्न समझना चाहिए ।

टिप्पणी—मान लो लग्न स्थित ग्रह स्पष्ट या सर्वाधिक बली ग्रह का ग्रह स्पष्ट $1/0^{o}/0'$ है और शंकु की छाया 6 अंगुल है, $6 \times 1 = 6$ राशि, इसे 12 से भाग देने पर 0 राशि 30 अंश आया । अत: जन्म लग्न मेष आया ।

नष्ट जातक का ज्ञान

गौसिंहो जितुमाष्टमौ क्रियतुले कन्यामृगो च
क्रमात् संवर्ग्यो दशकाष्टसप्तविषयैः शेषाः स्वसंख्यागुणाः ।
जीवारास्फुजिदैंदवाः प्रथमवच्छेषा ग्रहाः सौम्यावद्राशीनां
नियतो विधिर्ग्रहयुतैः कार्यो च तद्वर्गणा ॥ 9 ॥

राशि के गुणक इस प्रकार हैं— वृष और सिंह का 10, मिथुन और वृश्चिक का 8, मेष और तुला का 7, कन्या और मकर का 5, और शेष राशियों की राशि संख्यां ही गुणक होती है । देखें— 'राशि गुणक चक्रम् ।'

राशि गुणक चक्रम्

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
गुणक	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12

ग्रह के गुणक इस प्रकार हैं—सूर्य का 5, चन्द्र का 5, मंगल का 8, बुध का 5, गुरु का 10, शुक्र का 7, शनि का 5 और राहु-केतू का कुछ भी नहीं हैं । देखें —'ग्रह गुणक चक्रम्' ।

ग्रह गुणक चक्रम्

राशि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गुणक	5	5	8	5	10	7	5

प्रश्न लग्न के स्पष्ट की राशि को उसके गुणक से गुणा करके यदि लग्न में कोई ग्रह हो तो उसके (ग्रह) गुणक से पूर्व गुणनफल को गुणा करके प्राप्त लब्धि का जोड़

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

करके जन्म लग्न ज्ञात करें। मान लो प्रश्न लग्न स्पष्ट $10/10^\circ/10'$ है और लग्न में मंगल और बुध स्थित हैं, लग्न राशि कुंभ है जिसका गुणक 11 है, इससे लग्न स्पष्ट को गुणा करा तो $5/21^\circ/50'$ आया। मंगल का ग्रह गुणक 8 है और बुध का 5 है। मंगल गुणक को लग्न स्पष्ट से गुणा करा $10/10^\circ/10' \times 8 = 82/21^\circ/20'$ आया। 12 से भाग दिया तो $10/21^\circ/20'$ आया। इसी प्रकार लग्न स्पष्ट को बुध गुणक 5 से गुणा करा तो $10/10^\circ/10' \times 5 = 51/20^\circ/50'$ आया, 12 से भाग दिया तो $3/20^\circ/50'$ आया। इन दोनों को जोड़ा तो $10/21^\circ/20' + 3/20^\circ 50' = 14/12^\circ/10'$ आया, इसमें लग्न फल को जोड़ा तो $14/12^\circ/10' + 5/21^\circ/50' = 20/4^\circ/0'$ आया। 12 से राशि अधिक होने के कारण 12 घटाया तो $8/4^\circ/0'$ जन्म लग्न आया।

नक्षत्र का ज्ञान

सप्ताहतं त्रिघनभाजितशेषमृक्षं दत्त्वाथवा नव विशोध्य न वाथवास्मात्।
एवं कलत्रसहजात्मजशत्रुभेभ्यः प्रष्टुर्वदेदुदयराशिवशेन तेषाम् ॥10॥

पूर्व श्लोक 9 में आए जोड़ को 7 से गुणा करके, उसमें प्रश्न लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो 9, दूसरा द्रेष्काण हो तो कुछ नहीं और तीसरा द्रेष्काण हो तो 9 घटा दें, बाद में 27 का भाग देकर जो शेष संख्या आए उसके अनुसार क्रम से अश्विनी आदि जन्म नक्षत्र जानना चाहिए।

यदि कोई अपनी स्त्री का नक्षत्र पूछे तो प्रश्न लग्न से सातवीं राशि द्वारा, भाई का नक्षत्र प्रश्न लग्न से तीसरी राशि द्वारा, सन्तान का नक्षत्र प्रश्न काल से पांचवीं राशि द्वारा, शत्रु का नक्षत्र पूछे प्रश्न काल से छठी राशि द्वारा उक्त प्रकार से ज्ञात करना चाहिए।

टिप्पणी— 1. अन्य मतानुसार पूर्व श्लोक में आए जोड़ को 7 से गुणा करके, उसमे प्रश्न, लग्न में चर राशि हो तो नौ जोड़ें, स्थिर राशि हो तो वैसा ही रहने दें और द्विस्वभाव राशि हो तो नौ घटा दें, शेष में 27 का भाग देकर शेषानुसार नक्षत्र समझें।

2. मान लो पूर्व श्लोक से हम जोड़ करने के बाद $8/4^\circ/0'$ प्राप्त हुआ, इसमें 7 का गुणा किया तो $8/4^\circ/0' \times 7 = 56/28^\circ/0'$ आया, इसमें लग्न (प्रश्न) दूसरे द्रेष्काण में होने के कारण कुछ नहीं जोड़ा बाद में 12 से भाग दिया तो $8/28^\circ/0$ आया अर्थात् 268 अंश आया। इसे $13^\circ/20'$ (एक नक्षत्र का मान) से भाग दिया तो भुक्त नक्षत्र संख्या 20 आयी और वर्तमान नक्षत्र संख्या 21 आयी, 21वां नक्षत्र उत्तराषाढ़ा जन्म नक्षत्र हुआ। यदि $56/28^\circ/0'$ में लग्न राशि स्थिर होने के कारण कुछ नहीं जोड़ना पड़ा तो भी नक्षत्र संख्या 21 ही आयेगी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. यदि प्रश्नकर्ता भाई के नक्षत्र के बारे में पूछे तो प्रश्न लग्न राशि में 2 जोड़ें तो तृतीय भाव का स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा, सन्तान के जन्म नक्षत्र के विषय में पूछे तो प्रश्न लग्न राशि में 4 जोड़ने पर पांचवें भाव का स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा और शत्रु के जन्म नक्षत्र के विषय में पूछे तो प्रश्न लग्न स्पष्ट राशि में 5 जोड़ने पर छठे भाव का स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा। बाद में उक्त रीति से नक्षत्र संख्या ज्ञात कर लें।

अन्य प्रकार से वर्षादि का ज्ञान

वर्षर्तुमासतिथयो द्युनिशं ह्युडूनि
वेलोदयेर्क्षनवभागविकलपनाः स्युः।
भूयो दशादिगुणिताः स्वविकल्पभक्ता
वर्षादयो नवकदानविशोधनाभ्याम् ॥ 11 ॥

श्लोक 9 के अनुसार प्राप्त जोड़ में 10, 8, 7, 5 से गुणा करके चार अलग-अलग स्थान पर रखें और फिर आवश्यक्तानुसार (श्लोक 10 के अनुसार) 9 जोड़ें या घटाकर अपने-अपने भाजक से भाग देने पर वर्ष, ऋतु मास, चन्द्र दिन, दिन या रात, नक्षत्र, लग्न, नवांश आदि ज्ञात होता है। इसको आगे के श्लोकों में स्पष्ट करते हैं।

वर्षादि का ज्ञान

विज्ञेया दशकेष्वब्दा ऋतुमासास्तथैव च।
अष्टेकेष्वपि मासार्द्धास्तिथयश्च तथा स्मृताः ॥ 12 ॥

दस से गुणा करके प्राप्त लब्धि में 120 का भाग देने पर व्यक्ति का भुक्त वर्ष ज्ञात होता है, 6 का भाग देने पर ऋतु (शिशिर आदि) ज्ञात होती है, 2 का भाग देने पर 1 शेष बचे तो ऋतु के प्रथम मास में और शेष बचे तो ऋतु का दूसरा मास होता है।

इसी प्रकार दूसरे स्थान में 8 से गुणा करके प्राप्त संख्या में 2 का भाग देने से 1 शेष बचे तो शुक्ल पक्ष और 0 शेष बचे तो कृष्ण पक्ष का जन्म होता है। इसी संख्या में 15 का भाग देने पर जो शेष बचे वह जन्म तिथि होती है।

दिन-रात व नक्षत्र का ज्ञान

दिवारात्रिप्रसूतिं च नक्षत्रानयनं तथा।
सप्तकष्वपि वर्गेषु नित्यमेवोपलक्षयेत् ॥ 13 ॥

तीसरे स्थान में 7 का गुणा करके प्राप्त संख्या में 2 का भाग देने पर 1 शेष बचे तो दिन में जन्म और 0 शेष बचे तो रात्रि में जन्म कहना चाहिए। इसी संख्या में 27 का भाग देने पर जो शेष बचें वो क्रम से अश्विनी आदि नक्षत्र समझें।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

इष्टकाल जानने का प्रकार

वेलामथ विलग्नं च होरामंशकमेव च।
पंचकेषु विजानीयान्नष्टजातकसिद्धये ॥ 14 ॥

चौथे स्थान में 5 से गुणा करके प्राप्त संख्या में दिन का जन्म हो तो दिनमान से भाग देने पर और रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान से भाग देने पर इष्टकाल घटी प्राप्त होती हैं।

इष्ट घटी से राश्यादि लग्न-स्पष्ट ज्ञात करके होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश के अतिरिक्त तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने चाहिएं।

टिप्पणी—विद्वानों के अनुसार प्राप्त संख्या का 12 से भाग देकर शेष से लग्न, मेष राश्यादि और 2 से भाग देकर होरा और 9 से भाग देकर नवांश आदि को जानना चाहिए। अनेक कुण्डलियों में अध्ययन करने के बाद जो अनुभव में सही लगे उसे ही मानना चाहिए।

जन्म नक्षत्र का ज्ञान

संस्कारनाममात्रा द्विगुणा छायांगुलैः समायुक्ताः।
शेषं त्रिनवकभक्तान्नक्षत्रं तद्धनिष्ठादि ॥ 15 ॥

प्रश्नकर्त्ता के बोलते नाम में जितनी मात्राएं हों उसको 2 से गुणा करके उसमें 12 अंगुल की छाया को जोड़ दें, फिर 27 का भाग देकर जो शेष बचे उसे धनिष्ठादि से क्रमानुसार जन्म नक्षत्र समझना चाहिए।

द्वित्रिचतुर्दशदशतिथिसप्तत्रिगुणा नवाष्ट चेंद्राद्याः।
पंचदशघनास्तद्दिङ्मुखान्विता भधनिष्ठादि ॥ 16 ॥

प्रश्नकर्ता का मुख जिस दिशा की ओर हो उस दिशा के अंक में 15 से गुणा करके उसमें जितने व्यक्ति खड़े हों और उनका मुख जिस दिशा की ओर हो उसकी संख्यां जोड़ें और फिर 27 का भाग देने से जो शेष बचे वह धनिष्ठा आदि क्रम से जन्म नक्षत्र समझें।

टिप्पणी— पूर्व दिशा का अंक 2, अग्निकोण का 3, दक्षिण का 14, नैऋत्य कोण का 10, पश्चिम का 15, वायव्य कोण का 21, उत्तर का 9 और ईशान कोण का 8 अंक है।

नष्टजातकाध्याय का उपसंहार

इति नष्टजातकमिदं बहुप्रकारं मया विनिर्दिष्टम्।
प्राज्ञमतः पृच्छकैः परीक्ष्य सत्यवाक्या भवति ॥ 17 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आचार्य वराहमिहिर कहते हैं कि इस अध्याय में मैंने बहुत प्रकार से नष्टजातक के विषय में कहा है किन्तु ज्योतिष का बुद्धिमान विद्यार्थी यत्नपूर्वक परीक्षा करके जो यर्थाथ हो उसे ग्रहण करे या ठीक समझे।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके नष्टजातकाध्यायः षड्विंशः ॥ 26 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

27 द्रेष्काणस्वरूपाऽध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर द्रेष्काण का स्वरूप स्पष्ट करेंगे जोकि फलित करते समय काम आता रहता है ।

मेष के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

कट्यां सितवस्त्रवेष्टितः कृष्णः शक्त इवाभिरक्षितुम् ।
रौद्रः परशुं समुद्यतं धत्ते रक्तविलोचनः पुमान् ॥ 1 ॥

मेष के पहले द्रेष्काण का स्वरूप कमर में श्वेत वस्त्र लपेटे हुए, श्याम वर्ण, रक्षा करने में समर्थ, डरावना रूप, फरसा धारण किए हुए, लाल नेत्रों से युक्त और पुरुष संज्ञक जैसा है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव, शस्त्रधारी और मंगल इसका स्वामी है ।

मेष के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

रक्तांबरा भूषणभक्ष्यचिंता कुंभाकृतिर्वाजिमुखी तृषार्त्ता ।
एकेन पादेन च मेषमध्ये द्रेष्काणरूपं यवनोपदिष्टम् ॥ 2 ॥

मेष के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप लाल वस्त्रधारी, भोजन व आभूषण की चिन्ता करने वाली, घड़े के स्वरूप जैसी, अश्वमुख जैसी, प्यासी, एक पैर से युक्त है, ऐसा यवनेश्वर का कथन है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण चतुष्पाद, स्त्री संज्ञक, मुख व चेहरा पक्षी जैसा और इसका स्वामी सूर्य है ।

मेष के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

क्रूर कलाज्ञः कपिलः क्रियार्थी भग्नव्रतोऽभ्युद्यतदंडहस्तः ।
रक्तानि वस्त्राणि बिभर्ति चंडो मेषे तृतीयः कथितस्त्रिभागः ॥ 3 ॥

मेष के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप क्रूर स्वभाव, कलाओं का ज्ञाता, भूरा वर्ण, कुछ न कुछ करते रहने का इच्छुक; अनियमी, लाठी रखने वाला, रक्त वस्त्र धारण करने वाला, क्रोधी व्यक्ति जैसा है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण व्यक्ति, शस्त्रधारी एवं इसका स्वामी गुरु है ।

वृष के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

कुंचितलूनकचा घटदेहा दग्धपटा तृषिताशनचित्ता ।
आभरणान्यभिवांछति नारी रूपमिदं वृषभे प्रथमस्य ॥ 4 ॥

वृष के पहले द्रेष्काण का स्वरूप कुटिल, कटे हुए बालों वाली, घड़े के समान

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर व जले कपड़ों वाली, प्यास से दुःखी, भोजन भूषणों को चाहने वाली स्त्री जैसा है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक, आग ले जाने वाली और इसका स्वामी शुक्र है ।

वृष के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

क्षेत्रधान्यगृहधेनुकलाज्ञो लांगले सशकटे कुशलश्च ।
स्कंधमुद्वहति गोपतितुल्यं क्षुत्परोऽजवदनो मलवासा ॥ 5 ॥

वृष्र के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप खेती करने वाला, अन्न को पैदा करने वाला, गृह कार्यों में दक्ष, गाय पालक, संगीत, नृत्य, कला और पेन्टिंग के विषय में जानने वाला, हल तथा गाड़ी चलाने में कुशल, बैल जैसी गर्दन वाला, भूखा, मुख बकरे जैसा एवं मलिन वस्त्र पहने व्यक्ति जैसा है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण आंशिक रूप से मानव व आंशिक रूप से चतुष्पाद और इसका स्वामी बुध है ।

वृष के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

द्विपसमकायः पाण्डुरदंष्ट्रः शरभसमांधि पिङ्गलमूर्तिः ।
अविमृगलोभव्याकुलचित्तो वृषभवन्सय प्रान्तगतोऽयम् ॥ 6 ॥

वृष के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप हाथी के समान शरीर वाला, श्वेत दांतों वाला, ऊंट सदृश पांव वाला, पीत वर्ण और भेड़ व हरिण के लिए चिन्तित व्यक्ति जैसा है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव व चतुष्पाद है । इसका स्वामी शनि है ।

मिथुन के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

सूच्याश्रयं समभिवांछति कर्म नारी रूपान्विताभरणकार्यकृतादरा च ।
हीन प्रजोच्छ्रितभुजर्तुमती त्रिभागमाद्यं तृतीयभवनस्य वदन्ति तज्ज्ञाः ॥ 7 ॥

मिथुन के पहले द्रेष्काण का स्वरूप सिलाई कार्य करने वाली स्त्री, रूपवती, आभूषणों से प्रेम करने वाली, सन्तानहीन दोनों हाथ ऊपर ऊठाए हुए, रजस्वला व प्यासी होती है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक और इसका स्वामी बुध है ।

मिथुन के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

उद्यानसंस्थः कवची धनुषमाञ्छूरोऽस्त्रधारी गरुडाननश्च ।
क्रीडात्मजालंकरणार्थचिंतां करोति मध्ये मिथुनस्य राशेः ॥ 8 ॥

मिथुन के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप उद्यान में रहने वाला, कवच व धनुष धारण करने वाला, युद्ध को तत्पर, उसका मुख गरुड़ के समान, खेल सन्तान, आभूषण और धन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal.

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चिन्ता करने वाला होता है।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण शस्त्रधारी मानव, चतुष्पाद सदृश आकार और इसका स्वामी शुक्र है।

मिथुन के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

भूषितो वरुणवछहुरत्नो बद्धतूणकवचः सधनुष्कः।
नृत्तवादितकलासु च विद्वान्काव्यकृन्मिथुनराश्यवसाने ॥ 9 ॥

मिथुन के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप सुवस्त्र एवं आभूषणों से युत, वरुण सदृश, बहु रत्नों का स्वामी, कवच व तूणीर धारण करने वाला, हाथ में धनुष रखने वाला, नृत्य, वाद्य तथा कलाओं का ज्ञाता एवं काव्य रचने वाला होता है।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण मानव संज्ञक, शस्त्रधारी और इसका स्वामी शनि है।

कर्क के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

पत्रमूलफलभृद्द्विपकायः कानने मलयगः शरभांघ्रिः।
क्रोडतुल्यवदानो हयकंठः कर्कटे प्रथमरूपमुशंति ॥ 10 ॥

कर्क के पहले द्रेष्काण का स्वरूप पत्ते, मूल व फलों का धारण करने वाला, हाथी सदृश शरीर वाला, जंगल में चन्दन के वृक्ष के नीचे रहने वाला, ऊँट के सदृश पैर वाला, सूअर सदृश मुख वाला और घोड़े के सदृश गर्दन वाला है।

टिप्पणी——यह द्रेष्काण चतुष्पाद और चन्द्रमा इसका स्वामी है।

कर्क के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

पद्मार्चिता मूर्द्धनि भोगियुक्ता स्त्री कर्कशारण्यगता विरौति।
शाखां पलाशस्य समाश्रिता च मध्ये स्थिता कर्कटकस्य राशेः ॥ 11 ॥

कर्क के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप कमान के पुष्पों से शोभित सिर वाली, सर्प से युक्त शरीर वाली, कठोर, युवा, वन में रोने वाली, पलाश वृक्ष की शाखाओं पर रहने वाली स्त्री सदृश है।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक, सर्प द्रेष्काण और इसका स्वामी मंगल है।

कर्क के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

भार्याभरणार्थमर्णवं नौस्थो गच्छति सर्पवेष्टितः।
हैमैश्च युतो विभूषणैश्चिपिटास्योऽत्यगतश्च कर्कटे ॥ 12 ॥

कर्क के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप समुद्र में नाव पर सवार व्यक्ति, स्त्री के लिए आभूषण लाने के लिए जाने वाला, सर्प से लिपटे शरीर वाला, स्वर्ण आभूषणों से युक्त व चपटे मुख वाला होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक, सर्प द्रेष्काण और इसका स्वामी गुरु है।

सिंह के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

शाल्मलेरुपरि गृध्रजंबुकौ श्वा नरश्च मलिनांबरान्वितः।
रौति मातृपितृविप्रयोजितः सिंहरुपमिदमाद्यमुच्यते ॥ 13 ॥

सिंह के पहले द्रेष्काण का स्वरूप गिद्ध व सियार के आकार वाला, सेमल के वृक्ष पर बैठा हुआ, अंशतः कुत्ता और मानव की तरह लगने वाला, मलिन वस्त्र पहने, माता-पिता के वियोग से दुःखी होकर रोने वाला है।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण द्विपद चतुष्पद व मानव संज्ञक है और इसका स्वामी सूर्य है।

सिंह के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

हयकृतिः पाण्डुरमाल्यशेखरो बिभर्ति कृष्णाजिनकम्बलं नरः।
दुरासदः सिंह इवात्तकार्मुको नताग्रनासो मृगराजमध्यमः ॥ 14 ॥

सिंह के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप अश्व के आकार वाला, सिर पर पीत-श्वेत पुष्पों की माला धारण करने वाला, काले मृग चर्म व कम्बल को धारण करने वाला, सिंह के समान दुःसाध्य हाथ में धनुष धारण करने वाला और नाक का अग्रभाग झुका हुआ होता है।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक, शस्त्रधारी एवं इसका स्वामी गुरु है।

सिंह के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

ऋक्षाननो वानातुल्यचेष्टो बिभर्ति दंडं फलमामिषं च।
कूर्ची मनुष्यः कुटिलैश्च केशैमृगेश्वरस्यांत्यगतस्त्रिभागः ॥ 15 ॥

सिंह के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप भालू के समान मुख वाला, वानर की तरह उछलने वाल, दण्ड धारण करने वाला, मांस मछली व फल ले जाने वाला, लम्बी दाढ़ी वाला और घुंघराले बालों वाला होता है।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव, चतुष्पाद और शस्त्रधारी होता है। इसका स्वामी मंगल है।

कन्या के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

पुष्पप्रपूर्णेन घटेन कन्या मलप्रदिग्धांबरसंवृतांगी।
वस्त्रार्थसंयोगमभीष्टमाना गुरौः कुलं वांछति कन्याकद्यः ॥ 16 ॥

कन्या के पहले द्रेष्काण का स्वरूप फूलों से भरे घड़े को धारण करने वाली कन्या, मैले कपड़ों से युक्त, कपड़ा व धन को पाने वाली व गुरुकुल से सम्बद्ध होना चाहती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— यह स्त्री संज्ञक द्रेष्काण है और इसका स्वामी बुध है ।

कन्या के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

पुरुषः प्रगृहीतलेखनिः श्यामो वस्त्रशिरा व्याययकृत् ।
विपुलं च बिभर्ति कार्मुकं रोमव्याप्ततनुश्च मध्यमः ।। 17 ।।

कन्या के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप पुरुष जैसा, हाथ में कलम लिए हुए, श्याम वर्ण सिर पर वस्त्र लिपटा हुआ, आय व व्यय का हिसाब रखने वाला, बड़े धनुष को धारण करने वाला और शरीर पर घने बालों जैसा है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण मानव संज्ञक, शस्त्रधारी और इसका स्वामी शनि है ।

कन्या के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

गौरी सुधौताग्रदुकूलगुप्ता समुच्छ्रिता कुंभकटच्छुहस्ता ।
देवालयं स्त्री प्रयता प्रवृत्ता वदंति कन्यांत्यगत स्त्रिभागः ।। 18 ।।

कन्या के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप बहुत लम्बी स्त्री, गौर वर्ण, श्वेत वस्त्र पहनने वाली, चेहरा आसानी से न दिखने वाला, एक हाथ में कलछी व दूसरे में घड़ा धारण करने वाली, पवित्र एवं मंदिर जाने की इच्छुक जैसा है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक और इसका स्वामी शुक्र है ।

तुला के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

वीथ्यंतरापणगतः पुरुषतुलावानुन्मानमानकुशलः प्रतिमानहस्तः ।
भांडं विचिंतयति तस्य च मूल्यमेतद्रूपं वदंति यवनाः प्रथमं तुलायाः ।। 19 ।।

तुला के पहले द्रेष्काण का स्वरूप बाजार में दुकानों पर बैठने वाला व्यक्ति, हाथ में तराजु लिए हुए, वजन नापने में कुशल, हाथ में वस्तुएं लिए हुए जिसे वजन करने वाला और मूल्य का अनुमान लगने वाला है । यह यवनेश्वर का कथन है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण मानव संज्ञक व इसका स्वामी शुक्र है ।

तुला के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

कलशं परिगृह्य विनिष्पतितुं समभीप्सति गृध्रमुखः पुरुषः ।
क्षुधितस्तृषितश्च कलत्रसुतात्मनसैति तुलाधरुध्यगतः ।। 20 ।।

तुला के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप मानव संज्ञक, गिद्ध के समान मुख वाला, हाथ में घड़ा लिए हुए, गिरने की इच्छा करने वाला, स्त्री-पुत्रों को चाहने वाला, भूखा, प्यासा जैसा है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण मानव संज्ञक व पक्षी संज्ञक है और इसका स्वामी शनि है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुला के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

विभीषयंस्तिष्ठति रत्नचित्रतो वने मृगान्कांचनतूणवर्मभृत्।
फलामिषे वानररूपभृन्नरस्तुलावसाने यवनैरुदाहृतः ॥ 21 ॥

तुला के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप वानर सदृश मानव, विभिन्न रत्नों को धारण करने वाला, स्वर्ण तूणीर व कवच पहनने वाला, वन में हरिणों को भयभीत करने वाला एवं फल व मांस को ले जाने वाला है।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण मानव, चतुष्पाद और इसका स्वामी बुध होंगे।

वृश्चिक के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

वस्त्रैर्विहीनाभरणैश्च नारी महासमुद्रात्समुपैति कूलम्।
स्थानच्युता सर्प्पनिबद्धपादा मनोरमा वृश्चिकाराशिपूर्वः ॥ 22 ॥

वृश्चिक के पहले द्रेष्काण का स्वरूप वस्त्राभूषणों से रहित सुन्दर, स्त्री, समुद्री यात्रा द्वारा अपना स्थान छोड़कर तट पर आयी हुई और पांव पर सर्प लिपटे हुए है।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक और इसका स्वामी गुरु है। इसे सर्प द्रेष्काण भी कहते हैं।

वृश्चिक के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

स्थानसुखान्यभिवांछति नारी भतृकृते भुजगावृतदेहा।
कच्छपकुंभसमानशरीरा वृश्चिकमध्यमरूपमुशंति ॥ 23 ॥

वृश्चिक के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप कछुआ तथा घड़े के सदृश शरीर वाली स्त्री, स्थान व सुख को चाहने वाली, सर्प से वेष्टित शरीर वाली व पति को चाहने वाली है।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक व इसका स्वामी गुरु है। इसे सर्प द्रेष्काण भी कहते हैं।

वृश्चिक के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

पृथुलचिपिटकूर्मतुल्यवक्त्रः श्वमृगवराहसृगालभीषकारी।
अवति च मलयाकरप्रदेशं मृगपतिरंत्यगतस्य वृश्चिकस्य ॥ 24 ॥

वृश्चिक के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप कछुए के समान चपटा मुख, कुत्ता, हिरण, भेड़िया व सुअर को डराने वाला, चन्दन के उत्पत्ति स्थानों की रक्षा करने वाला और सिंह जैसा है।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण चतुष्पाद और इसका स्वामी चन्द्रमा है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनु के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

मनुष्यावक्त्रोऽश्वसमानकायो धनुर्विगृह्यायतमाश्रमस्थः ।
क्रतूपयोज्यानि तपस्विनश्च ररक्ष आद्यो धनुषस्त्रि भागः ॥ 25 ॥

धनु के प्रथम द्रेष्काण का स्वरूप अश्व सदृश व्यक्ति, बड़ा धनुष धारण करने वाला, तपस्वियों व उनके समानों का रक्षक है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव व चतुष्पाद, शस्त्रधारी एवं इसका स्वामी गुरु है ।

धनु के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

मनोरमा चंपकहेमवर्णा भद्रासने तिष्ठति मध्यरूपा ।
समुद्ररत्नानि विघट्टयंती मध्यत्रिभागो धनुषः प्रदिष्टः ॥ 26 ॥

धनु के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप, प्रसन्न स्त्री, चम्पा के पुष्प व स्वर्ण सदृश वर्ण वाली, अच्छे आसन पर बैठी हुई, मध्यम रूप वाली और समुद्र के रत्नों को उलट-पुलट करने वाली जैसा है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक व इसका स्वामी मंगल है ।

धनु का तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

कूर्ची नरो हाटकचंपकाभो वरासने दंडधरो निषण्णः ।
कौशेयकान्युद्वहतेऽजिनं च तृतीयरूपं नवमस्य राशेः ॥ 27 ॥

धनु के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप बड़ी दाढ़ी वाला पुरुष, स्वर्ण व चम्पा के पुष्प सदृश वर्ण, दण्ड लेकर अच्छे आसन पर बैठने वाला, रेशमी कपड़ा और मृग चर्म को धारण करने वाला है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक व इसका स्वामी सूर्य है ।

मकर के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

रोमचितो मकरोपमदंष्ट्रः सूकरकायसमानशरीरः ।
यक्त्रकजालकबंधनधारी रौद्रमुखो मकर प्रथमस्तु ॥ 28 ॥

मकर के पहले द्रेष्काण का स्वरूप बालों से भरपूर शरीर वाला, मकर के समान दांत व सुअर के शरीर सदृश, डरावना रूप, ज़ाल, स्त्री व बेड़ी को ले जाने वाला है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक, चतुष्पाद व इसका स्वामी शनि है । यह बेड़ी, जाल व रस्सी धारण करने वाला है ।

मकर के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

कलास्वभिज्ञाब्जदलायताक्षी श्यामा विचित्राणि च मार्गमाणा ।
Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal
विभूषणालंकृतलोहकर्णा योषा प्रदिष्टा मकरस्य मध्ये ॥ 29 ॥

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मकर के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप कला विज्ञान, कमल-पत्र सदृश दीर्घ नेत्र वाली, श्याम वर्ण, विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को खोजनेवाली, आभूषणों से युक्त और कानों में लोहे के आभूषण पहनने वाली स्त्री जैसा है ।

टिप्पणी—यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक व इसका स्वामी शुक्र है ।

मकर के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

किन्नरोपमतनुः सकंबलस्तूणचापकवचैः समन्वितः ।
कुंभमुद्वहति रत्नचित्रितं स्कंधगं मकरराशिपश्चिम ॥ 30 ॥

मकर के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप किनारों के सदृश शरीर जैसा, कम्बल, तूणीर, धनुष व कवच को धारण करने वाला और कन्धे पर रत्नों से भर घड़ा रखे हुए जैसा है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक, शस्त्रधारी और इसका स्वामी बुध है ।

कुंभ के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

स्नेहमद्यजलभोजनागमव्याकुलीकृतमनाः सकंबल ।
कोशकारवसनोऽजिनान्वितो गृद्ध्रतुल्यवदनो घटादिगः ॥ 31 ॥

कुंभ के पहले द्रेष्काण का स्वरूप गिद्ध जैसे मुख वाला, तेल, शराब पानी व भोजन का इच्छुक, ऊनी कपड़े पहनने वाला, रेशमी वस्त्र व कृष्ण चर्म से युक्त है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक एवं इसका स्वामी शनि है ।

कुंभ के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

दग्धे शकटे सशाल्मले लोहान्याहरतेंऽगनावने ।
मलिनेन पटेन संवृता भांडैर्मूध्नि गतैश्च मध्यमः ॥ 32 ॥

कुंभ के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप बन में सेमर के वृक्ष से युत, जली हुई गाड़ी पर बैठकर लोहे को धारण करने वाली स्त्री, मलिन वस्त्र पहनने वाली और सिर पर घड़ा ले जाने वाली स्त्री जैसा है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक और इसका स्वामी चन्द्र है ।

कुंभ के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

श्यामः सरोमश्रवणः किरीट त्वक्पत्रनिर्यासफलैर्बिभर्ति ।
भांडानि लोहव्यतिमिश्रितानि संचारयंत्यंतगतो घटस्य ॥ 33 ॥

कुंभ के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप श्याम वर्ण पुरुष, कानों पर बालों से युक्त, सिर पर ताज पहनने वाला, छाल, पत्ती, गोंद तेल और फल लोहे के बर्तन में रखकर ले जाने वाला इधर-उधर घूमता है ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक और इसका स्वामी शुक्र है ।

मीन के पहले द्रेष्काण का स्वरूप

स्त्रुग्भांडमुक्तामणिशंखमिश्रैर्व्याक्षिप्तहस्तः सविभूषणश्च ।
भार्याविभूषार्थमपां निधानं नावा प्लवत्यादिगतो झषस्य ।। 34 ।।

मीन के पहले द्रेष्काण का स्वरूप हाथ में यज्ञ के बर्तन, रत्न, शंख व आभूषण ले जाने वाला पुरुष, पत्नी के लिए समुद्री यात्रा करके आभूषण लाने वाला है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण मानव संज्ञक व इसका स्वामी गुरु है ।

मीन के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप

अत्युच्छ्रितध्वजपताकमुपैति पोतं
कूलं प्रयाति जलधेः परिवारयुक्ता ।
वर्णेन चम्पकमुखी प्रमदा त्रिभागो मीनस्य
चैष कथितो मुनिभिर्द्वितीयः ।। 35 ।।

मीन के दूसरे द्रेष्काण का स्वरूप व्यापार हेतु निज परिवार के साथ उँचे झंडे से युक्त जहाज पर बैठकर समुद्र पार करने वाली चंपा पुष्प सदृश मुख की कान्ति वाली स्त्री है ।

टिप्पणी— यह द्रेष्काण स्त्री संज्ञक व इसका स्वामी चन्द्र है ।

मीन के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप

श्वभ्रांतिके सर्पनिवेष्टितांगा वस्त्रैर्विहीनः पुरुषस्त्वटव्याम् ।
चौरनलव्याकुलितांतरात्मा विक्रोशतेऽत्योपगतो झषस्य ।। 36 ।।

मीन के तीसरे द्रेष्काण का स्वरूप वन में गड्ढे के निकट सर्प से लिपटे शरीर वाला, नग्न पुरुष, चोर व अग्नि से डरा हुआ, व्याकुल व रोने वाले मनुष्य का है ।

टिप्पणी— यह सर्प द्रेष्काण है और इसका स्वामी मंगल है ।

द्रेष्काण का प्रयोजन यात्रा में होता है । यदि द्रेष्काण अच्छे मनोहर स्वरूप वाला, फल, रत्न व फूल ले जाने वाला एवं शुभ ग्रह वाला है तो यात्रा शुभ होती है । यदि द्रेष्काण का स्वरूप घृणित, वीभत्स, शस्त्रधारी व स्वामी पापग्रह है तो यात्रा अशुभ होती है । यदि द्रेष्काण का स्वरूप बन्धन ले जाने वाला सर्प वेष्टित व पाप ग्रह स्वामी है तो भी यात्रा शुभ नहीं होती है ।

इति श्रीवराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके
द्रेष्काणस्वरूपाऽध्यायः सप्तविंशः ।। 27 ।।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

28 उपसंहाराध्याय

इस अध्याय में वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' के आधार पर सम्पूर्ण ग्रन्थ में आए हुए अध्यायों की संक्षेप में उपसंहार रूप में चर्चा की गई है ।

राशिप्रभेदो ग्रहयोनिभेदो वियोनिजन्माथ निषेककालः ।
जन्माथ सद्यो मरणं तथायुर्दशाविपाकोऽष्टकवर्गसंज्ञ ॥ 1 ॥

प्रथम अध्याय **'राशिप्रभेदाध्याय'** में राशि चक्र और ज्योतिष के ज्ञान की जानकारी दी गई है । दूसरे अध्याय में **'ग्रहयोनिभेदाध्याय'** में ग्रह सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान दिया गया है । तीसरे अध्याय **'वियोनिजन्माध्याय'** में जन्तु एवं वृक्षादि संबंधी ज्योतिष सिद्धान्तों की चर्चा की गई है । चौथे अध्याय **'निषेकाध्याय'** में गर्भधारण समय (Conception Time) की चर्चा की गयी है । पांचवें अध्याय **'जन्मविधिनामाध्याय'** में जन्म समय संबंधी ज्योतिष सिद्धान्तों की चर्चा की गयी है । छठे अध्याय **'अरिष्टाध्याय'** में अरिष्ट और शीघ्र मृत्यु (Early Death) सम्बन्धी योगों को बतलाया गया है । सातवें अध्याय **'आयुर्दायाध्याय'** में आयु निर्धारण संबंधी ज्योतिष योगों को बताया गया है । आठवें अध्याय **'दशान्तर्दशाध्याय'** में ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशा संबंधी अनमोल ज्ञान बताया गया है । नौवें अध्याय **'अष्टकवर्गाध्याय'** में आठवर्गों (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं लग्न) के विषय में बतलाया गया है ।

कर्माजीवो राजयोगाः खयोगाश्चांद्रायोगाद्विग्रहाद्याश्च योगाः ।
प्रव्रज्याथो राशिशीलानि दृष्टिर्भावस्तस्मादाश्रयोऽथ प्रकीर्णः ॥ 2 ॥

अध्याय दस **'कर्माजीवाध्याय'** में आजीविका संबंधी योगों की चर्चा की गयी है । ग्यारहवें अध्याय में **'राजयोगध्याय'** में राजयोगों की चर्चा की गई है । बारहवें अध्याय **'नाभसयोगाध्याय'** में अनेक ग्रह योगों की चर्चा की गई है । तेरहवें अध्याय में **'चन्द्रयोगाध्याय'** में चन्द्र ग्रह सम्बन्धी योगों का वर्णन है। चौदहवें अध्याय में **'द्विग्रहयोगाध्याय'** में दो ग्रहों की युति का फल बताया गया है । पन्द्रहवें अध्याय **'प्रव्रज्यायोगाध्याय'** में सन्यास योगों की चर्चा है । सोलहवें अध्याय **'ऋक्षशीलाध्याय'** में नक्षत्रों का फल बताया गया है । सतरहवें अध्याय **'राशिशीलाध्याय'** में जन्मराशि का फल बतलाया गया है । अठारहवें अध्याय **'ग्रहराशिशीलाध्याय'** में सूर्यादि ग्रहों का राशि में फल बताया गया है । उन्नीसवें अध्याय **'दृष्टिफलाध्याय'** में ग्रहों की अन्य ग्रहों पर पड़ने वाली दृष्टि का फल बतलाया गया है । बीसवें अध्याय में **'भावफलाध्याय'** में भाव संबंधी ज्योतिष ज्ञान की चर्चा करते हुए ग्रहों का प्रभाव बताया गया है । इक्कीसवें अध्याय **'आश्रययोगाध्याय'** में ग्रह संबंधी योगों की चर्चा है । बाइसवें

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्याय **'प्रकीर्णकाध्याय'** में कुछ मिश्रित योगों के विषय में बतलाया गया है ।

नेष्टा योगा जातकं कामिनीनां निर्याणं स्यान्नष्टजन्मदृकाण: ।
अध्यायानां विंशति पंचयुक्ता जन्मन्येतद्यात्रिकं चाभिधास्ये ॥ 3 ॥

तेइसवें अध्याय **'अनिष्टयोगाध्याय'** में अशुभ व अनिष्ट ज्योतिष योगों की चर्चा की गई है । चौबीसवें अध्याय **'स्त्री जातकाध्याय'** में स्त्री जातक की कुंडली देखने के सिद्धान्त बताये गये हैं । पच्चीसवें अध्याय **'निर्याणाध्याय'** में मृत्यु संबंधी योगों का वर्णन है । छब्बीसवें अध्याय **'नष्टजातकाध्याय'** में नष्ट या खोई हुई कुंडली को शुद्ध करने की रीति बतायी गई है । सत्ताईसवें अध्याय **'द्रेष्काणाध्याय'** में द्रेष्काण का फल बताया गया है । इसके बाद यात्रा के विषय में आए हुए अध्यायों का संग्रह करते हैं

प्रश्नास्तिथिर्भं दिवस: क्षणश्च चन्द्रो विलग्नं त्वथ लग्नभेद: ।
शुद्धिर्ग्रहाणामथ चापवादो विमिश्रकाख्यं तनुवेपनं च ॥ 4 ॥

1. प्रश्नप्रभेदाध्याय, 2. तिथिबलाध्याय, 3. नक्षत्रबलाध्याय, 4. वारबलाध्याय, 5. मुहूर्त निर्देशाध्याय, 6. चन्द्रबलाध्याय, 7. लग्नश्चियाध्याय, 8. लग्नभेदाध्याय, 9. ग्रह शुद्धि, 10. अपवादाध्याय, 11. मिश्रकाध्याय, 12. देहकम्पनाध्याय और

अत: परं गुह्यकपूजनं स्यात्सवप्नं तत: स्नानविधि: प्रदिष्ट: ।
यज्ञो ग्रहाणामथ निर्गमश्च क्रमाच्च दिष्ट: शकुनोपदेश: ॥ 5 ॥

13. गुह्यक पूजन विधि, 14. स्वप्नाध्याय, 15. स्नानविधिनिरूपणाध्याय, 16. ग्रह यज्ञ विधि, 17. प्रस्थानविधि, 18. शकुनोपदेश और

विवाहकाल: करणं ग्रहाणां प्रोक्तं पृथक्तद्विपुलाथ शाखा ।
स्कंधैस्त्रिभिर्ज्योतिषसंग्रहोऽयं माया कृतो दैवविदांहितायं ॥ 6 ॥

19. विवाहकाल (विवाह पटल), 20. ग्रहकरणाध्याय (पंचसिद्धान्तिका) आदि ।

मैनें 'वराहमिहिराचार्य' फलित, गणित, सिद्धान्त इन तीनों स्कन्धों से ज्योतिषियों और खगोलविदों के हितार्थ ज्योतिषशास्त्र का संग्रह किया है ।

ग्रन्थकर्त्ता की क्षमा याचना

पृथुविरचितमन्यै: शास्त्रमेतत्समस्तं
तदनु लघु मयेदं तत्प्रदेशार्थमेव ।
कृतमिह हि समर्थ धीविषाणामलत्वे मम यदि ह
यदुक्तं सज्जनै: क्षम्यतां तत् ॥ 7 ॥

प्राचीन ज्योतिषाचार्यो (यवनाचार्य और अन्य) ने ज्योतिषशास्त्र के जिस विषय को विस्तार से कहा है उसे मैनें बहुत संक्षेप में कहा है । संक्षेप में कहने के कारण अल्प

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय हैं ऐसी शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि इस विषय में जो कुछ मैनें लिखा है वह पाठकों की बुद्धि अज्ञान रहित करने में समर्थ है। इस संग्रह में जो अशुद्धि मुझसे हुई हो उसके लिए विद्वान क्षमा करें।

ग्रंथस्य या प्रचरतोऽस्य
विनाशमेति लेख्याव्द्हुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण।
यद्वा मया कुकृतमल्पमिहाकृतं वा
कार्यं तदत्र विदुषा परिहत्य रागम् ॥ 8 ॥

इस ग्रन्थ के विस्तार में लेखन दोष से जो त्रुटि आ गई हो उसको पाठक लोग विद्वान ज्योतिषियों से जानकर शुद्ध कर लें अथवा मुझसे ही कहीं अनुचित कहा गया हो या जो नहीं कहा गया हो उसको भी ईर्ष्या त्यागकर विद्वान लोग शुद्ध कर लें।

ग्रन्थकर्ता का परिचय

आदित्यदासतनयस्तदवासबोधः कापित्थके
सवितृलब्धवर प्रसादः।
आवंतिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्यग्घोरां
वराहमिहिरो रुचिरां चकार ॥ 9 ॥

उज्जैन के पास कपित्थ नामक ग्राम में रहने वाले आदित्यदास के सुपुत्र पिता से ही विद्या को पढ़कर, सूर्य से वर को पाकर **वराहमिहिर** ने अनेक मुनियों के विचारों को भली-भांति देख व समझकर इस सुन्दर होरा ग्रन्थ **'बृहज्जातकम्'** को रचा।

ग्रन्थ की समाप्ति

दिनकर मुनि गुरु चरण प्रणिपातकृत प्रसादमतिनेदम्।
शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ 10 ॥

अन्त में सूर्यादि देव को प्रणाम करते हुए ग्रन्थकर्ता ग्रन्थ को समाप्त करता है। सूर्यादि ग्रह वशिष्ठ मुनि और गुरु आदित्य दास इन सबको साष्टाङ्ग प्रणाम करके कृपारूप में जो सम्बन्धज्ञान पूर्व आचार्यों के मतानुरूप मिला लें। संग्रह किया, उनको मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

इति वराहमिहिराचार्यप्रणीते बृहज्जातके उपसंहाराध्यायोऽष्टाविंशः ॥ 28 ॥

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलते-चलते . . .

वराहमिहिर कृत 'बृहज्जातकम्' फलित सिद्धान्तों को आपने अट्ठाईस अध्यायों में वर्णित 409 श्लोकों में जाना। इन सिद्धान्तों को भली-भांति समझकर विभिन्न परिचितों व अपरिचितों की जन्म कुंडलियों में प्रयोग करके अभ्यास करें। जितना अधिक अभ्यास करेंगे उतना अधिक फलित सिद्धान्तों पर पकड़ होगी और धीरे-धीरे फलित करने में प्रवीणता आने लगेगी।

गणित तो आजकल कम्पयूटर से बनी कुण्डलियों द्वारा करना सरल हो गया है। परन्तु ! फलित अभी स्वयं ही करना पड़ेगा। फलित करते समय आध-अधूरी व अशुद्ध कुण्डलियों पर फलित सिद्धान्तों को प्रयोग न करें। सम्पूर्ण एवं शुद्ध कुण्डलियों पर इन फलित सिद्धान्तों को प्रयोग करें। सर्वप्रथम नवजात शिशुओं की कुण्डलियों में बालारिष्ट व आयु का विचार करके ही भावी फलित करें, वरना ज़रा सी चूक असत्य भविष्यवाणी हो जाने पर ग्लानि एवं पश्चताप होगा। प्रत्येक कुण्डली पर सर्वप्रथम आयु व शरीर का विचार करें तदोपरान्त भाग्य विचारें, इसके उपरान्त कुण्डली का प्रत्येक दृष्टिकोण से अध्ययन करें।

गणित से अधिक फलित जटिल है क्योंकि जरा सी असावधानीवश गलत भविष्यवाणी हो जाती है। अभ्यास से समन्वय युक्त फल कहने की सामर्थ्य बढ़ेगी।

अन्ततः इसी शुभकामना सहित आपसे विदा लेते हैं कि आप फलित कहने में समर्थवान बनें और परिचित-अपरिचित का भविष्य बतलाकर उन्हें सुपथ पर बढ़ने की प्रेरणा दें जिससे उनका जीवन सुख-समृद्धि से परिपूर्ण हो सके।

☆☆☆

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

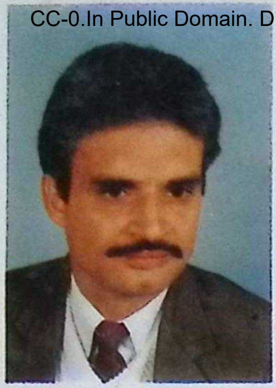

डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'
बी० एस०-सी, एम० ए० (हिन्दी),
पी०-एच० डी०, ज्योतिष बृहस्पति,
ज्योतिष भास्कर

प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र

जन्मकुण्डली बनाना आसान है, परंतु उसका फल कहना अत्यन्त कठिन है। यदि आप जन्मकुण्डली का फल करना सीखना चाहते हैं तो **वराहमिहिर** कृत **'बृहज्जातकम्'** की संस्कृत एवं विस्तृत व्याख्या सहित लिखा गया अनमोल ग्रन्थ **'प्राचीन भारतीय फलित शास्त्र'** पढ़ें। प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य **डॉ० उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर'** द्वारा प्रस्तुत यह ग्रन्थ आपको फलितज्ञ बना देगा और आप मित्रों, परिजनों और निकटस्थों की जन्मकुण्डलियों का फल कहकर यशस्वी बन सकेंगे। एक बार पुस्तक पढ़कर लोकप्रिय फलितज्ञ बनना न भूलें।

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal